❁ श्रीमन्नित्यनिकुञ्जबिहारिणे नमः ❁
।। श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेराम् ।।

❀ समाज-शृंखला ❀

श्रीललित प्रकाशन, वृन्दावन

श्री श्री १००८

श्री ठाकुर गोरेलाल जू

की कुंज

श्री धाम वृन्दावन

❀ श्रीमन्नित्यनिकुञ्जबिहारिणे नमः ❀
॥श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेराम्॥

अखिल माधुर्यैक मूर्ति, अशेष रसिक चक्र चूड़ामणि, रसिक कमल कुल दिवाकर महामधुर रस सार-नित्य-बिहार प्रकाशक, अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास जू महाराज के सेव्य श्रीकुंजबिहारी-बिहारिणी, श्रीस्वामी जू तथा उनके परम्परानुवर्ती आचार्यन के दिव्य महोत्सवनि की-

❀ समाज-सृंखला ❀

सम्पादक
अलबेलीशरण

श्रीललित प्रकाशन, वृन्दावन

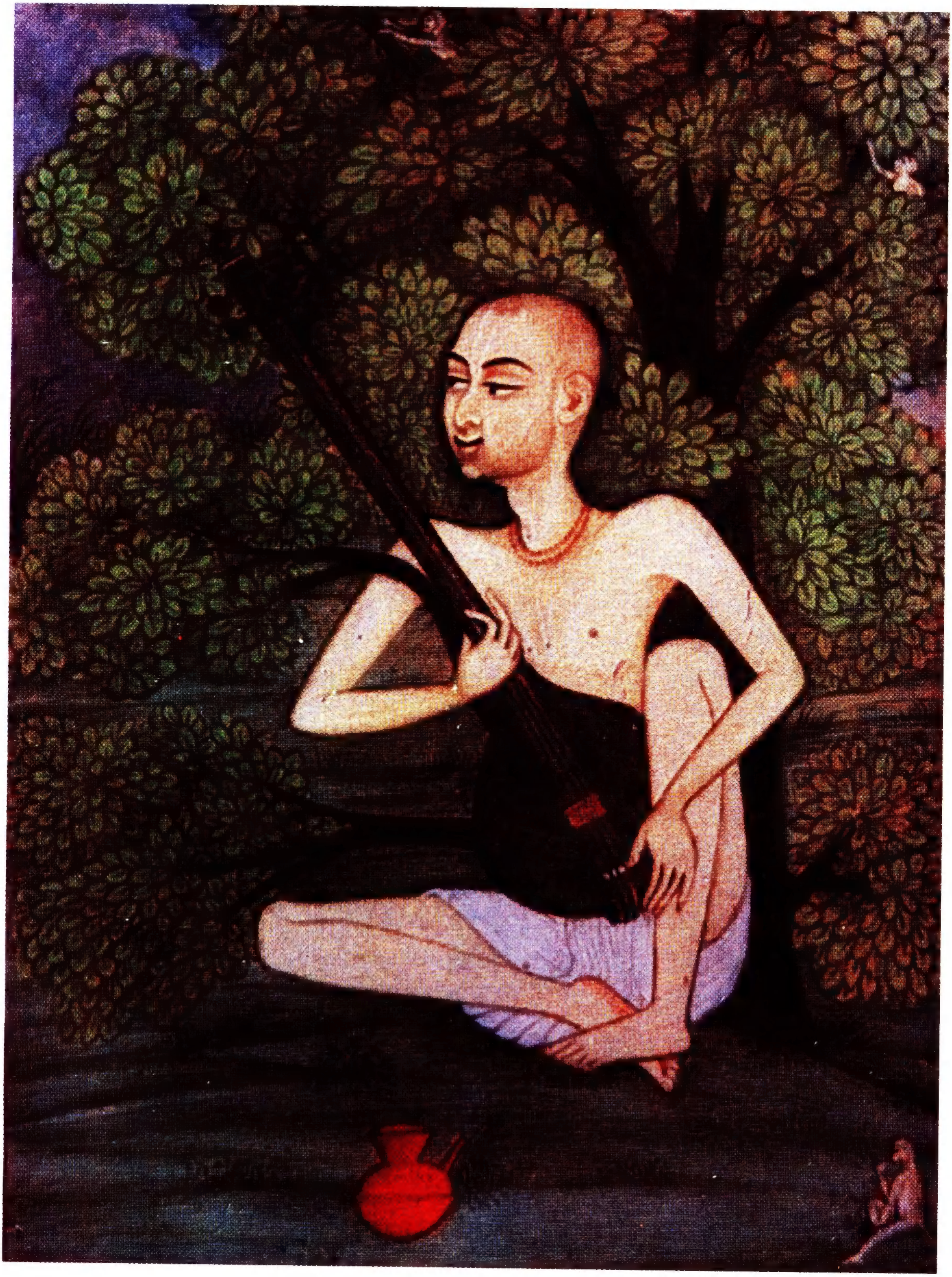
प्रकाशक –
श्रीललित प्रकाशन
श्रीललित निकुंज
ठाकुर श्रीगोरेलालजी की कुंज
प्रेम गली, वृन्दावन-२८११२१
दूरभाष- (०५६५) २४५६१५३

प्रकाशन तिथि
श्रीस्वामी जयन्ती
भाद्रपद शुक्ला ८, सम्वत् २०६० वि०
(सन् ४ सितम्बर २००३ ई०)

पुस्तक प्राप्ति स्थान –
१. **श्रीललित निकुंज**
ठाकुर श्रीगोरेलालजी की कुंज
प्रेमगली, वृन्दावन-२८११२१

२. **सर्वेस्वरी इंजीनियर्स**
३५५, दीपाली, पीतमपुरा, दिल्ली-३४
दूरभाष- २७०२३७५०, २७०२१४९९

मुद्रक:
राधा प्रेस
कैलाश नगर, दिल्ली-31
फोन-22083107



रसिक शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास जी महाराज

पूर्वाभास

।। श्रीस्वामी जू–श्रीबिहारी जू जयति ।।

अखिल माधुर्यैक मूर्ति, कारुण्य–वात्सल्य–स्नेहनिधि, भक्तवांछा–कल्पतरु श्रीहरि की भक्ति ही मानव को संसार के त्रिताप–दावानल से मुक्ति दिलानेवाली, श्रीहरि की सेवा में पहुँचानेवाली एवं ज्ञान, वैराग्य, जप, तप, योग, यज्ञ आदि साधनों से श्रेष्ठ है।

जप तप संयम नेम व्रत, जोग जग्य आचार।
भगवत भक्ति अनन्य बिन, जीव भ्रमत संसार।।

— श्रीभगवतरसिकदेव जी

भक्ति भक्त और भगवान को मिलाकर एक तन, एक मन, एक प्राण कर देती है। ऐसे ओत–प्रोत कर देती है कि भक्त है कि भगवान् हैं,भगवान् हैं कि भक्त है, दोनों एक प्रान–दो देह।

हरि कौ हृदौ साधु हैं, साधुन के हरि प्रान।
साधुन के हित में रहैं, हरि हित रसिक सुजान।।

— श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेव जी

श्रीहरि को भक्ति के समान कोई प्यारी वस्तु नहीं है। भक्ति रस के वश होकर वे अपने आपको भूल जाते हैं, विवश–अधीन हो जाते हैं।

अखिल भुवन मध्ये निर्धनेऽपि धन्याः
यस्य हृदि निवसति हरेर्भक्तिरेकाः।
हरिरपि निजलोकं सर्वाथातो विहाय
प्रविशति हृदि तेषां भक्ति सूत्रोपनद्धः।।

—स्कन्द पुराण, भागवत माहात्म्य

सम्पूर्ण लोकों में अत्यन्त दरिद्र भी परम धन्य है, जिसके हृदय में श्रीहरि की एकमात्र विशुद्ध भक्ति निवास करती है। धन्यता की एक और विशेष बात कि भक्ति डोर में श्रीहरि भी बँधे हुए अपने निज धाम को सब भाँति त्यागकर उन भक्तजनों के हृदय में अविचल विराजते हैं।

श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन ये भक्ति के नौ अंग हैं। इनमें श्रवण, कीर्तन और स्मरण अंग ही मुख्य हैं, अन्य सब इनके अन्तर्गत हैं। समाज–गायन में भक्ति के श्रवण, कीर्तन और स्मरण अंग ही मुख्य हैं।

समाज में दो दल होते हैं—एक मुखिया–दल और दूसरा झेला–दल। समाज–गायन–कला में जो निपुण संत होते हैं, उनमें एक मुखिया होता है और दूसरा झेला। प्रथम—मुखिया के साथ मुखिया–दल गाता है, फिर झेला के साथ झेला–दल। समाज–गायन में एक–एक

पंक्ति के चौथाई चरण, आधे चरण और अन्य अंशों को कई बार दुहराया-गाया जाता है। किसी पद की पंक्ति की आवृत्ति विशेष और किसी की कुछ कम होती है। समाज-गायन में स्वर, ताल, लय और शब्द-योजना ही मुख्य हैं। समाज-गायन में वाद्य-तानपूरा, झाँझ और मृदंग मुख्य हैं। कभी-कभी सारंगी आदि वाद्यों का प्रयोग भी हो जाता है। पूर्वकाल में संगीत कला में निपुणता होने से केवल तानपूरा के आधार पर ही समाज-गायन होता था, किन्तु अब ६०-७० नर्ष से पूर्व और टटियास्थान के मुखिया श्रीरमणदास जी के समय से स्थायी रूप से हारमोनियम बाजे के आधार पर समाज-गायन होने लगा है।

समाज-गायन में शब्द-योजना, पद की विशेषता होने से यह गायन रसिकजनों के लिये बहु सुखावह है। पद-पंक्ति की पुनः-पुनः आवृत्ति उन्हें श्रीकुंजबिहारी-कुंजबिहारिणी के दिव्य केलि-रससिंधु में लहरा देती है। रसिक-साधक-जनों के लिये तो यह परम पथ, परम पाथेय, परम अवलम्ब और साधन-साध्य दोनों है।

यह समाज-गायन परम्परा नित्य, अनादि है। निकुंज मन्दिर में भी सखीजन इसका आस्वादन करती हैं-**"आज समाज सहज सुख बरषत हरषत मिलि मन माहिं।" "सहज समाज सदा वृन्दाबन बिपुल बिनोद बढ़ायन।"** इत्यादि, श्रीगुरुदेव जू। महारास, वेणुगीत आदि में भी सामूहिक गायन के रूप में इसका प्रयोग है। रसिक अनन्य शिरोमणि श्रीस्वामी जी महाराज तो अपनी गानकला-गान्धर्वता से युगल-श्रीप्रियालाल को रिझाते ही थे,श्रीबीठल-बिपुलदेव जी, श्रीबिहारिनिदेव जी आदि आचार्य भी श्यामा-श्याम को रिझाने में परम निपुण थे। आगे आनेवाले समय में ऐसी योग्यता की कठिनता समझ आठवें आचार्य रसिक अनन्य मणि श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जी ने अपने श्रीगुरु रसिक-रसनिधि श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेव जी के सम्मुख सम्वत् १८०५ विक्रम में इस समाज-गायन का सरस शुभारम्भ किया। उसी दिव्य गायनकला को स्वर, ताल, लय और पद की शब्द योजनामयी बन्दिश में बाँधा। समाज-गायन की वही परम्परा आज अक्षुण्ण रीति से चली आ रही है। जिस रस-प्रवाह में अनेक भावुक- रसिकजन गोता लगाते रहते हैं। रसिक अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदासजी के परम्परावर्ती स्थानों-टटियास्थान, श्रीरसिकबिहारी कुंज, श्रीगोरीलाल कुंज और श्रीस्वामी हरिदास सेवा संस्थान में श्रीलाड़िलीलाल के उत्सवों और आचार्योत्सवों में एक दिन से लेकर अनेक दिनों तक समाजं-गायन होता है। इनमें गाये जानेवाले पदों का समुचित आनन्द प्राप्त करने के उद्देश्य से भावुक-रसिकजनों के उपयोगार्थ इस समाज-सृंखला का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री बिहारी जी-श्री स्वामी जी अपनी कृपावर्षण करते हुए हम सबका परममंगल करें।

-अलबेलीशरण

श्रीललित निकुंज
प्रेमगली, श्रीवृन्दावन

समाज सहज मन भायौ

सामान्य जनसमाज में 'समाज' शब्द का जो अर्थ समझा जाता है, वृन्दावन के रसिकों में उससे अलग कुछ विशेषअर्थ प्रचलित है। यहाँ 'समाज' का अर्थ केवल समूह या समुदाय न होकर उस गायन से है, जिसमें रसिकजन मिलकर वाणी-ग्रन्थों के पदों को एक विशेष पद्धति से गाते हैं। अनन्यरसिक-नृपति श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज के उपास्य अखिल रसामृत-मूर्ति श्रीश्यामा-कुंजबिहारी संगीत-संगी हैं। उनकी सेवा भोग और राग की है। सखियाँ इसी सेवा द्वारा उन्हें सुख देने में संलग्न रहती हैं। नित्य निकुञ्ज में ऐसा ही समाज जुड़ा रहता है–

१. आज समाज सहज मन भायौ।

२. आज समाज सहज सुख बरसत हरषत मिलि मन माहिं।

३. सखी समाज रसिक रसरासा। महल दरू में खास खवासा।।

सखी भाव के उपासक भी अपने आचार्यों की वाणियों के पदों का गायन करके इष्ट-युगल को प्रसन्न करते हैं। श्रीश्यामा-श्याम को संगीत से सन्तुष्ट करने की सेवा का समारम्भ श्रीस्वामी जी महाराज ने ही कर दिया था "**गान कला गंधर्व स्याम-स्यामा कौं तोषैं।** किन्तु समाज-गायन को सामूहिक स्वरूप सम्भवतः रसिकअनन्य-मुकुटमणि गुरुदेव श्रीस्वामी बिहारिनिदेव जी ने दिया होगा, जब उन्होंने श्रीस्वामी जी महाराज के पदों और स्वरचित बधाइयों को गाना-गवाना आरम्भ किया होगा। समाज-गायन का वर्तमान रूप श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जी की देन है। टटियास्थान की स्थापना के बाद श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेव जी ने आचार्योत्सवों का शुभारम्भ वृहद् रूप में कर दिया था। उन्हीं के निर्देशन में श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जी ने समाज-गायन का एक सुनिश्चित बन्धान बाँधा। श्रीस्वामी राधाप्रसाददेव जी ने उनकी प्रशंसा में कहा है– **प्रगटे श्रीललितमोहिनी देव उदार ....। प्रगट कियौ रसरीति गान कौं.......।** उस समय तक श्रीस्वामी जी और आठों आचार्यों की वाणियों का विपुल संग्रह हो चुका था। गुरुमंगल लिखे जा चुके थे। सभी रसिक-भक्तों की इच्छा-लालसा रहती होगी कि अपने आचार्यों की सरस वाणियों के श्रवण एवं स्मरण का आनन्द लें, उनमें अवगाहन करें, किन्तु उन्हें लिखना-लिखवाना, लिखित ग्रन्थ उपलब्ध करना सभी के लिए सम्भव न था। इस समस्या का समाधान करने के लिए वाणियों के सरस श्रेष्ठ पदों के अंशों, चरणों और तुकों को बारम्बार दुलरा-दुलराकर, दुहरा-दुहराकर गाये जाने की पद्धति अपनाई गई। जैसे हमारे वेदों की श्रुति परम्परा को सुरक्षित-संरक्षित रखने के लिए विभिन्न प्रकार के पाठ-स्वर पाठ, जटा पाठ, घन पाठ आदि किये जाते थे।

श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज की महामधुर-रस सार नित्यविहारोपासना अपनी अनन्यता एवं विशुद्धता की दृष्टि से सबसे अलग है। उसके स्वरूप को संरक्षित रखने में भी सामूहिक समाज-गायन का सार्थक योगदान रहा। श्रीहरिदासी परम्परानुसारी समाज-

गायनों में अन्य सम्प्रदाय के आचार्यों अथवा रसिकों के पदों को सम्मिलित नहीं किया जाता, केवल अपनी वाणियों के पद ही गाये जाते हैं। प्रयास यह भी था कि आचार्यों ने जिन राग-रागिनियों में उन पदों का बन्धान किया, यथासम्भव उन्हीं में उन्हें गाया जाय। अतः श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जी ने श्रीश्यामाकुंजबिहारी के ऋतु-उत्सवों-बसन्त, होली, पावस, शरद आदि और आचार्यों के जयन्ती-महोत्सवों में गाये जानेवाले पदों, उनमें प्रयुक्त होनेवाली राग-रागनियों, तालों आदि को सुनिश्चित कर दिया। श्रीस्वामी जी महाराज की परम्परा में समाजगायन का वही स्वरूप और क्रम अब तक चला आ रहा है।

श्रीहरिदासी परम्परा में समाज-गायन की पद्धति अन्य सम्प्रदायों में प्रचलित समाज-गायनों से किंचित् भिन्न है। अन्य सम्प्रदायों में प्रायः एक प्रधान गायक, जिसे मुखिया कहते हैं, पहले गाता है और फिर अन्य सभी जन, जो झेला कहे जाते हैं, उसके गाये अंशों को दुहराते हैं; किन्तु हरिदासी समाजों में गायकों के दो दल होते हैं जो आमने-सामने बैठते हैं। उनमें दाहिनी ओर का समूह मुखिया-दल होता है और बाईं ओर का झेला-दल। मुखिया के नायकत्व में उसका दल गीत का कुछ अंश गाता है, जिसे प्रधान झेला के साथ उसका दल दुहराता है। मुखिया पहले तो तानपूरा लेकर बैठता होगा, परन्तु अब हारमोनियम पर गाता है। सामने के दल में एक झाँझ बजाता है। दोनों दलों के मध्य में एक छोर पर पखावजी ताल देता है। पखावज अद्यावधि समाज-गायन का अनिवार्य उपकरण है।

गायन करने के लिए जब समाज बैठ जाता है तो मुखिया "आकार" लेकर स्वर आरम्भ करता है और मंगलाचरण में श्रीस्वामी बिहारिनदेव जी की दो निश्चित साखियाँ गाता है, तत्पश्चात् श्रीस्वामी कृष्णदास जी रचित "बड़ौ गुरु-मंगल" और श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जी, श्रीललितकिशोरीदेव जी तथा श्रीललितमोहिनीदेव जी द्वारा विरचित तीन "छोटे गुरु- मंगल।" इन्हें झेला-दल दुहराता है। मंगलों के पश्चात् श्रीस्वामी हरिदास जी का एक पद गाया जाता है, जो प्रत्येक उत्सव के अनुसार निश्चित है। तदन्तर मुख बड़ा पद गाया जाता है। ये बड़े पद भी उत्सवानुसार निश्चित हैं। इस सम्पूर्ण गायन में प्रायः तीन घण्टे लग जाते हैं। अन्त में आचार्योत्सव के अनुसार उनकी कुछ बधाइयाँ गाई जाती हैं और 'असीस' के दो पद। प्रसाद वितरण के साथ समाज का विराम हो जाता है।

समाज-गायन के आरम्भ में माला, चन्दन, अतर आदि से समाज गायकों का सम्मान किया जाता है। कण्ठ सरस एवं मधुर बनाये रखने के लिए मिश्री, पान, इलायची, काली मिर्च इत्यादि पदार्थों का वितरण भी किया जाता है। गेय पदों के अंशों की आवृत्ति में झेला दल, अहो, एरी हाँ, एरी माई, प्रभृति शब्द जोड़कर राग-ताल के अनुसार मात्राओं की पूर्ति करके दुलरा-दुलराकर गाता है। मुखिया-दल भी पुनः-पुनः आवृत्ति करता है। इस प्रकार घण्टों में एक पद पूरा हो पाता है।

गायकों के स्वरों आरोह-अवरोह, विशेष रीति से गाये जाने और वाणी-साहित्य से पूर्णतया परिचित न होने के कारण सामान्य समाज-प्रेमियों को गेय पद समझने में कठिनाई होती है। किस उत्सव के समाज-गायन का क्रम क्या है, यह भी सब लोग नहीं जानते। इसके लिए समाज-शृंखलाओं की रचनाओं की गई। पुराकाल में ये शृंखलाएँ हस्तलिखित होने के कारण कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को ही प्राप्त रहती थीं। आजकल मुद्रित शृंखलाएँ प्रयोग में लाई जा रही हैं। समाज-गायन के समय उन्हें गायकों और श्रोताओं के मध्य वितरित कर दिया जाता है, जिससे सभी को बड़ी सुविधा हो जाती है और वे समाज-गायन का भरपूर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। समाज समाप्ति पर इन्हें संकलित कर यथा-स्थान रख दिया जाता है।

प्रस्तुत समाज-शृंखला इस दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है। परम पूज्य कृपालु बाबा अलबेलीशरण जी ने इस शृंखला के पदों के नीचे टिप्पणियों में उनके कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये हैं, जिससे गायन के साथ-साथ उनका भाव एवं अर्थ भी आसानी से हृदयंगम किया जा सकता है। इससे आनन्द की और भी वृद्धि हो सकेगी। इसमें पूज्य बाबा महाराज ने जो श्रम किया है, उसकी जितनी सराहना की जाय, वह कम है। ४३१, दीपाली, पीतमपुरा, दिल्ली-३४ वासी भक्तवर श्रीरवीन्द्रनाथ गोयल और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती भारती गोयल ने इस समाज-शृंखला का प्रकाशन कराया है। श्रीरवीन्द्रनाथ गोयल परम्परा से श्रीस्वामी जी महाराज के भक्त और निष्ठावान् सेवक हैं। आपने इसके पूर्व भी अनेक सेवाओं में सक्रिय सहयोग दिया है। आपके स्व० पूज्य पिता श्रीसत्यनारायण जी गोयल परम निष्ठावान्, प्रेमी भक्त थे। इनका पूरा परिवार ही सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहता है। आपकी इस प्रकाशन सेवा से भी सहस्त्रों जनों को सुख और आनन्द प्राप्त होगा। प्रभु के भक्तों की सेवा का महत्त्व प्रभु सेवा से भी अधिक होता है। श्रीस्वामी जी महाराज के अनुग्रह से ही ऐसी मनोवृत्तियाँ जाग्रत हो पाती हैं। विश्वास है कि श्रीबिहारी जी और श्रीस्वामी जी की यह अहैतुकी कृपा सभी पर सदैव बरसती रहेगी।

—प्रो० गोविन्द शर्मा

श्यामवाटिका
अनाजमण्डी, वृन्दावन

उत्सव पदानुक्रमणिका



श्री कुंजबिहारी-बिहारिनि

॥ श्रीमन्नित्यनिकुञ्जबिहारिणे नमः॥
॥ श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेतराम्॥

समाज–सृंखला

रसिक अनन्यनृपति श्रीस्वामी हरिदास जू महाराज कौ प्राक्टय महोत्सव

भाद्र सु०८

मंगलाचरन

प्रथम लड़ाऊँ श्रीगुरु, बंदन करि श्रीहरिदास।
बिपुल प्रेम निजु नेम गहि, कहि सुजस बिहारिनिदास॥१॥
गुरु सेवत गोविंद मिल्यौ, गुरु गोविन्दहिं आहि।
श्रीबिहारीदास हरिदास कौ, जीवत है मुख चाहि॥२॥

श्रीस्वामी कृष्णदास जू कृत मंगल

राग–सूहौ बिलावल | ताल–रूपक

प्रथम जथामति श्रीगुरु चरन लड़ाइहौं।
उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गाइहौं॥
गौरस्याम सुखरासि तिन्हैं दुलराइहौं।
देहु सुमति बलि जाउँ आनंद बढ़ाइहौं॥
आनंद सिंधु बढ़ाइ छिन छिन प्रेम प्रसादहिं पाइहौं।
जय श्रीबरबिहारिनिदास कृपा तें हरषि मंगल गाइहौं॥१॥
जय जय श्रीहरिदास रसिक कुल मंडना।
अनन्य नृपति श्रीस्वामी सकल भय खंडना॥

रसिक कमल कुल भानु सु प्रगट उदय कियौ।
भ्रम तम स्त्रम सब नासि सबनि कौं सुख दियौ।।
दै सबनि सुख अति कृपा करि प्रगट बिहार सुनाइयौ।
जय जय श्रीहरिदास रसिक मन भाइयौ।।२।।
जानि बिहार गुपत अति भूतल प्रगट कियौ।
कीरति जग बिस्तार सु रस रसिकनि दियौ।।
निरनय करि जस गाय सु परहित बपु धस्यौ।
धनि धनि कहैं सब रसिक अनन्य सु बर बस्यौ।।
बर बस्यौ धनि धन्य कहि कहि छिन छिन प्रति दुलरावहीं।
जय जय श्रीहरिदास बांछित फल पावहीं।।३।।
काम केलि माधुर्य सहज रति सर्वदा।
प्रेम सुभाव सरल मति सुधा गुन निर्मदा[1]।।
बिस्व सकल सुख देखि छिया[2] करि छाँड़ियौ।
दम्पति पति अभिराम अपनौं पन माँड़ियौ।।
माँड़ि पन अभिराम छिन छिन दम्पति सहज लड़ावहीं।
देखि इह सुख रंग दोऊ मन्द मधुर सुर गावहीं।।४।।
जय जय श्रीवृन्दाबन सहज सुहावनौं।
नित्यबिहार अधार सदा मन भावनौं।।
परम सुभग श्रीजमुना पुलिन मंजुल जहाँ।
बिमल कमल कुल हंस सकल कूजित तहाँ।।

१. निर्मल; अभिमान, मदरहित; परिहास, विनोद को देनेवाले। २. घृणित, तुच्छ।

बिमल कमल कुल हंस कूजित सेवत खग मृग सुख भरे।
मुदित बन मन* मोर निर्त्तत राजत अति रुचि सौं खरे।।५।।
कुसुमित कुंज रसाल लता अति सोहहीं।
अलिकुल कोकिल कीर कूजित मन मोहहीं।।
त्रिविध समीर बहत रस सुखद मनहिं लियें।
बसंत सरद रितु सेवत चित बित मनहिं दियें।।
बसंत सरद सेवत सदा रितु सुख समुद्रहिं को गनैं।
विविध भाँतिन भूमि राजत सोभा देखत ही बनैं।।६।।
मंदिर नवल निकुंज मदन सेवत रहैं।
मनि मुक्ता फल फलित सोभा गुन को कहै।।
श्रीकुंजबिहारीबिहारिनि अतिसय राजहीं।
नित्यकिसोर सहज रति सुख में भ्राजहीं।।
नित्यकिसोर सहज सदा रति गौर स्याम तन सोहहीं।
कंचन मनि घन दामिनि रतिपति देखत छबि मन मोहहीं।।७।।
अंग संग श्रीहरिदास बिहार करावहीं।
मननि लियें अनुसार सहज दिन भावहीं।।
सुख सम्पति रहैं साज समयौ पाय सु गावहीं।
तान तरंग मधुर सुर राग सुनावहीं।।
तान तरंग सुनाइ मधुर सुर कुँवरि कुँवर सुख पावहीं।
रीझि रीझि स्याबासि कहि हँसि हार बसन पहिरावहीं।।८।।

* पाठान्तर–नव।

प्रगट बिहारिनिदास कृपा कौ बपु धर्‍यौ।
श्रीकृष्णदास बड़भाग सेवत नित अनुसर्‍यौ।।
सील सुभाव गुन अर्पि प्रिया प्रेमहिं लहैं।
चित बित दै रुख लै मन सेवत नित रहैं।।
रहैं सेवत रुख लियें नित संक न काहू की करी।
जय श्रीबरबिहारिनिदास चरन रति सूर ज्यौं* व्रत ना टरी।।९।।
और बहुत अपनाय जे मन बच क्रम अनुसरे।
मोसे पतित महा सठ तेऊ अपने करे।।
जैसें पारस परसि तें कंचन जानिये।
ऐसें किये श्रीनागरीदास निस्चय उर आनिये।।
उर आनि निस्चै जानि यह सुख चरन कमल सेऊँ सदा।
जय श्रीबरबिहारिनिदास प्रगट नित सिंधु सुधा रस सर्वदा।।१०।।
मन बच क्रम करि यह जस जो नर गाइहैं।
मन बांछित फल बेगि सदा सुख पाइहैं।।
निजु धन सर्वसु जानि उमँगि दुलराइहैं।
प्रेम लच्छना भक्ति बिपुल रस पाइहैं।।
रस पाय बिपुल आनंद बाढ़्यौ जन्म जन्म के स्त्रम गये।
जय श्रीबरबिहारिनिदास कृपा तें मन मनोरथ सब भये।।११।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कृत— छोटौ गुरु-मंगल; मूल ताल-(तिताल)

श्रीगुरु मंगल गाय मना।
श्रीहरिदास चरन बंदन करि बिपुल बिनोद बढ़ाय घना।।

---

* पाठान्तर-जुरि।

श्रीबिहारीबिहारिनिदास परम रुचि सरस मनोरथ पाय धना।
श्रीनरहरि रसिक सिरोमनि मूरति पीतांबर बलि जाय जना।।१।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कृत–

आजु महा मंगल भयौ माई।
भई प्रसन्न सिरोमनि राधे यह सुख कह्यौ न जाई।।
परम प्रीति सौं बिलसत दोऊ प्रेम बढ़्यौ अधिकाई।
श्रीहरिदासीजू रसिक सिरोमनि उमँगि उमँगि आनंद झरि लाई।।२।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कृत–

आजु समाज सहज मन भायौ।
कुँवरि किसोरी गोरी भोरी निरखि हरषि हँसि कंठ लगायौ।।
अपने अपने मेल[1] मिलीं सब तान तरंगनि रंग बढ़ायौ।
श्रीहरिदासीजू रसिक सिरोमनि तन मन बचननि हियौ सिरायौ।।३।।

प्रथम दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद–राग मल्हार,चौताल

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै बोलत मोरनि।
नीके बादर नीके धनुष चहुँ दिसि नीकौ श्रीवृन्दावन
आछी नीकी मेघनि की घोरनि।।
आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी
बूढ़नि[2] की रेंगनि काम किरोरनि[3]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा के मिलि गावत
राग मलार जम्यौ री किसोर किसोरनि।।१।।

१.संग, समूह, मिलाप। २.बीर बहूटी, इन्द्रवधू, लालमखमली रंग का वरषाती कीड़ा। ३. करोड़ों; कल्लोल, तरंग, लहर।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग सूहौ बिलावल, ताल–रूपक

श्रीबृन्दाबन कौ री चोज[१] मनोज बढ़त रहै।
कुंजनि कुंजनि केलि नवेलि नवल कहैं।।
कहैं नवल नवेलि केलि सुनि सखी सुख पावहीं।
मंद मंद मधुर मिलै सुर सरस गीतहिं गावहीं।।१।।
प्रथम प्रिया आराधि साधि[२] सब पाइये।
प्रीतम अति अवलंब[३] सु रसिक रिझाइये।।
रिझाइ अति अवलंब प्रीतम फूल तन मन में बढ़ै।
नेम गहि निर्बाहि यह रस प्रेम प्यारी कौ पढ़ै।।२।।
रहसि बहसि बदी[४] होड़ परस्पर मन हरैं।
रसही रस उपजाइ उमँगि अंग अंग ढरैं।।
ढरहिं रंग उमँगि रंगीले जिहीं अंग परनि[५] परैं।
निपुन नागर नवल दोऊ हरषि हँसि अंकौं भरैं।।३।।
बहुरि कुँवरि करि रोड़[६] कोड़[७] के चाड़िले[८]।
हारी होड़ न देत लेत लटि[९] लाड़िले।।
लटि लेत परस न देति अपनौं अंग अति नव नागरी।
कोक कुसल किसोर बरबस किये कुँवरि अचागरी[१०]।।४।।

---

१. चमत्कारपूर्ण उक्ति, व्यंगभरी हँसी की बात, विलास रहस्यपूर्ण उक्ति, कथन। २. साध, इच्छा, कामना। ३. आश्रय, सहारा। ४. ठानी, लगाई। ५. प्रण, टेक, टेव, आदत, प्रवाह। ६. धृष्टता, बेईमानी। ७. क्रोड़, गोद। ८. चाँड़िले, इच्छुक, प्रबल चाहवाले; प्रबल, उग्र, बढ़े हुए। ९. दीन, व्याकुल होकर, ललचाकर अनुरक्त होकर। १०. नटखटी, शरारती, छली।

अति आसक्त दुहूँ दिसि रिसहिं नसावहीं।
अति आनंद सुधाधर पीवत पिवावहीं।।
पिवाय अधर सुधा महा मधु मत्त मिलि कौतिक[१] कियौ।
किये कौ सुख अल्प सखि सुनि कह्यौ भरि उमँग्यौ हियौ।।५।।
दंपति संपति सहित सबै सुख पूजहीं[२]।
नखसिख कौतिक रासि बिलसि कल कूजहीं[३]।।
कूजि कलकंठी[४] कृसोदरि[५] स्याम स्रवन सुहावनी।
वारि पिय सुकुमारि पर मनु देत रीझि रिझावनी।।६।।
रीझि रहे सिरमौर और उबटी[६] सबै।
तरुनि तरंग अनंग अंग लपटी जबै।।
लपटि स्याम तमाल बाला बेलि कोमल लौ लई।
हासि कुसुम उदित उरोजनि नेह नाजुक[७] नित नई।।७।।
निजु रस रीति प्रतीति बिपिन बसि तौ लहै।
रसिक अनन्य नृपति कौ संग समझि गहै।।
गह्यौ संग अनन्य नृपति कौ रंग लाग्यौ जब हियें।
भये साधम सिद्ध तिनके तिहीं छिन अनहीं कियें।।८।।
नित्य बिहार अधार श्रीहरिदासी दियौ।
बिपुल बिनोदनि देखि सु जनम सुफल कियौ।।

१. कुतुहल, कुतुहल जगानेवाली, अचम्भा, तमाशा, उत्सव, आनन्द, हास्यविनोद, विवाह का कंगना, कंकन की विधि। २. पूर्ण करते हैं, समर्पित करते हैं; सत्कार करते हैं। ३. मधुर ध्वनि से गाते हैं, बतराते हैं। ४. मधुरकंठवाली, कोकिल। ५. पतली कमरवाली। ६. उबिठी, अरुचि पैदा होना, ऊबना, जीभर आना, विरक्त होना। ७. सुकुमार, कोमल।

कियौ जनम सुफल सु अपनौं और प्रानी जे सुनैं।
संग मिलि स्त्रधा बढ़ै सुख दुर्लभ ब्रजजुवती जनैं।।९।।
स्यामा कौ आधार राजरस तो[१] कह्यौ।
सब रस कौ रस सार बिहार बिसद[२] गह्यौ।।
गह्यौ बिसद बिहार अपनौं जानि निजु कीनी मया[३]।
जैश्रीबरबिहारिनिदासि सुखनिधि दुलहिनी की दिन दया।।१०।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद— राग स्यामकल्याण, ताल–अद्धा तिताला

बिहारी तेरे नैंना रूप भरे।
निरखि निरखि प्यारी राधे कौं अनत न कहूँब टरे।।
सुख कौ सार समूह किसोरी उमँगि उमँगि अंकौं भरे।
श्रीललितमोहिनी की निजु जीवन उर सौं उरज अरे।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद— चौताल

मेरी अँखियाँ रूप के रंग रंगी।
निरखि सरूप कुँवरि राधे कौ याही माँझ पगी।।
छिन छिन प्रति अवलोकि माधुरी ना सोई न जगी।
श्रीहरिदासी जू ललित केलि हित याही में जगमगी।।

द्वितीय दिवस :— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग–गौड़ मल्हार, ताल–धमारि

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं रिझावत।
तैसीये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर
तैसौई मेघ गरजि मृदंग बजावत।।

---

१. तुझसे, तेरे को। २. स्वच्छ, चमकीला, सुन्दर, स्पष्ट, प्रकट, विस्तृत, विशाल। ३. मोह–माया, ममता, प्रेमबंधन, दया–कृपा।

तैसीये स्याम घटा निसि सी कारी
तैसीये दामिनि कौंधि[1] दीप दिखावत।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
रीझि राधे हँसि कंठ लगावत।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग आसावरी, ताल–रूपक

निकुंज बिराजिये जू।
नव जोवन जुगराज बिहारी बिहरत नव रति साजिये जू।।
मदन सदन मैदान बिपिन रन रुपे[2] हैं रसिक मन धीर।
वे उनके वे उनके छलबल तौलत गुननि गंभीर।।१।।
उबटि[3] बदन उमहे[4] मन रंजन संजन[5] सहज सुभाय।
अंजन अनी[6] नैंन सर सूधे भृकुटिन चाप चढ़ाय।।२।।
बिबि उरोज गज कुंभनि[7] पर अंचल चल ढाल ढुराय।
चँवर चिकुर[8] चमकत मनसिज के फौजन सिलह[9] सजाय।।३।।
कंचुकि कवच कसत कटि गाढ़े पीयरे बसन बनाइ।
बीरी[10] बसीठ[11] चुनौती दै सखि कीजिये जुद्ध अघाइ।।४।।
घोष[12] रोष हनि[13] बचन निसानें चढ़ि तुरंग[14] चित चाइ।
छोटी खुरी[15] कटाच्छनि खूँदत उपजत अगनित भाइ।।५।।

१. चमककर, प्रकाश कर २. जमें हैं, अड़े हैं। ३. सुगंधित लेप लगाकर। ४. उमंग में आना, प्रसन्न होना, उमड़ना। ५. बंधन, मेल, आलिंगन करना, आसक्त। ६. नोक, कोर। ७. कलश, हाथी के सिर का कुछ उभरा हुआ भाग जो दोनों ओर होता है। ८. केश, सिर के बाल। ९. हथियार। १०. पान की बीड़ी। ११. दूत, संदेशवाहक। १२. ध्वनि, घोषणा। १३. हनना, मारना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना। १४. घोड़ा। १५. घोड़े के टाप का चिह्न, पास-पास खुर रखना।

बोलत भृंग बखानत बिरदनि[१] सुनत सरस सहनाइ।
उमड़ि परत समुहाय[२] सुभट नट नख छत छबि रहि छाइ।।६।।
खंड खंड भये गंड[३] रदनि[४] छद[५] दै भुजदंड सहाइ।
लूटत महा माधुरी घूँटत घूमत अंग अंग घाइ[६]।।७।।
पीक कपोलनि पर सोनित[७] सद[८] सोहत सुरति सुमार[९]।
जीति रहे संग्राम सूर दोउ सम बल बैस उदार।।८।।
तजत न खेत[१०] हेत हठि गाढ़े अप अपने चित छोह[११]।
खेम[१२] कुसल[१३] सल[१४] फबी[१५] रौतई[१६] पाये निपट निलोह[१७]।।९।।
जै श्रीबिपुलबिहारिनिदासि खवासी करत रही अंग संग।
रसिक अनन्य सिरोमनि श्रीहरिदासी जू के प्रेम अभंग।।१०।।
गावत गीत मीत मिलि बैठे सब रिस रोस नसाइ।
सुरति समै के अंत उदित[१८] भये मुदित भये दुलराइ।।११।।
कहत सुनत सेवत जे यह सुख ते धनि कौतिक हार।
श्री वृंदाबन दिन बजत बधाई बलि बलि बिसद बिहार।।१२।।

तृतीय दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–मारू मिश्रित, ताल–धमारि

प्यारी तेरी बाँफिन[१९] बान सुमार लागैं भौहैं ज्यौं धनख।
एकही बार यौं छूटत जैसें बादर बरषत इन्द्र अनख[२०]।।

---

१. प्रसिद्धि, यश, कीर्ति। २. सन्मुख, सामने। ३. कपोल, गाल। ४. दाँत। ५. वस्त्र– दाँतों का वस्त्र, अधर। ६. अघाकर, छककर; घाव, रति चिह्न। ७. रक्त, खून। ८. सद्य, तुरंत, ताजा। ९. श्रेष्ठ काम, सु प्रयोग, श्रेष्ठ प्रहार। १०. रण भूमि, शैया। ११. प्रेम, स्नेह। १२. कुशल मंगल, सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा। १३. चतुर, निपुण, मंगल, क्षेम, प्रसन्न। १४. उचित, सही, ठीक। १५. शोभित हुई, जँची। १६. रावतपना, ठकुराई, प्रभुत्व। १७. नित्य नये, सजे हुए। १८. प्रकट, रति चिह्नों का प्रकट होना। १९. बरौनियाँ, आँख के बाल। २०. क्रोध, खीज, अनखनाकर, चिढ़कर।

और हथियार को गनैं री चाहनि[१] कनख[२]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं
प्यारी जब तू बोलत चनख चनख[३]।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग–मारू मिश्रित, ताल–धमारि

चलैं जू कौतुक◆ देखन जाहिं।
सूचत[४] सखी सुख प्रेम परस्पर नव जुवतिन मिलि माहिं।।१।।
गावति प्रेम भरी मन भावति फूली अंगन माहिं।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव नव दल सीतल छाँहिं।।२।।
बिबिध रंग चित्रित बीथिन[५] चलि बिमल जमुन जल न्हाहिं।
कोमल कूल मूल बंसीवट निकट अटक कछु नाहिं।।३।।
सुन्दर पुलिन[६] नलिन[७] नाना रंग अलि अवली अरुझाहिं।
उड़त पराग राग रंजित रस मत्त मुदित गुंजाहिं।।४।।
त्रिबिध पवन मृदु गवन परम रुचि परसत स्त्रम नसि जाहिं।
अति रति रुचि राजति संपति सुख दंपति हियें हिताहिं[८]।।५।।
तहाँ बिहरत द्वै मीत मनोहर बन बसि अनत[९] न जाहिं।
मृदु कुंदन मनिमय अवनी पर रवनी रवन रमाहिं।।६।।
आज समाज सहज सुख बरषत हरषत मिलि मन माहिं।
कोमल काम प्रेम मधुरे रस रहसि बहसि किलकाहिं।।७।।

पाठान्तर–चलौ। ◆ कौतिक। १. देखना, प्रीति से देखना। २. कनखियों से, आँख के कोरों से। ३. चिढ़कर, खीजकर, खीजकर जल्दी–जल्दी और आधे–आधे वचन बोलना। ४. सूचना बताने–जताने की क्रिया, संकेत, विज्ञापन। ५. गलियाँ, मार्ग, पंक्तियाँ। ६. नदी किनारे की बालू, रेत। ७. कमल। ८. प्रिय, भले, अनुकूल, हितकर लगते हैं। ९. अन्यत्र, और जगह।

मानौं मल्ल जुगल जीतन हित नित छल बलहिं तुलाहिं।
राती[१] गाती[२] छाती कसि कटि पीत बसन फहराहिं।।८।।
अंगराग[३] मर्दत भुज दंडनि मुख मंडित मुसिकाहिं।
बिनु बैंननि सैंननि सुख नैंननि चितै चितै इतराहिं।।९।।
हाव भाव भृकुटिन मटकत नट अटकि लटकि लपटाहिं।
अपनी अपनी गौं[४] गहि घातनि[५] बातनि बिहँसि रिसाहिं।।१०।।
कबहुँ कबहुँ जुरि जुरि अंग अंग मुरि परसत हूँ न पत्याहिं।
अति लावन्य[६] निपुन लाघवता[७] पुनि सनेह नियराहिं।।११।।
सकल कला कोविद[८] विद्यानिधि काहू धीरज नाहिं।
हाथापाई[९] करत नवल बल अति व्याकुल अकुलाहिं।।१२।।
छाँड़त गहत गहावत भावत अति रस मिस[१०] मिलि जाहिं।
गूढ़भाइ गाढ़े आलिंगन चुंबन सखी सिहाहिं।।१३।।
अति सुगन्ध समरंध[११] भये मिलि अलि नलिनी[१२] बलि जाहिं।
सहज सुरति रस मत्त परस्पर अंक निसंक समाहिं।।१४।।

मूलताल—

सुखद खुमारी[१३] कुंजबिहारी पुनि[१४] ऐंड़ाहिं[१५] जँभाहिं।
ये पुजवत[१६] वे निजवत[१७] इहि रस अँचै अँचै न अघाहिं।।१५।।

---

१. लाल। २. साड़ी, चादर आदि ओढ़ने का खास ढंग। ३. सुगन्धित लेप, उबटन। ४. काम निकालने का मौका, अवसर, लाभ का अवसर, युक्ति, गति, चाल। ५. कार्यसिद्धि का अवसर, ताक, दाँव-पेंच, छल-बल। ६. सुन्दरता, सलोनापन, सुशीलता। ७. लघुता, चतुराई, फुर्ती, त्वरा, तेजी। ८. प्रवीण। ९. हाथ-पाँवों का संघर्ष; ऐसे सामान्य लड़ाई जिसमें लड़नेवाले एक-दूसरे को हाथ-पैर के बल से मारते , पटकते हैं; उठापटक। १०. बहाना, ढोंग। ११. कामान्ध, मदनोन्मत्त। १२. कमलिनी। १३. नशा, मद, आँखों में छाया हुआ मद, नशे का उतार, नशा उतरते समय मालूम होनेवाली थकावट। १४. पुनः, बार-बार। १५. अँगड़ाई लेते हैं, अंगों को मरोरते हैं, ऐंठ दिखलाते हैं, इतराते हैं। १६. पूर्ति करते हैं। १७. ग्रहण, अंगीकार करते हैं।

श्रीबिहारिनिदासि लड़ावति त्यौं त्यौं अलकलड़े[१] लड़काहिं[२]।
उमा रमा को सची सरस्वती ब्रजजुवती ललचाहिं।।१६।।
तिनकौ दरस देव दुर्लभ जे आराधा[३] राधाहिं[४]।
भुव बसि[५] वृन्दाबन नहिं सेवत ते प्रानी पछिताहिं।।१७।।

चतुर्थ दिवस :- श्रीस्वामी जू कौ पद- राग-धनाश्री, ताल-चौताल

बेंनी गूँथि कहा कोउ जानैं मेरी सी तेरी सौं राधे।
बिच बिच फूल सेत पित राते को करि सकै एरी सौं राधे।।
बैठे रसिक सँवारनि बारनि कोमल कर ककही[६] सौं साधे[७]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा नखसिख लौं बनाई
दै काजर नखही सौं आधे।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद- राग-गौरी, ताल-ध्रुपद

मोहन मोहनी सुहेलरा[८] गाऊँ।
लाड़िलीलाल गहेलरा[९] लड़ाऊँ।।१।।
श्री वृन्दाबन घन सहज सोभा मन लोभा उपजावै।
जिनकौं कृपा करैं श्रीस्यामा तिनहिं सुन्यौ जस भावै।।२।।
बिपिन बिलासिनि प्रेम प्रकासिनि जो निजु प्रेमहिं पाऊँ।
ज्यौंहीं ज्यौंहीं कुंजबिहार करौ मिलि त्यौंहीं त्यौंहीं तुमहिं लड़ाऊँ।।३।।
सुनहु सहेली प्रेम गहेली[१०] कौतिक एक दिखाऊँ।
अंचल जोरि चितै तृन तोरौं तन मन मोद बढ़ाऊँ।।४।।

---

१. अत्यन्त लाड़िले। २. ललकते हैं, बलबती गहरी इच्छा, लालसा, अत्यधिक उत्सुक होते हैं, उमंग में भर जाते हैं। ३. आराधक, आराधना, उपासना करनेवाले। ४. श्रीराधा को। ५. स्थायी रूप से विराजित, रहा हुआ। ६. कंघी। ७. सँवारते हैं, ठीक करते हैं। ८. मंगल गीत, सुहावना, सुन्दर हेलमेल, प्रीति। ९. उन्मत्त, उन्मत्तता, लाड़बावले। १०. उन्मत्ता, लाड़बावली।

रायबेलि[१] सतवर्ग[२] सेवती[३] बिच बिच चंपे की कलियाँ।
रचि रचि चौसर हार गुँदैं[४] गुँदि[५] पहिरावनि चलि अलियाँ।।५।।
कुसुमित कुंज गुंज अलि माला चंदन चरचित[६] गलियाँ।
सुखद समीर बहत सौरभ जल कमल बिराजत थलियाँ।।६।।
सारस हंस चकोर मोर पिक चात्रिक भाषा भलियाँ।
गावत रस जस पिय प्यारी कौ सखि सुनि पग[७] प्रेम न टलियाँ।।७।।
कबहुँक बाल सलज्जस[८] पिय तन कबहुँ हँसत मुख मोरी।
कबहुँक निपुन सुरति सुख सागर नागर नवल किसोरी।।८।।
छिन छिन प्रति दंपति नव नव रति अंग अंग अभिरामा।
प्रथम समागम स्याम दिनहिं दिन दूलह दुलहिनि स्यामा।।९।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद— राग–बिहाग, ताल–धमारि

दूलहु दुलहिनि अधिक बनी।
पूजन चलीं कलपतरु सुन्दरि औरहिं ठान ठनी।।
कियौहै सखिन गठजोरि सबनि मिलि आगैं धन पाछैं जु धनी।
गावत चलीं गीत मंगल के सबहिं सुघर सजनी।।
रुनुक झुनुक पग धरति धरनि पर छबि पावत अवनी।
छिरकि सुगंध मूलतरु पूज्यौ फूलनि माल घनी।।
अंचल जोरि यहै बर माँगत रहौ यह प्रेम सनी।
श्रीरसिकबिहारिनि होहु न मान छकि केलि कला कवनी[१]।।

१. सुन्दर, सुगन्धित फूलोंवाली लता, बेला, मोंगरा। २. शतदल, कमल। ३. एक सुगन्धित फूल, सफेद गुलाब। ४. गूँथे। ५. गूँथकर। ६. चिन्हित, लेपित, छिड़की हुई। ७. पाँव; सराबोर होना, निमग्न होना। ८. लज्जाशील, विनम्र। ९. कमनीय, सुन्दर, कामना करनेयोग्य।

अंसनि[१] अंस जोरि भुज बल्लभ[२] भामिनि[३] जामिनि जागे।
बिलसत हँसत हँसावत रसबस अति आनंद अनुरागे।।१०।।
नौतन[४] तरल[५] तमाल लाल मिलि लता ललित फल फलियाँ।
देत असीस बिहारिनिदासी करहु नवल नित रलियाँ[६]।।११।।

पंचम दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–मल्हार, ताल–चौताल

नदित[७] मन मृदंगी रासभूमि सुकांति सुभ❂ नव गति त्रिभंगी।
धापि[८] राधा नटति[९] ललिता रसवती[१०]
नागरी गाइतेग्रि नाभि तान तुंगी[११]।।
रसद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका निसिदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी संगीत संगी।।

श्रीगुरुदेवजू कौ पद– राग–कान्हरौ, ताल–धमारि

❂चिरजियौ लाल रसाल प्यारीजू तेरौ लाड़िली कौ लाल।
चितवत चित वितहिं चुरावत मधुरे बैंन▲ श्रवन सिरावत
नैंननि ही पुनि देख्यौ भावत खिलौना सो तेरे मन कौ ख्याल।।
तेरे हित नित दरस परस हुलसि हुलसि हियौ सरसत
तू तन मन प्रान प्यारी तोसौं प्रेम परनि[१२] ढाल।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि मिले सुख मुख देखत होत निहाल।।

❂पाठान्तर–अभिनय–भाव व्यक्त करने की चेष्टाएँ। ▲बैंननि। १. भाग, हिस्से, कंधे। २. प्रिय, प्यारा, नायक, पति, अध्यक्ष। ३. प्यारी, सुन्दरी, क्रोध करनेवाली। ४. नूतन, नया, नवीन, अपूर्व, अद्भुत, अभिनव। ५. चंचल, चपल, तीव्रगामी, द्रव रसयुक्त, रसपरिपूर्ण, सघन। ६. क्रीड़ा बिहार, प्रसन्नता। ७. बजती हुई। ८. तृप्त होकर, तीव्रगति से चलकर। ९. नृत्य, अभिनय करना, मना करना। १०. एक सम्पूर्ण स्वर जाति की मधुर रागिनी, रसीली। ११. ऊँची। १२. प्रण, टेक, टेव, आदत, प्रवाह।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत; तू मन मोहिनी री मोहन हेत।।
तुम अति प्रेम प्रवीन हो प्यारी सुघर सिरोमनि जान।
मन क्रम बचन बिलासिनी मेरे तुम बिन गति नहिं आन।।१।।
तू तन तू मन में बसी प्यारी तू मम जीवनि प्रान।
तू सर्वसु धन मानिनी दै मोहिं मान रति दान।।२।।
भामिनी तुव[१] भुव छेप[२] हो प्यारी मोपै सह्यौ न जाय।
अंचल पल अलकावलि के अन्तर मन अकुलाय।।३।।
मो मन ऐसी होत है प्यारी तो तन में मिलि जाउँ।*
तुव मुख चंद चकोर लौं[३] नैंना पान करत न अघाउँ।।४।।
स्त्रवन सुजस रसना रसौं[४] तुव करत रहौं गुन गान।
जाँचत ज्यौं जल मीन लौं तुव दरस परस अघ्रान[५]।।५।।
तुव लावँनि गुननिधि आगरी[६] (प्यारी) अब जिनि करहु निदान।
पूरन प्रेम प्रकासिनी दै मोहिं अधर मधु पान।।६।।
तब ललित[७] बचन सुनि स्याम के प्यारी नैंननि में मुसिक्याइ।
ब्याकुल बिरह बिलोकि कैं प्यारी लिये हैं लाल उर लाइ।।७।।

श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–कान्हरौ, ताल–रूपक

*ऐसी जीय होत जो जीय सौं जिय मिलै तन सौं तन समाइ लेहुँ
तौ देखौं कहा हो (हो) प्यारी।
तोहिं सौं हिलगि[८] आँखि आँखिन सौं मिली रहैं
जीवत कौ यहै लहा हो (हो) प्यारी।।

१. तेरी, तुम्हारी। २. क्षेप, आक्षेप, फेंकना, आघात, चढ़ाना। ३. तक, पर्यन्त, समान, बराबर। ४. पान करता हूँ, पानकर रसमग्न होना। ५. सूँघना, सूँघकर तृप्त होना। ६. बढ़कर, श्रेष्ठ; कुशल, चतुर; खान, धाम। ७. सुन्दर, रमणीय; क्रीड़ाशील; सरल, प्रिय, निर्दोष। ८. प्रेम, आसक्ति, मेलजोल, परचने का भाव, घुलमिल जाने का भाव।

मैं मान कियौ तुम सौं कबै प्यारे कलपि कलपि कित लेत*।
मेरे प्रीतम प्रान हो पिय जीवन तुमहिं समेत।।८।।
(तब) लटकि लगी उर स्याम के प्यारी हुलसति हँसति उदार।
कोक निपुन नव नागरी बरबस किये सुकुमार।।९।।
भये मदन मत्त रस माधुरी सुख बरषत सुख न अघाइ।
निरखि हरषि रस फूलहीं श्रीललितादिक सुख पाइ।।१०।।
सुरति रंग में रंगि रह्यौ (हो) कुंज सदन सुखरासि।
श्रीबिपुलबिहारिनिदासि पर बलि नवल नागरीदासि।।११।।

मोकौं इतौ साज कहाँ री प्यारी हौं अति दीन तुव बस
भुव छेप जाइ न सहा हो (हो) प्यारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत राखि लै री बाहुबल
हौं बपुरा[१] काम दहा[२] हो (हो) प्यारी।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग-कान्हरौ, ताल-धमारि

*ए जू जानत हौ मेरे मन की मैं कब मान कियौ।
तुम मेरी जीवन जीय कौ ज्यौ[३] जानत हौ
कित मानत हौ पिय संभ्रम[४] बचन बियौ[५]।।
क्यौं अनबोले ह्वै रहे गहे[६] से मन
कहत बचन समुझाइ सुनत हँसि आयौ हुलसि हियौ।
श्रीबिहारिनिदासि प्रीतम प्यारी प्रति बोलत
खोलत कर कंचुकी कुच छलि मुख अमृत पियौ।।

---

१. बेचारा, दीन, अशक्त। २. दग्ध , जला हुआ, तप्त, दु:खी। ३. जी, जान। ४. व्याकुलता,घबड़ाहट, उतावली, जल्दबाजी; उत्साह; आदर, सम्मानयुक्त। ५. अन्य, दूसरा। ६. पकड़े, जकड़े के समान, पीड़ा, विपदयुक्त।

षष्ठ दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–परज–मारू मिश्रित, ताल–धीमा तिताला

प्यारी तेरी पुतरी काजर हूँ तें कारी मानौं द्वै भँवर उड़े री बराबरि।
चम्पे की डारि बैठे कुंद अलि लागी है जेब अराअरि।।
जब आनि[१] घेरत कटक काम कौ तब जिय होत डराडरि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
दोउ मिलि लरत झराझरि।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद– राग–आसावरी, होरी काफी मिश्रित; ताल–धीमा तिताला

चलि सखि देखन जाहिं कौतिक आजु भलौ री।
अपनी अपनी सौंज[२] साजि सब बेगि चलौ री।।१।।
सुखद तरनिजा[३] कूल फूल फूले कमल कली री।
तहाँ सारस हंस चकोर मोर झूमें आनि अली री।।२।।
फूली ललित लता द्रुमबेलि सोभा अमित बढ़ी री।
कूजित कोकिल कीर कुंज अट्टानि चढ़ी री।।३।।
अलि कुल कुसुम समूह सरस वितान तनैं री।
देखि तहाँ खेलत नवल नवेलि केलि कल हरत मनैं री।।४।।
बाजे बाजत रंग संच[४] सुर तार बनैं री।
बर किन्नरि[५] कठतार[६] बीन डफ सरस घनैं री।।५।।
गावत फाग सुहाग राग रस रंग पनैं[७] री।
सहेलिन कौ अनुराग भाग कवि कौन गनैं री।।६।।

---

१. आकर। २. सामग्री, सामान। ३. सूर्यपुत्री, यमुना। ४. एकत्र करना; रक्षण; कुशल; संग्रह, मिले हुए। ५. एक तरह का तम्बूरा, किंगरी, चिकारा, एक तरह की सारंगी। ६. करतार, हाथ से बजाने का एक बाजा, करतल ध्वनि, ताली। ७. पण, प्रतिज्ञा।

मुदित प्रिया पिय अंग अनंग विनोद करैं री।
सौंधे[१] सुरंग[२] अबीर[३] अरगजा[४] निसंक भरैं री॥७॥
गौर स्याम अभिराम बसन सुरंग बनैं री।
सारी सुमन सुबास पीत पट लसत तनैं री॥८॥
दोउ राजत अमित अपार सु सार बिहार करैं री।
उदित मदन मद मोद भुजा हँसि अंस धरैं री॥९॥
रति दान अधर रस पान बिलसत अंक भरैं री।
बिबि बिधु बदन निहारि नैंन रस रंग ढरैं री॥१०॥
बाढ़्यौ रंग अपार हार मुक्ता लर टूटी।
कंचुकि कसनि सुदेस कुसुम अलकावलि छूटी॥११॥
अति माधुर्य सनेह परस्पर बिबस भये री।
दोउ सुरति स्रमित अति जानि सहचरिन अंक लये री॥१२॥
यह फाग नयौ अनुराग सुहाग कह्यौ न परै री।
श्री वृन्दाबिपिन बिनोद कौन सुखसिंधु तरै री॥१३॥
सेवत सुख रुख जानि नये सिंगार ठये[५] री।
बलि बलि नागरीदासि की स्वामिनि नेह नये री॥१४॥

सप्तम दिवस :– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–धनाश्री, ताल–चौताल

दिन डफ ताल बजाबत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन स्रम बरषत भलैं मिलै रसिक किसोर किसोरी॥

---

१. सराबोर, डूबे हुए, एक सुगन्धित द्रव्य। २. सुन्दर रंग, लाल रंग, लाखी रंग; सुन्दर। ३. एक तरह का सफेद चूर्ण जो चन्दन आदि का चूर्ण होता है, एक तरह का लाल रंग जो होली खेलने के काम आता है, गुलाल। ४. एक सुगन्धित लेप जो चन्दन, केसर आदि मिलाकर तैयार किया जाता है। ५. ठांने, सजाये, तैयार किये; दृढ़ निश्चय के साथ आरम्भ किये।

बातनि बतबतात राग रंग रमि रह्यौ
इत उत चाहि चलत तकि खोरी।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सौं लता लपटि कंचन की थोरी।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— बना; राग–धनाश्री, होरी काफी, ताल–धमारि

श्रीवृन्दाबन सहज सुहावनौं, नवल नव नागरि ए,
नव नागर नेह निधान। बना हाँ हम्बै।।
होरी खेलन के मते, नवल नव नागरि ए,
दोऊ बनि बैठे करि ठान।। बना हाँ हम्बै।।१।।
मान मनावत प्रथमहीं दोउ करत परस्पर आन[१]।
रोंटि[२] मेंटि मिलि खेलहीं हँसि दिये हैं दुलहिनी पान।।२।।
नवल निकुंज बिराजहीं दोऊ रबितनया के तीर।
भृंग बिहंग[३] कुलाहला नव नव जुवतिन की भीर।।३।।
स्याम ओर की साँवरी गोरी के गोरे गात।
उमँगि चलीं चित चौंप[४] सौं अपनी अपनी गहि घात।।४।।
सब सखी मन अनुसारनी उन साज लईं सब सौंज।
लाल रतन मनि की कुंडी केसर की औंजा औंज[५]।।५।।
कस्तूरी करपूर सौं (जहाँ) साखि[६] कुमकुमा[७] आदि।
चंदन मलयागिरि घिस्यौ गौरा[८] मेद[९] जवादि[१०]।।६।।

---

१. शपथ, घोषणा; गौरव, मर्यादा; गर्व, हठ। २. रोंगटी, बेईमानी। ३. पक्षी । ४. इच्छा, चाह; चाव, उमंग; बढ़ावा। ५. उड़ेला–उड़ेली। ६. एक सुगन्धित पदार्थ, नव शाखा। ७. कुमकुम–केसर, कुमकुमा— लाख का बना पोला लड्डू जिसमें अबीर–गुलाल भरकर होरी में एक–दूसरे को मारते हैं। ८–९–१०. केसर, गोरोचन आदि सुगन्धित पदार्थ।

बाजे बाजत अनभती[1] सब मिले हैं संच सुरतार।
बीन अमरती[2] आवझी[3] बर किन्नरि[4] कठतार[5]।।७।।
गावत चैत[6] सुहावनौं मेरे पिय प्यारी के हेत।
खेलत मेलैं मिलवहीं (उन) बद्यौ है सबनि संकेत।।८।।
लै लावनि[7] लागैं कसीं बैंनी कटि सौं लपटाइ।
आधे कुच कंचुकि कसीं अति आनंद उर न समाइ।।९।।
आज्ञा लै सनमुख भईं (उन) दीनी है जुगति जनाइ।
अरगजा[8] पिचकारी भरीं दोऊ भरत परस्पर धाइ।।१०।।
चोबा[9] के चहले[10] मचे भए अंबर[11] अरुन अबीर।
हारि जीति नहिं समझहीं दोऊ अति रस मगन गंभीर।।११।।
फाग खिलावत फूल सौं दै सैनन ही सनकारि[12]।
नैंन कमल कज्जल भरे जहाँ मची है कटाच्छनि मार।।१२।।
इक झुकि[13] बैठी पीठ दै इक मानिनि ह्वै मुख मोरि।
एक मनावत दीन ह्वै इक पाँयनि परत निहोरि।।१३।।
दिन दुलहिनि कौं दुलरावहीं दिन दूलहु कौं दै गारि।
गावत सुख दै रुख[14] लियें मुख चुंबत भरि अँकवारि।।१४।।

---

१. अन्य भाँति, विचित्र रीति, तरह-तरह के। २. एक बाजा विशेष। ३. एक तरह का बाजा, ताशा। ४. एक तरह का तम्बूरा; किंगरी, चिकारा; एक तरह की सारंगी। ५. करतार, हाथ से बजाने का एक बाजा, करतल ध्वनि, ताली। ६. होरी का एक गीत, एक तरह का चलता गाना। ७. लटकनेवाला अंश; सुन्दरता; लगन-प्रीति। ८. एक तरह का सुगन्धित लेप जो चन्दन केसर आदि मिलाकर तैयार किया जाता है। ९. श्याम वर्ण का सुगन्धित द्रव्य, इत्र जो कई द्रव्यों को मिलाकर बनाया जाता है। १०. दलदल, कीच। ११. आकाश; वस्त्र । १२. संकेत करना, इशारा करना, इशारे से बुलाना। १३. क्रुध होकर, झुँझलाकर, खीजकर, चिढ़कर; बिगड़कर; झुककर। १४. चेहरा, मुख, मुख के भाव, मुखाकृति से प्रकट होनेवाला भाव; रुचि; कृपादृष्टि।

सौंधे[1] में सौंधी[2] सबै (अब) कौंन पिछानैं काहि।
सबहि प्रेम रस रंग रंगी (जहाँ) रहे हैं रसिक मुख चाहि[3]।।१५।।
मेरौ कुंजबिहारी कौतुकी यह कौतुक रह्यौ लुभाय।
मत्त भये रस माधुरी पीवत सुख दै धाय।।१६।।
होरी खेलत रंग रह्यौ सब गोरी लईं बुलाय।
इनमें को गोरी को साँवरी मोसौं कहौ स्याम समुझाय।।१७।।
स्याम कहैं गोरी सबै गोरी के तन मन स्याम।
निरखि बदन तन्मय भये यौं सुफल किये[*] सब काम।।१८।।
बातनि रहसि बहसि बढ़ी दोऊ यहि बिधि खेलैं फाग।
अपने रसिकनि की रस रीति कौ यौं प्रगट कियौ अनुराग।।१९।।
सखी सहेली सहचरी श्रीहरिदासी सुखरासि।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि कौं हँसि रीझि दई स्याबासि।।२०।।

रससागर श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव मार्गसीर्ष सु० ५

प्रथम दिवस :— श्रीस्वामीजू कौ पद— राग-भूपाली-केदारौ मिश्रित, ताल-चौताल

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हरि रास रच्यौ।
कुंज कुंज द्रुम बेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मनिन खच्यौ।।

---

१. एक सुगन्धित द्रव्य, सुवासित इत्र। २. अतर में सनी हुई, प्रेम में सनी हुई। ३. प्रेमपूर्वक देखना; देखना। * पाठान्तर — कियौ।

नृत्तत जुगल किसोर जुवति जन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
श्रीहरिदास के स्वामीस्यामा कुंजबिहारी
नीके री आजु प्यारौ लाल नच्यौ।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद — राग–काफी, ताल–धमारि

रस भीने बिहारी मन हर्‌यौ (हो), ऐसी जुवती धीरज धरै को।।
इक कौतिक देख्यौ सुनि सजनी आज तरनिजा तीर।
बिमल तमाल लता लपटी सब सुक पिक भृंगनि भीर।।१।।
हंस हंसिनी नलिन पुलिन मिलि पत्र बिलोल[१] समीर।
दंपति संपति सहज सु देखत बढ़ी मनसिज मन पीर।।२।।
सुभग बरन तन स्याम मनोहर सुन्दर नैंन बिसाल।
बंसी सरस मधुर सुर गावत गुन गन रूप रसाल।।३।।
हौं ही लेत प्रीति परचौ[२] अलि ये अति प्रेम प्रवीन।
पलक ओट बन बोलत डोलत व्याकुल तन मन लीन।।४।।
औचक[३] अचक[४] आय ऊभे[५] भये हौं ही सहज सुभाय।
कह्यौ कछु न लह्यौ मन कौ मतौ दरस परस अकुलाय।।५।।
कंप पुलक तन स्वेद भयौ भ्रम मोपै कह्यौ न जाय।
अति चंचल अंचल गहि मेरौ बचननि रुचि उपजाय।।६।।
तैंहूँ मान सयान[६] दृढ़ायौ मैं गाढ़े करि प्रान।
प्रीतम पानि[७] उरज परसे हँसि मनहुँ बिसिख[८] बर बान।।७।।

१. चंचल, अस्थिर, क्षुब्ध, सुन्दर। २. परख, जाँच, परीक्षण; परिचय। ३. अचानक, एकाएक; असमंजस । ४. अचक्के में, अचानक धोखे में; बहुत धीरे से; भौचक्का होना, विस्मित होना। ५. ठाढ़े, खड़े। ६. चतुर, बुद्धिमान्। ७. पाणि, कर, हाथ। ८. तीक्ष्ण, तीखे।

मूलताल—

बिह्वल[1] भये भाँवते पिय राखी उर कंठ लगाय।
बदन निहारि निवारि सकुच सखि अधर मधुर रस* प्याय॥८॥
सर्बसु श्रीहरिदासी कौ सर्वोपरि नित्यबिहार।
बिपुल[2] बिनोद[3] सदा वृन्दावन रसिक अनन्य अधार॥९॥
श्रीललितादिक सेवत सन्तत सुख बरषत हरषि उदार।
श्रीबिहारिनिदासि बिलास मगन मन मधुर प्रेम रस सार॥१०॥

द्वितीय दिवस :— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग–भूपाली–केदारौ मिश्रित, ताल–चौताल

जहाँ जहाँ चरन परत प्यारीजू तेरे
तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं।
बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावत
कोऊ बीरी खवावत एकब आरसी लै जाहीं॥
और सेवा बहुत भाँतिन की जैसीये कहैं कोऊ
तैसीये करौं ज्यौं रुचि जानौं जाहीं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौं भलैं मनावत दाउ उपाहीं॥

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग–काफी, ताल–धमारि

हो हो रंगीली नागरी हो।
रंग रत्ता[4] मत्ता[5] तेरे री नैंन बैंन सलौने[6] चाव[7]।
मोहि लिया मिठ बोलन डोलन मोहन रसिक राव॥१॥

---

*पाठान्तर—पिय। १. क्षुब्ध, अशांत, व्याकुल; घबड़ाये हुए; भावाभिभूत; आपे से बाहर; द्रवित, पिघले हुए। २.बृहत्, बड़ा, विस्तृत; अधिक, प्रचुर; गहरा, अगाध; रोमांचयुक्त; सम्मानित व्यक्ति। ३. क्रीड़ा, कौतूहल; मनोरंजन; मनोरंजक बात; प्रबल इच्छा; परिहास, प्रमोद; आलिंगन विशेष; विपुलविनोदनि–श्रीबीठलविपुलदेवजी का सखी नाम। ४. रक्त, अनुरक्त, रंगे हुए,आसक्त; सुर्ख, लाल। ५. मतवाले, मस्त, उन्मत्त; अति प्रसन्न। ६. लावण्यमय, सुन्दर। ७. तीव्र इच्छा,चाह, शौक; प्रेम, अनुराग; उमंग, उत्साह।

सॉंवली बैंनी मनौं अलि स्त्रेनी[१] सोहँदा[२] झब्बा अंत।
लटकि चली अलबेली रस बस कारन कामी कंत।।२।।
उज्जली जोति झलकदा मोती उच्ची नक्कु लवंग।
एक अलक झलक कपोलनि बिथुरी मोतिन मंग।।३।।
अधर मधुर रस चखियाँ अँखियाँ अंजन ऊपर लीक।
सेज सुरति रस केलि कलोलनि प्रेम परी सखि पीक।।४।।
चौसर चंप गुलाब दी[३] माला दलमली[४] अंग अंग।
कुंज भवन रवन रमी प्यारी पिय के रंग सुरंग।।५।।
चोली चित्र मित्रा अलि भीनी अंगराग अनुराग।
निसि जागे रति रंग मनोहर पागि[५] रहे गल लाग।।६।।
उच्च कुच्च नवरंगे[६] चंगे[७] अंचल अति उदार।
लाड़िली लाल लड़ाँवदा भाँवदा गाँवदा नित्य बिहार।।७।।
छैल छबीली की छाय रही छबि अंग अंग उर और।
कटि पट कच छूटी सर्वसु लूटि लियौ सिरमौर।।८।।

मूलताल—

सखी सब गल्ला[८] लखियाँ अँखियाँ कुंजन कीती[९] गल्ल।
सुनि सुनि सुख नेह सनेहिदा हँसि मिली मुख भल्ल।।९।।
श्रीकुंजबिहारी प्यारी पर वारी जीवन प्रीतम प्रान।
श्रीबिहारिनिदासि जथामति तुव गुन लावँनि रूप निधान[१०]।।१०।

१. विच्छेदरहित पंक्ति, दल, समूह, संघ। २. सुन्दर, शोभित, शोभायमान, मोहक। ३. की। ४. मसली हुई, रौंदी, कुचली हुई। ५. मग्न होना, सराबोर होना। ६. खिलते हुए सौन्दर्यवाले, अभिनव छबि से युक्त, नवीन रूप या शोभा से युक्त; क्रीड़ा, आनन्द, मौज से युक्त। ७. स्वस्थ; सुन्दर, चतुर, निर्मल, भले; पुष्ट। ८. शोर, हल्ला; क्रीड़ा, कल्लोल। ९. की हुई, किया हुआ। १०. आकर, खान, खजाना; आधार, आश्रय; धाम, घर।

तृतीय दिवस :— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग-भूपाली-केदारौ मिश्रित, ताल-चौताल

(ए) यह कौन बात जु अबही और अबही और अबही औरै।
देवनारि नागनारि और नारि ते न होहिं और की औरै।।
पाछैं न सुनी अबहूँ आगेहूँ न ह्वै है
यह गति अद्भुत रूप की और की औरै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
या रस ही बस भये यह भई और की औरै।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद— राग-मारू, ताल-धमारि

स्यामा नागरी हो प्रवीन।
सकल गुननिधान राजति नागर नेह नवीन।।१।।
नख सिख छबि रूप की रासि सोहत मोतिन मंग।
अलक झलक देखत छबि मोहे लाल अनंग।।२।।
कबरी[१] कुसुम ग्रंथित[२] कच तिलक बिन्दुली भाल।
बंक भृकुटि मोहत मन चपल नैंन बिसाल।।३।।
अति दुति ताटंकनि[३] छबि भ्राजत[४] लोल[५] कपोल।
अधर दसन मुसिकनि सखि मधुरे मधुरे बोल।।४।।
सुभग[६] नासा सोहत अति बेसर मनि लाल।
मुक्ता बहुभाँति लसत चिबुक[७] बिन्दु रसाल।।५।।

---

१. वेणी, चोटी। २. ग्रथित, गूँथे हुए, इकट्ठे बँधे हुए, क्रमबद्ध किये हुए, रचित। ३. कान का एक प्रकार का आभूषण। ४. शोभित होते हैं, शोभायमान होते हैं। ५. चंचल, क्षुब्ध; उत्सुक, लोभी। ६. सुन्दर, प्रिय, नाजुक, पतली; उपयुक्त। ७. ठुड्डी, ठोढ़ी।

कंठ पदिक[१] छूटीं लरैं मिहीं[२] जंगाली[३] पोति[४]।
हेम जटित चौकी छबि जगमगै अति जोति।।६।।
कुच जुग स्याम कंचुकी यौं राजत मोतिन हार।
उर अंबर[५] उडगन[६] मानौं कीनौं है उदगार[७]।।७।।
भुज मृनाल[८] जुगल[९] बलय[१०] झब्बा[११] फौंदा स्याम सुढार[१२]।
पुहुप[१३] सुरंग फूले मनौं मदन बिटप[१४] डार।।८।।
त्रिवली[१५] नाभि कटि नितंब[१६] किंकिनी[१७] सुरतार।
करभ[१८] जंघ जेहरि[१९] छबि नूपुर झनकार।।९।।
जुगल कमल अरुन चरन राजैं बहु भाँति।
नख मनिगन देखत छबि मोहन मन सांति।।१०।।
पचरंग[२०] ढिंग[२१] अरुन सारी लहँगा पीत दुकूल[२२]।
गोरे तन भोरे मन देखत लालहिं फूल।।११।।
निरखत छबि अंग अंग मोहे स्याम प्रवीन।
चकचौंधी[२३] लागी नैंननि लाल भये आधीन।।१२।।

मूलताल—

कुंज कुंज डोलनि बहु लीनें सखिन संग।
मुदित मोर निर्तत देखि दामिनी घन रंग।।१३।।

---

१. गले का एक आभूषण, जुगनू; रत्न। २. मिहीं, महीन, बारीक, पतली। ३. तूतिया, नीलाथोथा, नीली। ४. काँच; मणि के छोटे दाने की कंठी। ५. आकाश। ६. तारे समूह । ७. प्रकट हुए, निकले। ८. कमल की नाल। ९. जोड़े, युग्म, दो। १०. कड़े, कंकण। ११. बाँहों का एक गहना; गुच्छा, फूँदना। १२. सुडौल, सुन्दर। १३. पुष्प, फूल। १४. वृक्ष, पेड़। १५. पेट में पड़नेवाला बल, पेट में पड़ी तीन रेखाएँ। १६. कमर के नीचे का भाग। १७. कौंधनी, करधनी। १८. हाथी की सूँड़, हाथी का बच्चा। १९. पाँव का एक गहना, पायजेब। २०. पाँच रंगोंवाली। २१. किनारी। २२. रेशमी वस्त्र, चिकना और बारीक वस्त्र। २३. चकाचौंध, प्रकाश की प्रखरता से दृष्टि का स्थिर न रह सकना, आँख का झपकना; तिलमिलाहट, हैरानी; चौंधियाना।

दंपति रति सोहत अति बिलसत सुख सार।
श्रीललितादिक देखत दिन सर्बसु प्रान अधार।।१४।।
जै श्रीबरबिहारिनिदासि कृपा तें सेऊँ सुखरासि।
छिन छिन प्रति बलि बलि नवल नागरीदासि।।१५।।

चतुर्थ दिवस :— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग-भूपाली-केदारौ मिश्रित, ताल-चौताल

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि।
कंठसिरी[1] दुलरी हीरनि की नासा मुक्ता ढरनि।।
तैसौई नैंननि कजरा फबि[2] रह्यौ निरखि काम जिय डरनि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी रीझि रीझि पग परनि।।

मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ। (पृष्ठ १३ पर देखें)

✿

अनन्य मुकुटमनि श्रीस्वामी बिहारिनिदेव जू कौ प्राकट्य महोत्सव
सावन सु०३

प्रथम दिवस :— ऐसी रितु सदा सर्वदा (पृष्ठ ५ पर देखें)
निकुंज बिराजिये जू। (पृष्ठ ९ पर देखें)
द्वितीय दिवस— नाचत मोरनि संग स्याम (पृष्ठ ८ पर देखें)
चलैं जू कौतिक देखन जाहिं। (पृष्ठ ११ पर देखें)
तृतीय दिवस :— नदित मन मृदंगी रासभूमि (पृष्ठ १५ पर देखें)

---

१. गले में पहिनने का एक गहना, कंठी। २. फबना, शोभा देना; सजना, भला मालूम होना। फबि— शोभा, सुन्दरता, छबि; शोभित।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– साँवरी सहेली; राग–बिहाग, ताल–धमारि

मनमोहन भेष पलटि चले साँवरी सहेली अपनौं नाँउ बनाइ।
प्रेमसहेली सौं मिली श्री स्यामा मोहिं मिलाइ॥१॥
प्रेमसहेली यौं कह्यौ तू मेरौ सौ सीख सुभाव।
यौं मिलिये यौं बोलिये ज्यौं उपजे चित चाव॥२॥
तैं कह्यौ भलौ मन भाँवतौ अब बन्यौ (है) दाव उपाव।
हौं देहुँ कहा सुख तेरौई सखि तोमें सबहि समाव॥३॥
जो तू कहिहै सोई करिहौं सखि तेरे पाँयनि पाँइ[1]।
बातनि हिलि मिलि रंग रह्यौ फूली अंग न माइ[2]॥४॥
प्रेम सहेली कुंज में साजैं सकल सिंगार।
केस कुसुम बैंनी गुही सौंधे सरस सुढार॥५॥
जूरे* चम्पौ जगमगै मधि मुक्तामनि लाल।
बिच बिच मल्ली मौलसिरी झब्बा सुरंग गुलाल॥६॥
पटियनि प्रेम बनाइ लिख्यौ अरुन सरस सीमंत[3]।
भ्रम तम स्त्रम सब दूरि होत सीसफूल[4] हुलसंत[5]॥७॥
सेंदुर कौ तिरछौ तिलक बिच मृगमद बिंदुली बनाइ।
तन मन निरखि हरषि भयौ रीझि प्रियाजू की पाइ॥८॥
अति बाँकी भौहैं सोहैं अंजन नैंन बिसाल।
चितवत चितहिं चुरावहिं जुवति वृन्द नव बाल॥९॥

---

* पाठान्तर – जूरौ। १. चरणों में चरण धरना, अनुगत होना, जो कहे सो करना। २. समाना, अटना। ३. सिर में निकाली हुई माँग। ४. सिर पर पहिनने का एक गहना। ५. उल्लसित होना, आनंदित होना, स्फुरित होना, उमड़ना, शोभित होना, उल्लसित करना।

खुटिला[१] खुभी[२] जराव के अवतंसनि[३] मनि लाल।
बेसरि मुक्ता झलमलै अधर मधुर सु रसाल॥१०॥
दसनावलि कल कुंद लौं मुख हँसत लसत बहु भाँति।
रवि ससि कोटिक दामिनी सकुचि दुरति[४] लजि जाति॥११॥
रसनावलि[५] गुन गन गनैं जाँचति रति सुख सार।
चंदन बन्दन कौ झलक चिबुक चखौंडा[६] चार[७]॥१२॥
कंठपदिक छूटी लरैं उज्जल जलज[८] सुदेस[९]।
राते[१०] डोरा दुरंग भये पहिरैं प्रेम अवेस॥१३॥
अतलस[११] की अँगिया लसत अति आनंद उदित उरोज।
हँसति दुरति अंचल मुख दै तन घन मुदित मनोज॥१४॥
बिबिध बरन बहु भाँति जाति सारी सुमन सुबास।
लहँगा महँगा मोल नहीं कोमल विमल विकास॥१५॥
कर पहुँची चारि चारि चूरी कंकन बलय बाजूबन्द।
अँगुरिन मुँदरी सुन्दरी नखनि लसत सत इन्दु॥१६॥
अर्धचन्द बाँकी चौकी उपमा देहुँ सु काहि।
झाबनि[१२] पर फौंदा फबै मानौं उपजे हैं मदन उमाहि[१३]॥१७॥
त्रिवली[१४] उदर सुहावनी मधि मोहन नाभि गंभीर।
छीन[१५] मध्य कटि किंकिनी मुखरित[१६] मुदित अधीर॥१८॥

---

१. करनफूल। २. कान में पहिनने की कील या लौंग। ३. बाली, करनफूल, टीका, मुकुट, आभूषण, हार। ४. छिपना, छिपती। ५. जीभ। ६. दिठौना। ७. चारु, सुन्दर, रुचिकर। ८. मुक्ता, मोती। ९. उपयुक्त स्थान, सुन्दर देश, अच्छा सुन्दर। १०. लाल। ११. एक तरह का महीन रेशमी कपड़ा।१२. बाँहों का एक गहना, गुच्छा, फुँदना। १३. उत्साह, उमंग, आनन्द; उमड़ना, उत्साहित होना; आवेश में आना। १४. पेट में पड़नेवाला बल, पेट में पड़ी तीन रेखाएँ। १५. पतली; दुबली-पतली। १६. ध्वनित, शब्दायमान।

सुन्दर सुभर[१] नितम्बिनी[२] जंघनि मनि मौज[३] बिलोल[४]।
सरस स्निग्ध[५] सुवन[६] बनी गुल्फ[७] पिंडुरिया गोल।।१९।।
पगनि घूँघरा बाजने एड़ी अँगुरी लाल।
लटकि चलति गज गति लजति सीखत सुगति मराल।।२०।।
चूरा[८] चौका[९] चाँदिनी पग नखनि दसहुँ दिसि जोति।
जित ढरि चरन सुधरनि धरति तित प्रीति प्रगट ही होति।।२१।।
अंग अंग निहारति मन हरति आरति[१०] तन मन काम।
प्रेम सहेली लै चलीं नवल कमल कुंज धाम।।२२।।
मेघ महल परदा फुही बहु बादर बिमल बितान[११]।
अद्भुत बन आनंदमई तहाँ राजैं (श्री) स्यामा रसिक निधान।।२३।।
रतन खचित सारौट[१२] पर बैठी बनी विस्तार।
प्यारी प्रीतम कौ हित चित धरै हुलसति[१३] हँसति उदार।।२४।।
सोहत सखी समूह में जीति मदन भई भूप।
पचरंग छत्र चँवर ढरै मन मोह्यौ स्यामा रूप अनूप।।२५।।
प्रेमसहेली फिर चितयौ कछुक सिखै लई लाज।
चली चली जब निकट आई चंचल सहज बिराज।।२६।।

---

१. घनी, प्रचुर; अच्छी तरह भरी हुई; सुपुष्ट। २. कमरे से नीचे का भाग। ३. लहर, हिलोर; सुख, आनन्द; समृद्धि; उमंग में दिया हुआ दान। ४. चंचल, अस्थिर; क्षुब्ध। ५. चिकनी, कोमल, मृदुल; सुन्दर, प्रिय; घनी; अनुरागयुक्त, प्रेमयुक्त; कांतिमय। ६. पुष्प, पुष्प समान कोमल; सुगन्धमय। ७. एड़ी के ऊपर की गाँठ, टखना। ८. हाथ का या पैर का कड़ा; कंकण; पैर का कड़ा। ९. चार वस्तु का समूह, चार रत्नों का समूह, आगे के चार दाँत; सीसफूल। १०. क्लेश, पीड़ा, मनोव्यथा, बेचैनी। ११. विस्तार, फैलाव; चाँदनी, चँदोवा। १२. चौकी, बाजोट, ऊँचा आसन, ऊँचे आसन जैसी सेज। १३. उल्लसित, आनन्दित होना, स्फुरित होना,उमड़ना; शोभित होना।

चौंकि परी चितयौ सबनि यह को आई आन[१]।
प्रेमसहेली यौं कह्यौ यह सरस निपुन गुन गान।।२७।।
एक प्रेम सबहिन भयौ लै आई बर बाम।
प्रेमसहेली आगें ह्वै बोल लई निज नाम।।२८।।
प्रेमसहेली यौं कह्यौ यह मेरे कुल सील समान।
सरबस प्रेम हियौ सच्यौ लै मिली अप बपु प्रान।।२९।।
देखत मन औरै भयौ आदर कियौ सराहि[२]।
नवल किसोरी यौं कह्यौ तू मो ढिंग तें जिनि[३] जाहि।।३०।।
नख सिख सुन्दर मोहिनी श्री स्यामाजू के प्रान।
अंग अंग रस बरसहीं नागरि सुघर सुजान।।३१।।
नवलकिसोरी यौं कह्यौ मोहिं अपनौं सो सिंगार सिखाय।
सुनत स्त्रवन मन सुख* भयौ सीखौ बलि कह्यौ लड़ाय।।३२।।
पानि परसि हँसि लै चली नव केसर की कुंज।
अरुन स्याम सित पीत मधुप गावत रस जस पुंज।।३३।।
प्रेमसहेली पहिले ही रचि सचि सीतल सेज।
सकल सौंज उपयोग भोग प्रानप्रियाजू के हेज[४]।।३४।।
तन रोम हरषि पुलकावली कीनौं कुंज प्रवेस।
काम कुंज अभिरामहीं बहु भाँतिन बढ़्यौ अवेस।।३५।।

मूलताल—

अब कछु राग सुनाइ सखी रही रुख लियें मुख चाहि।
प्रगट प्रेम न जनावहीं गावत उमहि उमाहि।।३६।।

---

१. अन्य, दूसरी। २. प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई। ३. नहीं, मत। ४. प्रेम, स्नेह, लाड़। * पाठान्तर—मोद।

जाके गावत तान तरंग अनंग नचै लीनी कंठ लगाइ।
भेंटत भुजनि भरम गयौ मिलि अंग अंग समाइ।।३७।।
मधुर प्रेम रस सिन्धु बढ़्यौ गई निसि नसि भयौ भोर।
बिलसत हँसत न जानहीं भोरहु जुगलकिसोर।।३८।।
प्रेमसहेली के प्रेम कौं गावत ललना लाल।
छिन छिन प्रति रति बिस्तरत करत प्रान प्रतिपाल।।३९।।
जो तुम मेरे प्रानपियारे रंगभरे उमँगि ढरे रसरासि।
तौ हौं तुम्हरौ जस गाऊँ दिन दुलराऊँ
तू तौ मेरी जीवनि बिहारिनिदासि।।४०।।

चतुर्थ दिवस :– प्रात:काल श्रीस्वामीजू कौ पद–राग–भैरवी, ताल–चौताल

सौंधे न्हाइ बैठी पहिरि पट सुन्दरि
जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवति अलकैं।
कर नख सोभा कल केस सँवारति
मानौं नव घन में उडगन झलकैं।।
बिबिध सिंगार लियें आगें ठाढ़ी प्रिय सखी
भयौ भरु[1] आनि रतिपति दल[2] दलकैं[3]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
छबि निरखत लागत नहिं पलकैं।।

---

१. आक्रमण, मुठभेड़; आधिक्य, बाढ़। २. समूह, संघ; सेना। ३. विदीर्ण होना, दरकना; काँपना, डगमगाना, त्रस्त होना।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद-[झूमका] राग-बिलावल, ताल-धमारि

मेरे पियप्यारी कौ झूमका[१] सखि कहत परस्पर प्रेम।
लाल बलि लाड़िली हो।।
ये दोउ निमिष न बीछुरैं सखि इनहिं प्रेम कौ नेम।।१।।
प्रथम लड़ैती गाइहौं जाकौ श्रीवृन्दावन धाम।
पुनि रसिक रंगीलौ गाइहौं जाकौ कुंजबिहारी नाम।।२।।
नख सिख सुन्दर सोहईं दोउ अद्भुत रूप अपार।
एक प्रान तन द्वै धरैं अति मधुर प्रेम रस सार।।३।।
पहिलौ झूमक ताहि कौ जाकौ सोहत सहज सुहाग।
दूजौ झूमक ताहि कौ जाकें* बाढ़त अति अनुराग।।४।।
पूरन प्रेम प्रकासिनी श्रीस्यामा अति सुकुँवारि।
मोहन जू के नैंन चकोर लौं ससि जीवत बदन निहारि।।५।।
नव चंपक तन कामिनी पिय सुभग साँवरे अंग।
दोउ समबैस बिराजहीं लजि लागत पगनि अनंग।।६।।
नित नवलकिसोरी नागरी नित नागर नवलकिसोर।
प्रेम परस्पर झूमहीं जुरि दोऊ नव जोवन जोर।।७।।
तन मन अरुझि न सुरझहीं दोउ मगन मदन मद मोद।
प्रेमसहेली सुन्दरी दोउ दौरि लिये गहि गोद।।८।।

---

१. झूमर– होली में गाये जानेवाले गीत के साथ होनेवाले नृत्य; साड़ी, दुपट्टे आदि में लगे हुए मोती के गुच्छे; सिर में पहनने का एक गहना, कान में पहनने का एक गहना जो कान की तरकी से लटकता रहता है; यहाँ पर तत्सुखभाव से एक-दूसरे को आनन्दित, प्रफुल्लित देखकर परस्पर प्रेम रस में झूमना, लहराना; लड़खड़ाना। * पाठान्तर – जाकौ।

झूमत झूमत आवहीं छबि अंसनि झूमक बाहु।
कुंज कुटी तन मन दियें दोउ फूलत नागरी[1] नाहु[2]।।९।।
झूमक झब्बा* झलकहीं नीबीबंद बाजूबन्द।
तरकि तरकि बंद टूटहीं सुख लूटत अति आनन्द।।१०।।
स्याम अधर अंजन भए मिलि राते[3] नैंन कपोल।❁
स्त्रमजलकन बदन बिराजहीं मानौं नवमुक्ता निरमोल।।११।।
अब औरै छबि छाजहीं[4] सखि देखौ मन दै धाइ।
अपनौं सर्बस साँवरौ लेहु ललना लाल लड़ाइ।।१२।।
झूमक सारी झूमहीं सखि पहिरैं झूमक दैहिं।
हरषि हरषि रस बरषहीं सखि निरखि निरखि सुख लैहिं।।१३।।
श्रीवृन्दाबन दिन झूमका सखि झूमि रह्यौ फल फूल।
सुनि मन मुदित सबै आईं झूमि कालिन्दी के कूल।।१४।।
मेरे कुंजरवन कौ झूमका गुन गावत कोकिल कीर।
प्रेम उमँगि हियौ भर्‍यौ सुख झूमत जमुना नीर।।१५।।

❁अरुनाधर अंजन रंजित ह्वै बिथके[5] अलि बंध[6] कलोलनि[7] में।
बिथुरी[8] अलकैं सिथली पलकैं जु लखी ललिता गति गोलनि[9] में।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि कहैं बलि चाल डगमगी डोलनि में।
मुसिक्यानि सयानि पिछानि प्रिया पिय की कछु पीक कपोलनि में।।

---

*पाठान्तर– झाबा। १. चतुरा, दक्षा, कुशला, निपुणा। २. नाह—नाथ, अधीश्वर, पति। ३. लाल। ४. फबती है, शोभा देती है, शोभित होती है। ५. थकित हो गये, मुग्ध हो गये; चकित हो गये। ६. बंधन; बाँधने का साधन; रति का कोई (मुख्य) आसन। ७. क्रीड़ा, केलि; मौज, आनन्द; लहर; कुछ ऊँची और आवाज करनेवाली लहर। ८. बिखरी हुई, अलग-अलग हुई, खिली हुई। ९.आँख की गोलक।

माते मुदित सिलीमुखा[१] झूमि देत मधुर सुर घोर।
आनंद उमँगि अलापहीं कल नाचत मोर चकोर।।१६।।
झुंडनि झुंडनि मृगा मृगी जुरि नैंननि झूमक देहिं।
सुन्दर बदन निहारहीं सुर सब्द स्त्रवन भरि लैहिं।।१७।।
निरखि निरखि मुख रुख लियें बहुरी सब सीस नवाइ।
तन मन गुन अर्पन कियौ सुख दीनौं दुहुँनि अघाइ[२]।।१८।।
तब उनमान्यौं[३] मन कौ मतौ सखि लै चली सुहित जनाइ।
सुंदर पुलिन सरस कन झलकत कमल कुमुद[४] देखौ आइ।।१९।।
तहाँ सारस हंस प्रसंसित झूमक देत सुगतिन दिखाइ।
प्यारी हार पीताम्बर पिय सौं रीझि दियौ सुख पाइ।।२०।।
आगें उमँगि चलत लटकत सखि झूमक दै दुलराइ।
तहाँ नये नये रस छाकत कौतिक उझकत[५] छबि रहि छाइ।।२१।।
कदली कुंद कदम्ब अंब बन बीथिन[६] बर बिरमाइ[७]।
तन बन किधौं बन तन भयौ कछु ब्यौरौ[८] बरन्यौ न जाइ।।२२।।
मनि मंडल मुक्ता महल बहु रतनसार चित्रसाल[९]।
कनक कलस छाजे झलकत बहु झूमत रतन प्रवाल[१०]।।२३।।
मधि मंजुल नव कुंज किसलय[११] दल सीतल सेज सुरंग।
कोमल कुसुम सरस सौरभ सब सम पराग बहु रंग।।२४।।

---

१. सिलीमुख—भ्रमर, भौंरा; सिलीमुखा—भौंरे। २. छककर, तृप्तकर, जीभरकर; छकना, तृप्त होना, जी भरना, प्रसन्न होना। ३. नापा, तौला; जाना, अनुमान लगाया; प्रत्यक्ष समझा। ४. कुईं, रक्तकमल; रात्रि में खिलनेवाली कमलिनी। ५. उचकते, चौंकते हुए। ६. गलियाँ, मार्ग। ७. रोकना, अटका रखना ठहरना, विश्राम कराना। ८. विवरण, भेद, एक-एक बांत को अलग-अलग स्पष्ट कर कहना। ९. वह भवन, मंडप आदि जिसमें बहुत से चित्र लगा रखे गये हों, जहाँ चित्रकला का प्रदर्शन किया जाय। १०. पल्लव, कोंपल, नये कोमल पत्ते; मूँगे। ११. कोंपल,पल्लव।

मूलताल—

जाके परदनि द्वार झरोखनि झूमत मनसिज मदन अनंग।
तहाँ बैठे रीझि सराहि[१] रसिकवर निरखि हरषि अंग अंग।।२५।।
चिबुक टटोरत छंद बंद छोरत परसत हँसत उतंग[२]।
याही रस खेलत पुनि पुनि पिय प्यारी लेत उछंग[३]।।२६।।
अंगराग अनुराग रँगे दूलह दुलहिनि द्वै देह।
सहचरि कहत सुरति सुखसागर झूमौ सहज सनेह।।२७।।
जै जै श्रीहरिदास प्रताप चरन बल विपुल सु प्रेम प्रकासि।
मेरे गौर स्याम कौ सरस झूमका झूमि बिहारिनिदासि।।२८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद— राग–भैरवी, ताल–तिताल

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी जै स्वामी।
अद्भुत रूप अनूप निरखि बपु गुननिधि पूरनकामी।।
सुन्दर चरन तरन भवसागर पद रज परसत पामी[४]।
कटत पाप संताप जनम के दरस प्रकासित धामी।।
पिंडुरी जंघ नितंब निरखि छबि कटि सुदेस अभिरामी।
त्रिवली नाभि उदर रोमावली हृदयमाल दरसामी।।
कंठ चिबुक मुख नयन नासिका भृकुटी स्त्रवन सुठामी[५]।
मस्तक तिलक नाम अंकित बपु पीताम्बर सिरनामी[६]।।१।।

जै राधे जै राधे राधे जै राधे जै राधे।
गौरागी नीलांबर भूषित भूषन ज्योति अगाधे।।

---

१. प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई। २. ऊँचा, ऊँचे। ३. गोद, अंक। ४. पवित्र होते हैं, शुद्ध होते हैं।
५. सुन्दर, अच्छे। ६. सिर नवाता हूँ, प्रमाण करता हूँ; आत्मसमर्पण हूँ।

सहचरि संगनि स्याम धामिनी पुजवति[1] मन की साधे[2]।
रसिकबिहारिनि कृपा निहारिनि पीताम्बर आराधे।।२।।

श्रीस्वामी सहचरिसरनदेव जू कौ पद—

बाँकी पाग चंद्रिका तापर तुर्रा रुरकि रहा है।
बर सिरपेंच माल उर बाँकी पट की चटकि अहा है।।
बाँके नैंन मैंन सर बाँके बैन बिनोद महा है।
बाँके की बाँकी झाँकी करि बाकी रही कहा है।।३।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

लड़ैतीजू के चरन महा सुखदाई।
इनहीं निरखि लाल भए प्रीतम करत केलि मन भाई।।
कबहुँक सपरस करि आनंद में राखत कंठ लगाई।
येई चरन हमारे मस्तक अब डर करत बलाई[3]।।४।।

बिहारिनि संग निरन्तर मेरे।
जिनकी कृपा लाल रहैं बांछित जीवत याही हेरे[4]।।
निकसि न सकत रूप सागर तें परे प्रेम रस फेरे[5]।
ऐसी ललितकिसोरी प्रीतम कहा जगत के डेरे[6]।।५।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद—

चारु चिबुक बदनारविन्द पर हीरा ललित बिराजैं री।
सुन्दर चख मुसिक्यानि मनोहर निरखि मदन सचु लाजैं री।।

---

१. पूरा करना, सफल करना। २. कामना, इच्छा। ३. बला-कष्ट, आपत्ति, आफत, भूत-प्रेत बाधा। ४. देखकर, निहारकर। ५. घुमाव, भ्रम, चक्कर; आवर्त; फेरा। ६. बायें, विरुद्ध, प्रतिकूल।

मनमोहन कौ मन मधुकर हाँ कंज भाल पर भ्राजैं री।
कुंजमहल रस प्यारी पिय कौ रसिक रूप सिरताजैं री।।६।।

बिथुरी अलकैं स्रमकन झलकैं घूमत पलकैं प्यारी की।
उपजत किरन तरुन तन तेरे ललित कपोल किनारी की।।
प्रतिबिंबित छबि अद्भुत बैंनी लटकि चाल सुकुमारी की।
रीझि रसिकवर ललित छबीलौ लाल केलि उर धारी की।।७।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

बिहरत लाल बिहारिनि दोऊ श्रीजमुना जी के तीरें तीरें।
अद्भुत अखंड मंडल भुव पर बर भामिनि भुज भीरें भीरें।।
कुंज गगन घन अलक बदरिया चलत परस्पर सीरें सीरें[१]।
उपजत किरन कपोल बिमल हँसि लसि दसनावलि हीरें हीरें।।
तामें द्वै ससि स्त्रवत सुधा स्त्रमजलकन मुख छबि नीरें नीरें[२]।
लोचन चारु चकोर चितै हित पीवत अधीर न धीरें धीरें।।
उमँगि मिलत अनुराग नवल बर कल कुंडल चल बीरें बीरें[३]।
श्रीबिहारिनिदासि सुरझत नहिं तन मन
अरुझि अरुन पट पीरें पीरें।।८।।

सन्ध्या समय–हिंडोरे के पद–श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–मल्हार, ताल–धमारि

हिंडोरैं ब झूलत लाल दिन दूलहु दुलहिनि बिहारिनि
देखौ री ललना।
गौर स्याम छबि अति दुति बहु भाँति री बलना[४]।।

---

१. धीरे–धीरे; स्वाधिकारपूर्वक। २. नियरे; पास–पास; उज्ज्वलता–तरलता से युक्त। ३. कान का एक गहना। ४. भारी; शक्ति संचार करनेवाली; बलिना–न्यौछावर होना।

नीलांबर पीतांबर अंचल चलत धुजा फहरात कलना[१]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
बिहारिनि अविचलना।।१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—

हिंडोरैं ब झूलन आई नई रितु सावन तीज सुहाई।
कुंज कुंज तें निकसि हरी भूमि अरुन बरन मानौं
इन्द्रबधू सी श्रीस्यामा जू हरषि बुलाई।।
अपनें अपनें मेल मिलीं अनुराग मल्हारहिं गावत
ताननि रुचि उपजाई।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम के संग
बाढ़्यौ रंग अंग अंग रीझि रिझाई।।२।।

श्रीगुरुदेव जू के पद— राग–मल्हार, ताल–चौताल

हरियारौ सावन सुहावनौं मन भावनौं लागत अति नीकौ।
इन उन बन में बदरनि की छहियाँ गहि बहियाँ
बोलत डोलत बन बन तैसौई संग सबही कौ।।
जहाँ तहाँ झुलावत झूलत जुगल नवल रीझि रिझावत
आवत अनुराग भरे* राग रंग प्यारी पी कौ।
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासि कहति दरसत जे यह सुख दिन
धन्य धन्य भाग त्रिया तिनही कौ।।३।।

---

१. सुन्दर; शब्दयुक्त। * पाठान्तर —भरि।

रस भरे प्रान प्रिया पिय झूलत फूलत अंग संग सरस हिंडोरैं।
अति आतुर आसक्त भये बस भृकुटी कटाक्ष झकोरैं।।
छूटि टूटि गये हार बार बंद छोरत छबि बहु भाँति निहोरैं[1]।
श्रीबिहारिनिदासि सुख देत निरन्तर पिय प्यारी
यौं हँसि मुख सौं मुख जोरैं।।४।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद– राग–सारंग–मलार, ताल–रूपक

अपनी जू नवल प्रिया संग नवल हिंडोरैं लाल झूलत हैं।।
जै श्री वृन्दाबन घन सहज सोभा आनंदसिंधु न थोर।
जहाँ सुभग जमुना कूल कमल जु सारस हंस चकोर।।
बोलत मधुर सुहावने अति मधुप कलरव घोर।
नवकुंज कोकिल कीर चात्रिक गावत जस चहुँ ओर।।१।।
तैसिये पावस रितु भली घन मंद गरजनि घोर।
तैसिये दामिनि धनुष चहुँदिसि बोलत मोरी मोर।।
तैसिये भूमि सुहावनी सखी हरित नाना भाँति।
रही अति छबि छाइ जित तित चन्द्रबधुनि की पाँति।।२।।
नव लता ललित तमाल पल्लव बिबिध नाना जाति।
अति प्रेम भरि अनुराग झूमी फूल फल बहु कांति।।
रचित कुसुम बितान नाना बहत त्रिविध समीर।
निरखि संपति बिबस ह्वै मन बढ़त मनसिज पीर।।३।।

---

१. निहोरा करना, प्रार्थना करना; आराधना करना, मनाना, आभार स्वीकार कराना; खुशामद करना।

तहाँ रच्यौ है रंग हिंडोरना सखी सहज चंपक कुंज।
नव केलि नाना सुखद संपति सरस सौरभ पुंज।।
रमकि[१] झूलैं नवल दोऊ गौर साँवल गात।
पीत पट छबि सुरंग सारी अंचल धुजा फहरात।।४।।
सप्तसुर मिलि मधुर दोऊ करत हैं गुन गान।
तैसियै सहचरि संग गावत संच सुर बंधान।।
राग रागिनि मिलै प्यारी लेत विकट सुर तान।
सुनि थकित नागर चरन गहि सखि रीझि बारति प्रान।।५।।
बढ़त अति अनुराग छिन छिन करत नव नित रंग।
यह सुरति सागर मधुर जोरी सहज प्रेम❀ अभंग।।
तैसियै सुखद बिहार स्वामिनी[२] दासि नागरी संग।
तोरि तृन बलि जाय छबि पर बारति कोटि अनंग।।६।।५।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद— राग–परज–मारू मिश्रित, ताल धमारि

(सु ए री माई) झूलत ललना लाल हिंडोरैं;
राजैं सुभग स्याम तन गौरैं।
अंग अंग हरषत सुख बरषत मिलि मन करषत
नैंननि सौं नैंना जोरैं।।
उपजत मौज मनोज चोज रति सुरति रंग दुहुँ ओरैं।
श्रीनागरीदासि बलि बिचित्र बिहारिनिदासि मिलैं सुख
बिहरत जुगलकिसोरैं।।६।।

❀पाठान्तर–संग। १. लहर, तरंग; पेंग (झूले की)। २. श्रीबिहारिनिदासि जू।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद– राग–मारू, ताल–धमारि

हिंडोरैं झूलत तन सुकुमार।
पुलकि पुलकि राधे उर लागत प्रीतम प्रान अधार॥
भाये बसन सजे मनसिज के उर बर हार सुढार।
सुख में झूलति कुँवरि लाड़िली रमकत स्याम उदार॥
जुगल रूप अनूप बिराजत मनमथ भेद अपार।
श्रीरसिकबिहारी कौ सुख निरखत खरे* कुंज के द्वार॥७॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद– ताल–रूपक

प्यारी राधे सावन मन भावन भयौ चलि सुरति हिंडोरैं झूल॥१॥
प्यारी राधे माथे मुकुट सुहावनौं अरु नाचत सिखर चढ़ि मोर॥२॥
प्यारी राधे घन गरजत मुरली बजै
अरु दामिनि मुरि मुसिक्यानि॥३॥
प्यारी राधे बचन रचन कल कोकिला
अरु मुक्तावलि बग पाँति॥४॥
प्यारी राधे स्याम घटा तन अति बन्यौ
अरु इन्द्रधनुष बनमाल॥५॥
प्यारी राधे छूटे कच टूटे धुरा[१] अरु दादुर[२] मृदु मंजीर[३]॥६॥
प्यारी राधे अरुन बसन बादर कसे अरु अनुकूली बर साँझ॥७॥
प्यारी राधे हरित भूमि हरषी हृषीं[४] अरु इन्द्रबधू[५] अवतंस[६]॥८॥
प्यारी राधे नवल नेह उलही[७] लता अरु किसलय[८] दल पद पान॥९॥

---

*पाठान्तर–खरे हैं। १. बादल, बरसते बादल। २. दर्दुर, मेढ़क। ३. नूपुर, घुँघरू। ४. हृषीक, इन्द्रियाँ। ५. बरषाती लाल मखमली कीड़ा। ६. बाली, करनफूल, टीका, मुकुट, आभूषण; हार। ७. फूटी, निकली; खिली, हुलसी। ८. कोमल नये पत्ते, पल्लव।

प्यारी राधे संतत आस बिलास की
अरु चलत पवन झकझोर।।१०।।
प्यारी राधे प्रेम पुलकि रस बर्षहीं
अरु सरसत सरित[१] अनंग।।११।।
प्यारी राधे भगवत उर सरवर भर्यौ
अरु फूले दृग जलजात[२]।।१२।।
प्यारी राधे झूलत बिहारी प्यारी रसभरे
अरु छबि की उठत तरंग।।१३।।
प्यारी राधे गौर स्याम तन अति बन्यौ
अरु भूषन बसन सुरंग।।१४।।
प्यारी राधे श्रीवृन्दाबन रस झूमहीं
श्रीजमुना लेत हिलोर।।१५।।८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद– राग–माँड़ , मल्हार, ताल–धमारि

यह रस रंग हिंडोर सहचरि हरियल[३] सुही[४] सुहाग लहरिया[५]।
पहिरैं बसन सुरंग दुलहिनी कंचन नील निचोल गहरिया।।
दूलह घन दामिनि लपटाने तन मन सजि पट पीत पहरिया।
सहचरि रसिक देखि छबि ढाँपति
पीतांबर जुग रूप ठहरिया।।९।।

---

१. नदी। २. कमल। ३. हरिहर, हरा। ४. लाल। ५. टेढ़ी–मेढ़ी रेखाओं का समूह, श्रेणी; गोटे, लचके आदि की लहरदार टँकार– रंगीन साड़ी, कपड़ा जिस पर टेढ़ी रेखाएँ बनी हों, जरी के कपड़े के किनारे पर बने हुए बेल–बूटे; एक कपड़ा; लहर।

हिंडोरा हेली रंग रह्यौ सरसाइ,
राजी मैं तौ वारी जी वारी हो छबि देखि।
झोंटनि में झुकि झूमि रह्यौ पिया प्यारीजी रो रूप लुभाइ।।
तन भीजैं तरुवर चुवै हो गलबहियाँ लपटाइ।
श्रीरसिकबिहारीजी रो झूलनौजी म्हारे मन में झोंटा खाइ।।१०।।
बिहारी नेक धीरें झूलौ राज; स्यामा प्यारी झूलैं छैं थारे लार।
घन रमकनि म्हारौ जिया लरजै[१] छे ये छैं अति सुकुमार।।
लचकत मचकत रंग हिंडोरैं भूषन लागैं भार।
मद छकि छैला श्रीरसिकबिहारी नैंना अतिसै रसाल।।११।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद– राग–जैजैवंती–मलार, ताल–अद्धा तिताला

रंगीले दोऊ झूलत सुरति हिंडोरैं।
फूल फूल आनन्द बढ़ावत निरखि रहत प्रिय ओरैं।।
श्रीकुंजबिहारिनि प्रान प्रान मिलि मुसिकत हैं मुख मोरैं।
श्रीहरिदासी के रसमाते सुख कौ सिंधु झकोरैं।।१२।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद–

आजु तौ झूलैं री दोऊ नवल हिंडोरना।
स्याम सघन घन दामिनि सौं कीनौं पन
जब तुम कौंधौ प्यारी तब हम घोरना।।
झुलावैं श्रीहरिदासि दुलारी झूलैं दोऊ श्रीकुंजबिहारी
सरस सुखनि कौ एरी ओर न छोरना।
श्रीरसिकबिहारी जू थाके प्यारी जू के रसमाते
पीतांबर ओढ़ाय लै री करत निहोरना।।१३।।

---

१. लरजना–काँपना, हिलना–डुलना; दहल जाना, भयभीत होना; झेंपना।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेवजू कौ पद– ताल–तिताल

रंग हिंडोरना री झूलत लाड़िली पिय के संग।
मंद मंद झूलत फूलत दोऊ पहिरैं बसन सुरंग।
अंग अंग हरषत सुख बरषत छबि की उठत तरंग।।
सुख में झूलति कुँवरि किसोरी भरि भरि लेत उछंग।
श्रीललितमोहिनी प्यारी पिय की निरखत केलि अभंग।।१४।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के पद– राग–मल्हार, ताल–तिताल

ललना लाल हिंडोरैं झूलैं।
सावन में मन भावन मन की मन भावन करि फूलैं।।
नीरद नवल नाहु उर ऊपर दामिनि भामिनी भूलैं।
श्रीभगवतरसिक झुलावत गावत गहि डाँड़ी भुजभूलैं।।१५।।

झूलैं दोऊ नव निकुंज मधि ठाढ़े।
झोंटा देत गहे भुज डाँड़ी अंग अनंगनि बाढ़े।।
नवसत साजि सिंगार सहचरी भूषन ग्यारह साढ़े[१]।
भगवतरसिक प्रेम परिपूरन देत आलिंगन गाढ़े।।१६।।

मेरी अलकलड़ी अलबेली।
झूलत रति विपरीत हिंडोरैं नाहु अंस भुज मेली।।
मचकत जोवन जोर परस्पर परिरंभन पग पेली।
गावत राग मल्हार मनोहर भगवतरसिक सहेली।।१७।।

---

१. साढ़े ग्यारह बार तपाया हुआ; निखालिस, बिना मिलावट; खरा, विशुद्ध, पवित्र।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू कौ पद–

आवत लाड़िली लाल फूले।
कुंज केलि नवरंग बिहारी सुरति हिंडोरैं झूले।।
निसि जागे अलसात रगमगे[१] पट पलटे गति भूले।
श्रीबीठलबिपुलपुलकि ललितादिक दिन देखत द्रुम मूले।।१८।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

प्यारी झूलत अति रसमाती।
पिय के अंक निसंक हिंडोरैं लटकि लपटि लड़काती।।
पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत अतिरस रसिक अघाती।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि रहसि रस
बिपिन अंग संग समाती।।१९।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद–

सावन आयौ री हिंडोरैं झूलैं।
कहत प्रियाजू सौं स्याम निरन्तर रीझि रीझि मन फूलैं।।
सुनि सुकुमार सुधारि निवारि[२] सिंगार बसन हिय हूलैं।
श्रीपीतांबर पिय बोल सहचरी रसिक सखी अनुकूलैं।।२०।।

हिंडोरे के बिसेष पद

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद– राग–मल्हार–ताल–धमारि, धुनि–हिंडोरैं ब झूलत

उमँगि उमँगि आये चहुँदिसि बदरा स्याम घटा अनंग भरे।
तड़ित चमकति रूप सुधा भरि बन सोभा सब हरे हरे।।

१. रंजित, आसक्त। २. हटाकर, दूरकर, रोककर।

रंग हिंडोरैं झूलत दोऊ चक्रित[१] होइ सखी ठान[२] करें।
श्रीललितमोहिनी सुख बरषावति गावति अति आनंद भरे।।२१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग–मल्हार चौताल, धुनि–हरियारौ सावन सुहावनौं

हरषि हिंडोरना री झूलत नवल किसोरी किसोर।
रहसि बहसि हँसि हँसि उर लागत अनुरागत
झोंटाब देत जोवन जोर।।
स्त्रमित न राखे रहैं गूढ़ गुन गाढ़े गहैं
चित चुभि रहै अंचल चंचलनि के छोर।
श्रीबिहारिनिदासि सु बिलास बिबस दम्पति दरसति
ए तन मन मगन निसि भोर।।२।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद– राग–परज मिश्रित मारू–धमारि,
धुनि–सु एरी माई झूलत

पावस रितु आई बूँदैं सुहाईं बरषत रस धारा धर।
झमकि हिंडोरैं रमकि झुलावत झूलत* स्याम कुँवरि कुँवर।।
नाचत मोर पपीहा बोलत गावत ललकि मल्हार मननि हर।
श्रीललितमोहिनी के सुख भींजे सीतल भये अनंग अंग भर।।३।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू के पद– राग–मल्हार, ताल–चौताल

झूलत दोऊ नवल हिंडोलैं।
बिमल पुलिन कल कमल कुंज मधि चितवत नैंन सलोलैं।।
जोवन जोर झकोरनि देत आलिंगन करत कलोलैं।
श्रीसरसदासि सुखरासि रहसि नव सुनत मधुर मृदु बोलैं।।४।।

---

१. चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित, भौंचक। २. ठानने का भाव, करने का दृढ़ निश्चय; हाव–भाव के साथ अंग संचालन; कार्यविशेष की तैयारी, कार्यारम्भ। *पाठान्तर–झूलत फूलत।

झूलत फूलत सुरति हिंडोरैं।
पुलकि पुलकि किलकत हिलिमिलि नव* जोवन जोर झकोरैं।।
छूटी लट पट सिथिल भये अंग अंग अनंग निहोरैं■।
रहसत बिहँसत हँसत परस्पर उर कर चिबुक टटोरैं।।
अति रस भरे खये[१] डाँड़ी गहि चितवत बिबि मुख ओरैं।
श्रीसरसदासि दरसत बिलास नित अति चंचल चित चोरैं।।५।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू के पद– राग–सारंग–मल्हार, ताल–रूपक

प्रीतम प्यारी अंक निसंक सुखद हिंडोरना दोऊ झूलत हैं।।
उदित वृन्दाबन बिराजत मुदित द्रुम दल बेलि।
नव लता ललित सुकुसुम फल अलि रहै नवरस झेलि।।१।।
करि गान सुघर सुजान हित चित सुगति तान सकेलि।
मंजु गुंज सुनाइ रिझवत सुघर नवल नवेलि।।२।।
स्याम बरन सु तरनि तनया हरन मन सुख देत।
स्याम बाम सुधाम बसत सकाम रस जस हेत।।३।।
विविध रंग अनंग जुत नित बहत सुहि[२] रस खेत।
मिलि चलत अति अलप गति नव ललित नलिन समेत।।४।।
हेम बर सम तरुनि थर नग जरित डार सुढार।
किसलय दलनि सुनीलमनि मृदु नवल जोति अपार।।५।।
सुच्छ गुच्छ प्रवाल सम नमि रहै कुसुम सुचार।
सेवत लखि सुख मदन घन मन कदन[३] बन आगार[४]।।६।।

---

* पाठान्तर–मन। ■ अंग–अंग अनंगनि रोरैं। रोर–चयन, समेटना; शोरगुल, हल्ला; चहल–पहल, धूमधाम। १. भुजमूल, कंधे। २. सुही, लाल; अनुराग, श्री से भरा हुआ। ३. कष्ट, पीड़ा; वध, विनाश। ४. घर, स्थान; भंडार, खजाना।

पावस रितु अति अमित गति लखि हरषि बोलत मोर।
दमकि दामिनि चपल चमकति करत कल घन घोर।।७।।
परसि सौरभ पवन गुनि सुनि मन सु उठति झकोर[१]।
निरखि संपति हरषि दंपति रच्यौ सुरति हिंडोर।।८।।
गौर स्याम सुठाम[२] झूलत फूलत सरस सरूप।
पीवत अधर सुधा महा मद मत्त रहत अनूप।।९।।
लेत झोंटा देत दुहुँ दिसि रसिक गन मनि भूप।
भयौ परम हुलास श्रीहरिदासि सुख सरवूप[३]।।१०।।
नैंन सैंननि हरन मन मनसिज सरनि अनियार[४]।
गहि करनि डाँड़ी तरुन तरुनी उरनि उर दरि[५] मार[६]।।११।।
संग रहत आनंद कंद नित आनंद परम उदार।
परम रस की रासि दासि किसोर बिबि सुकुमार।।१२।।६।।

भीजत मोहनी मोहन हरषि हिंडोरना दोऊ झूलत हैं।।
मधुर मत्त मनोज मन मकरंद लेत सुछंद।
द्रुम दलनि बेलि नवेलि नव रस लटकि लिपटनि मंद।।१।।
झुकि जात आत डरात बातनि करत कोमल फंद।
गहि लेत डाँड़ी तरुनि कर उर अरत आनंद कंद।।२।।
सुवन[७] बन गुन गननि गावत बरनि[८] बर[९] सुख पात।
मुदित मधुकर मदन मादिक मिलत मन न अघात।।३।।

---

१. हवा का तेज झोंका, झटका, हिलना, झूमना। २. सुन्दर, अच्छा स्थान, जगह। ३. सर्वोपरि श्रेष्ठ। ४. अनीदार, पैने। ५. विदीर्ण करना, चूर्ण करना। ६. कामदेव। ७. पुष्प, फूल। ८. दुलहिन। ९. दूलह।

मरुत मंद सुगंध सीतल सुखद मुख रुख गात।
डगमगत द्रुम स्त्रम समन[१] करनि पराग परसि गिरात।।४।।
जुवति जूथनि जुरि परस्पर झूलि झुकनि झुलात।
पिय प्रेम गाथा[२] गात सकुचि डरात फिरि तुतरात।।५।।
नैंन ब्रीड़त[३] करत क्रीड़ा मैंन[४] मन न समात।
निसि भोर दासिकिसोर बिबि बन बन बिबिध बिलसात।।६।।७।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद–

मनभावन सावन आयौरी।
दामिनी दमकि मधुर सुर गरजनि कोकिल सब्द सुनायौरी।।
अद्‌भुत अंगनि रच्यौ हिंडोरा झोंटा रस बरषायौरी।
श्रीरसिकरूप हँसि हँसि उर लागत जोवन जोर सु छायौरी।।८।।

एरी घन घोरनि बोलत मोरी मोरनि।
अद्‌भुत भाइनि गोर–मदाइन[५] तड़ित चमकि चहुँ ओरनि।।
झूलत जुगल चन्द आनंदित मृदु मुसिकनि दृग लोलनि।
श्रीरसिकरूप झोंटा की छबि अति ललकि कंचुकी बंद खोलनि।।९।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

दूलहु दुलहिनि के संग झूलहु।
गावत मिलवत तार सुर संच सौं तान मान जिनि भूलहु।।
लियें सुभाव सहज सुंदरि कौ प्रतिकूलहु * अनुकूलहु।
श्रीबिहारिनिदासि है स्याम काम रस • कुंज केलि मिलि फूलहु।।१०।।

---

१. दूर करना, शान्त करना। २. प्रशंसा गीत, कीर्ति कथा; कथा। ३. लज्जित होना, नम्र होना, संकोच। ४. कामदेव। ५. इन्द्रधनुष। * पाठान्तर–प्रतिकूलनि। • रस बस।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद –

सुनि झूलि झूलना री मेरा।
नील कलेवर चम्पक बरनी उपमा मिलत न हेरा।।
ज्यौं गरजै त्यौंही रस बरसै और न कोऊ नेरा।
श्रीरसिक बिहार करत यौं कहियै पीताम्बर बर तेरा।।११।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद –

श्रीनिधिबनराज में फूल महल दोऊ फूले।
काम केलि आतुर दोऊ प्रीतम अंग अंग अनुकूले।।
हाव भाव आलिंगन चुम्बन गाढ़े गहि भुजमूले।
श्रीललितकिसोरी हरषि हिंडोरें नाभि कमल मधि झूले।।१२।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

झूलत दोऊ रंग हिंडोरैं। सोभा तन साँवल गोरैं।।
नेह नवल निरखि नैंन बैंननि चित चोरैं। गावत सुर थोरैं थोरैं।।
तान तरंग अनंगनि रोरैं*। रीझि रंग भींजि रसिक हँसि हँसि उर जोरैं।।
बिबस बिहारी बन्द छोरैं। चारु सु चिबुक टटोरैं।
बिलोकि प्रिया प्रीतम ओरैं। नवल नाहु निहोरैं।।
लाड़िलीलाल भुज भरि अंकोरैं[1]। बिलसत मिलि नव किसोरैं।।
निरखि नागरीदासि प्रान बारति त्रिन तोरैं।।१३।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद–

दम्पति झूलत सुरति हिंडोरैं।
महल निकुंज पुहुप सिज्या पर स्यामल बपु कल गोरैं।।

---

*पाठान्तर–निहोरैं। १. गोद, अंकवार; नजर; घूस; कलेवा, छाक।

अंग अंग अभिराम सौं झोंटा आनन्द सिंधु झकोरैं।
श्रीरसिकरूप जोवन तन फूले उमँगि उमँगि घन घोरैं।।१४।।

झूलत लाड़िली लाल हिंडोरैं।
उर पर उरज करज करजनि सौं सोहत दृगनि की कोरैं।।
नील बसन पीतांबर सोहै तन घन दामिनि* भोरैं।
किलकत झलकत बसन दसन कल सौंधे बिबिध झकोरैं।।
कूजत कुंज महल में नूपुर अद्भुत सुर थोरैं थोरैं।
श्रीललित रसिक लालन ललचान्यौं निरखि रूप त्रिन तोरैं।।१५।।

झूलत स्यामा कुंजबिहारी।
जोरैं दृग अवलोकत आनन इकटक सदा निहारी।।
झोंटा देत परस्पर दोऊ अंग अंग सुखकारी।
श्रीरसिकरूप हरिदासी स्वामिनी बिपुल बिहारिनि प्यारी।।१६।।

लाड़िली लाल हिंडोरैं झूलैं।
अंग अंग मिलि अद्भुत झोंटा इह सुख कबहूँ न भूलैं।।
दृग जोरैं मुसिकात परस्पर दरसि नाभि भुजमूलैं।
गौर स्याम अभिराम मनोहर एक बैस सम तूलैं।।
त्रिविध समीर नीर बर बरषैं बचन रचन अनुकूलैं।
श्रीरसिक रूप नित श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि फूलैं।।१७।।

झूलत प्यारी प्रीतम संग।
प्रतिबिंबित दुति बदन चन्द की गौरस्याम कल अंग।।

*पाठान्तर—भामिनि।

झलकत नैंन सैंन रतनारे सोभा अधर सुरंग।
कबहुँक रहसि बहसि उर परसैं चाव सु चूँमि उमंग।।
बाजत बलय किंकिनी नूपुर अद्‌भुत सुर निज रंग।
श्रीललितादिक नित रूप निहारति भूली मति गति पंग।।१८।।

झूलत प्यारी लाल हिंडोरैं।
स्त्रम कन बदन रदन दुति चमकति झमकनि नूपुर थोरैं।।
ललित कपोलैं अलकैं झलकैं हँसति दृगनि की कोरैं।
फबि फरहरत पीतपट प्रीतम कल चूँनरि तन गोरैं।।
किलकि किलकि लपटाति छबीली सुन्दरता भुज जोरैं।
श्रीहरिदासि सिहाति सिरोमनि रसिक रूप तृन तोरैं।।१९।।

कल करनी मोहन मन हरनी झूलनि अति मन भावै*।
अंचल तन सुन्दरि पिक बैंनी चंचल नैंन नचावै।।
सावन मन भावन अंग अंग संग झूला सरस मचावै।
तुम कुंदन तन लाल नील मनि अद्‌भुत रतन खचावै।।२०।।

झूलत दोऊ रसामते सु हिंडोरैं।
अंक निसंक लाल ललना मिलि उर कर चिबुक टटोरैं।।
गात गात लपटात मनोहर घन चपला के भोरैं।
श्रीरसिक रूप हरिदासी स्वामिनी अति जोवन के जोरैं।।२१।।

---

* पाठान्तर—चावै।

श्रीस्वामी किसोरदास जू कौ पद–

बंक हिंडोरैं झूलत हैं भामिनि बंक बिहारी।
चितवनि बंक बचन झूलनि अति बंक झुलावनि हारी।।
झमकनि बंक बंक रमकनि रस बंक कहनि दृग चहनि तिहारी।
श्रीदासिकिसोर निसंक बंक मनि संपति बंक निहारी।।२२।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू के पद–

लाल हिंडोरैं मौज बनी।
डाँड़ी पकरि चढ़त पटुली पर पलनैं लाल मनी।।
अरुन किरन तरुनी तन आभा[१] रंग सुरंग सनी।
श्रीपीताम्बर लखि रसिक स्वामिनी रीझत धन्य धनी।।२३।।

लाल हिंडोरैं तीज बनी।
दूलह स्याम सखी सुख झूलत फूलत तरकि तनी।।
तन सुरंग पटुली जटित मनि मृदु रसरीति सनी।
श्रीपीताम्बर उर परसि रसिकनी बकसत मौज घनी।।२४।।

झूल हिंडोरा क्या री बना।
प्रान हमारे बसा* निरन्तर ज्यौं प्रीतम तुम सौं सना।।
सावन तीज प्रिया चपलाई बरषा गरजनि स्याम घना।
श्रीपीताम्बर निसान पताका रसिक मौज करि मान हना।।२५।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद–

लखि झूलनि जुगल निसंक की।
आनन्द हियें न समात दुहुँनि के ज्यौं निधि पायें रंक की।।

---

१. चमक, द्युति, कान्ति, झलक। *पाठान्तर–बसौ।

नैंन बिसाल ललित अनियारे सोभा भृकुटी बंक की।
मानहुँ जुग नृत्तत आनन पर खंजन गोद मयंक की।।
मचकनि* सुरंग हिंडोरैं झूलत लचकनि लसनि सु लंक[1] की।
कनक बेलि मानौं स्याम तमालै लपटनि मोहन अंक की।।
भूषन पट न सँभारि अंग अंग पवन झकोरनि झंक[2] की।
श्रीरसिकरूप स्त्रमकन तन सोहैं उरज अरगजा पंक की।।२६।।

चारौं ओर घोर घटा दामिनि लहलहानी
मंद मंद पवन फुही सीतल सुहाई है।
चढ़िकैं हिंडोरैं दोऊ बिहँसि झोंटा देत
लचकि लचकि लंक आछी छबि पाई है।।
गावत मल्हार राग सरस उभै सुहाग
परसत अंग अंग रुचि दाई है।
श्रीकुंजबिहारी रमैं महल निकुंज सेज
रूप रसिक रिझवार सोभा छबि छाई है।।२७।।

बदन प्रकासि अति मुदित सु सोभा धर
मनमथ कोटि रीझि पाँइनि परत हैं।
बसन सुरंग में तरंग अंग अंगनि की
मधुर बचन कहैं फूल से झरत हैं।।

---

*पाठान्तर—मचकत। १.कटि, कमर। २. झंकार–झनझनाहट, झनझन ध्वनि, झनकार।

लहलही लता तरु बलित ललित लसैं
दम्पति हेत रूप चौगुनौं धरत हैं।
श्रीस्वामी जू सहित श्रीबिहारिनि बिहारीलाल
प्रेम के हिंडोरैं झूमि झूमिवौई करत हैं।।२८।।

पवित्रा के पद

श्रीस्वामी किसोरदास जू के पद—

पवित्रा गौर स्याम सुखदाई।
पचरंग बरन हरन मन कोमल ललित लाल लड़काई।।
उर बर धरत भरत चित हित जुत रंक महानिधि पाई।
श्रीदासिकिसोर चरन रचि सहचरि दम्पति प्रति पहिराई।।१।।

पवित्रा गौर स्याम उर सोहै।
सिख तें नख लौं नख सिख सुन्दर सम्पति कौ मन मोहै।।
सरस सिंगार सहज सोभित सुठि उपमा दै अस कोहै।
श्रीदासिकिसोर सुघर सहचरि रचि अर्पन करि दृग जोहै।।२।।

पवित्रा परम बिचित्र सु प्यारी।
गौर बरन कोमल कल कौतिक रति जुत सरस सुखारी।।
सब सिंगार सिरोमनि सोभित सहचरि सु कर सँवारी।
श्रीदासिकिसोर कहत अद्भुत छबि जुगल परस्पर धारी।।३।।

पवित्रा पावस रितु रति दैंनी।
गौर स्याम अभिराम अधिक उर धरत भरत छबि ऐंनी।।
कौतिक कवनि विचित्र चित्रवत लखत दृष्टि करि पैंनी।
श्रीदासिकिसोर कहत कहा आवै निरखि नैंन चित चैंनी।।४।।

❀

रक्षाबन्धन के पद

रक्षा बन्धन करति सहेली।
कोमल कल मखतूल मनोहर फौंदा फबि अलबेली।।
प्रफुलित बदन सदन सोभानिधि सचि रचि सखी सहेली*।
श्रीदासिकिसोर किसोरी रस हृद▲ कर धरि स्याम सकेली।।१।।

प्रीतम बाँधी दोऊ कर राखी।
लाड़ भरी लड़काति लाड़िली लाल अवधि अभिलाखी।।
करति मरोरि मोरि मुख हँसि बसि बिलसि मधुर बर भाखी।
श्रीदासिकिसोर निहोरि निहारति नैंन चहत रस चाखी।।२।।

राखी बाँधी करनि तें कवनी।
पावस रसवत सरसति बरसति रस मदन ताप तन दवनी।।
मृदु मखतूल प्रफुल्लित फुँदवा उरज बदन उर भवनी।
श्रीदासिकिसोर प्रकासि प्रेम पर रवन रमत रति रवनी।।३।।

---
*पाठान्तर– नवेली। ▲ह्लद।

रक्षा करत स्याम की स्यामा।
कुच कपोल परसत कर हरषत बरषत बर उर बामा।।
कवनि कलोल भोल बचननि बदि उपजावत अभिरामा।
श्रीदासिकिसोर सलौन लगति सब सम्पति सहचरि धामा।।४।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव सरद पूर्निमा

प्रथम दिवस :— सुनि धुनि मुरली बन बाजै। (पृष्ठ पर २२ देखें)
रसभीने बिहारी मन हर्यौ। (पृष्ठ २३ पर देखें)
द्वितीय दिवस :— जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू। (पृष्ठ २४ पर देखें)
हो हो रंगीली नागरी। (पृष्ठ २४ पर देखें)
तृतीय दिवस :— (ए) यह कौन बात जु अबही और (पृष्ठ २६ पर देखें)
स्यामा नागरी हो प्रवीन। (पृष्ठ २६ देखें)

चतुर्थ दिवसः— सन्ध्या समय रास के पद

श्रीस्वामी जू के पद– राग–भूपाली–केदारौ, ताल–चौताल

सुनि धुनि मुरली बन बाजै हरि रास रच्यौ।
कुंज कुंज द्रुम बेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मनिन खच्यौ।।
नृत्तत जुगलकिसोर जुवतिजन मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
नीके री आजु प्यारौ लाल नच्यौ।।१।।

जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे
तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाहीं।
बहुत मूरति मेरी चँवर ढुरावति कोऊ बीरी खवावति
एकब आरसी लै जाहीं।।
और सेवा बहुत भाँतिन की जैसीये कहैं कोऊ
तैसिये करौं ज्यौं रुचि जानौं जाहीं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौं भलैं मनावत दाव उपाहीं।।२।।

(ए) यह कौन बात जु अबही और अबही और अबही औरै।
देवनारि नागनारि और नारि ते न होहिं और की औरै।।
पाछैं न सुनी अबहूँ आगें हूँ न ह्वै है
यह गति अद्भुत रूप की और की औरै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
या रस ही बस भये यह भई और की औरै।।३।।

बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि।
कंठसिरी दुलरी हीरनि की नासा मुक्ता ढरनि।।
तेसौई नैंननि कजरा फबि रह्यौ निरखि काम जिय डरनि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
रीझि रीझि पग परनि।।४।।

कुंजबिहारी नाचत नीके; लाड़िली नचावति नीके।
औघर[1] ताल धरैं श्रीस्यामा ताताथेई ताताथेई बोलत* संग पीके।।

---

*पाठान्तर– गावत। १. अटपटी; ताल विशेष; विचित्र।

तांडव[१] लास[२] और अंग को गनैं जे जे रुचि उपजत जीके।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ मेरु[३] सरस भयौ
और रस गुनी परे फीके।।५।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू के पद– राग–भूपाली–केदारौ, ताल–धमारि

नव बन नव निकुंज नव बाला।
नव रंग रसिक रसीलौ मोहन बिलसत कुंजबिहारी लाला।।
नव मराल[४] जित धरति अवनि पग कूजत[५] नूपुर किंकिनि जाला।
श्रीबीठलबिपुल बिहारी के उर यौं राजति
जैसें चम्पे की माला।।६।।

नव निकुंज नव भूमि रगमगी।
नवल बिहारीलाल लाड़िलौ नवल सरद की जौन्ह[६] जगमगी।।
नव सत साजि सकल अंग सुन्दरि नवल बदन पर अलक सगबगी[७]।
श्रीबीठलबिपुल बिहारी के संग
लाड़ति लाड़िली सहज उर लगी।।७।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद– राग–भूपाली–केदारौ, ताल–चर्चरी

रसिक रसिकनी किसोर निर्तत रंग भीनें।
गौर सुभग स्याम तनैं नटवर बपु बेष बनैं
तत्त ठुमकि ठुमकि थेई थेई उघटत गति लीनें।।

१. पुरुष नृत्य। २. स्त्री नृत्य; एक उग्र, दूसरा मधुर। ३. मेल ४. हंस। ५. ध्वनित; मृदु शब्द ध्वनि करते हुए; शब्दायमान। ६. चाँदनी। ७.सराबोर; सनी हुई।

कोक संगीत सुघर गावत सुख सर्वोपरि
तान तिरप लेत प्यारी पहिरैं पट झीनें।
अधर दसन दुति प्रकास अलक झलक भुव बिलास
तार सुरनि चोरत चित नवल नेह नवीनें।।
रीझि रवन मोहि रहे धाइ चपल चरन गहे
लये लाल ललना हँसि अंस बाहु दीनें।
दासि श्रीनागरि नवेलि नागर मिलि करत केलि
आनंद रस झेलि खेलि पूरन प्रेम प्रवीनें।।८।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद– राग–परज, ताल–धीमा तिताला

निरतत रसभरे रसिकबिहारी।
तान तिरप[1] गति भेद अनागति[2] घात लेति सुकुमारी।।
थेई थेई करत धरत पग चंचल उपजत नूपुर रव झुनकारी।
गावत कटि लटकावत नैंन नचावत प्रीतम प्यारी।।
मृदंग तार सुर सप्त संच मिलि तैसिये छिटकि रही उजियारी।
कोककला कल केलि झेलि रस क्रीड़त कुँवर दुलारी।।
द्रुम बेली फूली रस* बरषत चंपक बकुल गुलाब निवारी[3]।
करत बिनोद बिपिन मन भाये श्रीसरसदासि बलिहारी।।९।।

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग–बिहाग, ताल–अद्धा तिताला

जोरी अद्‌भुत आज बनी।
बारौं कोटि काम नख छबि पर उज्जल नील मनी।।

---

*पाठान्तर–सुख। १. नृत्य गति का एक भेद। २. अनागत–न आया हुआ; अप्राप्त; अज्ञात; आनेवाला; भावी; अचानक; एक ताल विशेष। ३. जुही की जाति का एक पौधा जो चैत्र, वैशाख में होता है।

उपमा देत सकुचि निरउपमित घन दामिनि लजनी।
करत हास परिहास प्रेम जुत सरस बिलास सनी।।
कहा री कहौं लावण्य रूप गुन सोभा सहज घनी।
श्रीबिहारिनिदासि दुलरावति श्रीहरिदासि कृपा बरनी।।१०।।

देखि देखि मुख जीवत यौं सुख मानत हैं रसरंगी।
कबहुँ कोमल कर सौं बंद छोरत कंचुकी कसनि* सुरंगी।।
नई नई प्रीति प्रतीति प्रियाजू सौं नई रुचि चौंप[१] सुचंगी[२]।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी स्यामहि
नचावत होत तृभंगी।।११।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद–

राजत नव निकुंज नव जोरी।
सुन्दर स्याम रसीले अंग अंग नवल कुँवरि तन गोरी।।
बदन माधुरी मदन सदन सुख सागर नागरि नवलकिसोरी।
श्रीसरसदासि नैंननि सचुपावत कौतिक निपट[३] नयौ री।।१२।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद–

खेलत रास लाड़िली लाल।
तान गान गुन सिखवति प्यारी तहाँ न कोऊ बाल।।
ताल मृदंग संगीत बिधि उघटत भूषन बजत रसाल।
उरप तिरप चित* लेत सुलप गति उपजत सुख के जाल।।

---

* पाठान्तर– कंठ। * अति। १. चाव, उमंग, चाह; इच्छा; बढ़ावा। २. स्वच्छ; निर्मल तुष्ट-पुष्ट; स्फूर्तिमय। ३. अत्यन्त; बिल्कुल; एकदम।

केलि कला रस बरषत हरषत परसत प्रेम बिसाल।
श्रीनरहरिदासि निकट सुख निरखत स्याम सुभग[१] उर माल।।१३।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद– राग–रास बहार (सुघराई कान्हरौ), ताल–तिताला

नाचत दोऊ रहसि में रंग भीनें।
हाव भाव उपजत अंग अंगनि कोककला मन दीनें।।
बाजत मधुर मृदंग किंकिनी नूपुर ताल नवीनें।
होड़ा होड़ी तान तिरप गति लेत नहीं कोऊ हीनें।।
राकारति[२] रजनीकर[३] आनन उदित मदन बस कीनें।
रीझि रीझि भगवत की स्वामिनि लाल अंक भरि लीनें।।१४।।

रास के बिसेष पद

श्रीस्वामीजू के पद– राग–भूपाली–केदारौ, चौताल; धुनि–सुनि धुनि मुरली बन बाजे

हँसत खेलत बोलत मिलत देखौ मेरी आँखिन सुख।
बीरी परस्पर लेत खवावत ज्यौं दामिनि घन चमचमात
सोभा बहु भाँतिन सुख।।
स्त्रुति घुरि राग केदारौ जम्यौ अधराति निसा रोम रोम सुख।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी के गावत
सुर देत मोर भयौ परम सुख।।१।।

परस्पर राग जम्यौ समेत किन्नरी मृदंग सुर* तार।
तीनहूँ सुरनि के तान बंधान धुर धुंर पद अपार।।

---

१. सुन्दर, प्रिय; नाजुक; उपयुक्त। २. राका–पूर्णिमा की रात; पूर्णिमा; रति–विलास रूप पूर्णिमा।
३. चन्द्रमा; बदन रूप चन्द्रमा। *पाठान्तर– सौं।

बिरस लेत धीरज न रह्यौ तिरप लाग डाट सुर मोरनि सार।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा जे जे अंग की गति लेत
अति निपुन अंग अंग अहार।।२।।

गुन की सरि को करि सकै तोसौं तुव प्रताप
भरिपूरि रह्यौ अखिल बिस्व सुजस सर्वोपर।
लेति बिकट औघर गति तान मिलावत
गावत मधुरे मधुरे सुर रीझि रहै नट नागर।।
कौंन कौंन अंग कौ गुन बरनौं सब अंगनि नागरी आगरी
तुव धनि धनि तन मन वारौं एक रोंम पर।
श्रीबिहारिनिदासि पिय जानि प्रकृति
रस बस करि राखै कुंजबिहारी सुघर बर।।३।।

अद्भुत गति उपजत अति नृत्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी।
सकल सुधंग[1] अंग भरि भोरी पिय नृत्तत
मुसिकनि मुख मोरी परिरंभन[2] रस रोरी[3]।।
ताल धरैं बनिता मृदंग चन्द्रागति[4] घात बजे थोरी थोरी।
सप्तभाइ भाषा बिचित्र ललिता गाइनि चित चोरी।।
श्रीवृन्दाबन फूलनि फूल्यौ पूरन ससि
त्रिविध पवन बहै थोरी थोरी।
गति बिलास रस हास परस्पर भूतल अद्भुत जोरी।।

१. एक नृत्य विशेष। २. आलिंगन, गाढ़ आलिंगन। ३. चयन करना, समेटना, धूम, चहल-पहल; कोलाहल, हल्ला। ४. एक ताल विशेष, चन्द्रमा के समान घटती-बढ़ती।

श्रीजमुना जल बिथकित पुहुपनि[१] बरषा
रतिपति डारत तृन तोरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कौ रस रसना कहै कोरी।।४।।

धुनि– बनी री तेरे चारि चारि चूरी

प्यारी तू गुननि राइ सिरमौर।
गति में गति उपजति नाना राग रागिनी तार मन्दर सुर घोर।।
काहू कछु लियौ रेख छाया तौ कहा भयौ झूठी दौर।
कहिं श्रीहरिदास लेत प्यारीजू के तिरप लागनि में किसोर।।५।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– धुनि– श्रीकुंजबिहारी नाचत नीके

रास मंडल मध्य नृत्तत दोऊ।
बिमल[*] भूमि बिमल द्रुम दल नभ नृत्य निरंतर आलस न सोऊ।।
ज्यौंही ज्यौंही अपने अंग नृत्तत इत
त्यौंही त्यौंही अपने अंग नृत्तत उत बोऊ।
उपजावत गति में गति उकति[२] रहत न हारि मानि मन कोऊ।।
रीझि रीझि बारति सखी तन मन धन
अद्‌भुत कौतिक जुवती जोऊ[३]।
देति असीस बिहारिनिदासी
इन रसिक अनन्यनि सुख में सुख होऊ।।६।।

---

[*] पाठान्तर–विमलै। १. पुष्पों की। २. उक्ति–कथन; वाक्य; कवित्तमय वचन, पद्य; शब्द की अर्थ– द्योतन शक्ति। ३. देखती हैं।

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू के पद– राग–भूपाली–केदारौ–धमारि; धुनि–नवबन नव निकुंज

बिलसत प्यारी लाल कुंज रजनी।
बदन बदन जोरैं मदन लड़ावत
नूपुर के सुर मिलि बलया की बजनी॥
पुलकि पुलकि तन आनन्द मगन मन
मधुरे बचन स्त्रवन सुनि सजनी।
श्रीबीठलबिपुल रस रसिक बिहारी बस
नव त्रिया* तिलक सुरति जीति गजनी॥७॥

तेरे नूपुर धुनि री प्यारी स्रवन सुनी।
अचल चले चल रहे री रहित गति
खग मृग ब्रत मानौं धर्‍यौ है मुनि॥
नव निकुंज बर सुहस्त सँवार्‍यौ लाल
सिज्या रचित बहु कुसुम चुन चुनी।
श्रीबीठलबिपुल की रीति मिली है मदन जीति
तू सिरमौर सब गुननि गुनी॥८॥

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग–भूपाली–केदारौ–चौताल, धुनि– रसिक रसिकनी किसोर

आवत दोऊ गावत प्रीतम री रंग भरे रस अंसप्रिया भुज दियैं।
ताल काल सुर सात अतीत अनागत घातनि लेत
बिकट औघर गति कहति लालन प्रति सीखौ जू कुँवरि सिखियैं॥

---

* पाठान्तर–तिय, त्रिय।

कछु मुसिकात संकात रसिक मन सकुचि रहत रुख लियैं।
बलि बलि श्रीबिहारिनिदासि नव बानिक पर
दिन जीजत दरसि पियैं।।९।।

आजु कौतिक श्रीवृन्दाबन बंसीबट।
घूँघट मुकुट काछनी काछैं आछैं नाचैं जमुना तट।।
देसी सुलप सुधंग अंग मिलि तान तिरप में निपुन मनौं नट।
नेंम बिरस रस रह्यौ परस्पर बिबस भये छबि निरखि छुटी लट।।
सारी सिरै सँवारी प्यारी सखी पिय के अंग झाँपति पियरे पट।
श्रीबिहारिनिदासि श्रीहरिदासी के संग गावति रीझि * राग गौरी ठट।।१०।।

गावति लालन संग नवल नागरी।
संगीत सुघर सुर सरस सप्त लेत सुन्दरि ताल सचित
ललन कहत गुननि आगरी।।
रीझि सुबस भये रसिक बिहारी बिहारिनि रंग रंगे रस रागरी।
जस गावत सचु पावति दासि बिहारिनि
राजत चिर चिर अनुराग सुहागरी।।११।।

ललन कहत नेंक बहुर्‌यौ कहौ प्यारी
जैसीयै आवै तोपै राग रचना रचि।
मधुर तान बंधान बखानि तैं राख्यौ अन्तर अमृत सचि।।

---

*पाठान्तर—गीत।

और नारि जे सँवारि▲ कहैं सत सम न होहिं जे रहैं तेऊ पचि।
श्रीबिहारिनिदासि पिय परसि प्रिया पग
बिनतीब मानियै कहौं एक जँचि[1]॥१२॥

संगीत सागर गुननि आगर रूप उजागर रसिक राई।
गावत तान तरंग अंग अंग रस बरसावत
प्यारी जू कौ सुजस कहत लाल लड़ाई॥
जानति जुवती दाइ उपाइ उपजावत भाइ
भुज भरनि करनि आतुर चातुराई।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनि स्यामहिं हँसि रस बस किये
रीझि रहे रसिक चरननि लपटाई॥१३॥

ए रस रंग रसिक राजैं।
अंग अंग सुखदाइक अति ही आतुर चातुर
चपल किंकिनी नूपुर बाजैं॥
उपजत मदन मौज दुहुँ दिसि चोज चितैं
मानौं नृत्य करैं अंग अंग अनंगनि साजैं।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि बिलासहि गावति
हरषि सुजस सेवति सुख समाजैं॥१४॥

लाल बलि बलि सुखदाई हो मोहिनी मोहन रंग भरे।
प्यारी लाल लटकत आवत भावत निजजन जुवतिनि रीझि,
रिझावत तन मन स्त्रवन सिरावत गावत तान बितान तरें॥

▲सँवारि सँवारि। १. जाँची हुई, परख की हुई; ठीक।

निकुंज भवन रसिक रवन उदित मुदित सुगति गवन
बिबिध बिरह मदन दवन कोटि मनसिज मन हरें।
श्रीबिहारिनिदासि सुख सदन बदन निरखति छबि
नैंन टगाटग तें न टरें।।१५।।

ललित गति नूपुर चलत चरन बाजैं।
रही जकि जुवती निर्तत सु पग धरति
परसि संगीत गति बारति सत समाजैं।।
अंग अंग अभिरामिनी बिनु भाइ भामिनी
सहज इत उत चितै समर सर साजैं।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी रीझि रस बस किये रमन
रमि रसिक संग कुंज बसि भ्राजैं।।१६।।

मोहिनी मोहनी रंग भरे ढरे कुंज कुटी तन
गावत रीझि रिझावत भावत मो मन आवत हैं सुख दैंन।
तान अतीत अनागत घातनि लालन लेत मिलै सुर सातनि
ऐसैं कहत सुघर बर बिहारिनि लाल बिहारी सौं लैंन।।
जानि स्याम सरस हियैं पूछिहैं जु मोहिं सप्त दियैं
कहिहौं री मुख* रुखहिं लियैं निरखि मगन मैंन।
श्रीबिहारिनिदासि सुख सुरति सुभट अंग अंग अटकत
नव नट कटि पट झटकत लटकत लाइ लैहौं उर ऐंन।।१७।।

*पाठान्तर—सुख।

रास में रसिक निर्तत रंग भारे।
गौर साँवल अनूप निपुन गुन गन सरूप
निरखि सत जूथ कुल काम बलिहारे।१।।
तरनितनया कूल सरद निसि अनुकूल
बिबिध मुकुलित फूल भँवर गुंजारे।
रिषभ षडजात पंचम सुर सप्त मिलि लेत
करताल उघटत नवल लारे।।२।।
उलटि नागर लेत प्रिया तन चित देत
ज्यौंही ज्यौंही कहत त्यौंही त्यौंही चरन धारें।
लाग कट्टर डाट भुव बिलास निसाट[1]
लेत गति सुधंग बर अंगन सँभारें।।३।।
चतुर सहचरि नारि सुनि स्त्रवन सुर धारि
हरषि तन मुदित मन प्रान धर बारें।
चित चकित चंद गति मंद उडगन सहित
सरस बिबि बदन भूतल निहारें।।४।।
करनि सौं कर जोरि सब जुवतिनि चितचोर
स्याम नागरि गौर रमत न्यारे न्यारे।
कुंज चले रहसि रस बरषि आनन्द हँसि
श्रीबिहारीदासिनि उभै प्रानपति प्यारे।।५।।१८।।

---

१. चक्रवाक, (भाववाचक-उत्कंठित)

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

खेलत लाड़िली लाल रहसि रसिक बर।
देखि देखि दोऊ दृग जोरैं मुसिकत मुख मोरैं
भृकुटि धनुषनि धरैं काम कटाच्छनि सर।।
गौर स्याम अंग अंग राजैं रसभरे रंग
उपजैं मौज मनोज मुदित मननि हर।
दासि नागरी नाहु हँसि* अंस धरैं बाहु
रीझि रस बस भये प्रेम परस्पर।।१९।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—

रास रवनी रवन रसिक नवरंगी।
विपिन भूतल्प[१] महिं अल्प मंडल रचित
सुरति निर्तत उदित मुदित अंग संगी।।१।।
सभा कल कुंज सुख पुंज संपति सहित
सघन मनि दीप** बन कुसुमित सुरंगी।
कहूँ भृंगी कहूँ मृगी कौतिक कहूँ नैंन सैंननि बिना बैंननि बिहंगी[२]।।२।।
ससिहिं भूल्यौ भवन गवन जमुना पवन
रहे मनु वारि अनुरागनि अभंगी।
तहाँ नहीं कछु स्रम तम न गम
बिरह भ्रम मान लवलेस प्रवेस न प्रसंगी।।३।।

---

* पाठान्तर—हँसि—हँसि। ** दीप्त। १. भू—पृथ्वी, तल्प—शय्या। २. पक्षी।

बिमल गोरे गात मनहुँ निसि गत प्रात
आइ ऊभी[१] भई उरजनि उतंगी।
सकल सुख साधि[२] आराधि राधा गुरै[३]
धरति पग चपल साँवल तन त्रिभंगी।।४।।
सब्द रसनावली[४] ताल नीबीबन्द[५]
बलय बाजत मृदंग नूपुर उपंगी[६]।
रेख परमान अति जानि सन्मुख सुलप मिलि
चलत लटकि गति ग्रीव भ्रूभंगी[७]।।५।।
कोक संगीत अवघर[८] सुघर लाड़िली
अलग लागनि लेत अनगति[९] अनंगी।
उपजि औरै और रसिकबर सिरमौर
रीझि रहे गहि ठौर सरस अंग अंगी।।६।।
तहाँ सखी संखल[१०] निमेष[११] अंकुस सकुचि जीति
गजबरै मानौं मिलि मन मद मतंगी[१२]।
बहुरि प्रिया पिय बिहँसत हँसत प्रेम घन
भये मन मगन तन तरलित तरंगी।।७।।

---

१. ठाढ़ी। २. साध्या, सुखस्वरूपा ३. गुरु; युक्ति, दाँव, उपाय। ४. करधनी, कौंधनी। ५. लहँगे के नेफे की डोरी, नाड़ा। ६. एक वाद्य विशेष। ७. भौंह चलाना; भौंहों द्वारा संकेत करना, भाव प्रकट करना। ८. एक ताल विशेष; विचित्र, अटपटी। ९. अनुगति, पीछे चलना, अनुकूल करना, अनुकरण करना, नकल करना; अधीनता, विचित्र। १०. श्रृंखला, परम्परा, श्रेणी, पंक्ति; श्रृंखल– सिक्कड़, निगड़, जंजीर; बंधन। ११. पलक। १२. हथिनी।

श्रीहरिदासी खरी बिपुल प्रेमनि भरी
मननि लै अनसुरी अंकनि उछंगी[१]।
जै श्रीबरबिहारिनिदासि कहति सुख सार
सुजस त्रैलोक सर्वोपरि सुमंगी[२]॥८॥२०॥

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

बिमल पुलिन मंडल मधि राजत नागरी किसोर
मोर मुकुट भूषन दुति काछनी बनाई।
नृत्तत रस रंग भरे उरप तिरप सुलप लेत
ताल सचित लाग डाट अति गति मन भाई।
ए अपनें अपनें रंग गावत मिलि तान तरंग
बिहँसि बढ़्यौ सनमुख सुख❀ भृकुटि नैंन नचाई।
करनि सौं कर जोरि हँसि रहसि रीझि उर लागे
लटकत तन मन मगन सरसदासिनि* सुखदाई॥२१॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—

आजु दोऊ अद्भुत सेज केलि रति ठानी॥टेक॥
स्याम भाव स्वामिनी बिहँसत विपरीत रति सुख दानी।
असन बसन कर कमल सँवारति अंग सु उमँगि समानी॥१॥
कटि जुग अंग✿ नील कंचन मनि रचि खचि चित्र बिचित्रनि बानी।
जगमगात नभि कमल▲ बिहारी निरखत दृष्टि लुभानी॥२॥

---

१. अंक, गोद। २. मंग—माँग, सीमंत। शिरोभाग में विराजनेवाली; अतिश्रेष्ठ। ❀ पाठान्तर—मुख। * पाठ—सरसदासि। ✿ पाठान्तर—अरु। ▲ नाभि कमल जगमगात।

अगनित अनंग रंग गति भूली विस्मृति मन नहिं जानी।
चपल अचपल नैंन चकचौंधी संभ्रम मान तजौ तुम मानिनी।।३।।
गौर सु अंग स्यामता भीतर मोहिं समुझावौ स्वामिनी।
अंस भुजा झुकि लीनें प्रीतम अधरनि चुम्बन दै मुसिकानी।।४।।
मन ही मन पिय समुझि रसिकबर सकुचि भीर भ्रम भानी।
करि मनुहारि बारि पिय तन मन अद्‌भुत गूढ़ अंग गुन गानी।।५।।
रवि ससि तड़ित पुंज मनु भामिनि घन ऊपर लपटानी।
कोमल बैंन नैंन रस भीनें हँसि बोलत मृदु काम कहानी।।६।।
ललना करुना सिन्धु सुख सागर सदा रहौ रस सानी।
सुफल जन्म अपनौं करि प्यारे धनि धनि प्यारी सौं कहैं बानी।।७।।
हम तुम दोऊ भोग भोगता भोगत हैं रस खानी।
इहि सुहाग रहौ निसिबासर मोहिं अपनें उर आनी।।८।।
उघटौ[१] गति संगीत सिरोमनि तांडव नृत्य सरस मँडरानी।
ललना स्त्रवन सुनत उठि बैठी लालन के जिय जानी।।९।।
कोक कला कोविद[२] निधि प्यारी उरप तिरप भौंहैं थहरानी[३]।
कटिकी लटकनि पग की पटकनि नृत्य सुधंग सुलप घहरानी[४]।।१०
नुपूर की धुनि सप्त सुरनि मिलि जिमि हंस हंसिनी बारत बानी।
ताल मृदंग नितंब उछकि गति मद गज की चालनि भानी।।११।।
अद्‌भुत रस बिलसैं दोऊ मिलिकैं बिपरीत चाह बिहानी।
मंगल गीत सखी सब गावति तुम दोऊ कुंज महल ठकुरानी।।१२।।

---

१. प्रकट करो; भेद खोलो; ताल दो। २. दक्ष, निपुन; जानकार। ३.कम्पित, चंचल होने लगी; हिलने लगी। ४. गर्जन जैसे शब्द करना, गरजना, गड़गड़ाना, घुमड़ना, छा जाना।

अंचल चंचल पवन ढुरावैं भूषन बसन बिबिध सब बानी।
श्रीललितकिसोरी की जोरी पर तन मन बारि मिलौ सब प्रानी।।१३।।२२।।

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग–परज–धीमा तिताला, धुनि–निरतत रसभरे रसिकबिहारी

सरद निसि उज्यारी; उज्जल रस बिबस बिहारी।
नाचत गावत अपनें अपनें रंग भरे सुख भारी।।
करनि सौं कर जोरि कटि सौं कटि लटकि* न्यारी।
श्रीबिहारिनिदासि के आँखिन आगें नाचत प्रीतम प्यारी।।१।।

देखत सिरानें नैंन बैंन मधुरे सुनि श्रवना।
हाव भाव चित चाव चतुर मुख चुम्बित प्रमुदित रति रवना।।
परम सुबास सेज सुखदाइक रची है सुहस्थ स्याम कुंज भवना।
श्रीबिहारिनिदासि अंग अंग सीतल भये
मंद सुगंध परसि पवना।।२४।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

बिहरैं श्रीस्यामा स्याम उदित अनंगे।
सौरभ सदन सुख सेज सुरंगे।।
गौर साँवल झलमलैं अंग अंगे।
मौजनि मनोज मनौं नृत्तत सुधंगे।।१।।
लटकति ग्रीवा गति भेद भ्रूभंगे।
उघटत सब्द ग्रिग्रि ताता थुंग थुंगे।।
बाजत बलय मानौं मधुर मृदंगे।
कुनित किंकिनी सुर नूपुर उपंगे।।२।।

---

*पाठान्तर—लटकनि छबि।

सादीयै सहजादी सुन्दरि सोहै सीस मंगे।
मोहै हैं निरखि मोहन नासिका लवंगे।।
प्रतिबिंबित बिबि बदन दुरंगे।
लगत न पलक नैंना नेह भये नंगे❀ ।।३।।
सोभित सुभट पट नट नवरंगे।
काम कटाच्छिनि बान धनुष भ्रूभंगे।।
अधर मधुर जीति प्रीति रति रंगे।
मान न बिरह भ्रम तहाँ न प्रसंगे।।४।।
जँचि रचि सचि सुख ललन त्रिभंगे।
प्रेम प्रवीन प्यारी हँसि कसि रंगे▲।।
रोम रोमनि रमन रमैं आनन्द उतंगे।
रस बस प्यारी प्रीतम लेति उछंगे।।५।।
सुरति संगम सिंधु प्रेम की तरंगे।
तन मन मगन चतुर चित चंगे।।
बिटप लपटी लता कूँजैं ज्यौं बिहंगे।
पुहुप पराग अलि अंगनि आलिंगे।।६।।
बिपिन बिनोद नित यहै हौं जाचिंगे।
रसिक अनन्य श्रीहरिदासी सुख संगे।।
बिचित्र बिहारी बिहारिनिदासि सब अंगे।
सेवैं श्रीनागरीदासि प्रेम अभंगे।।७।।२५।।

❀ पाठान्तर—पंगे। ▲अंगे।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—

आजु कछु केलि अधिक मन भाई।।टेक।।
हाव भाव प्रवीन किसोरी रति बिपरीत उमँगि हियैं आई।
कंचन मनिन खचित हरि मंडल जुग अंगनि मार सु कीच मचाई।।१।।
अंसनि अंस कसत भुज दंडनि स्याम भुजा पीछैं अरुझाई।
लटकनि अटकनि झटकनि ठमकनि
पग के नूपुर (सब्द) घोर मानौं हंसनि कलह मचाई।।२।।
मृदंग तार सुर बीना बाजत गावत भामिनी परम सुहाई।
मीठे बचन तत्तथेई बोलत कटि मोरत उर जोरत
अधरनि चुम्बन मृदु मुसिकाई।।३।।
नैंननि सैंननि बिनु बैंननि आतुर चातुर तांडव भाव सुरति दौराई।
उरप तिरप भौंहनि की मोरनि कर जोरनि
नागरि आगरि अंग सुधंग नचाई।।४।।
कबहुँक मुख भरि गंड रदनि गहि पीक लीक छबि छाई।
मानहुँ नील अरुन मनि जरिया उपमा कही न जाई।।५।।
अलकनि झलकनि स्याम कपोलनि
स्यामा स्याम मिलि रंग अनंग बढ़ाई।
अद्‌भुत सुख सागर कछु कहत न आवै कहिवे कौं मनसा अकुलाई।।६।।
नृत्य गीत संगीत सिरोमनि प्यारी सरस निपुन अति माई।
श्रीललितकिसोरी कौ सुख सर्वोपरि तन मन वारि प्रान सुखदाई।।७।।२६।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

रसिक रंगीले रसीले छबीले दिन दूलहु दुलहिनि दुलारी।
सौरभ सेज सदन मुदित मत्त मदन
जोरि बिबि बदन बिगसत उजियारी।।
लियैं रुख सुर स्वास परसैं अंग अंग सुबास
मौजनि हँसैं हुलास बिहारिनि बिहारी।
अंग अंग सुरति रंग बिहरैं प्रेम अभंग
दासि श्रीनागरी अंग संग रहै नागर निहारी।।२७।।

श्रीस्वामी गुरुदेव जू के पद—राग–बिहाग, अद्धा तिताला

राजत रास रसिक रस रासे।
आस पास जुवती मुख मंडल मिलि फूली कमला से।।
मध्य मराल मिथुन मन मोहन चितवत आतुरता से।
बचन रचन सुर सप्त नृत्य गति मदन मयंक बिकासे।।
बाजत ताल मृदंग अंग संग मंद मधुर मृदु हासे।
घूँघट मुकुट अटकि लटकत नट अभिनय भृकुटि बिलासे।।
बारति कुसुम सुगंध देखि सखि आनंद हियें हुलासे।
तृन तोरति रति जोरति छिन छिन बिपुल बिहारिनिदासे।।२८।।

स्यामा स्याम सुखदाइक सोहत सहज संग अभंग।
मनि कंचन घन दामिनि नख पर रति पति बारौं कोटि अनंग।।
चलत निर्त सुर सप्त बचन रुचि उपजत तान तरंग।
श्रीबिहारिनिदासि बलि बलि लाड़िली लाल पाग में सुभग मंग।।२९।।

रसिक बर रसिकनी रस रासि।
रसिक सुघर रसिकनि की जीवन जुगल परस्पर हासि।।
कोक कला संगीत सिरोमनि अंग अंग लाउँनि लासि।
इहि रस दम्पति सम्पति पर बलि बिसद बिहारिनिदासि।।३०।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–

साधौ ऐसौ महल हमारौ।
निरगुन सरगुन बारि है जाकी कहै न बेद बिचारौ।।
अद्‌भुत प्रेम रंग रस अद्‌भुत अद्‌भुत नित्य बिहारौ।
श्रीललितप्रिये सुखरासि रसिकबर करि राख्यौ उर हारौ।।३१।।

साधौ भजन करै सोई जीतै।
बात बनायें हाथ न आवै अन्त चलै उठि रीतै।।
मन इन्द्रीं के बस ह्वै प्रानी खोवत हरि से मीतै।
श्रीहरिदासी रसिक केलि बिन और कहा लै कीतै।।३२।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
ज्येष्ठ कृष्णा २

प्रथम दिवस — नव निकुंज ग्रह नवल आगें नवल बीना (पृष्ठ २७६पर देखें)
निकुंज बिराजिये जू (पृष्ठ ९ पर देखें)
द्वितीय दिवस :— प्यारी तेरी महिमा बरनी न जाइ (पृष्ठ २७७ पर देखें)
रसभीने बिहारी मन हर्‌यौ (पृष्ठ २३ पर देखें)

तृतीय दिवस :— प्यारी तेरौ बदन चन्द देखैं (पृष्ठ २७८ पर देखें)

स्यामा नागरी हो प्रवीन। (पृष्ठ २६ देखें)

चतुर्थ दिवस :— प्यारी जू जब जब देखौं तेरौ मुख (पृष्ठ २७८ पर देखें)

मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊँ (पृष्ठ १३ पर देखें)

पंचम दिवस — प्यारीजू हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा (पृष्ठ २७८ पर देखें)

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग-बिलावल, मूलताल

मनुहारि[१] करैं मनुहारि[२] लला[३]।
श्रीराधा आराधि लला। यह निजु नेम आराधि[*] लला।।
प्रेम करौ जिनि[४] बादि[५] लला। पिय पग परसनि की साधि लला।।१।।
सुनि सुन्दरि सुकुँवारि लला। मानिनि मान निवारि[६] लला।।
बिनु अपराध न गारि लला। कोमल करहिं न टारि लला।।२।।
नैन चले च्वै[७] वारि लला। पिय की प्रीति बिचारि लला।।
हौं तन मन द्यौं[८] वारि लला। मम बचननि प्रतिपारि लला।।३।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग-परज, ताल-धीमा तिताला

हो नेंक मानिनी मान निवारियै।
यहै जानि जिय मान सयानी हो आई हौं समझि सँवारियै।।
रचि रुचिर नव कुंज कुसुम तरु सुरति सु समयौ सम्हारियै।
बिरहजु स्याम अधीर पीर अति आतुर पिय अँकवारियै।।

---

१. मनुहार- मनाने का प्रयत्न; बिनती, खुशामद। २. मनुहारी-जिसे मनाने को बारंबार मनुहार करनी पड़े। ३. प्यारा; दुलारा, प्रेमी; क्रीड़ाशील; इच्छुक; नायक। ४. नहीं; मत ५. व्यर्थ, बेकाम ६. दूर करो; शांत करो। ७. च्यवना-चूना, टपकना; क्षरण; बहना। ८. देऊँ। *पाठान्तर- निबाहि।

इती करत कत आरि[१] लला। अपने सुखहिं सँवारि लला।।
इहि रस मन अनुसारि लला। हौं आई सेज सँवारि लला।।४।।
नव निकुंज पग धारि लला। प्रीतम मुखहिं निहारि लला।।
सुंदरि मुरि मुसिकाइ लला। स्याम सखी सुख पाइ लला।।५।।
अद्‌भुत उक्ति[२] उपाइ लला। इक कौतिक देखौ आइ लला।।
बतरस लीनी लाइ लला। फूली अंग न माइ[३] लला।।६।।
उदित मुदित मन माहिं लला। चली अली गहि बाँह लला।।
नव दल सीतल छाँह लला। आपु निहोरी[४] नाहु लला।।७।।
ललित बलित द्रुम बेलि लला। सबै सँवारति केलि लला।।
बढ़्यौ मदन मद मोद लला। बीथी[५] बिपिन बिनोद लला।।८।।
रवितनया के तीर लला। कोमल मलय समीर लला।।
अति आसक्त अधीर लला। विनय निवारत चीर लला।।९।।
चितवत बिंबि मुख ओर लला। लोचन चारु चकोर लला।।
नित ही नवल किसोर लला। दोऊ नव जोवन जोर लला।।१०।।
मिलि मेंटी पिय की पीर लला। बिहरत प्रेम गंभीर लला।।
मिलि बिलसत निसि भोर लला। मेरे चित के चोर लला।।११।।

मिलि रस रंग अंग अंग पिय संग सरस[६] कुसुम सुकुमारियै।
श्रीबिहारिनिदासि छबि निरखि हरषि तृन तोरि प्रान धन वारियै।।

---

१. हठ,जिद; शर्म, लज्जा; बैर; घृणा २. कथन; वाक्य; कवित्वमय पद्य, शब्द की अर्थ द्योतन शक्ति। ३. माना, समाना। ४. मनाई, प्रार्थना, आराधना की, कृपा, उपकार, आभार स्वीकार किया। ५. गली, गलियाँ। ६. शिरीष, सिरिस, अति कोमल फूलोंवाला वृक्ष।

छिन छिन पद प्रतिकूल लला। स्याम सहज अनुकूल लला।।
दै आलिंगन दान लला। मानिनि के धन मान लला।।१२।।
दै अधरामृत पान लला। पालि प्रिया मम प्रान लला।।
अब जिन करहु निदान[1] लला। सतर[2] भौंह अपमान लला।।१३।।
गौरस्याम कौ संग लला। देखि दुँहुनि कौ रंग लला।।
रतिपति की गति पंग[3] लला। मन अनुराग अभंग लला।।१४।।
इहि रस बस सुखरासि लला। जस गाइ बिहारिनिदासि लला।।१५

ज्येष्ठ कृष्णा २ कौं रात्रि में जागरन

ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया प्रातःकाल

झूमका (पृष्ठ ३४ पर देखें)

श्रीस्वामी रसिकदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
माघ सुक्ला ५

प्रथम दिवस :— श्रीस्वामीजू कौ पद—राग—बसंत, ताल धमारि

श्री कुंजबिहारी कौ बसंत सखि चलहु न देखन जाहिं।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं।।
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंग न माहिं[4]।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुबाहिं[5]।।१।।

---

१. कारण; निर्णय; अंत; आखिर; तुच्छ, निकृष्ट। २. बक्र, कुटिल, टेढ़ी; क्रुद्ध। ३. लँगड़ा; कुंठित; बेकाम; अवरुद्ध; स्तब्ध। ४. माना, समाना; अटना। ५. क्षुब्ध होते हैं, स्पर्श करते–कराते हैं।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—राग-गौरी, ताल-धमारि

श्री कुंजबिहारी हरषि बुलाई ह्याँजो[१] होड़ी[२] हेली[३] री।
काज करौ निजु आज हमारौ तू मेरी सुखद सहेली री।।१।।
खेलत हे इक ठौर भोर मैं पूछी प्रेम पहेली री।
घाल[४] मिलावौ माँगत मत्त भई झुकि नेह नवेली री।।२।।
हारी होड़ न देति लाड़िली छाँड़ि चली अवहेली[५] री।
बैठी है मान गंभीर कुंज नव जोवन गर्व गहेली[६] री।।३।।
मेरे मन रुचि राँचि रही मोसौं काल्हि भली बिधि खेली री।
मेरी इनकी जानत है सब तू मन मतै महेली[७] री।।४।।
बचन रचन सुनि चलि सहचरी कैं आतुर तन तलबेली[८] री।
भोरे भाइ आइ ढिंग बैठी जानत गटी[९] गवेली[१०] री।।५।।
देखि अनमनैं स्याम सखी संग सुमिरि समौ कल केली री।
हारि मानि निज नाहु[११] भये बस अंस बाहु हँसि मेली री।।६।।
मेंटी रोंटि[१२] अटक नटवर भेंटत भरि भुजनि सकेली[१३] री।
उमड़ि चले मन मदन मनोहर मान मेंड़ पग पेली री।।७।।

मूलताल—

स्याम तमाल रसाल लाड़िली गौर बरन बर बेली री।
कुंज मंजु बर्षत पुहुपांजलि चंप गुलाब चमेली री।।८।।

---

१. यहाँ आवौ जू। २.किसी विषय में एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की चाह और प्रयत्न, लाग-डाट, प्रतिस्पर्धा, किसी काम में हार-जीत होने पर पूर्वनिश्चय के अनुसार किसी को कुछ देने या लेने की प्रतिज्ञा, बाजी, शर्त। ३. सखी, सहेली ४. घालना, डालना। ५. अवहेलना, उपेक्षा, तिरस्कार करनेवाली। ६. उन्मत्ता, बावली। ७. महल में रहनेवाली, महली, सेविका। ८. तलाबेली; बेचैनी। ९. गाँठ, मंत्रणा, रहस्य; भेद। १०. नासमझ; गँवार ११. स्वामी, पति। १२. खेल-हँसी में बुरा मानना, चिढ़कर बेईमानी करना; रूठना; चिढ़ जाना। १३. समेटी।

श्रीबिहारीबिहारिनिदासि मिलै सुखरासि रसिक रस झेली री।
रीझैं देत दुलहिनी दूलहु फूलहु प्रेम सहेली री।।९।।

द्वितीय दिवस— श्रीस्वामी जू कौ पद—

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुंज निकुंज मंजु में झेलैं।।
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिहिं बन चलि मिलि केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्रेम परस्पर बूका[१] बंदन[२] मेलैं।।१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—राग—जैतश्री ताल—धमारि

तू ना करि मान मनोहर लाल लड़ावैगौ।
छिन छिन मान अयान करहु न सयान समझि सुकुँवारी जू।
प्यारे पिय की पीर न जानत ब्याकुल बिरह बिहारी जू।।१।।
आसन सैन सुहाइ न परस्यौ असन बसन करि बीरा जू।
दरस परस की आस अवधि बदि हौं आई दै धीरा जू।।२।।
सुन्दर सुघर उदार धीर बर होत बिलंब अधीरा जू।
बिनु स्रम हौं लै मिलिहौं लालहिं और निपट पथ नीरा जू।।३।।
तनत हिये मन सुनत उठत भयौ मोहि अचंभौ भारी जू।
पिय तन पीठि दीठि मो तन हँसि पूछति कुँवरि कहारी जू।।४।।
पिय के अंग संग अनुराग रमित स्रम आलस केलि बिसारी[३] जू।
सदा समीप सुहाग नयौ नित तू कबहूँ होत न न्यारी जू।।५।।
प्रेम अवधि तुव प्रानप्रिया सुनि मन संभ्रम उपजावै जू।
स्रवन सुनत नैंननि देखत मुख बचन प्रतीति न आवै जू।।६।।

१.सुगन्धित चूर्ण। २. रोली, बूकाबंदन—लुकंजन—वह अंजन जिसे लगानेवाला किसीको दिखता नहीं है। ३. भुला दी।

अंग अंग बसन दसन रसनावलि कटि तट चरननि चित्र बनावै जू।
कर कंकन दर्पन[1] देखत मोहिं यहि कौतुक हँसि आवै जू।।७।।

मूलताल—

सुनि सुनि समझि समझि सखि बैंननि नैंन सैंन जिय जानी जू।
सकुचति हँसति न चितवति इत उत लटकि लाल लपटानी जू।।८।।
मन कौ मन मन के मन सौं मिलि मगन भये तन लीना जू।
रस में रिस रिस में रस उपजत रसिक प्रवीन प्रवीना जू।।९।।
श्रीवृन्दाबिपिन बिलासनि बिलसत श्रीबिहारीदासि पियप्यारी जू।
रूठत तूठत[2] सब सुख बूठत[3] या रस की बलिहारी जू।।१०।।

तृतीय दिवस— श्रीस्वामीजू कौ पद—

अबकैं बसंत न्यारेई खेलैं काहू सौं मिलि खेलैं न री तेरी सौं।
दुचिते भये कछु न सचु पाइयत
तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं।
देखैगी जो रंग उपजैगो परस्पर
राग रागिनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
राग ही में रंग उपजैगो* ऐरी सौं।।

---

१. हाथ में आरसी तब दर्पण कैसा? दर्पण की क्या आवश्यकता? ऐसेही वे तुम्हारे संग में हैं, अंग-अंग में सिंगार कर रहे हैं, फिर भ्रम कैसा? २. तुष्ट, प्रसन्न होते हैं। ३. आस्वादन करते हैं; बरसते हैं; बरसाते हैं। * पाठान्तर—उपजत।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—राग-मारू, ताल-धमारि

जै श्रीवृन्दाबन बिराजैं; जहाँ नित बिहरैं श्रीरसिकराइ।। टेक।।
झिलिमिलि झिलिमिलि आसपास श्रीजमुना अति सोहैं।
मिलि खेलैं दोउ जलाथला सखि देखि मेरौ मन मोहैं।।१।।
सौरभ कन पुलिन रंग बिमल कमल फूले।
सारस हंस चकोर मोर मृदु कूजित कल कूले।।२।।
कुसुमित कल कुंज लता बिबिध रंगनि फूली।
मत्त मुदित गुंजित अलि अवली फिरत भूली।।३।।
बहै सीतल मंद सुगंध पवन सुक पिक सुर गावैं।
सुनि स्त्रवन रवनी रवन मदन मोद बढ़ावैं।।४।।
बनी बीथी बिचित्र चित्रित धर प्रतिबिंबित झाईं।
मंडल मनिमय मौजमहल मुक्तनि छबि छाईं।।५।।
पुहुप बितानननि[1] झलमलैं झरोखनि सहचरि दुलरावैं।
अति अद्‌भुत सुख सेज सरस लाड़िली लाल लड़ावैं।।६।।
गौर सुभग साँवल सखि अंग अंगनि राजैं।
पहिरैं पट पीत अरुन मौजनि छबि छाजैं।।७।।
बिलोकत बिबि बदननि छबि हँसि हँसि उर लागैं।
बचन रचन कहैं प्रिया जू सौं लाल यहै रति माँगैं।।८।।

मूलताल—

मन्द मन्द मधुरे मधुरे सप्त सुरनि गावैं।
तान तरंग भृकुटि भंग अंग अंग अनंग नचावैं।।९।।

---

१. चाँदनी, चँदोवे; प्रचुर, अधिक, समूह; विस्तार, वृद्धि।

दोउ रूप उदित प्रेम मुदित मत्त मननि करषैं।
गुन रीझि सुरति अंग अंग हरषि सुखनि बरषैं।।१०।।
श्रीकुंजबिहारी बिहारिनिदासि सुख संतत करति खवासी[1]।
नव नव रति* छिन छिन प्रति सुख निरखि नागरीदासी।।११।।

चतुर्थ दिवस— श्रीस्वामीजू कौ पद— राग–बसंत, ताल–अद्धा तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारी जू मेरी आँखिन में बूका मेलत
कित अंतर होत मुख अवलोकनि कौं।
और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहत
मिस[2] कैं पैयाँ लागौं पन पन कौं।।
गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि बर है तन कौ।।
श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख
कहाँ पाइयत ऐसौ सुख मन कौ।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— **हो हो रंगीली नागरी** (पृष्ठ २४ पर देखें)

पंचम दिवस— **बसंत के पद**

श्रीस्वामीजू के पद—राग–बसंत, ताल–चौताल

कुच गडुवा[3] जोवन मौर कंचुकी बसन ढाँपि लै राख्यौ बसंत।
गुन मंदिर रूप बगीचा में बैठी है मुख लसंत[4]।।
कोटि काम लावण्य[5] बिहारी जाहि देखत सब दुख नसंत।
ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी तिनकौं भरन [6] आई मिलि हसंत।।१।।

---

* पाठान्तर—रस। १. सेवा, टहल; सहेली, सखी का काम। २. बहाना, ढोंग। ३. झारी, गोल लोटा। ४. शोभित होता है; प्रकाशित होता है; दिखाई देता है, विराजित होना, स्थित होना। ५. सलोनापन, सौन्दर्य। ६. भेंटना, पूर्ण करना; रंग–रस से भरना।

राग–बसंत, ताल–धमारि

श्रीकुंजबिहारी कौ बसंत सखि चलहु न देखन जाहिं।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव नव जुवतिन मिलि माहिं।।
बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत फूली अंग न माहिं[१]।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहिं छिरकत छैल छुबाहिं[२]।।२।।

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं। कुंज निकुंज मंजु में झेलैं।।
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिहिं बन चलि मिलि केलैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्रेम परस्पर बूका[३] बंदन[४] मेलैं।।३।।

अबकैं बसंत न्यारेई खेलैं काहू सौं मिलि खेलैं न री तेरी सौं।
दुचिते भये कछू न सचु पाइयत
तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं।।
देखैगी जो रंग उपजैगौ परस्पर राग रागिनीन के फेरा फेरी सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
राग ही में रंग उपजैगौ* एरी सौं।।४।।

राग–बसंत,अद्धा तिताला

(ए) रहौ रहौ बिहारी जू मेरी आँखिन में बूका मेलत
कित अंतर होत मुख अवलोकन कौं।
और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहत
मिस कैं पैयाँ लागौं पन पन कौं।।

---

१. माना, समाना, अटना। २. क्षुब्ध होते हैं, स्पर्श करते–कराते हैं। ३. सुगन्धित चूर्ण ४. रोली, बूका बंदन– लुकंजन–वह अंजन जिसे लगानेवाला किसीको दिखता नहीं है। * पाठान्तर–उपजत।

गावत खेलत जो सुख उपजत सो तौ कोटि बर है तन कौ।।
श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख
कहाँ पाइयत ऐसौ सुख मन कौ।।५।।

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग-बसंत, ताल-चौताल-रूपक

चौताल– **बिहरत राजरितु बनराइ। जहाँ नित उदित नव नव भाइ।।**
रूपक– **सहज कुसुम समूह नख सिख सुन्दरी सुखदाइ।**
लाल अलि आसक्त सौरभ मिलि बिलसि बिलसाइ।।१।।
अंगराग पराग रंगे अंग पिय पीयूषै[१] प्याइ।
मत्त घूमत नैंन जुगबर सैंन मैंन[२] नचाइ।।२।।
सहज सरद बसंत रितु रतिपति लियें ललचाइ।
देखि यह सुख जियें हम सब सुख दियें समुदाइ[३]।।३।।
या रसै सेवत न नीरस सरस कुकवि कहाइ।
सब रसनि कौ राजरस या बिनु न हियौ सिराइ[४]।।४।।
सुनि समझि उपदेस श्रीहरिदासि दिन दुलराइ।
जै श्रीबरबिहारिनिदासि बिपुल बिनोद बिसदनि[५] गाइ।।५।।६।।

राग-हमीर-बसंत, ताल-धमारि

जै श्रीवृन्दावन आनंद न अंत। तहाँ श्रीस्यामा संतत बसंत।।
सब रितु राजत रसिक संग। ताके सुखदायक सब अंग अंग।।
उपजत तन अनंत अनंग रंग। यौं बिहरत अनुरागी अभंग।।१।।

१. अमृत को। २. कामदेव। ३. समूह, राशि; पूर्णांश; प्रसन्नतायुक्त; प्रसन्नतापूर्वक। ४. शीतल होता है। ५. विस्तृत; निर्मल, उज्ज्वल।

नख सिख रस श्रीवंत मंत[१]। सखि प्रेम पुलकि कामिनी कंत।।
दोउ घन दामिनि ज्यौं मिलि लसंत। हौं दिन[२] दरसौं बिलसत हसंत।।२।।
कनकलता कुसुमित रसाल। ताके लोभ सु अलि साँवल तमाल।।
जाके अधर बिंब सिंदूर भाल। भई बिपुल पुलकि मनसा बिसाल।।३।।
ललित बलित श्रीफल बिलास। जाके नव जोवन मंजरी सुबास।।
ताके अलक भृंग मधु गंध लोभ। अंचल चंचल चित छुवत छोभ।।४।।
जंघ कदलि मृदु भुज मृनाल[३]। ताके नीलोत्पल[४] लोचन गुलाल।।
ताके चरन कमल कर कमल लाल। सखी प्रान जीवन मोहन मराल।।५।।

मूलताल–

रुचि रवनी कवनी किसोर। जानत नहिं निसि गत भये भोर।।
चितवत प्यारी बिधु बदन ओर। पिय पान करत लोचन चकोर।।६।।
पुनि नाभि निरखि नागर गंभीर। अति ब्याकुल ह्वै बैठे अधीर।।
पुनि नीबीबंद अवलंब स्याम। सखि बचन रचन रिझवत सकाम।।७।।
आतुर चातुर अति बड़ बिनोद। सखि रहसि बहसि मन मदन मोद।।
दोउ चाहि[५] रहे दृग दृष्टि जोरि। छोरत छबि कर छंद[६] बंद निहोरि[७]।।८।।
सुख आलिंगन चुंबन मिलाप। कूजित कोकिल कोमल अलाप।।
हारटूटि कल[८] बलय[९] फूटि। गये कसन कंचुकी चिकुर[१०] छूटि।।९।।
आली बाली[११] बर बिमल वारि। सेवति सींचति सुख मुख निहारि।।
दोउ सकत न बिबस बसन सँभारि।
श्रीबिहारिनिदासि हँसि हँसि सिंगारि।।१०।।७।।

१. मत्त, छके हुए। २. सदा, नित्य। ३. कमलनाल। ४. नीलकमल। ५. देख रहे। ६. छल से। ७. प्रार्थना करना; आराधना; आभार स्वीकार करना; मनाना; खुशामद करना। ८. सुन्दर ९. कड़े, कंकण। १०. केश। ११. आलबाल; थामला।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू के पद—राग-बसंत, ताल धमारि

सजनी नव निकुंज द्रुम फूले।
अलिकुल संकुल[1] करत कुलाहल सौरभ मनमथ मूले।।
हरषि हिंडोरे रसिकराय* बर जुगल परस्पर झूले।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद देखि नभ देव विमाननि भूले।।८।।

जुगल किसोर मेरे कुंजबिहारी प्यारी बन बिहार बिहरत नवरंगा।
अरुन हरित मुकुलित द्रुम पल्लव अलिकुल गुंज अनंग तरंगा।।
सौंधे बहुत अबीर अरगजा खेल परस्पर छिरकत अंगा।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद रीति रस
सुख देखत ललितादिक संगा।।९।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—

आजु बसंत बन्यौ सखि बन में।
फूल सौं लाल लड़ाइ लाड़िली खेलत मत्त मदन में।।
फूली लता ललितादिक देखति फूल बढ़ी तन मन में।
फूल सौं दासि बिहारिनि गावति फूल के सुख सदन में।।१०।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

बिहरत बिपिन भरत रंग ढुरकी[2]।
हरषि गुलाल उड़ाइ लाड़िली संपति कुसुमाकर की।।
कसूँभी[3] सारी सौंधे भीनी ऊपर बंदन भुरकी।
चोली नील ललित अंचल चल झलक उजागर[4] उर की।।

---

*पाठान्तर—रासि। १. घना; झुंड; संकीर्ण; भरा हुआ; परिपूर्ण। २. ढुरकना, बहना; बहा रहे हैं; लुढ़का रहे हैं; बरसा रहे हैं। ३. लाल रंग। ४.दीप्तिमय; प्रकट, प्रकाशित; प्रसिद्ध; कीर्तिशाली; प्रकट रूप से; खुलेआम।

मूलताल–

मृदुल सुहास तरल[1] दृग कुंडल मुख अलकावलि रुरकी।
श्रीनागरीदासि केलि सुख सनि रही मैंन ललक नहिं मुरकी।।११।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद–राग–हमीर–बसन्त, ताल–धमारि

श्रीबिहारी जू खेलत बसंत।
रंग भरी सब सखीं बिराजति राधे जू रूप लसंत[2]।।
फूले[*] जोवन मौर मंजरी अधर पान उलहंत[3]।
आयौ मदन मानौं सैंन साजि कैं चँवर चिकुर ढुरंत।।
छूटत मूक[4] झूक[5] सौरभ की नैंन गुलाल उड़ंत।
कूजत मधुकर मंजीर[6] कोकिला बाजे बजत अनंत।।

मूलताल–

मच्यौ है परस्पर खेल कटाच्छनि क्रीड़त भामिनि कंत।
श्रीरसिकबिहारी कौ सुख निरखत धीरज कौन धरंत।।१२।।

श्रीललितमोहिनी देव जू कौ पद–राग–बसंत, ताल–धमारि

आयौ बसंत मदन दल साजैं दुहुँ दिसि ह्वै गई भीर।
अबीर गुलाल उड़त नैंननि सौं रस बिबस बिसरि गये चीर।।
खेलत हँसत हँसावत सब मिलि धरत नहीं मन धीर।
श्रीललितमोहिनी कौ सुख बाढ़्यौ धन्य आजु दिन बीर[7]।।१३।।

---

[*] पाठान्तर–फूल्यौ। १. द्रवयुक्त; रस से भरे; चपल; चंचल; अस्थिर; तीव्रगामी; चमकीले; लम्पट; लालसायुक्त; विशाल। २. चमक, झलक रहा है; सुशोभित, विराज रहा है। ३. फूट रहे हैं, निकल रहे हैं; खिल रहे हैं; हुलस रहे हैं। ४. मूकना–त्यागना; छोड़ना; फेंकना। ५. झोंक–वेग; झोंका; आघात; धक्का; झकोरा; तेजी से जानेवाली चीज का धक्का; मुट्ठी। ६. नूपुर; घुँघरु। ७. सखी।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—राग–बसंत बहार, ताल–धमारि

नवल दोऊ आजु बसंत से फूले।
गोरी किसोरी के अंस दियें भुज स्याम छिपैं भुजमूले।।
सहज सिंगार अनंग के अंगनि※ सोहत पीत दुकूले।
रंग में रंग बढ़ावति लाड़िली लाल हिंडोरे से झूले।।

मूलताल—

यह सुख नित्य दिखावति नागरी नाहु भये अनुकूले।
श्रीभगवतरसिक बिलोकत यह छबि नैंन कुरंग[१] से भूले।।१४।।

बसंत के बिसेष पद

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—राग–हमीर–बसंत, धमारि

तन मन आजु फूल्यौ बसंत। पुलकि पुलकि हिय हुलसंत।। टेक।।
नख सिख अनंग रंग झलमलाइ। बिन परसैं अंगनि कलमलाइ[२]।।
नैंन बैंन भये अधर कंप। इक टक चितै नहिं पलक झंप[३]।।१।।
झुकि झुकि आवत अंस बाहु। अधर सधर[४] रस पियत चाहु।।
कल कपोल चुंबन रसाल। मानौं कोकिल बोलत बसंत काल।।२।।
उर उमँग्यौ रति जोवन मौर❀। मानौं बसंत अति रुचि बैठ्यौ ठौर।।
तहाँ दृष्टि चलि चाहि कोकिल संचार[५]।
जहाँ लाल कर परसि मर्दत मार।।३।।

※पाठान्तर—रंगनि। ❀ पाठान्तर—जोर। १. हिरन। २. कलमलाना, कसमसाना–भीड़ के कारण आपस में रगड़ खाते हुए हिलना, कुलबुलाना; घबड़ाना, बेचैन होना; क्षुब्ध होना। ३. झपकना, पलक गिरना, झपकी लेना। ४. ऊपर का होंठ। ५. गमन, भ्रमण, प्रवेश, मार्ग, मार्गदर्शन, संदेशवाहक साधन और क्रिया।

भँवर गुंजत चूरी झनकार। मानौं बाजत मृदंग सुरतार।।
नूपुर सब्द मानौं बोलत हंस। अंग फूले पराग परसिवे गसंस[१]।।४।।
कामिनी कंत पहिर्‌यौ सुहाग। अंग अंग दोऊ रंगे हैं राग।।
उमँगि उमँगि कसि उर लपटंत। आतुर चातुर खेलत बसंत।।५।।
अंग भरि भरि अंकनि समात।
चोज मनोजनि छिन छिन ललचात।।
आसन गुन उड़ावत गुलाल। पूरन सुख पिय लिख्यौ भाल।।६।।
निसिबासर दोऊ रहत संग। जुग जुग बिहार अद्‌भुत अभंग।।
श्रीहरिदासि सहज अनुराग। श्रीललितकिसोरी के उर लाग।।७।।१।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—

पिय प्यारी सोहत हैं बसंत। दोऊ मदन मुदित भये सुरति अन्त।।
कनकलता मृदु नवल बाल। लपटी मरकत मनि पिय तमाल।।
गौर स्याम सोभा बिसाल। स्त्रम बूँदनि अतिसै रसाल।।१।।
नव जोवन उलहो[२] अंग अंग। किसलय दल कर अँगुरी सुरंग।।
परसत फल बिमल उरज उतंग[३]। मद पान करत कच कुटिल भृंग।।२।।
बिबिध सुमन फूले सुबास। डोलनि मंजुल मारुत[४] बिलास।।
बोलनि कल कोकिल कीर पास। मनसिज बसकरनी मन्द हास।।३।।
ललितादिक सींचति प्रेम वारि। छबि पान करत लोचन निहारि।।
गावत भगवत जस अति उदार। यह नित नौतन रस बन बिहार।।४।।२।।

---

१. ग्रसना, पकड़ना, कसना; कसते हैं, पकड़ते हैं। २. फूटा, निकला; खिला, हुलसा। ३. उत्तुंग, ऊँचे, प्रवर्द्धित। ४. पवन, वायु।

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग—बसंत, धमारि

सहज बसन्त कामिनी कंत। नित बिहरत मिलि इनहिं न अंत।।
फूले तमाल लता लपटंत। हँसत सुगन्ध जीवत सब जंत।।
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासि कसन्त।
रस बरसत* बिपिन अंग संग मैमन्त[1]।।३।।

आजु बसंत खेलत देखि।
विपिन बसन सुरंग भूषन बिबिध बरन बिसेखि।।
नैंन पुट भरि भरि प्रिया पिय आनि उर अवरेखि।
जै श्रीबर बिहारिनिदासि इहि सुख जन्म जीवन लेखि।।४।।

नवल वृन्दाबन नवल बसंत।
नव द्रुम बेलि केलि नव कुंजनि नवल कामिनी कंत।।
नव अलि अलक झलक नव कोकिल नव सुर मिलि बिलसंत।
नव रस रसिक बिहारिनिदासि कैं नव आनन्दहिं न अंत।।५।।

नवल बसंत नवल वृन्दाबन। नव परिमल[2] अलि लुब्ध तरुनि तन।।
नव पराग[3] अनुराग मगन मन।
नव बिहार बलि दासि रसिक जन।।६।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

श्री रसिकबिहारी प्यारी के संग रस भीनें खेलत बसन्त।
रस भीनें सब अंग बिराजत सोभा कौ नहिं अंत।।

---

* पाठान्तर—बसत। १. मदमस्त, मस्त। २. कुमकुम, चन्दन आदि को रगड़ना या घिसना; कुमकुम, चन्दन आदि के मर्दन से उत्पन्न सुगंधि; सुगंध, सुबास। ३. फूल के भीतर की धूल; पुष्परज ।

रस सौं भीनी तनसुख सारी छबि की उठति तरंग।
रस भीनी सब सखीं बिराजति सब अंग भरे रस रंग।।
रस की तान लेति नाना गति उपजत तान तरंग।
रस सौं भीनी सब द्रुम बेली सौरभ उड़त सुरंग।।
रस भीनें सब पंछी बोलत रंग जु करत तरंग।
रस सौं भीनौं श्रीवृन्दावन रस भरे भामिनी कंत।।
श्री रसिकबिहारी रस बस कीनें सोभा कौ नहिं अंत।।७।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—

आयौ आयौ बसंत रंग (सु) अति भयौ*।
प्रिया लाल तन मन हुलसानें बाढ़्यौ प्रेम (सु) सहज नयौ।।
फूले नैंन रूप रस माते कुटिल कटाच्छनि जब चाह्यौ।
श्रीललितप्रिये सुख कौ▲ सुख दीनौं रसिक सखी के हियें रह्यौ।।८।

*श्रीस्वामी नागरीदास जू के पद—

सजनी देखि खेल बसंत।
बन्यौ बन प्रसून फूले नवल कामिनी कंत।
अरुन बसन अंग अंग राजत अधर पल रस मंत।।
नैंन सुफल करि देखि नागरि नवल सुखहिं न अंत।।९।।

श्रीवृन्दाबन नवल बसंत।
तरु तमाल उर बेलि लपटी नवल भामिनि कंत।।
नव निकुंज नव केलि कलोलनि बदन कमल अलि अलक मंत।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारी नागरि नवल पिय बिलसंत।।१०।।

---

* पाठान्तर—भरयौ। ▲में। *आप श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के शिष्य हैं।

नवल नवल वृन्दाबन फूले। नव पराग अलि लोभी झूले।।
प्रिया कनक की बेलि झेलि रहै स्याम तमाल संग अनुकूले।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहार नागरि नवल गहि भुजमूले।।११।।

बने बसंत दोऊ बन में आज।
नवल लाल लड़ाइ प्यारी फूले उरज समाज।।
मदन मद अंग अंग प्रफुल्लित निरखि ललित बिराज।
श्रीहरिदासि बिपुल बिहार स्वामिनी सरस रसमय गाज।।
नरहरि गुन गाइ कुंजनि फूल फल छबि छाज।
फूले तन मन नवल नागरि रसिकबर सुख साज।।१२।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू कौ पद—राग—बसंत, ताल—तिताला

ललित नवजोवन तेरौ री बाल।
पल्लव अधर उरज जुग श्रीफल फूले नैंन बिसाल।।
मधुकर स्याम सुगंधनि लोभी बसत हिये पर* माल।
रसिक रूप नागर नवरंगी अँचवत परम रसाल।।१३।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—

यह छबि निरखिये नित नैंन।
नवल नागर नागरी पर वारिये रति मैंन।।
अधर मद पीवत पिवावत तृपति नहिं दिन रैंन।
प्रान पोषत परस्पर कहि कहि रसीले बैंन।।
सहज सरद बसंत संतत सहचरी उर ऐंन।
ललित बलित बिचित्र द्रुम बेली सरस सुख दैंन।।

---

* पाठान्तर—उर।

प्रेम प्रीति प्रतीति छिन छिन बढ़त तनु मन चैंन।
रसिक भगवत माधुरी मुसिक्यानि मन हरि लैंन॥१४॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
मार्गसीर्ष कृष्णा ८

प्रथम दिवस :— सुनि धुनि मुरली बन बाजे (पृष्ठ ५९ पर देखें)
श्रीकुंजबिहारी हरषि बुलाई (पृष्ठ ८४ पर देखें)
द्वितीय दिवस :— जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू (पृष्ठ ६० पर देखें)
तू ना करि मान मनोहर (पृष्ठ ८५ पर देखें)
तृतीय दिवस :— (ए) यह कौन बात जु अबही और (पृष्ठ ६० पर देखें)
जै श्रीवृन्दाबन बिराजैं (पृष्ठ ८७ पर देखें)
चतुर्थ दिवस :— बनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि (पृष्ठ ६० पर देखें)
मनुहारि करैं मनुहारि लला (पृष्ठ ८१ पर देखें)

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
मार्गसीर्ष कृष्णा ११

प्रथम दिवस :— **श्री कुंजबिहारी कौ बसंत सखि** (पृष्ठ ८३ पर देखें)

निकुंज बिराजिये जू (पृष्ठ ९ पर देखें)

द्वितीय दिवस :— **चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं** (पृष्ठ ८५ पर देखें)

चलैं जू कौतिक देखन जाहिं (पृष्ठ ११ पर देखें)

तृतीय दिवस :— **अबकैं बसंत न्यारेई खेलैं** (पृष्ठ ८६ पर देखें)

(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत (पृष्ठ १६ पर देखें)

चतुर्थ दिवस :— **(ए) रहौ रहौ बिहारी जू** (पृष्ठ ८८ पर देखें)

मोहन मोहिनी सुहेलरा गाऊँ (पृष्ठ १३ पर देखें)

रात्रि में जागरन के पद—

श्रीगुरुदेव जू के पद— राग–दरबारी–कान्हरौ, ताल–धमारि

जे जन मन क्रम बचन चरन रज सेवत हित नित श्रीहरिदासै।
प्रेम भक्ति उपजत ताही छिन पाप ताप अवगुन गति नासै।।
कंचन जिमि[१] बपु धातु परसि रस पलटि रूप मिलवत सुखरासै।
जैसें दियौ है प्रसाद प्रगट करुना करि
श्रीकुंजबिहारीबिहारिनिदासै।।१।।
जे कोऊ गुरु गोविन्द नाम गुन गावत गुनत[२] बिचार बिचारि।
सेवत सहज सदा वृन्दाबन मन क्रम बचन चरन चित धारि।।
पाये सुख न गये आतुरता[३] संपति बिपति एक उनिहारि[४]।
अहंकार ममता के औगुन छाँड़ि सकल स्वारथ दुखदारि।।

१. जैसे। २. सोचना, विचार करना। ३. अधीरता; उतावली; बेचैनी; दुःख। ४. अनुहार; अनुरूपता; समानता; तुल्य, समान।

कबहूँ काल न ख्याल करत डर भूलि न तिन तन सकत निहारि।
कहि न सकत निसंक सुदृढ़ भक्त सौं माया रही लटी[१] ह्वै हारि।।
निर्भय भये गये भय तम तरि संगी सस्त्र रहे कर डारि।
श्रीबिहारीदास यामें भ्रम नाहीं बेद पुराननि कह्यौ पुकारि।।२।।

श्रीस्वामी जू के पद–

माई री सहज जोरी प्रगट भई जु रंग की
गौर स्याम घन दामिनि जैंसें।
प्रथमहूँ हुती अबहूँ आगैं हूँ रहिहै न टरिहै तैसैं।।
अंग अंग की उजराई सुघराई सुन्दरता[❀] ऐसैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सम बैस[२] बैसैं[३]।।३।।
जोरी बिचित्र बनाई री माई काहू मन के हरन कौं।
चितवत दृष्टि टरत नहिं इत उत मन बच क्रम याही संग भरन कौं।।
ज्यौं घन दामिनि संग रहत नित बिछुरत नाहिंन और बरन कौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी न टरन कौं।।४।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद–

जोरी बिचित्र बिराजत रंगनि अंगनि में नव नव छबि छाई।
भूषन सुरंग[४] रगमगे[५] बागे लागे उर बिलसत सुखदाई।।
मन्द हँसनि मधुरी बातनि में मगन भये सहचरि बलि जाई।
रूप रुचिर[६] बर बिहरत चोज[७] मनोजनि[८] में अति ही सरसाई।।५।।

❀ पाठान्तर–चतुराई सुन्दरता। १. दुबली; पतित; तुच्छ। २. वयस, अवस्था। ३. बहसैं, स्पर्द्धा करते हैं। ४. सुंदर रंगवाला; खुशरंग; सुन्दर; लाल रंग। ५. रंजित, रंगे हुए। ६. चमकीला, सुन्दर, मनोहर; मधुर। ७. विलास रहस्यपूर्ण, चमत्कारपूर्ण हँसी, व्यंगयुक्त बात। ८. कामदेव के समूह।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

आज फूल अंग अंग न समाती।
छबि सौं छोरि स्याम कटि पट इत गोरे गात छूटि गई गाती।।
नीबी नाभि निरखि बंद ही बंद मिलवत कर मानिनि मुसिक्याती।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सुरति रस बिबस भये
बिलसत थिर थाती[१] ।।६।।

श्रीस्वामी जू के पद–राग–कान्हरौ, ताल–ध्रुपद–

रुचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे।
राग रागिनी अलौकिक उपजत नृत्य संगीत अलग लाग लागे।।
राग ही में रंग रह्यौ रंग के समुद्र में ये दोऊ झागे[२]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी पै रंग रह्यौ
रस ही में पागे[३] ।।७।।

ऐसेई देखत रहौं जनम सुफल करि मानौं।
प्यारे की भाँवती भाँवती के प्यारे जुगलकिसोरहि जानौं।।
छिन न टरौ पल होहु न इत उत रहौ एक ही तानौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी मन रानौं।।८।।

प्यारी जू जैसें तेरी आँखिन में हौं अपनपौ[४] देखत हौं
ऐसे तुम देखत हौ किधौं नाहीं।
हौं तोसौं कहौं प्यारे आँखि मूँदि रहौं
तौ लाल निकसि कहाँ जाहीं।।

---

१. धरोहर; अमानत; संचित, पूँजी। २. झाग की तरह ऊभ–चूभ होते हैं; झूल–फूल रहे हैं; अति सुख की वृद्धि में प्रेम के बस हो रहे हैं। ३. सराबोर होना; लिप्त होना। ४. अपनापन; आत्मीयता; अपना स्वरूप; होश, सुधबुध; आत्म गौरव; गर्व।

मोकौं निकसिवे कौं ठौर बतावौ
साँची कहौ बलि जाऊँ लागौं पाँहीं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा तुमहीं देख्यौ चाहत
और सुख लागत काहीं।।९।।

राग–अड़ानौ, ताल–ध्रुपद–

इत उत काहे कौं सिधारति[१] आँखिन✻ आगैं ही तू आव।
प्रीति कौ हित हौं तौ तेरौ जानौ तू ऐसौई राखि सुभाव।।
अमृत से बचन जिय की प्रकृति सौं मिलि* ऐसौई दै दाव।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी
तू प्रीति कौ मंगल गाव।।१०।।

बात तौ कहत कहि गई▫ कठिन परी (हो) बिहारी।
प्रान तौ नाहिंने तन अस्तबिस्त भये कहैं कहा (हो) प्यारी।।
भाँवते की प्रकृति देखत जु स्त्रम भयौ बहुत हियारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम❋ बाहु सौं
बाहु मिलाइ रहे मुख निहारी।।११।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद–

लाल करत तेरे गुन गानें।
जो न पत्याहु सपथ नहिं मानत चलि सुनि अपनें कानें।।
जो तुम स्याम होहु वे स्यामा तौ यह बेदन[२] जानें।
श्रीबीठलविपुल बिनोद बिहारी सौं बादि रूसनौं ठानें।।१२।।

---

१. जाती हो। २. पीड़ा, दुख। ✻पाठान्तर–मेरी आँखिन। * मिलै। ▫गई अब। ❋स्यामा।

श्रीस्वामी गोविन्ददेव जू कौ पद—

ठनगन[१] छाँड़ि दै अलबेली।
लाल मनावत तू नहीं मानत जोवन गर्व गहेली।।
मेरें कहैं उठि चलि री सयानी नागरि नवल नवेली।
श्रीरसिक गोविंद पिया तेरौ मग जोवत[२]
(सो) गुहत हार चमेली।।१३।।

श्रीस्वामी जू कौ पद—राग-सिहानौ, ताल-अद्धा तिताला—

हरि कौ ऐसौई सब खेल।
मृग तृष्ना जग व्यापि रह्यौ है कहूँ बिजौरौ न बेल।।
धन मद जोवन मद राज मद ज्यौं पंछिन में डेल।
कहैं श्रीहरिदास यहै जिय जानौ तीरथ कौ सो मेल।।१४।।

श्रीगुरुदेव जू के पद—

हरि बिन* कौन सुखनि कौ दाता।
सबै स्वारथी सहाइ न कोऊ बन्धु पिता सुत माता।।
तुम निरपेच्छ निबाहत सब दिन पूरन त्रिभुवन त्राता[३]।
तुम से प्रभु तजि अनत करत रति ते पसु प्राननि घाता।।
तुम उदार सुकुमार सहज सुन्दरबर मुरि मुसिक्याता।
श्रीबिहारीदास छबि निरखि मनोहर गौरस्याम रंग राता[४]।।१५।।

---

*पाठान्तर—तुम तजि। १. नेग पाने के लिये हठ करना; हठ,जिद। २. देखते हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं। ३. रक्षक। ४. रँगे हुए; अनुरक्त हुए।

स्याम तन मन गोरे गात में गसत[१] री।
जद्यपि हुती न न्यारी कहत हा हा री प्यारी
बिचित्र बिहारी बंद बाहु सौं कसत री।
प्राननि सौं प्रान सीर[२] बाँटत होत अधीर
एक ही सुर स्वास बिस्वास ह्वै हँसत री।।
श्रीबिहारिनिदासि रोम रोमनि कहाँ लौं[३] ब्योरौ
ताफता[४] की मौज[५] अति ताहू सौं[*] लसत री।
चोली[६] सी अमोली प्रीति ऐसे सुख में समीति[७]
स्याम तन मन गोरे गात में गसत री।।१६।।

श्रीस्वामीजू कौ पद—राग-बिहाग, ताल-ध्रुपद

स्यामा प्यारी आगें चलि आगें चलि गहवर
(मेरी आली)[✿] जहाँ बोलै कोयल री।
अति ही बिचित्र फूल पत्रनि की सिज्या रची
रुचिर सँवारी तहाँ तुव सोयल री।।
छिन छिन पल पल तेरीयै कहानी तुव मग जोयल री।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत छबीलौ
कामरस (मेरी आली) भोयल[८] री।।१७।।

---

[*]पाठान्तर— तें। [✿] पाठन्तर— बन भीतर। १. पकड़ते हैं; ग्रसते हैं; कसते हैं। २. निजी अधिकार, स्वाधिकार; निजी भाग; अपनी वस्तु। ३. तक, पर्यन्त; समान, बराबर। ४. तापता—धूप-छायाँवत् रेशमी कपड़ा। ५. तरंग, लहर; आनंद। ६. पनवाड़ी, पान बेचनेवाला, तमोली जैसे वह पानों की गड्डी को बदलता रहता है, उसका सदा ख्याल बना रहता है। ७. समिति—मिलना, एकत्र होना; समाधान; सभा; झुंड; सादृश्य, साम्य, आचार पद्धति। ८. भोना—रँगना; अनुरक्त होना; सराबोर होना।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

अलबेली अलक झलक आनन (अति) अलकलड़ी सुख देत।
अलबेली अँखियनि पल नहीं लागत
अलबेली बतियनि मुसिकति मन हरि लेत।।
अलबेली चाल चलत अलबेली अलबेली ताननि मान समेत।
श्रीसरसदासि अलबेले लाल बारत मन छिन छिन
कहि न परत छबि जेत।।१८।।

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू कौ पद—

सुख सेज पौंढ़ी भामिनी रसिक लाल के अंग संग।
सुरति रंग बर चपल अंग अंग लज्जित नव घन दामिनी।।
सुन्दरता की रासि किसोरी नहिं उपमा कौं कामिनी।
श्रीबीठलबिपुल बिनोदबिहारी सौं
यहि रस बिलसत जामिनी।।१९।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद—

पिय पियरी सेज बनाई आज।
पियरी झलक[1] चमक[2] सब पियरी पियरे बसन बनै सब काज।।
पियरे फूल बनैं सब तन में पियरी सोभा सहज समाज।
श्रीललितमोहिनी यह सुख देखत स्याम तनैं पियरे सब साज।।२०।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद—राग-बिहाग, ताल-धमारि

एक बात कहौं स्त्रवन लगि चित दै सुनहु पियारी।
सुभग फूल फूले श्रीवृन्दावन तैसीये सरद उजियारी।।

---

१. चमक; आभास; भीतर से चमक; क्षणिक, अधूरा दर्शन। २. ओप, कांति; झलक; भड़क।

चलि राधे अन्तर सुख लूटैं सखी रहैं सब न्यारी।
मोहिं तोहिं जहाँ अपनपौ भूलैं रहिहै न सुरति सँभारी।।
जहाँ न खरकौ होय पंछी कौ यौं दुरि कहत बिहारी।
श्रीनरहरिदासि पिय मन की जानी आगें सेज सँवारी।।२१।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू के पद–

तिहारौ तौ पर्‍यौ (है) मान कौ सुभाव।
तुम्हरी खोट कै इनकी कहियत कौन करै यह न्याव।।
ये तौ तिहारे रूप रस लोभी मुख जोवत[१] दिन जाव।
छिन में रस बेरस करि डारत कोप करै करवाव।।
समझि देखि राधे मन माहीं बिन पानी की नाव।
श्रीरसिकबिहारी रस बस कीने अपने अपने दाव।।२२।।

प्यारी मान न कीजै ऐसे रसीले स्याम सौं।
तुम तौ हो लालन की अँखियाँ बँधे हैं तिहारे दाम[२] सौं।।
बिन आगस[३] जिय दोष धरति हौ निरखि आपुसी बाम सौं।
श्रीरसिकबिहारिनि जानि अपनपौ
बिहँसि मिलीं पिय धाम[४] सौं।।२३।।

श्रीस्वामी जू कौ पद–राग–बिहाग, ताल–अद्धा तिताला

जो कछु कहत लाड़िलौ लाड़िली जू सुनिये कान दै।
जो जिय उपजत सो तिहारेई हित की कहति हौं आन दै।।

---

१. जोहना–देखना; राह देखना, प्रतीक्षा करना; खोजना। २. रज्जु, रस्सी; माला। ३. आगस्– अपराध, दोष। ४. किरण, तेज, प्रभा; प्रताप, प्रभाव; देव, परमेश्वर; घर; वासस्थान; आश्रय; अधिष्ठान।

मोहिं न पत्याहु तौ छाती टकटोरि[१] देखौ पान[२] दै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी जाचक कौं दान दै।।२४।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

स्यामा* मेरी आँखिन कौ गहनौं।
अंजन मंजन कै मनि कुन्दन फुन्दन ह्वै नियरे रहनौं।
कबहूँ कर कंठ धरौं कबहू उर सम्पुट में न कहूँ कहनौं।।
श्रीबिहारिनिदासि जराव जस्यौ जुग प्रेम पुहाइ लियौ लहनौं[३]।
पहिरौं कि धरौं न डरौं दिन देखत आँखिन कौ गहनौं।।२५।।

श्रीस्वामी जू के पद–राग–सोरठ, ताल–ध्रुपद

सोई तौ बचन मोसौं मानि तैं मेरौ लाल मोह्यौ री साँवरौ।
नव निकुंज सुखपुंज महल में सुबस बसौ यह गाँवरौ।।
नव नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली नहिं नहिं यह ब्रज[४] जाँवरौ[५]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी पै
बारौंगी मालती भाँवरौ।।२६।।

चलि❁ सखि कुंजबिहारी सौं चित दै मिलि देखैं उनकी भाँवती।
सुन्दर सौं सुन्दरि मिलि खेलत कैसें (हैं) धौं गाँवती।।
औचक आइ परी सखी तहाँ पिय पै पाँइ चपाँवती।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं
मिलि पौंढ़ी तन मन राँवती[६]।।२७।।

---

*पाठान्तर–ए। ❁ चलौ। १. स्पर्श से पता लगाना या जाँचना। २.हाथ। ३. लाभ; पाना; प्राप्त करना। ४. समूह; व्याप्त। ५. जाया, जुवति; जानेवाला। ६. रमण करती हुई।

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग–सोरठ, ताल–अद्धा तिताला

बिहरत (बन) नव नव रंग राजत कुंज रवन रवनी।
कंठ लागि लाड़ति लालन के (सु) मानिनि मन भवनी।।
कबहुँक झुकि झाँपति[1] अंचल मुख चंचल उर अवनी।
नाहु बाहु गहि बदन बिलोकत बिहँसि बचन चवनी[2]।।
लाल प्रसंसि लगत छिन छिन पग छाँड़िये हठ ठवनी[3]।
श्रीबिहारिनिदासि हिलिमिलि खेलौ
सुखदानि कुँवरि कवनी[4]।।२८।।

रसिकबर बन बोली चलि आली।
नव निकुंज नायक मनमोहन तू नवजोवन वाली।।
सुनहु सुघर सुर ज्ञान सिरोमनि बात कहत कित ठाली।
इत आसक्त अधीर उतै वे आतुर करत उताली[5]।।
श्रीबिहारिनिदासि सहचरि संग लै चली अली प्रीति प्रतिपाली।
राख्यौ पन उनकौ मन दोऊ बीच मिले बनमाली।।२९।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग–परज, ताल–धीमा तिताला

राजत रंग भरे रति नैंना उनींदे[6] री सोभा देत।
सकुचि सकुचि बिगसत[7] सखि अरुन[8] असित[9] सेत[10]।।
मानहुँ अंबुज पर जुग पुतरी अटके अलि संकेत।
अति रसलुब्ध तजि न सकत हँसत सुरति हेत।।

---

१. ढकती है। २. च्यवना–चूना, टपकना, क्षरणा; मृदु बोलती हैं। ३. ठाननेवाली। ४. कमनीय, कामना करने योग्य; सुन्दर। ५. जल्दी, जल्दबाजी; अधीरता। ६. नींद से भरे हुए; झपकते हुए। ७. विकसत–खिलते, प्रस्फुटित होते हैं। ८. लाल। ९. काले। १०. श्वेत, सफेद।

सब सुख सूचत अति अनुरागे जागे री स्याम समेत।
श्रीबिहारिनिदासि अंग अंग मनोहर मोहन मन हरि लेत।।३०।।

श्रीस्वामीरसिकदेव जू कौ पद–

लेत परस्पर अंग सुबास।
मनहि तरंग उठत मनमथ की और न कछू प्रकास।।
रोम रोम तन यह सुख बिलसत भोजन भूख न प्यास।
श्रीरसिकबिहारी मगन रहत नित सहत न खटक[१] उसास[२]।।३१।।

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग–खम्माच, ताल–चौताल

श्रीवृन्दाबन बीथिन में जमुना पुलिन बीच
नित्य कौ बिहार श्रीबिहारिनिदासि पायौ है।
लाल अलबेलौ अलबेली संग बनी बधू
करनि काम की केलि कुंज में बसायौ है।।
बोलनि हँसनि मिलि खेलत रसीली प्रिया
ललित रसीलौ लाल कंठ लै लगायौ है।
निकट खवासी[३] निजु दासी लियें बीरी कर
जुगल लड़ैती रीझि रंग बरसायौ है।।३२।।

सोनौ सो स्याम गढ़ावत[४] हौ मनु प्रान दियैं दृग दृष्टि उहाँई।
चम्पे की माल गरें पियरी पहुँची कर पियरेई पाट[५] पुहाई।।

१. खटकने का भाव; चुभन, टीस; दु:ख; आशंका; बुरा लगना। २. साँस; ऊपर की खींची हुई या लम्बी साँस। ३. दासी; सहेली। ४. गढ़ाते हैं, बनाते हैं। ५. वस्त्र; रेशम; रेशमी वस्त्र।

पियरे पट केसर खौर खुली पियरी झलकैं अंग अंग सुहाई।
प्रानप्रिया जू की प्रेम की बात
श्रीबिहारिनिदासि कही मुँह आई।।३३।।

श्रीस्वामी जू कौ पद–राग–जैजैवन्ती, ताल–धमारि

रोम रोम रसना जो होती तऊ तेरे गुन न बखाने (री) जात।
कहा कहौं एक जीभ सखी री बात की बात बात।।
भानु स्त्रमित और ससि हू स्त्रमित भये और जुवति जात।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी
तू राखति प्रान जात।।३४।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद–

मेरी गति तुही है लड़ैती प्रानप्यारी जू।
भई है प्रसन्न* राधे हितु हू कौ हित जानि
सकल गुन निधान परम उदारी जू।।
सहज सनेही दोऊ रूप ही कौ रस पीयैं
उमँगि उमँगि अंसनि भुज धारी जू।
ललित रसिक बर सदा ही समीप रहैं
मिलत मिल्यौई चाहैं जीवन हमारी जू।।३५।।

*

* पाठान्तर– कृपाल।

जागरन के बिसेष पद

श्रीस्वामीजू कौ पद— राग-दरबारी-कान्हरौ,धमारि, धुनि— माई री सहज जोरी

राधा रसिक कुंजबिहारी कहत जु हौं न कहूँ गयौ
सुनि सुनि राधे तेरी सौं।
मोहिं न पत्याहु तौ संग हरिदासी हुती बूझि[1] देखि भटू[2]
कहिधौं कहा भयौ मेरी सौं।।
प्यारी तोहिं गठौंद[3] न प्रतीति छाँड़ि छिया[4]
जानि दै इतनीब एरी सौं।
गहि लटपटाइ रहै छैल दोऊ छाती सौं छाती लगाइ
फेरा फेरी सौं।।१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—

छकीयै सी रहति न कहति समझि कछु बात;
तोहिं असर री मदन मद।
तैसेई मत्त रहत किसोर गहि पाँइ
ज्याइ मोहिं प्याइ पीवत जोवन सद।।
जाके नाम काम उपजत तुव बाम अमल बल
ज्यौं भावै त्यौं तन मनहिं मरद।
जै श्री बिचित्रबिहारिनिदासि कहति भई बिबस
जुवती जस सब रस प्रेम परे रद।।२।।

---

१. पूछकर। २. सहेली, सखी। ३. गाँठ में बँधा धन। ४. छी, ग्लानि सूचक सम्बोधन।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–धुनि–जोरी विचित्र बनाई री

जै जै श्रीहरिदासि हमारी।

जै जै केलि बढ़ावति⊛ निसिदिन कुंजबिहारिनि प्राननि प्यारी।
जै जै रूप बढ़ै छिन छिन तैसीयै लाल के चाह अपारी।।
जै जै रसिक रंगीली बाला महा प्रेम सुख की बरिषा री।।३।।

जै जै जै लड़ैती प्यारी की।

श्रीकुंजबिहारिनि अति हितकारिनि अद्‌भुत रूप उज्यारी की।।
नित्य लाल कौ रंग बढ़ावति हँसि हँसि भुजा सु धारी की।
श्रीललितकिसोरी रसिक सिरोमनि जीवन प्रान हमारी की।।४।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद–

जै जै कुंजबिहारिनि प्यारी।

जै जै कुंजमहल सुखदाइक जै जै लालन कुंजबिहारी।।
जै जै वृन्दाबन रस* सागर जै जै जमुना सिंधु सुखारी।
जै जै श्रीललितमोहिनी धनि धनि
सुखदाइक सिरमौर हमारी।।५।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

मानिनी मन मोहत मोहन पिय कौ।

अद्‌भुत कथा कहौं इक सुनि सखी जितौ है सहज बल तिय कौ।।
अन उद्दिम अनयास भयौ▲ बस स्याम भाँवतौ जिय कौ।
श्रीबिहारिनिदासि नव कुंज केलि मिलि बिछुरत नाहिं रतिय कौ।।६।।

⊛ पाठान्तर–लड़ावति। * सुख। ▲भये।

धुनि—चिरजीवौ लाल रसाल

मधुरे मधुरे बोल बोलि बोल निरमोल रही क्यौं तू अबोलिये।
बोलिये जू बहुरि नैंन स्रवन मन सीतल होत तन
तेरे कहत प्यारी बोल इत उत न डोलिये।।
तब चितै मुसिकाइ ललन अकुलाइ लियें उर लाइ प्यारीजू
रसिकराइ तुही धौं समझि रहौ अरुझि बिरह बंद खोलिये।
श्रीबिहारिनिदासि प्रीतम प्यारी सौं कहत
छिन छिन प्रति रति दृष्टि पला प्रान तोलिये।।७।।

लालन ललना ललना करैं; कछु न सुहाइ समाइ न मन में।
तोसौं लाल कही मैं कहि रही
मुख मोरि जोरि दृग देखत हू न सरै।।
यहै न प्रीति की रीति लाड़िली जानति हो
तुम नेंम प्रेम कौ जो जिहिं भाइ ढरै।
श्रीबिहारिनिदासि प्रीतम प्यारी मिलि खेलत मैं मान
मनावत बहुरि जिनि करै तातें फिरि फिरि पाँइ परैं।।८।।

प्यारी तू कोलौं करि रही री हठि मोसौं; मानति नाहिं री मनायौ।
नाहिं कहूँ सुनी न समझी न देखी नैंननि तिहूँ लोक
गुन रूप निपुन जो करि सकै री सरि तोसौं।।
तुव हित नित चितवत छिन ही छिन
तिनसौं क्यौं कीजे मन मैलौ अनदोसौं।
श्रीबिहारिनिदासि की बिनती मानि रसिक राधे
रहसि मिली री तजि रोसौं।।९।।

सुनि नव नागरी जू पिय सौं तू काहे कौं मान बढ़ावति।
रहि न सकत तुम बिनु तुम इन बिनु बिन देखैं दुख पावति
तातें मोहिं अनहूँ कहैं कहि आवति।।
जिय बिचारि उत्तर निवारि कत* करत आरि मो तन निहारि
कहि काहे कौं प्रीति दुरावति।
श्रीबिहारिनिदासि पिय प्रानपति अतिसै सुख पावत
जब तू सनमुख नैंन सौं नैंन मिलावति।।१०।।

श्रीस्वामी जू के पद–राग–कान्हरौ, ताल–चौताल, धुनि–ऐसेई देखत रहौं

कुंजबिहारी हौं तेरी बलाइ लेऊँ नीके हो गावत।
राग रागिनी के जूथ उपजावत।।
तैसीयै तैसी मिली जोरी प्रिया जू कौ मुख देखत चन्द लजावत।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ नृत्य देखत काहि न भावत।।११।।

द्वै लर मोतिन की एक पुंजा पोति कौ सादा नेत्रनि
दृष्टि लागौ जिनि[१] मेरी।
हाथनि चारि चारि चूरी पाँइनि इकसार चूरा चौपहलू
इकटक रहे हरि हेरी।।
एक तौ मरगजी[२] सारी तन तें कंचुकी न्यारी
अरु अँचरा की बाँई गति मोरि उरसनि[३] फेरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
या रस ही बस भये हरैं हरैं[४] सरकनि नेरी[५]।।१२।।

---

* पाठान्तर–कित। १. मत, नहीं। २. मर्दित; मसली हुई। ३. खोंसना; अँचल का खोसे जानेवाला छोर। ४. धीरे–धीरे। ५. निकट।

जोवन रंग रंगीली सोने से गात ढरारे नैंना कंठ पोति मखतूली।
अंग अंग अनंग झलकत सोहत काननि बीरैं[१]
सोभा देत देखत ही बनैं जौन्ह[२] में जौन्ह सी फूली।।
तनसुख[३] सारी लाही[४] अँगिया अतलस[५] अतरौटा[६] छबि
चारि चारि चूरी पहुँचिनि पहुँची खमकि[७] बनी
नकफूल जेब[८] मुख बीरा चौका[९] कौंधे सम्भ्रम भूली।
ऐसी नित्य बिहारिनि श्रीबिहारीलाल संग अति आधीन आतुर
लटपटात ज्यौं तरु तमाल कुंज महल
हरिदासी जोरी सुरति हिंडोरे झूली।।१३।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

एरी नव निकुंज सुख पुंज प्रिया पिय करत हैं कल केलि।
स्याम तमाल रसाल सौं लाड़िली हासि कुसुम फल फलित
मानौं ललित बलित बेलि।।
अंग अंग संग रंग अनंगनि* रहे रति रस झेलि।
श्रीबिहारिनिदासि दुलरावति गावति दम्पति कौ सुख
सहित सखी सहेलि।।१४।।

मुँहाचुहीं ज्यौ ज्यावत दोऊ नेंकु न इत उत दृष्टि जात।
यहै प्रीति परतीति निरन्तर पल नहिं लागत अनुरागत नित
कित बासर कित निसि बिहात।।

१.कान के गहने। २.ज्योत्स्ना, चाँदनी। ३.मलमल जैसा अति बारीक रेशमी वस्त्र। ४.लाल। ५. अति बारीक रेशमी वस्त्र। ६. साया, अन्तर्वस्त्र। ७. अच्छी तरह जमकर। ८. शोभा। ९. आगे के चार दाँत। *पाठान्तर–अंग अंग रस रंग तरंगनि।

मन ही मन उपजत तरंग अंग अंग भरे रंग ए हँसि वे मुसिकात।
श्रीबिहारिनिदासि आसक्ति उपासित* दंपति कौ सुख
निरखि निरखि आँखि न अघात।।१५।।
नैंननि सौं नैंन जोरैं इत उत मुख न मौरैं।
मंद मंद हासि मन हुलासि स्त्रवत सुधा मानौं द्वै ससि
मिलि चारि चकोर के भोरैं।।
जिहिं जिहिं अंग परनि परैं तित ही तित हरैं हरैं ढरैं ढिंग
अंग अंग अनंगनि रोरैं।।
श्रीबिहारिनिदासि प्रवीन प्रिया पिय यौं बिहरैं
भरि भुज सनेह निहोरैं।।१६।।

श्रीस्वामी जू के पद—राग—कान्हरौ, चौताल, धुनि—प्यारी जू जैसें तेरी आँखिन में

दृष्टि चेंप बर फंदा मन पिंजरा राख्यौ लै पंछी बिहारी।
चुनौं[1] सुभाव प्रेम जल अंग स्त्रवत
पीवत न अघात रहे मुख निहारी।।
प्यारी प्यारी रटत रहत छिन ही छिन याकें और न कछू हियारी।
सुनि हरिदासि पंछी नाना रंग
देखत ही देखत प्यारी जू न हारी।।१७।।
भूलैं भूलैं हूँ मान न करि री प्यारी
तेरी भौहैं मैली देखत प्रान न रहत तन।
ज्यौ[2] न्यौछावरि करौं प्यारी तोपै
काहे तें तू मूकी कहत स्याम घन।।

---

* पाठान्तर– उपासिक। १. चुग्गा। २. जिय, जी।

तोहिं ऐसैं देखत मोहिंब कल कैसैं होइ जू प्रान धन।
सुनि हरिदासि काहे न कहत यासौं
छाँड़िब छाँड़ि अपनौं पन।।१८।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद—

कैऊ बेर कही मानत न मान गही
हियौ कठिन कछु और ही ठई री।
पाँइ गहि मनाई आधीन किये माई
सो तू एक प्यारी नई मानिनी भई री।।
जब देख्यौ अपनौं रूप और न कोऊ त्रिया अनूप
मान की छरकि[१] तब हिय तें गई री।
हँसि बोली सुख की रासि मन भाई श्रीनरहरिदासि
पल पल बाढ़ी प्रीति नई री।।१९।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद—

जैसैं मेरे जिय में तू बसति है ऐसैं हौं तेरे जिय में
बसत हौं किधौं नाहीं।
तेरी छबि मेरी अँखियनि भरि रही कछू न सुहाइ
मेरी ज़ीवन तो ताहीं।।
सुनि मेरे प्रानपति प्यारे तूही मम जीवन तूही प्रान तन माहीं।
श्रीललितमोहिनी के सुख बिहरौ
अब जिनि करौ बिलम्ब कहत समझाहीं।।२०।।

१. छिटका; बिखरा हुआ कण; अल्प; आभास।

श्रीस्वामी जू के पद– राग–अड़ानौ, चौताल, धुनि–इत उत काहे कौं

एक समैं एकान्त बन में करत सिंगार परस्पर दोई।
वे उनके वे उनके प्रतिबिंबनि देखत रहत परस्पर भोई[1]।।
जैसें नीके आजु बनें ऐसे कबहुं न बनें
आरसी[2] सब झूठी परी कैसीयैब कोई।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा* रीझि परस्पर प्रीति नोई[3]।।२१।।

तेरौ मग जोवत लालबिहारी।
तेरी समाधि अजहूँ नहिं छूटत चाहत नाहिंन नेंकु निहारी।।
औचक[4] आइ द्वै कर सौं मूँदे नैंन अरबराइ[5] उठी[❁] चिहारी[6]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा ढूँढत
बन में पाई प्रिया दिहारी[7]।।२२।।

तू रिस छाँड़ि री राधे राधे।
ज्यौं ज्यौं तोकौं गहरु[8] त्यौं त्यौं मोकौं बिथा री साधे साधे।।
प्राननि कौं पोषत है री तेरे बचन सुनियत आधे आधे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
तेरी प्रीति बाँधे बाँधे।।२३।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद—राग–सिहानौं अद्धा तिताला

लालन तेरेई आधीन।
सुनि री सखी हौं साँच कहत हौं तुव जल है ये मीन।।

---

*पाठान्तर—स्यामा कुंजबिहारी। ❁ उठे। १. मुग्ध होना, मुग्ध हो रहे हैं। २. दर्पण, एक दर्पणदार अँगूठी। ३.बँध गये। ४. अचानक, एकाएक; सहसा। ५. हड़बड़ाकर। ६. चीत्कार। ७. देवी, दातार, देहरी। ८. देर, दुर्गम, कठिन।

तेरे रस बस स्याम सुन्दर बर जाँचत हैं ज्यौं दीन।
श्री बीठलबिपुल विनोद बिहारी होत मनावत लीन।।२४।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

देखत दुहुँनि दोऊ दृग न अघात हैं।
द्वै द्वै दुहूँ ओर सन्मुख निसि भोर निमिष निमेष न लगत अकुलात हैं।।
खेलन कौं मन फूल तन न रहैं दुकूल
अंग अंग मिली* कैसें सकुचि समात हैं।
अति अद्‌भुत रूप गौर साँवल सरूप
मनहुँ मनसा कापै कहैं गहैं जात हैं।।
श्रीबरबिहारिनिदासि दम्पति ये सुखरासि
देखत दुहुँनि दोऊ दृग न अघात हैं।।२५।।

खेलत चतुर राधे चतुर सुजान सौं।
गुन रूप निधि दोऊ नागर इनसे येऊ
पटतर दैवे कौं न बनैं काहू आन सौं।।
बारौं कोटि अनंग ब्रह्मांड कोटि कोटि सुख
और बारौं कोटि छबि ससि सत भान सौं।
श्रीबिहारिनिदासि रास गावत प्रेम बिलास
पावत सुख निवास रागिनी रंगान सौं।
सघन मगन बन सुख के सदन कुंज
खेलत चतुर राधे चतुर सुजान सौं।।२६।।

---

*पाठान्तर–फूली।

मैं हूँ देखे सुखरासि सनेह सलौंन में।
स्याम कंचुकी के भोरैं छोरत बंद टटोरैं
बिमल सु तन गोरैं हँसी मुख मौंन में।।
बिबस रसिकराइ पाये हूँ अरबराइ
हौं हूँ रही अरगाइ रीझि रौंन चौंन में।।
अंग में अंग झलमलाइ रुचि में सुरुचि पाइ
चतुर किधौं भुराइ हौं हूँ भूली भौंन में।।
श्रीबरबिहारीनिदासि अंक में निसंक हासि
मैं हूँ देखे सुख रासि सनेह सलौंन में।।२७।।

कुँवरि कुँवर कंठ सोहै कंठ मालसी।
कोमल बिमल कल बलय बिचित्र बाहु
नाहु टोहै[१] मोहै मन मनहुँ मृनालसी।।
बिच बिच फूल स्याम सेत पित राते
अति सीतल सुगंध समरंधनि[२] सँभालसी।
करज अरुझि झूमि झूमि झूमिका से पाछैं
आछैं देखि छबि बिहारिनिदासि ह्वै निरालसी।।
भूषन दूषन सब डारे न्यारे न्यारे करि
कुँवरि कुँवर सोहै कंठमालसी।।२८।।

---

१. टोहना, खोजना, सुराग लगाना; टटोलना; अँगुलियों से छूकर पता लगाना, थाह लेना; आजमाना। २. स्मरांध; मदनोन्मत्त।

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग बिहाग-ध्रुपद, धुनि-स्यामा प्यारी आगें चलि

आनंद कंद दूलहु मकरंद स्त्रवत मंद मंद वृन्दाबन चन्द बिहारी।
मधुरे मधुरे हँसत लसत दसन बसन छबि पर
ससि कोटि करौं बलिहारी।।
वे कला कृस हीन तुव[⊛] प्रवीन पूरन पावन
किरन पान करत निज जन मन हरषि नैंन निहारी।
श्रीबिहारिनिदासि पिय प्यारी रस बस मगन सघन उपमा देत
कछू न बनें बलि लाड़िली लाल तिहारी।।२९।।

रहसि रसबस करि पिय प्यारी।
कबकी निहोरति झूठीयै झुकि झुकति काम कसौटी कसति
देखि स्याम की सुगति स्त्रमित करत मनुहारी।।
आरति हरन सुख करन सुभाव[▲] तेरौ
मेरौ कह्यौ मानि जानि हौं हितू तिहारी।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी सुघर सुकुमारी नैंन सैंन निहारी
ऐसैं सुख देहु बलिहारी बलि लाड़िलीलाल कुंजबिहारी।।३०।।

कबके बैठे बिनती करत चरन धरत सुन्दरबर सुकुमार किसोर।
अति ही आतुर चातुर चपल धीरज न धरत
चितवत छिन छिन तुव बिधु बदन ओर।।
प्रीति उदै करि सु दृष्टि किरन तृषित मोहन नैंन चकोर।
श्रीबिहारिनिदासि पिय प्याइ सुधा रस
उमँगि ढरे तन मन आनन्द न थोर।।३१।।

⊛ पाठान्तर—तू। ▲प्रभाव।

प्रानपति प्रेम भरे री, रहि न सकत निमिष✿ न न्यारे।
नैंन बैंन स्त्रवन सखी राखी▲ उर पर धरि मैं पिय परखि खरे री।।
मैं ज्यौंही ज्यौंही कसे त्यौंही त्यौंही बसे
मन सन्मुख चितै इत उत न टरे री।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी के बचन सुनत अनुकूल
भई फूल अंग अंग रस रंग ढरे री।।३२।।

करत सिंगार परस्पर अँखियाँ (मेरी आली) आरसी करि मेरी।
जदपि अंग अंग अनेक नग दीपति
तदपि लई हौं नवल नागरी नेरी[१]।।
अंजन मंजन कै मन रंजन जहाँ जहाँ चाहि
चितवत हरि तहाँ तहाँ तित ह्वै हौं हेरी[२]।
श्रीबिहारिदासि स्वामिनी स्याम सखी नेंकु न बिसरत[३]
कहत हमरे तन मन प्रीति निजु तेरी।।३३।।

तेरे* कियें मान व्यापत री प्राननि के प्रान।
इहि डर डरपत जिन घटै हेत मन ही मन कलपि लेत
नाहिं करत बादि संकेत बिसरे सबै सयान।।
जदपि तू करुनामय लाड़िली पालति मो मन चौंप[४] (की)
चाड़िली[५] अंग अंग सुख दै बर बाड़िली[६] सकल गुन निधान।
श्रीबिहारिनिदासि रस बिलास हुलसि प्रेम प्रकासि
यौं राजौ साजौ रति दै अधरामृत पान।।३४।।

✿ पाठान्तर–निमिष हू। ▲राखे। * तेरेई। १. निकट; २. दृष्टि करी; देखा। ३. भूलते हैं। ४. चाह, इच्छा, उमंग, चाव, बढ़ावा; उत्साह। ५. चंड-प्रचंड; प्रबल; उद्धत; बहुत बढ़ी हुई। ६. बढ़ी हुई; आश्रयस्थान; सुख स्वरूपा, अतिश्रेष्ठ।

सिर अति ही सोहति मन मोहति री,
गोरे तन (मेरी आली) तनसुख की सारी सुही।
अंग अंग में झलक लाल के मन ललक नेंकु न लागैं पलक
निरखि निरखि मुख तामें स्याम कंचुकी चुहचुही[१]॥
आये कुंज में रहसि रस ही रस परसि
पूजी[२] मन आस और बासना जिय जुही[३]।
श्रीबिहारिनिदासि बलि बलि या बानिक पर और न सुहाइ
बहु भाँति बरनत कवि इह छबि फबति तोसी तुही॥३५॥

अनभती[४] अँखियनि चितवति रीझवति हैं मन लाल कौ
नव बाल चलत लटकति गति आवति हैं सुख दैंन।
तन सिंगार सुकुमारि समझि कह्यौ स्याम सौं
ज्यौंही त्यौंहीं मुख रुख लियें नैंन सैंन बिनु बैंन॥
चलि आये सुख पाये नवल निकुंज में
सुखपुंज प्रियापिय उदित मुदित मन मैंन।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम बरबस किये
सुरति रति जीति यौं गर्व गनैं न॥३६॥

प्यारी जू के बदन कमल पर अलकावलि
मानौं (भँवर) आनि बैसे* मधुपगन।
तिनहिं निवारत सिंगार मिस स्याम काम बस रहे
जकि थकि तहाँ दरस परस बाढ़ी लाल कें ललक मन॥

---

१. रसीली; रस टपकती हुई; मजेदार; फड़कती हुई; भड़कीली लगती हुई। २. पूर्ण की, पूरी की। ३. जो थी। ४. विचित्र तरह; अनोखे ढंग। * पाठान्तर—बैठे।

करत बिलास हास मिथुन मन हुलास
हिलि मिलि खेलैं दोऊ सुख के सदन।
प्रेम कौ पार न पावैं लाड़िली लाल लड़ावैं आपुन रीझि रिझावैं
कहति न आवै श्रीबिहारिनिदासि गावै बढ़ावै मोद मदन।।३७।।

एक ओढ़नी ओढ़ें पौढ़ें प्रिया पिय प्रेम प्रजंक।
अर्ध निसा रस रीझि भींजि रहे
अपने अपने कर ऐंचत हँसत निसंक।।
सखी राखति उर पर अंचल तर लटपटाइ रहे
सीत भीत* यौं गाढ़े गहि अंक।
श्रीबिहारिनिदासि निरखि सखी या छिन की छबि पर
बारति तन मन अरु बारति सब रस रंक।।३८।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू के पद—

पिय प्यारी पौढ़े पल ना लागत मुख देखि देखि मुसिकात।
रूप की रासि प्रकासि परम रस
बिबस परस्पर पुलकि पुलकि लपटात।।
उपजत हैं मन मिलि तरंग अंग अंग रंगीले * लसत गात।
सुखद बिहार सुसार सरसदासि
बिलास निरखत नैंन सिरात।।३९।।
मदन कुंज▲[१] सुख पुंज गुंज अलि दुंजन□[२] खेल बढ़्यौ सुखदाई।
भूषन बसन कसनि न्यारे प्यारे मिलि करत केलि मन भाई।।

---

* पाठान्तर—भीत ह्वै। * रसीले। ▲स्वंज; (सेज) □ द्वंजन। १. स्वंज—आलिंगन, आलिंगनबद्ध, आसक्त। २. दो जनें।

अंग अंग संग रंग छबि* उपजत मानौं सुरंग ओढ़नी दुरंग उढ़ाई।
करत▲ बिहार बिहारी बिहारिनि
सरसदासि नैंननि मुसिकाई।।४०।।

श्री गुरुदेवजू के पद— राग–बिहाग–धमारि, धुनि— तिहारौ तौ पर्‌यौ है मान

गुन तौ कछु निजु बरन्यौं❋ पै रूप की निकाई न जात कही।
अंग अंग माधुरी मनोहर कापै परत लही।।
करत केलि भुज कंठ मेलि झेलि सुरति सिंधु
सुख देत लाल ललना प्रेम उमही।
श्रीबिहारिनिदासि पिय रसिक सिरोमनि
आदि मध्य अवसान एकरस दंपति सुरति निबही।।४१।।

बादही गहर[१] करत बातनि बातनि बीतई राति ।
स्याम सुघर सुख पुंज निकुंज में बैठे बड़ी बार■ के
हौं याही तें अकुलात।।
उत्तर○ दै मोहिं उलटावति मो मन में न समाति।
अपनौं सुख सुमिरि सखी री समयौ गयौ तें
तब तू मोहूँ❁ सौं सतराति।।
आरति क्यौं न निवारति पिय की नाहिंनें सही जाति।
श्रीबिहारिनिदासि प्रीतम हित प्यारी
सुनि□ स्त्रवन उठि चली मुसकाति।।४२।।

---

*पाठान्तर—सुख (अति) ▲करि। ❋बरनें। ■बेर। ○ऊतर। ❁मोही। □सुनत। १. ढील; देर, समय।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

स्यामा प्यारी आजु कछु रीझि दैहैं री।
करि सिंगार दर्पन दिखरावत तेरे मन मान्यौं है री।।
साखि दई ललिता हरिदासी श्रीनरहरिदासि यौं बात कहै री।
श्रीरसिकबिहारी इह बर माँगत मान गाँस जिन हियें गहैं री।।४३।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—राग–बिहाग, अद्धा तिताला, धुनि—जो कछु कहत लाड़िलौ

मनावत लाल री मानिनी मान कियें न बनें।
तूही तूही करै तोहिं हृदै धरै तेरे गुननि गनैं।।
तन सौं तन मन सौं मन मिलि प्राननि सौं प्रान सनें।
श्रीबिहारिनिदासि कौ मानि कह्यौ सु
लह्यौ सुख अपनें सींचि स्याम सजनें।।४४।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू के पद—

जोरी मत्त मगन सुखरासि।
आलस बलित ललित लोचन मिलि करत परस्पर हासि।।
बिहरत मिलि अंग अंग सुखदाइक ललना लाल हुलासि।
आनन्द निधि गुन निधि लावँनि निधि
निरखि सरस सुखरासि।।४५।।

राजति अलक लड़ी अलबेली।
सिथिल अंग रति रंग संग पिय जीवन प्रान नवेली।।
लटकि लटकि उर साँवल तन मन मिलि मदन मुदित बस खेली।
श्रीसरसदासि नैंननि सचु पावति बिहरत गर्व गहेली।।४६।।

कुंजमहल पिय प्यारी (जू) सोये।
सीतल सेज रची सुख सहचरी मुदित मदन मन भोये[१]।।
लटपटात गात न अघात मिलि हँसत लसत पट अंग अंग गोये[२]।
अति रस भरे बिहारी बिहारिनि सरसदासि मुख जोये[३]।।४७।।

छबीले छबि सौं चाँपत पाँइ।
द्वै लर बर (सु) तमाल लाल की सोभा कही न जाइ।।
अति कोमल कर परसि मनोहर राखत कंठ लगाइ।
बारत मन बलि जाइ निरखि मुख फूल्यौ अंग न समाइ।।
आनन्द मगन लाड़िली जीवन सुखनिधि मृदु मुसिक्याइ।
लीनौं अंक आपनौं बल्लभ राख्यौ उर लपटाइ।।
करत केलि सुखरासि परस्पर चौंप बढ़ी चित चाइ।
सुरति रंग बिहरत मिलि अंग अंग उपजत नव नव भाइ।।
ललिता ललित माधुरी गावत ललना लाल लड़ाइ।
श्रीसरसदासि सुखरासि सहचरी देखत हियौ सिराइ।।४८।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

अरी यह कौन सलौने रूप।
हँसि हँसि बातैं कहत सखी यह कुँवर कहाँ कौ भूप।।
स्यामल अंग पीत पट राजत माथे मुकुट अनूप।
भृकुटी बिकट नैंन रस बरसत बदन सुधानिधि[४] ऊप[५]।।

---

१. रंगे; अनुरक्त हुये; सराबोर हो गये। २. छिपाये। ३. देखे; देख रहे हैं। ४. चन्द्रमा। ५. ओप, चमक; कांति, झलक।

कुंडल किरन कुटिल अलकावलि रही कपोलनि झूप[१]।
श्रीरसिक बिहारी की छबि निरखत मदन तेज तन तूप[२]।।४९।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के पद–

ब्यारू करत लाल दिन दूलहु दुलहिनि कुंजबिहारी जू।
दरस परस रुचि बढ़ी परस्पर मोद बिनोद अहारी जू।।
चुम्बन चोष्य[३] लेह्य[४] आलिंगन अधर सुधा रस बारी जू।
भक्ष्य[५] भोज्य[६] परिरम्भन षटरस बहु बिधि सौंज सँवारी जू।।
अँचवन लेत देत कर बीरी बचन रचन सुखकारी जू।
श्री भगवतरसिक चकोर नैंन बिबि बदन चन्द्र बलिहारी जू।।५०।।

प्रिया पिय नैंन अरुनता छाई।
अंग अंग अंगरात मदन बस फिरि फिरि लेत जँभाई।।
कोमल कुसुम बिबिध नाना रंग सरस सुगंध सुहाई।
परम बिचित्र ललित अपनें कर रुचि* रुचि सेज बनाई।।
अति अनुराग भरी श्रीस्यामा मिलि पौंढ़ी किलकाई।
श्री भगवतरसिक रसमसे[७] दोऊ करत केलि मन भाई।।५१।।

हमारे नैंननि नित सुख देत।
कुंजबिहारिनि कुंजबिहारी चितवनि चित चुरि लेत।।
सुरति समर में जुरे सुभट दोऊ सुमन तल्प सुख खेत।
श्री भगवतरसिक किसोर किसोरी रंगे रंग झषकेत[८]।।५२।।

---

१. झूल रही है। २. स्तूप–शिखर; ढेर, राशि स्तंभ, समूह। ३. चूसने योग्य; चूसकर खायी जानेवाली वस्तु। ४. चाटने योग्य चीज, चटनी; चाटने योग्य। ५. चबाकर खाने योग्य; वह जो खाया जाय; आहार, भोजन। ६. खाने योग्य, भोजनीय; भोजन, खाद्य। ७. आनन्दमय, रंग में मस्त; पसीने से भरा, श्रांत, तर, गीला। ८. कामदेव। * पाठान्तर–रचि।

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग—सोरठ,चौताल,धुनि—चलि सखि कुंजबिहारी

नव निकुंज भवन में लाड़ति[१] लाड़िले लाल संग लाड़िली।
रूठे तूठे जाने जात न मोहिं मनावत आतुर चातुर
चोज करैं चित चाव चाड़िली।।
होड़ बदावद गावत रीझि रिझावत दोऊ री हँसि जात
छबीली* सुजान छबीले▲ तान कछु सुर छाँड़िली।
श्रीबिहारिनिदासि बलि (बलि) रस भीनें लीनें उर
सुन्दर सुघर कोक कला बर बाड़िली।।५३।।

माई री नव निकुंज के महल बैठे रसिक स्याम स्यामा बनि आई।
जे जे मुख मुसिकाइ कही प्रीतम ते ते मन भाई।।
तैसेई अंग भूषन पट लट सगबगी[२]
तैसीयै सहज सोभा सिर न्हाई।
श्रीबिहारिनिदासि की जोरी पौंढ़ी
साँवल गौर ललिता देत दुहाई°[३] ।।५४।।

श्रीस्वामी जू कौ पद—राग—सोरठ,अद्धा तिताला, धुनि—रसिकबर बन बोली

प्यारी अब सोय गई।
ज्यौं ज्यौं जगावत त्यौं त्यौं नहिं जागत
प्रेम रस पान करि भोय गई।।

---

*पाठान्तर—छबीले। ▲छबीली। १. लाड़, दुलार, प्यार प्राप्त करना, लाड़ दुलार, प्यार से फूलना, आनंदित होना। २. आर्द्र, तर; सराबोर। ३. घोषणा, मुनादी; रक्षा के लिये की गयी पुकार; प्रताप, ऐश्वर्य आदि की प्रसिद्धि; शपथ, सौगन्ध। °हाई—ढंग, पद्धति, ढब, तरह, घात करने की चाल, अवस्था, परिस्थिति।

जागत होइ तौ जगाऊँ प्यारी तातेंब परम सचु
रस ही रसिक रस बोइ गई।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा उठिकें गरें लगाई
नवल प्रीति सौं नोइ गई।।५५।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद–

प्यारे* दोऊ परम सुख में परे।
चाहत यही रहिहैं○ हम ऐसैं प्रान* प्राननि अरे।।
मन में हरषि सिहात[१] हँसि हँसि उमँगि अंकौं भरें।
श्रीहरिदासि रसिक की जीवन सेज हिय में ढरे❀।।५६।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू के पद–

कुंजनि▲ पधारौ प्यारी रंग भरी रैंन।
रंग भरी दुलहिनि रंग भरे पिया स्यामसुन्दर सुख दैंन।।
रंग भरी सेज रची फूलनि की रंग भस्यौ उलहत मैंन।
श्रीरसिकबिहारी पिय प्यारी मिलि दोऊ करहु सेज सुख सैंन।।५७।
सखी री❖ पौंढ़नि कौ समयौ भयौ।
इत आई द्रुम की परिछाँहीं उत ढुरि चन्द गयौ।।
उमँगि ढुरे दोऊ सुरंग सेज पर बाढ़्यौ रंग नयौ।
श्रीरसिकबिहारी बिहारिनि पौढ़े यह सुख दृगनि लह्यौ।।५८।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद–

दोऊ* सुरति सेज सुख सोये।
करत पान मकरन्द प्रिया पिय अधरसुधा रस भोये।।

---

* पाठान्तर– ए। ○ रहैं। * प्रान सौं। ❀ धरे। ▲महलनि। ❖अब। *(ए) दोऊ। १. ललकना; देखकर प्रसन्न होना, मुग्ध होना।

तन सौं तन मन सौं मन मिलवत मदन मान सब गोये[१]।
श्रीनरहरिदासी सुखनिधि बिलसत नैंन कमल मुख जोये।।५९।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के पद—

पौढ़े दोऊ ललित लतानि तरैं।
सुमन सेज सुखरासि सनेही अधरनि अधर धरैं।।
उरजनि उरज जोरि कटि सौं कटि लपटि भुजानि भरैं।
यह रस मत्त मगन मन सोये भगवत बिजन[२] करैं।।६०।।

सुरति सुख सोये स्यामा स्याम।
गल भुज दियें परस्पर दोऊ अंग अंग अभिराम।।
तन मन अरुझि रहे सुरझत नहिं जामिनि तीजे जाम।
श्रीभगवतरसिक पलोटत पाँयनि सहचरि सब सुख धाम।।६१।।

श्री गुरुदेव जू कौ पद—

प्रिया संग खेलिये हो लला, जाकी तुम करत हे अभिला[३]।
लाड़िली के अंग अंग सबै गुन तुव* निधि कोककला।।
नव निकुंज सुख के पुंज नवलहि महल भला।
श्रीबिहारिनिदासि दोऊ बल तौलत को अबला प्रबला।।६२।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

पिय प्यारी सोये सुख चैंन।
लिटपटाइ[४] रहे रोम रोम मिलि मगन भये बिहरत मन मैंन।।

---

१. गोवना–छिपाना; नष्ट करना, दूर करना। २. ब्यजन–पंखा। ३. अभिलाषा–इच्छा,चाह।
* पाठान्तर– तू। [४] लटपटाइ।

बदन कांति न समात नील पट ओढ़े छबि कछु कहत बनैं न।
सरस सनेह कसत उर सौं उर सहचरी लै राखै उर ऐंन।।६३।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—

लाड़ैं श्रीस्यामा स्याम सैंन, पौंढ़े सहचरी अंक ऐंन।।
अंग अंगनि कसैं मुख लसैं ललित हँसैं निरखि निरखि नेह नैंन।।
उपजत मौज मनोज मत्त मन मधुर मधुर बोलत मृदु बैंन।
श्री नागरीदासि नवरंग बिहारी बिहारिनि सुरति सुख दैंन।।६४।।

राजैं रंग महल जुगराज नैंन सैंन बातें करैं।
साजैं सहचरी छत्र बिचित्र बिहारी प्यारी पर चमचमात चौंर ढरैं।।
अद्‌भुत रूप रंग मनसिज मौजनि मननि हरैं।
सेवत श्रीनागरीदासि खवासि सुख रीझि रीझि हँसि अंक भरैं।।६५।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू कौ पद—

रसिकबर सुरति सुभट संग्राम।
महा धीर अति बीर परस्पर केलि ललित अभिराम।।
अंग अंग जोरैं रस माते कुंजबिहारी नाम।
बाजत बलय निसान नूपुरनि श्री वृन्दाबन धाम।।
गौर स्याम सोभा अद्‌भुत पर बारौं कोटिक काम।
अधर पान परिरंभन चुंबन रसिक रूप विस्राम।।६६।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—राग-परज, धीमा तिताला, धुनि-लेत परस्पर अंग

रंगे अंग संग रंगीले।
तन में तन मिलि मन मोहन सोहन छबि सौं छैल छबीले।।

पियैं जियैं मकरंद स्वाद सुख अति स्वादी अरबीले।
श्रीनागरीदासि कुंजबिहारी बिहारिनि सुरति रंग भरे
ढरे अनुराग रसीले।।६७।।

श्री गुरुदेव जू कौ सवैया—राग—खम्माच, चौताला, धुनि—सोनो सो स्याम

रूठनौं तूठनौं यौं रस बूठनौं तूठनैं तें अति रूठनौं भावै।
प्रेम प्रवीन प्रिया पिय आतुर चातुर केलि कला गुन गावै।।
नाहिं करैं तब पाँइ परैं हँसि आलस यौं मन मोद बढ़ावै।
श्रीबिहारिनिदासि कें प्रेम अभंग सुरंग में रंग अनंग बढ़ावै।।६८।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ कवित्त—

बिबिध बर माधुरी सिंधु में मगन मन
बसत वृन्दाविपिन बर सु धामी।
महल निजु टहल में सहल[१] पावै न कोऊ
छत्रपति रंक जिते कर्म कामी।।
रसिक रस रीति की रीति सौं प्रीति नित
नैंन रसना रसत नाम नामी।
हृदै कमल मध्य सुख सेज राजत दोऊ
रसिक सिरमौर श्रीहरिदास स्वामी।।६९।।

श्रीस्वामी जू के पद—राग जैजैवन्ती, धमारि, धुनि—मेरी गति तुही है

तुव जस कोटि ब्रह्मांड बिराजै राधे।
श्रीसोभा बरनी न जाइ अगाधे।।

१. सहज, सरल।

बहुतक जन्म बिचारत ही गये साधे साधे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी
ए दिन मैं क्रम क्रम करि लाधे।।७०।।

पिय सौं तू जोई जोई करै सोई छाजै।
और सेंघ[1] करै जो तेरी सोऊ लाजै।।
तू सुर ग्यान सब अंग सखी री मान करत बेकाजै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम जिय में बसै❀
तू नित नित बिराजै।।७१।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–

रस मत्त बिहारिनि प्यारी है।
नेंकु लखैं बस भये लाड़िले अद्‌भुत रूप उज्यारी है।।
उमग्यौ रंग सरोबर हिय में मृदु मुसिकनि कछु न्यारी है।
श्रीहरिदासी के हित बिहरत जीवन प्रान हमारी है।।७२।।

सुख रूप बिहारिनि रानी है।
तन मन मिलि बिहरत आनन्द में महा प्रेम रस सानी है।।
कुंजबिहारिनि नित्य लाड़िली अति जाननि मनि जानी है।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि ललित केलि मन मानी है।।७३।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– (सहेली) ताल–कहरवा

सहेली मेरौ लालबिहारी ऐसौ रगमग्यौ (जै) श्रीवृन्दाबन कौ री चंद।
जाके दरस परस सुख पाइये मन उपजत अति आनन्द।।१।।

---

१. स्पर्धा,होड़। ❀ पाठान्तर– कौ ज्यौ तोमें बसै।

नखसिख रसिक सु रस भर्ऱ्यौ मो प्रानप्रिया के रंग।
मो बिन नेंकु न रहि सकै बिहरत अनुराग अभंग।।२।।
अवधि प्रेम की साँवरौ मिलि करत नई नित केलि।
या रस तें नेंकु न टरैं हम दोऊ नवल नवेलि।।३।।
तोतें कछु न दुराइहौं[१] सखि तू मेरे हित प्रान।
तैं मेरे रस बस कियौ बर सुन्दर सुघर सुजान।।४।।
तोहिं सुन्यौ भावत भटू रुचि आछे मन की दौर।
तोसौं छिन छिन मन मिलै हौं बहुत कहौंगी और।।५।।
श्रीवृन्दाबन सहज सुहावनौं राजत जमुना के फेर[२]।
कुंज कुंज अलि गुंजहीं मानौं सदन मदन के मेर[३]।।६।।
इक दिन अति आतुर मिल्यौ नव चंपक कुंज किसोर।
तन मन की मोसौं सब कही सखि याकी प्रीति न थोर।।७।।
जित जित हौं तितही चलै तित आपुन हू चलि जाइ।
तितहीं मोहूँ लै चलै कछु आनंद कह्यौ न जाइ।।८।।
कुंज कुंज कौतिक घनौं लै तहीं तहीं बिरमाइ[४]।
ता छिन तें ता ठौर तें सखि आगें चल्यौ न जाइ।।९।।
जल थल कुंज पुलिन बन घन[५] रंग रह्यौ भरि कह्यौ न जाइ।
सब पंछी द्रुम तृन जलनि अलि कमलनि चलत डुलाइ।।१०।।
मेरे मन के आगें ही फिरै अति संपति सहित सुहाइ।
जब चाहौं ताही समै रति तैसियै ह्वै मिलि जाइ।।११।।

---

१. छिपाऊँगी। २. घुमाव; चक्कर;आसपास गोल कंकणाकार। ३. मेल, झुंड, समूह। ४. रोकना; अटका रखना; प्रेम में बाँधना; बिताना; ठहराना; विश्राम कराना। ५. अधिक; ठस; समूह।

श्रीबृन्दाबन जो सु कृपा करैं तौ निज सुख मननि समाइ।
हमैं इनहीं की आस अनत सुख सपनें हू न सुहाइ।।१२।।
लाल रतन मनि मुक्तामय तरु ललितै लता उदार।
स्यामै सेवत नित नये फल फूल प्रेम के भार।।१३।।
नारिकेलि नव नारंगी सत अम्ब मौर बहु ठौर।
देखत सोभा बन घनौं रस रीझि रह्यौ सिरमौर।।१४।।
श्रीबृन्दाबन जब देखौं तबही नयौ नित लेत प्रेम उपजाइ।
या रंग रस में मन झूमहीं तौ भूलि पाछिलौ जाइ।।१५।।
जा दिन तू पाछैं रही मोहिं मिल्यौ सामुहै[1] आइ।
मोहिं अकेली देखि कें कछु सुख ही में सुख पाइ।।१६।।
तब पूछी संग की कहाँ मैं उत्तर दियौ बनाइ।
नव कुंदन की कुंज कौ तैं पतौ मिलायौ आइ।।१७।।
तब सुनि सुख दूनौ भयौ मन फूल्यौ अंग न माइ❀।
तो तन चितै चितै हँसि मेरे पाँइनि पर्‌यौ लड़ाइ[2]।।१८।।
तब मेरौ मुख चूम्यौ माथौ चूम्यौ और चूमे नैंन कपोल।
तेरे देखत सब भयौ यौं कह्यौ लियौ बिन मोल।।१९।।
इक दिन नवल निकुंज में नट रह्यौ लता सौं लागि।
हौं फूलनि के ख्याल ही मोहिं मिल्यौ मदन मद जागि।।२०।।
ताकी बातनि ओर[3] न पाइये अति गावत सुघर सुदेस।
खेलत छिन छिन ख्याल में मोहिं मिल्यौ* मनोहर बेस।।२१।।

---

१. सम्मुख, सामने। २. प्यार, दुलारपूर्वक। ३. अंत; सीमा। ❀पाठान्तर– समाई। * मिलत।

गुन गन रूप अचागरौ[१] अति चंचल अंग अंग।
कोक मनौं मुख ही पढ़्यौ तन उपजत अनंत अनंग॥२२॥
तब मेरौ हाथ छियौ हियौ छियौ पुनि कर परसि कपोल।
चितवत ही चित वित[२] हर्‍यौ मेरे सुनत मधुर मृदु बोल॥२३॥
इक दिन कालिन्दी के कूल ही ठाढ़ौ ललिता के संग।
तैं मोसौं तबहीं कह्यौ यह तेरेई रस रंग॥२४॥
तू कछु उनहीं मिलावती मोसौं करत सैंन ही बात।
मेरी सी मोसौं कहै उनकी पुजवति[३] सब घात॥२५॥
प्यारी जू तुम हम सौं ऐसी कहौ तेरे पिय के प्रेम अवेस।
तेरे मन कौ भाँवतौ मिलि करि रमत सुदेस॥२६॥
प्यारी जू हम साँझ समै साँझै कहैं कहैं भोर सौं भोर।
बात कहैं सो समझिये पै मन कौ ओर न छोर॥२७॥
सखि तू जानत सब दिन की सबै घट नटनागर की बात।
कौतिक नित नये करै बहु निपुन कला सत सात॥२८॥
अजू तुम मिले सयाने चतुरई बिच भोरी[४] हूँ दै दै जात।
मेरौ यहै सहज सदा सुख देखत सुनत न अघात॥२९॥
मोहन सौं मुख की कछु कहि आवै पै जिय तें निकसी न जाइ।
सब दिन यह सुख जीजिये नेंकु तुम सौं कहत लड़ाइ॥३०॥
भावत सबही भाँवतौ सुनि तेरे सुख संतोष।
तेरे सुख तेई सुखी अरु है समरथ सब द्यौस[५]॥३१॥

---

१. नटखट, छली; शरारती; उत्पाती। २. सम्पत्ति, धन। ३. पूर्ण करती है; सफल करती है। ४. भुराई, भोलापन; मुग्धता। ५. द्यौस, दिवस, दिन।

(सखि) इक दिन हौं जमुना जल न्हात ही मैं देख्यौ बन में जात।
ना जानौं कित ह्वै मिल्यौ हौं चौंकि परी सब गात॥३२॥
केस कुसुम बैंनी सिथिल गई जलज मनि माला टूटि।
करनफूल खुटिला[१] खुले कंचुकि नीबी बन्द छूटि॥३३॥
सादौ भेष उताइलौ[२] फिर सच्यौ[३] आपने हाथ।
बैंनी गुहत कछू कह्यौ मोहिं राखि आपने साथ॥३४॥
सखि तोहू सौं न जनावही मोसौं[✿] हरुवे हाहा खात।
नेंक निकट ही ओट होत तब तोही सौं बिललात॥३५॥
प्यारी जू तुम इनहीं कौ कह्यौ करौ कछु हौं तौ नहीं अनखात।
भीर[४] परै जो साँकरैं[५] कछु हौं संग तें नहिं जात॥३६॥
तुम्हरी इनकी अटपटी[६] एकौ जानी नहिं जाइ।
अनजानत हू जानिये पै प्रेम न बरन्यौ जाइ॥३७॥
प्रेमै आहि कहै कोऊ यह सुख दुख लाभ कि हानि।
रिसही में हाँसी आवै हौं कहत नहीं कछु बानि[७]॥३८॥
सखि तोतें अधिक न जानिहौं कोउ कहै तौ लागौं पाँइ।
मेरे मन संसै रहै मोसौं तू कहि दाइ उपाइ॥३९॥
प्यारी जू तुम मेरौ कह्यौ करौ ये कहैं सो कीजै बेगि।
सखि तेरौ कह्यौ कहा करौं यह लावनि भर्‍यौ अनेगि॥४०॥

---

१. कानों का एक गहना; करनफूल। २. जल्दबाजी, जल्दी करनेवाला, अधीर। ३. सजाया; पूरा किया, सँवारा। ४.आधिक्य; संघट, समूह; भीड़; संकट। ५.संकट; कष्ट; तंग; कष्टयुक्त। ६.नटखटी, शरारत; अनोखी बात। ७. सजधज, आदत; स्वभाव; बनाकर। ✿ पाठान्तर– मेरे।

मोहन करिहौ कहा सु कीजिये यौं सुनत भयौ चित चाव[१]।
जगत बिदित हमहू सुन्यौ तू रसिक रंगीलौ* राव॥४१॥
प्यारी जू तेरे बरन बसन करौं तन तेरेई उनहारि।
तेरी सी बातें लगैं कहि जीवत बदन निहारि॥४२॥
तोलौं चलौं मिलौं तोहीं लौं जो पहिचानिहै न कोइ।
मिलै मिलायै रंग रहै तौ खेल चौगुनौ होइ॥४३॥
मोहन आहि भली जो ह्वै आवै तौ मिलौ सखी* सौं जाइ।
बहुर्‌यौ मिलिहैं कुंज में लियौ जलहू कौ सुख पाइ॥४४॥
तब निकट सुनत ही सहचरी फिर चितयौ नैंन बिसाल।
मनि चूरा चौकी चुरी दै राती[२] बेंदी भाल॥४५॥
सखि देखत है याकौ मतौ यह याकी टेव न जाइ।
बरजत ही बरजत हठि आयौ फौंदा फुली बनाइ॥४६॥
तब लाल सकुचि ठाढ़ौ भयौ कछु रूप न बरन्यौ जाइ।
चितै चितै मुख साँवरौ तन उपजत अगनित भाइ॥४७॥
तन मन प्रान पलटि परे लीनें उर सौं उर लाइ।
रस बस भये न जानहीं निसि बासर गयौ बिहाइ[३]॥४८॥
सखि तेरे संग सुख पाइये सब तेरौ कियौ सहाइ।
सुरति रंग में रंग रह्यौ रस रीझि रह्यौ गहि पाँइ॥४९॥
सुन्दरि तेरी कृपा कहा कहौं यह रस जस प्रेम प्रकासि।
बलि बलि श्रीहरिदासि की जिन करी* बिहारिनिदासि॥५०॥३६॥

---

१. उत्साह; उमंग; प्रबल इच्छा। २. लाल। ३. बीतना,बीत गया। * पाठान्तर–रसीलौ। *सखिन। * करी है।

प्रभाती के पद

श्रीस्वामीजू के पद—राग–भैरौं, ताल–ध्रुपद

जागे री जानैं क्यौं मन मानैं।
झगरत जुरत किसोर किसोरी बड़े भोर में बतबतात[१] उनमानैं[२]।।
ओढ़े उलटि बसन सम्भ्रम[३] निसि पलटि लेत पहिचानैं।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति कौ सुख निरखति हरषति सखी
बारति तन मन प्रानैं।।३७।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद—

जागौ जी जागौ भोर भयौ।
आलस खोलौ श्रीमुख बोलौ अब जिनि[४] करौ ऐसौ हियौ।।
मान कियें न बनैं मम जीवन या रस बस हौं जियौ[✿]।
श्रीललितमोहिनी यौं समुझावति करिये जू इनकौ कह्यौ।।३८।।

श्रीस्वामीजू के पद—राग–भैरौं, ताल–ध्रुपद

प्रिया पिय के उठिवे की छबि बरनी न जाइ सब तें न्यारे।
मानौं द्यौस रैंन इक ठौरे सोये न भये न्यारे।।
बार लटपटे मानौं भँवर जूथ लरत परस्पर
कमलदलनि पर खंजरीट[५] सोभा न्यारे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी बिहारिनि ऊपर[❖]
कोटि कोटि अनंग कोटि ब्रह्मांड वारि किये न्यारे।।३९।।

---

१. बातचीत करना; बातचीत करते हुए। २. अनुमान, अन्दाज; भाव; थाह। ३. उतावली, जल्दबाजी; उत्साह; रस–भाव की अधिकता से, उमड़ने से अकुलाहट, व्यग्रता। ४. नहीं, मत। ५. खंजन पक्षी। ✿ पाठान्तर– हौं ह्वै जु रह्यौ। ❖ पर।

प्यारी जू बोलत नाहीं कै तू सूता[१] उनींदीं[२]
किधौं काहू कछु कह्यौ कै तेरौ ऐसौई सुभाव।
मोहिं तेरे देखे बिन कल न परै (री) कै तू छाँड़ि कुभाव।।
काहू की झुकि[३] हमैं देत (है) री उपजत दुभाव।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत
ताके बस परे प्रगटत जु भाव।।४०।।

आलस भीने री नैंन* जँभाति आछी भाँति सुदेस[४]।
कर सौं कर टेकि अँगुरिन पेंच मानौं ससि मंडल
बैठ्यौ अति भाँति सुदेस।।
मन के हरिवे कौं और सुख नाहीं प्यारी
कोऊ तोतें नख सिख भाँति सुदेस।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम छाती सौं छाती
लगायें अंग अंग सुदेस।।४१।।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद–

आवनि कुंज तें पह पीरी।
प्रिया जँभाति कर जोरि रसमसी[५] ललन खवावत बीरी।।
सुरति स्त्रमित अंग अंग सिथिल अति भुज भरि स्याम रसीरी[६]।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद करहु* मिलि नहिं ललितादिक नीरी।।४२।।

१.सोयी हुई। २.अर्धसुप्त; नींद से भरी हुई; झपकती हुई। ३.खीज, क्रोध, झुँझलाहट। ४. सुन्दर; श्रेष्ठ; उपयुक्त। ५. रसमग्न, आनन्दमय। ६. रसीली, मनोहरा; रसमग्न। * पाठान्तर–नैंना। *करहिं।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—राग-भैरौं, ताल-चर्चरी (चौताल)

रगमगे अंग अंग संग राजैं रसिक सुरति रंग
जागे निसि नवल नेह सुन्दर सुखदाई।
कबरी[1] कुसुम सिथिल अलक अंजन अधर पीक पलक
बदन झलक ललित ललक ललना लाल लड़ाई।।
हँसि हँसि मृदु कहत बैंन नैंन सैंन मुदित मैंन
मोहत मन रीझि लै सखि आरसी[2] दिखाई।
दासि श्रीनागरि नवेलि बिहरत भुज कंठ मेलि
नव निकुंज सुखद केलि करत हैं मन भाई।।४३।।

लटपटात[3] गात[4] गलित[5] लाड़िली लाल हँसत
लसत भुजनि कसत काम नैंननि नेह निहारैं।
एक ही सुर स्वास सैंन बिहरत बर बिचित्र बैंन
अधर सुधा सहज सुन्दर पीवत मधुर धारैं।।
छाके रस मत्त मगन अंग अंग अनुराग सघन
बरबिहारिनिदासि लै उर सेवत स्त्रम निवारैं[6]।
बलि बलि नव नागरीदासि कुंजबिहारी सुख की रासि
रीझि ललित श्रीहरिदासि तन मन धन बारैं।।४४।।

---

१. वेणी, चोटी २. दर्पण; आईना। आईना जड़ा छल्ला, अँगूठी जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अंगूठे में पहनती हैं। ३. लड़खड़ाते हैं; गिरते-पड़ते हैं; विचलित , अस्थिर होते हैं, चूक जाते हैं; मोहित होते हैं; अनुरक्त, आसक्त होते हैं। ४. शरीर। ५. गले हुए, द्रवित, पिघले हुए; निगले हुए; एकमेक हुए; परिपक्व। ६. दूर करती हैं।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद–

प्रातही किसोर जोरि कुंज केलिनी।
अंग अंग गुन तरंग गौर स्याम रूपरासि
मदन केलि सुरति सिंधु पुलकि झेलिनी॥
तरनि नन्दिनी[१] सु तीर गावत पिक भृंग कीर
तृगुन मरुत माधुरी स्त्रमम्बु[२] पेलिनी[३]।
बर बिहार राजनी सु नूपुरादि बाजिनी
श्रीबीठलबिपुल बारनें भुज कंठ मेलिनी॥४५॥

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

करत केलि कुंज कुंज कुँवर कामिनी।
अद्भुत बन रूप राज सहचरि अति सुख समाज
गौर स्याम मौजनि घन बरषि दामिनी॥
पुलिन नलिन बिबिध फूल जल थल कालिन्दी[४] कूल
लेत सुखनि देत प्यारी जू रवन रामिनी।
दासि श्रीनागरि नवेलि नागर नवरंग झेलि
बिहरत अंग संग श्रीहरिदासि स्वामिनी॥४६॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के पद–

सुन्दर रज तिलक भाल बाँकी भृकुटी बिसाल
रतनारे नैंन नेह भरे दरस पाऊँ।
बारौं छबि चन्द बदन सोभा सुख सिन्धु सदन
नासा बर कीर कोटि काम कौं लजाऊँ॥

१. सूर्यपुत्री, यमुना। २. स्वेदजल। ३. नष्ट करती है, दूर करती है। ४. यमुना।

अधर अरुन दसन पाँति कुन्द कलिका बिसाँति[१]
कमल कोस[२] आनन दृग मधुप लै बसाऊँ।।
मधुर बचन मन्द हासि होत चाँदनी प्रकासि
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ।।४७।।
कम्बु कंठ मंजु दाम गौर अंग छबि सुधाम
कुन्दन तें सरस मृदुल मोहन मन भायौ।
नाल सहित कंज[३] पान देत सदा अभय दान
तजिकैं अभिमान साह अकबर सिर नायौ।।
चरन कमल कामधेनु सकल कामना सुदैंन
दरसैं दृग होत चैंन आपदा[४] भगायौ।।
करुवा गूदरा पास बृन्दाबन करैं बास
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत अपनायौ।।४८।।
कुंजबिहारी एक आस और सकल तजि दुरास
असन[५] बसन तें उदास बाँके व्रत धारी।
गान दया गुन निधान[६] रसिक मुकुट मनि प्रधान
राग भोग बखत जानि तोषत पिय प्यारी।।
तिमिर हरन कौं दिनेस ताप हरन कौं निसेस
पाप दहन पावकेस गुरुता मुखचारी[७]।
निधिबन आसीन नित्त बरबिहार सरस वित्त[८]
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत बलिहारी।।४९।।

---

१. बिसात–फैलाव; फैलायी, बिछायी जानेवाली चीज, सुरचित। २.गोलक, खजाना; कमल की केशर का स्थान। ३.कमल। ४.विपत्ति, संकट; दुख। ५.भोजन;भोज्य पदार्थ; भक्षण–खानपान। ६. आधार, आश्रय; खजाना; घर; धाम। ७. ब्रह्मा। ८. सम्पत्ति,धन।

राधा गुन गान करैं जमुना अस्नान करैं
जमुना जल पान करैं बास वृन्दाबन कौ।
रसिकनि कौ संग करैं कर करुवा गूदर गरैं
प्रेम अंग अंग□ भरैं नेम यही पन कौ।।
बासी निदूरष रहैं मधुकर की वृत्ति गहैं
काम क्रोध लोभ दहैं मोहादिक तन कौं।
भगवत यही भाँति बसैं इन्द्रीं मन* जुगति कमैं
नैंननि जुग रूप लसैं बिलसैं सुख धन कौं।।५०।।

श्रीगुरुदेव कौ पद—राग—खट, अद्धा तिताला—

प्रात समैं नव कुंज द्वार ह्वै ललिता जू ललित बजायौ* बीना।
पौढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा दम्पति चतुर प्रवीन प्रवीना।।
अति अनुराग सुहाग परस्पर कोककला निपुन नवीन नवीना।
श्रीबिहारिनिदासि बलि बलि बन्दसि[1] पर
मुदित प्रान न्यौछावर कीना।।५१।।

श्रीस्वामी नागरीदेवजू कौ पद—

प्रात समैं दोऊ उठे (हैं) प्रजंक पर सौरभ सरस स्वाद लपटात।
लोचन ललित अरुन निसि जागे सुरति अंत पुनि पुनि ललचात।।
अति रसमत्त सुरति सुख सागर बचन रचन कहि मृदु मुसिक्यात।
श्रीनागरीदासि दम्पति रति* बिलसि
बिलसि सुख ये न अघात।।५२।।

□पाठान्तर—रंग अंग। *गन। * बजाई। *रस। १. बन्दिश, शब्द योजना; रचना; बाँधने का भाव।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

(प्रात समैं भई बेर बड़ी री ललिता) जगाइ भई बेर बड़ी री।
अलबेली खेली पिय के संग अलकलड़े[१] की लाड़ लड़ी री।
तरनि किरन रन्ध्रनि ह्वै आई लगी है निवाई[२]
जानि सुकर पर* तब हौं ही ह्वै रही अड़ी री।।
श्रीबिहारीनिदासि रति बरनें को कवि
जो छबि मो मन माँझ गड़ी री।।५३।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद–

सोवत निसि नहिं जानी जात।
अलसानें जमुहात प्रिया पिय उठि बैठे सिज्या परभात।।
पसरी किरन अरुन अति राजत कुंज फूल फल कोमल पात।
कोमल भानु उदित तन सोभा स्याम तनैं दोऊ लपटात।।
भई (है) प्रकासि सकल द्रुम बेली बन सोभा सोभित सब गात।
चौंकि चक्रित[३] अति होत परस्पर फूले तन मन अंग न समात।।
गावति सखी मधुर सुर मीठे रति जागे की जो▲ हैं बात।
श्रीनरहरिदासि गोरी की छबि पर
कोटि मयंक[४] भानु[५] दुरि जात।।५४।।

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू के पद–

प्रात समैं आवत जु आलस भरे
जुगलकिसोर देखे कुंजनि की खोरी[६]।

---

*पाठान्तर– परै। ▲जे १. अत्यन्त लाड़िले। २. ताप, गर्मी। ३. चकित; आश्चर्ययुक्त। ४. चन्द्रमा। ५. सूर्य। ६. साँकरी गली।

लटपटी[१] पाग छुटे बन्द पिय के
प्रिया जू की बैंनी बिथुरी[२] छुटी कच डोरी।।
ललितादिक देखति जु नैंन भरि अति अद्‌भुत सुन्दर बर जोरी।
श्रीबीठलबिपुल पुहुप[३] बरसत नभ
तृन टूटत अब हो हो होरी।।५५।।

आजु बनी लाड़िली प्रीतम संग आवति।**
सौंधे भीजी लट छूटी पिय के अंस भुज
पाछैं सखि सुघर विभासहिं गावति।।
स्त्रमजल बिन्दु निसि के सुख सूचत
मोहन बदन सौं बदन मिलावति।
श्रीबीठलविपुल कल रसिकबिहारी लाल
आनंद समुद्र मथि मदन झिलावति[४]।।५६।।

श्रीस्वामी नवलदास जू कौ पद–

श्रीनागरीदासि सिरोमनि जू मो* बन बास कृपा करि दीजे।
माँगत हूँ करुना करिकैं तुमहीं दिन देखि सदा सुख जीजै।।
रजधानी भली रज सेये बनें अजू मोकौं रजायसु[५] तौ कछु कीजे।
द्वार परे कीब○ लाज करौ किन
दीन दुखी दिन ही दिन छीजे।।५७।।

१.शिथिल; ढीली, अस्तव्यस्त २.बिखरी, अस्तव्यस्त। ३.फूल। ४.तृप्त करना; सहाना। ५. आज्ञा; हुक्म; अनुमति। ** यह पद राग–विभास, ताल–धमार में भी गाया जाता है। *पाठान्तर–मोकौं। ○की अब।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद—राग—कालिंगड़ा, ताल—धमारि, तिताला—

प्रिया पिय सुरति सेज उठि जागे।
घूमत नैंन अरुन अलसाने मनहुँ समर सर नाँगे[१]।।
सिथिल अंग छूटी सिर अलकैं बदन स्वेद कन लागे।
मानहुँ बिधु[२] कुसुमनि करि पूज्यौ अंग अंग अनुरागे।।
चितै परस्पर ब्रीड़त[३] दोऊ काम केलि रस पागे[४]।
श्रीनरहरिदासि अंग छबि निरखत गंड[५] पीक[६] सौं दागे[७]।।५८।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

सोभित* नैंन कमल रतनारे।
रूपभरे मटकत खंजन से मनहुँ बान अनियारे।।
माथे मुकुट लटक ग्रीवा की चित तें टरत न टारे।
अलिगन जनु झुकि रहे री बदन पर केस ते घूँघरवारे।।
छूटे बन्द झीनौं तन बागौ मुकुर[८] रूप अति▲ कारे।
ढुरकि रही माला मोतिन की छकित छैल मतवारे।।
अंग अंग की सोभा निरखत हरषत प्रान हमारे।
श्रीरसिकबिहारी की छबि बरनत कोटिक कविजन हारे।।५९।।

श्रीगुरुदेवजू के पद—

मन मेरे भजि लै श्रीकुंजबिहारी।
सब सुखसागर रूप उजागर अंग संग प्रीतम प्यारी।।

१.सीधे; आवरण रहित। २.चन्द्रमा। ३. लज्जित होते हैं, संकोच करते हैं; नम्र होते हैं ४. सराबोर हो गये। ५. कपोल; गाल। ६. पान का रस। ७. अंकित किये हुए। ८. दर्पण; दर्पणवत् उज्ज्वल।
* पाठान्तर—सोहत। ▲तन।

वृन्दाबन घन नव निकुंज में केलि करत भुज चारी।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि लड़ावति जीवन प्रान हमारी।।६०।।

बसिबौ श्रीवृन्दाबन कौ नीकौ।
छिन छिन प्रति अनुराग बढ़त दिन* दरस बिहारी जी कौ।।
नैंन स्त्रवन रसना रस अँचवत अंग संग प्यारी पी कौ।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि लड़ावति*
बिछुरत नाहिं रती कौ।।६१।।

मैं* संग पायौ ओर निबाहू[१]।
रसिक अनन्यनि सौं मन मान्यौं अब न बूझिहौं[२] काहू।।
छाँड़े कूर कृपन कर्मठ सठ जिनके मन न उमाहू[३]।
मारग बिबिध बहत बहकावत उपजावत दुख दाहू[४]।।
श्रीवृन्दाबन धान धर्म राधिका लीनें गहि बलबाहू।
श्रीबिहारीदास कौ सो सुख सुर्लभ□ दुर्लभ अगम अगाहू[५]।।६२।।

प्रभाती के बिसेष पद

श्री गुरुदेव जू के पद—राग ललित, धीमा तिताला

यौं हँसि हँसि कहत हैं बात; सुनि तिन बातनि हूँ न पत्यात।
कोमल करनि सौं मुख मूँदि राखत स्त्रवननि तन○ जात।।

---

*पाठान्तर-है। *अंग संग। *मोहिं। □कौं सुलभ भयौ सुख। ○नेंकु न। १. अंत तक निबाहनेवाले। २. पूँछूँगा; जानूँगा; समझूँगा। ३. उत्साह; उमंग; आनन्द। ४. जलना, ताप; संताप। ५. अगाध, अत्यधिक; गहरा, अपार; दुर्बोध; अज्ञेय।

बचन रचन बनत नाहिंन पुलकित सब गात।
श्रीबिहारिनिदासि के नैंननि में सुख सैंननि लटपटात॥१॥

जागत ही जागत गई निसि बीति हौ सब देखि सखी सुख चैंन※।
अपनें अपनें सुख सहित हरषत करषत सखी
भये मगन मन मैंन॥
बिथुरी अलक पलक आलस बलित नैंन बैंन।
चारौं पहर बिहरत यौं सखी भोर भयें
श्रीबिहारिनिदासि के हँसि ढरे उर ऐंन॥२॥

लाड़ति लाड़िली नवरंग। अपनें लालबिहारी के संग॥
अलसानें जानें मैं प्रात प्रिया पति विपरीत रति यौं सुख दै अंग अंग॥
बिगलित[1] कच कुसुम सिथिल पाग मरगजी मंग।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी स्यामहिं देखि सखी
सुख प्रेम की परनि ढरनि रंग अनंग॥३॥

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू कौ पद–

प्रिया स्याम संग जागी है।
सोभित कनक कपोल ओप[2] पर दसन छाप छबि लागी है॥
अधरनि रंग छूटी अलकावलि सुरति रंग अनुरागी है।
श्रीबीठलबिपुल कुंज की क्रीड़ा काम केलि रस पागी है॥४॥

※पाठान्तर– दैंन। १. शिथिल, बिगड़े, बिखरे हुए। २. चमक, कांति, आब।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—

नैंना घूमत हैं मद छाके।
जगे जम्हात सिथिल पट भूषन सुख संतोष न थाके।।
पलकनि पीक अधर अंजन रद[१] छद[२] कपोल ललना के।
श्री भगवतरसिक पौंछि अंचल मुख प्यावत अधर सुधा के।।५।।

श्री गुरुदेव जू कौ पद— राग भैंरौ, ध्रुपद—

मुख पट ओट न करि री प्यारी।
काहे कौं झूठियै झुकि झुकति रसिकनी कहत हैं रसिकबिहारी।।
तू* जौ इतौ हठि करति चतुर प्रिया रति के चिह्न देखियत* निहारी।
नवकिसोरै मिलि किसोरी मान तजि
श्रीबिहारिनिदासि बलिहारी।।६।।

श्रीस्वामी जू कौ पद—

स्यामा स्याम आवत कुंजमहल तें रगमगे रगमगे[३]।
मरगजी बनमाल सिथिल कटि किंकिनी
अरुन नैंन चारौं जाम जगे।।
सब सखी सुघराई[४] गावत बीन बजाबत
सब सुख मिलि संगीत पगे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
कटाच्छ सौं कोटि काम दगे[५]।।७।।

---

* पाठान्तर–तुव। * देखियै। १. दशन, दाँत। २. चिह्न। ३. रसमग्न, रसभीने, आनन्द से भरे हुए। ४. एक राग विशेष; सुघड़ता से। ५. दग्ध हो गये, मुहर अंकितकर छोड़ दिये।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

आधी आधी अँखियनि री चितवत चित चोरति।
सुरति अन्त अरसात गात तुतरात बात कहि आवत
भावत री लालन मन जब जम्हाति कर मोरति।।
यौंही नित सहज सुभाव स्याम तन रही री मान न करि
बार बार मनुहारि करति हौं पाँइनि परैं निहोरति।
श्रीबिहारिनिदासि सुख देत निरंतर पिय प्यारी
इहि बिधि छिन छिन रति जोरति।।८।।

मरगजी अँगिया छूटे बंद आनंद उर न समाई।
तैसैई अंजन मन रंजन अंचल छबि छीटैं रही फबि
कहूँ कहूँ पीक की लीक लाल के मन रही छबि छाई।।
सुरति के अन्त आलस बस रस भरे बहुरि उमँगि ढरे रहे लपटाई।
भूषन बसन पहिरैं न मंजन करैं
श्रीबिहारिनिदासि अलबेली लाल लड़ाई।।९।।

रसमसे दरसे मैं प्रात बतबतात मंद मंद मुसिकात।
घूमत नैंन बैंन बिचित्र रचित रुचिर
कुसुम सैंन सुरति रंभ अरबरात।।
अति सुख मुख मधुरे मधुरे पान करत प्रीतम मन न अघात।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि बिलोकति रोकति
अंग अंग संग रंग भरे पग डगमगात।।१०।।

लटपटाइ रहे गहि प्रिया पिय तन मन प्राननि में।
कहा कहौं गुन रूप अनुपम आनन्द निधि दोऊ
गावत मृदु मृदु मिलि tाननि में।।
उपजत मदन मोद दुहूँ कोद अति बिनोद बचन रचन आनन में।
श्रीबिहारिनिदासि दरसि हँसि कहति प्रिया प्रति
मेरौ सुख तुम्हारी रति माननि में।।११।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—

लपटात अरसात प्रात उठे आलस उनींदे घूँमत नैंन।
बिथुरी अलक सोहैं जोहैं मन मोहैं
लोचन जुगल जागे पागे रति मैंन।।
अलकलड़े अलबेले बिहारी बिहारिनि रूप रंग रस ऐंन।
तैसीयै सुखद सहेली लड़ावति दासि श्री नागरी सुरति सुख दैंन।।१२।।

नवरंग छबीली अलकलड़ी अलबेली।
सुरति रंग अंग अंग सिथिल अलबेले लाल संग खेली।।
अलबेली मौज बिलोकैं बिहारी बिहारिनि नेह नवेली।
श्रीनागरीदासि नव कुंज महल अलबेली संग सहेली।।१३।।

श्रीस्वामी जू कौ पद— राग–भैंरौ–ताल–चर्चरी

कुंज कुंज डोलनि मृदु बोलनि टूटी लर
छूटी पोति अति छबि लागति।
भँवर गुंजार करत संग डोलत मानौं
मेरु रागनी के संग लियैं रागति।।

जूथ[1] अनेक सुघर जुवतिन के तुम्हरी रीझि पलब नहिं लागति।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी पर
तन मन धन न्यौछावरि करौं कागति।।१४।।

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू के पद–

आई भोर भयें प्यारी छूटी लट बगरी।
बाँहाँ जोरी लाल संग निसि किये कुंज रंग
सुबस किये बिहारी कुँवरि अचगरी[2]।।
निसि के चिह्न फबे गौर स्याम तन छबि
पद नख पर बारौं जेती केती नगरी।
श्रीबीठलबिपुल केलि मनहुँ कंचन बेलि
अरुझी स्याम तमाल आवै कुंज डगरी।।१५।।

लालहिं बस करनी मदन मद हरनी
मल्हकि[3] पग धरनी उरज उदित री।
हेम लता की फरनी स्त्रम जल की झरनी
निकट सुता तरनी बदन मुदित री।।
रूप सुधा की भरनी[4] मोपै क्यौं आवै बरनी
पिय टकटरनी[5] त्रिषित छुधित री।
रस बस कै बरनी बिपुल प्रेम परनी[6]
श्रीबीठल कुंज घरनी[7] बिहारी बुधित[8] री।।१६।।

---

१. झुंड, समूह। २. नटखटी; शरारती; छली। ३. इतराकर, ठुमककर। ४. भरण करनेवाली; आधिक्यवाली। ५. प्रिय की एकटक दृष्टि से गर्वीली। ६. प्रेम की टेव, टेक व प्रणवाली; प्रेम में पड़ी हुई; प्रेम की लता। ७. गृहिणी। ८. ज्ञात; बिहारी जिसे जगाते हैं।

रसिक रसीली भाँति छबीली नैंन रंगीले तू पिय पै तें आई।
अलक कंचुकी छूटी चारि चारि चूरी फूटी
आलस मदन लूटी लेति जँभाई।।
कहा रही मुख मोरि नागरि नव किसोरि
त्रिन टूटत हो होरी ललन बनाई।
श्रीबीठलबिपुल उर बेष बनी नख रेख
रजनी के अबसेस[१] जानि मैं पाई।।१७।।

श्री गुरुदेव जू के पद–

रसिक लाल के अंग संग जागी री सुख चैंन सौं रैंन सगरी।
सोभित सीस कुसुम सिथिल अलकैं
तामें कहूँ कहूँ री माँग मोती बगरी।।
अरुन नैंन सलोल मोहन मधुरे बोल
रची है पीक कपोल प्रेम सुभग री।
सुबस किये बिहारीदासि बलि बलि प्यारी
सुरति निपुन नित सुहाग भाग अनुराग अगरी[२]।।१८।।

भोरही कर सौं कर जोरैं अंग अंग मोरैं आलस लेत जँभाई।
पिय के अंक निसंक सबै निसि हुलसि हुलसि बिलसि
आनन्द में उनींदीयै उठि आई।।
अंगराग अनुराग रही फबि छबि बरनी नहिं जाई।
अति सुख भरि भरि उमँगि श्रीबिहारिनिदासि सौं
कहति ऐसें हौं लाल लड़ाई।।१९।।

---

१. अन्त। २. अग्रगण्य, श्रेष्ठ; चतुर; आकर–खान; आगर–धाम, घर।

धन्य सुहाग अनुराग री तेरौ तू सर्वोपरि राधे जू रानी।
नख सिख अंग अंग बानी प्रीतम प्रान समानी
रसिक किसोर सुरति सुख दानी।।
को जानें बरनें बपुरा कवि अद्‌भुत छबि नहिं जात बखानी।
श्रीबिहारिनिदासि पिय सौं रति मानी मैं जानी सयानी
तोहिं सब निसि सुख सिरानी[१]।।२०।।

जिनि जगावै जुगल नवल निज नेह सुख।
जागे जामिनी सैंन मैंन मानिनि रवन
प्रान जीवन मेरे मन भवन दवन दुख।।
स्त्रमित अमित बिहार सुरति सुखद सुमार
ये सुकुमार तन मनहिं दियें लियें रही रुख।
श्रीबरबिहारिनिदासि लोल लोचन लासि
निरखि सुखरासि हँसि मिलत सुन्दर सु मुख।।२१।।

आजु लाड़िली लालहिं जगाइ जागी।
सकल निसि कुंज बसी प्रिये बल बाहु कसी
बिलसि अंग अंग अनुराग रागी।।
रोम रोमनि अरुझि सकत नेंकु न सुरझि
अति सधर[२] मधुर रस प्रेम पागी।
श्रीबिहारिनिदासि सकाम गौर स्याम सु धाम[३]
चितै बितवत जाम लता लागी।।२२।।

---

१. बीत गई; समाप्त हुई। २. ऊपर का ओठ। ३. सुन्दर प्रभा, सुतेज; श्रेष्ठ आलय; चन्द्रमा।

आजु की छबि अंग अग रही फबि
ऐसी मति कौन की को बरनैं कवि।
उपमा आहि न काहि बताऊँ गाऊँ इन्हैं सुनि जाहिं सबै दबि।।
हँसत खेलत मिलत सकल निसा गत
लटकि चलत पग धरत अवनि ठबि[1]।
श्रीबिहारिनिदासि संगम सुख सूचत
देखि री देखि आनन्द उदै रवि।।२३।।

तू मन मोहिनी री मोहन मोहै री अंग अंग।
अगमनी[2] अलकैं झलकैं बर उर पर छूटी लट
मुख हँसत लसत दसनावलि सहज भृकुटि भंग।।
मृग मधुप लौं स्याम काम बस तजि* बन बेलि धाम
सौरभ सुर सब्द सुनत फिरत संग संग।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सुखरासि रहसि[3] फिर चितयौ
हित यौं मानि आनि उर अंग रंग अनंग।।२४।।

मुदित मोहन अंग सोहन कौ मन मोहिनी तैं मोह्यौ री मोहन।
जद्दपि रहत हँसत खेलत अंग संग निसि दिन
छिन न तजि सकत गोहन[4]।।

* पाठान्तर—तजे। १. ठमककर, विशेष मुद्रा में; अदा के साथ। २. आगे आई हुई। ३. एकान्त, आमोद-प्रमोद। ४. संग, साथ।

अद्‌भुत रीति जीति प्रीति प्रिय पै मन बच क्रम कियें
कहत तुम सौं सखी कर पद पर आरोहन।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी सुनि रही मौन
चितै मुसिकात पत्यात न सोहन।।२५।।

भोर भयें भोगी रस बिलसि भये ठाढ़े।।
जागे जामिनि जगाइ भामिनि अंग अंग✿ समाइ
स्वास सिथिल डरनि डरत देत आलिंगन गाढ़े।।
घूमत रस मत्त मगन सूधेहू डग परत पग न
छिन छिन चित चौंप चोजनि[१] मौज मनोजनि बाढ़े।
अति रस में रसिकराइ सोभा बरनी न जाइ
श्रीबर बिहारिनिदासि लड़ाइ प्रेम रंग रँगि काढ़े।।२६।।

प्यारी तेरे नैंन सुख चैंन रस रंग राते।
स्याम अंबुज अधर सरस दल मधुर
मानौं पान करि मधुप मकरंद माते।।
और अंग अंग अवलोकि बलहीन भये
छके छबि छैल सुन्दर सुहाते।
मुदित उघरत लसत उठत घूमत हँसत
सुरति सुख सुमिरि अकुलात यातें।।

✿ पाठान्तर—अंग संग। १. रहस्य विलासमय विनोद, परिहासयुक्त चमत्कारपूर्ण उक्ति, कथन या वाक्य।

अलक घूँघट ओट पलक पट बस नहिं
उदित मुदित ह्वै डगमगात गाते[१]।
कियौ चाहत दरस परस पुनि पुनि
पिय तन[२] प्रेम बल लटकि लटकि जाते।।
देत अवलम्ब न बिलंब करि
सुघरबर चरन कर धरत नेंकु न सकाते[३]।
मिले फिर ईठ[४] अति ढीठ आतुर्ज ह्वै
अभिलषत छिन छिन बिलसत न अघाते।।
मननि करषत सुखनि बरषत
श्रीबिहारिनिदासि परिहासि प्राननि हिताते[५]।।
सहचरि ह्वै भजौं पल पास क्यों तजौं
संग बसिहौं मानि कोटि नाते।।२७।।

इन्हैं हौं न जानौं जागत किधौं सोवत से।
पौढ़े प्रेम प्रजंक[६] अंक कर टारत उर टकटोवत[७] से।।
बिथुरी अलक पलक बरुनिन बिच नैंन चलत मुख जोवत[८] से।।
श्रीबिहारिनिदासि देखत ढिंग ठाढ़ी
गाढ़े गुन गहि गोवत[९] से।।२८।।

---

१. गात,शरीर। २. ओर, तरफ। ३. शंकित होते हैं; डरते हैं। ४. इष्ट, मित्र, प्रिय। ५. प्रिय, हितकर, सुखकर लगते हैं। ६. शय्या, सेज। ७. हाथ से टटोलना, स्पर्श कर पता लगाना, जाँचना। ८. देखते हुए। ९. छिपाते हुए, गुप्त रखते हुए।

रगमगे रंगीले दोऊ सुरति रस रसीले
छबि सौं छैल छबीले ढीले नैंन बैंन।
रस बस मगन मदन मद तन मन
सघन कुंज भवन जागे सुख चैंन॥
सुघर सुख की रासि बाँधे दृढ़ प्रेम पासि
उठति हियें हुलासि परत पगैं न।
लटकि लटकि जात अंग अंग में समात
स्याम सोभा गोरे गात कहत बनैं न॥
हरषि हरषि हियें ग्रीवा भुज भरि लियें
अधर मधुर पियें जियें सत मैंन।
मधुर मलय बहत स्रम कौ अंबु हरत
बिलसत ए न अघात प्रातहू भयें न॥
सखी मन में सिहाइ लाड़िली लाल लड़ाइ
निकट समयौ पाइ आई सुख लैंन।
यौंही खेलौ प्रानप्यारे निमिष न होहु न्यारे
श्रीबिहारिनिदासि दुलारे धारे उर ऐंन॥२९॥

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

कह्यौ न परत हुलास अँखियनि कौ।
ललित अरुन डोरे लसति रति रंग बोरे
सूचत सुहाग भाग नेह नखियनि कौ॥

सिथिल कटि की डोरी मेरी गरबीली गोरी
आनभाँति आवै सुबास कल कखियनि कौ।
श्रीनागरीदासि बलि तलप सुफल फली
देखि नेंक अब जाग्यौ भाग सखिखनि कौ।।३०।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—

स्यामा स्याम संग जागे समर सैंन दलकैं।
बर बिनोद मोद रंग उमँगि उमँगि छलकैं।।
कजरारे नैंन अरुन सिथिल भईं पलकैं।
कल कपोल दसन छाप बिथुरी बर अलकैं।।
सुरति स्रमित अंग अंग स्रम कन मुख झलकैं।
देखि देखि दुहुँ ओर बाढ़ी मदन ललकैं।।
श्रीभगवत कर अंचल सौं पौंछत हैं हलकैं।
चपल नैंन खंजन से मिलै चारु चलकैं।।३१।।

श्रीगुरुदेव जू के पद— राग–खट, अद्धा तिताला, धुनि— प्रात समैं नव कुंज द्वार

मानिनी मन हरन मनोहर।
बचन रचन रुचि राँचि[1] रहे जुरि कुंज कुटी तन मगन प्रेम भर।
अंग अंग आलिंगन चुंबन हँसत रिसात सहज सुन्दर बर।।
श्रीबिहारिनिदासि दुलरावति गावति
जुगल किसोर सुजस सर्वोपर।।३२।।
मोहनलाल रसाल सौं मोहिं अनबोलेंहूँ बोल्यौ भावै।
जब कबहू हौं रहौं री मौन ह्वै हँसि मन मोद बढ़ावै।।

---

१. रंग रहे हैं, अनुरक्त हो रहे हैं।

तान अतीत अनागत अंग संग मिलि मधुरे सुर गावै।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी के रस* रसिक
रस ही में रस उपजावै।।३३।।

बिहारिनि लाड़िली हो लालहिं सकल सुखनि की दानि।
चितवत चित तोषति पोषति तन मन मनसा[१] रस सानि।।
दरस परस रस हास परस्पर बिचित्र तिहारी बानि।
धन्य जन्म मानत अनुरागी जब उर लागति आनि।।
बिहरत बन रति मानि निरंतर निदरि[२] काम की कानि[३]।
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावति छिन छिन
हिलगि हिये की जानि।।३४।।

मेरी स्वामिनी प्रसन्न बदन साँवरौ सुखरासि।
इनहिं लड़ाऊँ गाऊँ अनुदिन छिन छिन लहौं स्याबासि।।
फूली फूली टहल करौं मन के मननि हुलासि।
अनन्य श्रीहरिदासि बिपुल बलि बलि बिहारिनिदासि।।३५।।

चलत लटकत अटकत लर[□] छूटी छबि देखि सखी बलि जाई।
मंद मंद मुसिकत मुख दरसत इहि बिधि रीझि रिझाई।।
कबहुँ कबहुँ बिरमत[४] कौतिक मिस
बिहरत अति सुख स्रमहि नसाई।
इहि रस बिबस बिहारिनिदासि कें बिचित्र बिहारी राई।।३६।।

---

*पाठान्तर—रस बस। □लट। १. मंशा, मन की इच्छा, वृत्ति। २. निरादर करके। ३. मर्यादा; दु:ख। ४. रुकते, विश्राम करते हैं; प्रेम में बंध जाते हैं।

आनन पर अलकैं झलकैं आली री
मानौं आये री अलि कमल आस पास।
एकनि कौं दई आड़ अटकि राखे सौंधे सनी बैंनी पाछैं
आछैं एक अरुझे स्त्रवननि पर सुमन सुबास।।
तैसेई खंजन नैंना निमिष रहै न चैंना तिनकौं जतन करैं
भृकुटी धनुष धरैं मनमथ सर साँधैं तिलक त्रास।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सौं स्याम कहत सब सुख लहत
जब चितवति दुरि मुरि मुख हँसि बिलास।।३७।।

कुंज महल जुगल नवल यौं जागे।
बतरस बीति गई रजनी सब सोये री नेंकु निमेष न लागे।।
सूचत सबै सुभाव सखी सुनि रहसि मिले अंग अंग अनुरागे।
अंजन अधर पीक नैंननि कहूँ कहूँ जावक छबि सेंदुर दागे।।
अति आनंद मगन सुरति सदन मोहन मन मगन मरगजे बागे।
श्रीबिहारिनिदासि धनि धनि ललितादिक
जे सुख निरखत सहज सभागे।।३८।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद–

रसिक रंगीले छबीले दोऊ जोऊ सखी सुखरासि।
सुरति रंग अंग अंग संग मिलि करत परस्पर हासि।।
नेह नये नये क्रीड़त दोऊ चोज मौज मनोजनि प्रेम प्रकासि।
बिहरत नवल निकुंज जुगल मिलि नवल नागरीदासि।।३९।।

खेलैं हँसैं सखि रंगमहल मनमोहन मदन मद छाके।
सुरति रंग अंग अंग संग रति कसि रस रूप मौजनि अति बाँके।।

परिरंभन चुंबन मुख देखैं सहचरि जुगल झरोखनि झाँके।
बिहरत दासि श्रीनागरी नागर उठत तरंग नेह नव साँके[१]।।४०।।

आवत रंग भरे दोऊ गावत।
कुंज कुंज सुख पुंज प्रिया पिय प्रेम परस्पर मोद बढ़ावत।।
सहत सप्त सुर उमँगि उमँगि उर तान तरंग रंग उपजावत।
पुलकि पुलकि तन उदित मगन मन
सहज सुघर बर रीझि रिझावत।।
सुखद सुरति रति अति अनूप गति
रसिक सखी हित सुख बरषावत।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि सुखद संग
नवल नागरीदासि मन भावत।।४१।।

बिचित्र बिनोद बिहारी लाल रसीले हो रस रंग।
सेज सुरति पागे निसि जागे प्रेम प्रिया* अंग संग।।
अरुन अधर अंजन छबि पीक कपोल पलक भ्रू भंग।
अति आलस जुत नैंन रसमसे कसे हैं कसौटी अनंग।।
लटपटी पाग अलक बिबि सोभित स्याम सुभग अंग अंग।
दासि श्रीनागरी के रस बस बिलसत मन○ अनुराग अभंग।।४२।।

देखि सखी बिहरत दोऊ प्रीतम नव निकुंज नव नव कल केलि।
खेलत हँसत लसत बदननि बिबि अंसनि अंस भुजा मृदु मेलि।।

---

* पाठान्तर–बर बागे। ○अति। १. साका– रोब, दबदबा; ख्याति; तीव्र इच्छा, चाह।

सुरति अंत अरसात गात लपटात सरस सौरभ रस झेलि।
श्रीनागरीदासि बलि नव तमाल पिय
प्यारी सरस कनक नव बेलि।।४३।।

बैठे नव निकुंज मन्दिर में गावत राग विभास प्रवीन।* *
नव किसोर चितचोर भोर प्यारी अति ही सरस बजावति बीन।।
कोक निपुन गुन सुघर लाड़िली पियहिं रिझै रस बस करि लीन।
श्रीनागरीदासि बलि बलि ललितादिक
फूलत दिन देखि* रसिक नवीन।।४४।।

नागरी नवरंग बिपुल मन।
स्याम तमाल रसाल किसोरी कनक लता मानौं गौर सुभग तन।।
दरस परस रस रंग भरे दोऊ बचन रचन मृदु कहत धनी धन।
श्रीनागरीदासि नव कुंज सदन में करत
केलि कल यहै प्रेम पन।।४५।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद–

लाड़िली लालन रंग भीनें (हो) अंग अंग छबि बहु भाँति।
साँवल गौर बदन अम्बुज पर बिथुरी अलक अलि पाँति।।
अरुन नैंन अनियारे अंजन* पीक* पलक अरसाति।
बचन रचन रुचि दसन दमकि दुति अधर अरुन मुसिकाति।।
पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागति प्रिया लटकि लपटाति।
छके सुरति रस बिबस बिलोकति सरसदासि उर साँति।।४६।।

---

* पाठान्तर–देखत। *अंजन परी। * पीक कपोल। * * यह पद–राग–विभास, ताल धमार में भी गाया जाता है।

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग कालिंगड़ा, ताल–धमारि, तिताल

अँखियाँ लाल की ललचौंहीं।
इत उत चितै हँसत सकुचत से पुनि बात कहत गहि गौंहीं[1]।।
नैंन स्रवन नासा अवलोकत भाल तिलक दरसौंहीं।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी रस बरसति
यह सुख समझति हौंहीं।।४७।।

मोहन मोहे री सुठि सोहैं।।
नव निकुंज न्यारी प्यारी मिलि जब हँसि चिबुक टटोहैं।।
मात करत रतिपति जुवतिन मिलि बंक बिलोकनि जोहैं।
श्रीबिहारिनिदासि दिन जीजत यह सुख या उपमा कौं कोहैं।।४८।।

प्रिया जू उनींदी[2] हैं ललन जगोहैं।
सहज बिराजमान बिबि सुंदर सहचरी के मन मोहैं।।
चारि जाम निसि जात न जानें काम बिबस ललचोहैं।
होत अधीर छिन ही छिन डीठ्यौ* सु देत होत* सकुचोहैं।।
कछु आलस अंग अंग मुरति तित बैठत ह्वै हित सोहैं।
कछु मुद्रित[3] मुकुलित[4] लोचन चल चितवत भौंह रिसोहैं।।
करत प्रसन्न किसोर कुँवरबर चारु सु चिबुक टटोहैं।
बिहरत एक प्रेम सम* प्रीतम प्रान जीवन□ मुख जोहैं।।

---

*पाठान्तर–ढीठ्यौ। *रहत। *रस। □जीवत। १. सुख का अवसर, मौका। २. नींद से भरी हुई; ऊँघती हुई। ३. मूँदे हुए। ४. खिले हुए।

पानी पान पवन सुख आसन असन[१] बसन सिथिलोहैं[२]।
पोषति तोषति रहति निरंतर श्रीबिहारिनिदासि के यह गोहैं[३]।।४९।।

हौं बलि जाऊँ लाड़िली के लाल की।
भाँवतिन के भाँवते बिहारी बिहारिनि रसिक रसाल की।।
फूले हैं गुलाल लाल पेंच पाग के
अलक झलक छबि तिलक भाल की।
भौंहनि हँसत इत उत चितवत नैंन कमल कृपाल की।।
कपोल करनफूल नासा सुक समतूल
कंठ मोती छबि जोति चिबुकनि चाल की।
अधर मधुर मुख मुरली कर पर बानिक बाहु बिसाल की।।
हृदै जगमगै जराव की चौकी छबि अतुलित बनमाल की।
भरि भरि नैंन हृदै आनन्द सुख मानत लाल निहाल की।।
फैंटा लटकि चाकि[४] चरननि तन
कहाँ कहौं चाहि[५] रही चलनि उताल[६] की।
श्रीबिहारिनिदासि पिय की प्रकृति
इत प्रेम प्रिया प्रतिपाल की।।५०।।

दूलहु दुलहिनि दिन दुलराऊँ।
कुमकुम मुख माँडौं मँड़वा तर नवल निकुंज बसाऊँ।।

---

१. भोजन; खान-पान। २. त्यागे हुए; टूटे हुए; मंद किये हुए। ३. गौं—काम निकलने का अवसर; घात; मतलब; युक्ति; गति; सुख का स्वरूप, सुख की गति, अवधि,सुख का अवसर, मौका। ४.चक्राकार; पहिया। ५. प्रेम भरी दृष्टि से देखना, निहारना। ६. शीघ्र; शीघ्रता, फुर्ती।

बिबधि बरन गुहि सुरंग सेहरे रसिकनि सीस बँधाऊँ।
कोमल पीठ दीठि* करि ईठनि डीठि मिलै बैठाऊँ।।
पानि परसि हँसि बचननि रुचि अंचल चंचलहिं गहाऊँ।
परम नरम रस रीति प्रिया जू की प्रीति निरंतर गाऊँ।।
उत्कंठित जाचित जुवतिन हित केलि बेलि बरषाऊँ।
श्रीबिहारिनिदासि हरिदासी के संग देखि दुहुँनि सचु पाऊँ।।५१।।

प्यारी जू मोकौं कृपा करौ।
ऐसी रुचि उपजै जिय मेरे तुमहिं न छिन बिसरौं।।
आपुन अपनी करि प्रेम बढ़ावौ° निज रस रीति सौं हियौ भरौ।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि कहत यौं बिपिन बिहार ढरौ।।५२।।

आजु कछु औरै बनाव बन्यौ।
हास बिलास भेद भृकुटिनि तें उपजत रसहि सन्यौं।।
अंग अंग प्रति पट भूषन तन साँवल सुभग ठन्यौ।
जागत जामिनी बढ़्यौ री जितौ सुख कापै परत गन्यौ।।
अति आनन्द मगन मन सुरति सदन छिन न बिहात[1] जन्यौ।
श्रीबिहारिनिदासि नव कुंज केलि मिलि मन्मथ मान हन्यौ[2]।।५३।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग –भैरवी, तिताल, जल बिहार के पद

महामत्त मानिनी मनोहर मान सरोवर खेलैं।
छिरकत छींट कटाच्छनि छबि सौं छैल उमँगि रस झेलैं।।

---

* पाठान्तर—ढीठि। ° बढ़ावहु। १. बीतता हुआ। २. दूर किया, नष्ट किया।

बाढ़त अति अनुराग परस्पर प्रेम भुजनि बल पेलैं।
ह्वै गयौ खंड खंड जल इत उत सुख सागर की रेलैं।।
उदित मुदित जुगराग बिराजत लाज नवल अवहेलैं।
ह्वै रहे मगन लगन अंग अंग तन चीर[१] चिकुर[२] न सकेलैं[३]।।
भींजे बसन निवारि सिंगारति सखी गुहि माल धमेलैं[४]।
श्रीबिहारिनिदासि दरसि सुख बरनत जल थल कुंजनि केलैं।।५४।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

बिहरत जमुना जल जुगराज।
बृन्दाबिपिन विनोद सहित नव जुवतिन जूथ समाज।।
छिरकत छैल परस्पर छबि सौं सखी सम्पति रति साज।
नवल नागरीदासि श्रीनागर खेलत मिलि भलैं आज।।५५।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद–

बिहरत जमुना जल सुखदाई।
गौर स्याम अंग अंग मनोहर चीर चिकुर छबि छाई।।
कबहूँ रहसि बिहँसि हँसि धावत प्रीतम लेत मिलाई।
छिरकत छैल परस्पर छबि सौं कर अंजुली छुटकाई[५]।।
कबहूँ जल समूह रस झेलत खेलत दै बुड़काई।
महामत्त जुग बर सुखदाई* रहत कंठ लपटाई।।
क्रीड़त कुँवरि कुँवर जल थल मिलि रंग अनंग बढ़ाई।
हाव भाव आलिंगन चुंबन करत केलि मन भाई।।

---

*पाठान्तर–सुखदायक। १. वस्त्र। २. केश। ३. सम्हारते हैं, समेटते हैं। ४. धम्मिल–जूड़ा, केश कलाप; फूलों, मोतियों आदि से सजाया हुआ जूड़ा। ५. त्यागते हैं, छोड़ते हैं, फैलाते हैं।

भींजे बसन निवारि सहचरि नउतन[१] चित्र बनाई।
रचे दुकूल फूल अति अंग अंग सरसदासि बलि जाई।।५६।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—

जमुना जल बिलमत[२] जुगल किसोर।
उबटि अन्हाइ पहिरि पट भूषन सजि सिंगार दुहूँ ओर।।
रस भोगी रस भोगत रुचि सौं हिलि मिलि हियौ हिलोर।
श्रीभगवत अधर पान अँचवन लै बीरी देत मुख जोर।।५७।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू के पद—

बिहरत जमुना जल सुकुमार।
दरपनवत गम्भीर नील जल सुन्दर सुखद सु प्यार।।
प्रफुलित कंज पुंज परिमल कल सकल सार कौ सार।
श्रीदासिकिसोर प्रकासि परस्पर पैरत परम उदार।।५८।।

सजल सनेह सरोवर के मधि पैरावति सहचरि सुख दैंनी।
उठति तरंग मनोरथ छिन छिन प्रफुलित उर मुख पंकज नैंनी।।
परसत अलि अनुराग परागनि पीवत प्रमल भ्रमर सुत स्रैंनी।
श्रीदासिकिसोर दरसि दृग दम्पति रमत रमावति कोकिल बैंनी।।५९।।

ग्रीषम रितु पिय प्रेम बिबस जल भामिनि तन सीतल रुचिकारी।
हिलगि परस्पर हिलि मिलि क्रीड़त ब्रीड़त तनक न प्रीतम प्यारी।।

---

१. नूतन, नवीन, नये। २. रुकते, विश्राम करते हैं; प्रेमबंधन में बँधते हैं; बिहार करते हैं।

छींट कटाच्छ छूटत छिरकत छबि छिन छिन प्रति रति बढ़ति अपारी।
श्रीदासिकिसोर रमत ता रस मधि त्रिपति न मानत कुंजबिहारी।।६०।।

रूप सरित सीतल चलि चौंपनि मिलन प्रेम सागर कूँ आई।
तट भुज कनक नील मनि मंडित चंचल मीन अमित चपलाई।।
बिबिध रंग कल कमल प्रफुल्लित भ्रमर भ्रमत अद्‌भुत छबि छाई।
उत समुद्र झकझोर तरंगनि इत नव बेगि बिकट गति धाई।।
जल बिहार बिस्तार परस्पर करत रहत चित हित अधिकाई।
श्रीदासिकिसोरकिसोरी रस बस सुजससखी सारंग मुख गाई।।६१।।

अति आसक्ति सरित मधि हिलिमिलि करत केलि बोलत कल बानी।
पैरत बूड़त उछरत पल पल छिरकत छींट सरस रस सानी।।
नील पीत पट लपटि रहे तन भूषन अंग उदित उरझानी।
श्रीदासिकिसोर परसि प्यारी पति ग्रीषम रितु मर्दत रति दानी।।६२।।

तलप अवनि पर रूप सरोवर सीतल अति अद्‌भुत छबि छाई।
उठत तरंग अंग अंगनि प्रति प्रफुलित कमल असित अरुनाई।।
ता मधि रस निधि रमत बिहारी अधिक अथाह पार नहिं पाई।
श्रीदासिकिसोर पाइ जोवन जल प्रिया लाल नव लाड़ लड़ाई।।६३।।

जल मधि करत किलोल बिहारी।
रीझि भीजि भिजवावति सहचरि सुखनिधि संग सुकुमारी।।
तन मन प्रान समान सगबगे लपटि नेह पट धारी।
श्रीदासिकिसोर सनेह सने नव केलि कला बिस्तारी।।६४।।

परमानन्द जमुना जल भीनें।
मंजन करत टरत नहिं इत उत अंस भुजनि भुज दीनें।।
उठति तरंग अंग अंगनि प्रति दरसत परसि प्रवीनें।
श्रीदासिकिसोर कोकनद[१] कौतिक करत लपटि पट झीनें।।६५।।

बिहारिनि प्रीतम रीझि भिजाये।
अति अनुराग नेह जल सींच्यौ उरज उरनि लपटाये।।
अति आनन्द अथाह जल पैरत भये मनोरथ भाये।
श्रीदासिकिसोर परस्पर प्रफुलित अंग अनंग मिलाये।।६६।।

चढ़े चित चाव नाव पिय प्यारी।
खेवत सखी सहज सुखदायक चलत चपल कल वारी।।
रचित कुसुम कुसुमाकर आकृति अद्‌भुत अमित सुढारी।
श्रीदासिकिसोर बिलास बिलोकति बिहरत रसिक बिहारी।।६७।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

एरी नवल नव रंग सौं बैठे भाव, यौं बनि बैठे फूलनि की नाव।
अद्‌भुत छबि फबि रही परस्पर संग सहचरि
यौं जगमगै जटित जराव।।
बिमल जमुना जुगराज बिराजत मानौं फूले फूल चित चाव।
यह कौतिक जल बिहार देखि दासिनागरी गुन निधान
नव नागर उपजत नव नव भाव।।६८।।

---

१. लाल कमल; लाल कुईं–कमल जैसा एक पौधा जो रात में खिलता है; कुमुद।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग–भैरवी, ताल–चौताल, सिंगार के पद

हरति मन हासि सु प्रकासि बिगसत बिसद
देखि रीझी बदन कमल की भाँति री।
चिकुर चिक्कन घनें सरस सौरभ सनें
रहे रस लुब्ध मनौं मत्त अलि पाँति री।।
जदपि निरखत रूप निपट अति निकट ह्वै
तदपि लोभिन मेरी आँखि न अघात री।
कोटि कोटिक किरन सघन कानन भवन
उदित गन अगन दुति काम की कांति री।।
उलटि रीझे रसिक भए भामिनि बसिक
भुजनि भरि भरि भेंट मधुर मुसिकाति री।
मिले सुख सिंधु रति रवन दम्पति दोऊ
श्रीबिहारीदासिनि बिलसि हियें सुख सांति री।।६९।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद–

मंजन[१] करि मन मोहनी मोहन मुदित परस्पर करत सिंगार।
माँग सुहाग कुसुम रची पाग अति अनुराग पहिरि उर हार।।
मृगमद आड़ बनी बर बेंदी अंजन नैंन निरखि मुख चार।
श्रीनागरीदासि बलि बिचित्र बिहारी बिहारिनि
हुलसि बिलसि सुख सार।।७०।।

---

१. स्नान।

श्रीस्वामी सरसदेव जू के पद–

लाल प्रिया कौ सिंगार बनावत।
कोमल कर कुसुमनि कच गूँथत मृगमद आड़ रचित सचु पावत।।
अंजन मन रंजन नखबर करि चित्र बनाइ बनाइ रिझावत।
लेत बलाय भाय अति उपजत रीझि रसाल माल पहिरावत।।
अति आतुर आसक्त दीन भये चितवत कुँवर कुँवरि मन भावत।
नैंननि में मुसकानि जानि पिय प्रेम बिबस रस꙳ कंठ लगावत।।
रूप रंग सीवाँ ग्रीवाँ भुज हँसत परस्पर मदन लड़ावत।
श्रीसरसदासि सुख निरखत* निहाल भये❋
गई निसा नव नव गुन गावत।।७१।।

श्रीस्वामी सरसदेवजू के पद– राग–आसावरी, ताल– धमारि

रसभरे लाल लाड़िली आवत।
कुंज सदन मन मदन मुदित रंग सुरति अंग उपजावत।।
घूमत नैंन बैंन आलस जुत पट लट लटकत भावत✿।
प्रेम उमँगि मन पुलकि पुलकि तन कंठ सौं कंठ लगावत।।
मगन भये मुसिकात छबीले हरषत रीझि रिझावत।
श्रीसरसदासि सुखरासि रसिकबर बिचित्र विनोद बढ़ावत।।७२।।

आज अति राजत नागरि नाहु।
बन घन कुंज कुंज प्रति डोलत अंसनि पर धरि बाहु।।
फूली लता परसि रस हँसि भरे गावत अधिक उछाहु[१]।
मंद मंद गति अति छबि उपजत निरखि सखी बल जाहु।।

꙳पाठान्तर–हँसि। *निरखि। ❋भई। ✿आवत। १. उत्साह; हर्ष; धूम; चाव।

आनंद मगन भये लटकत नट पट भूषन तन चाहु[१]।
श्रीसरसदासि सुखरासि लाड़ली लालन संग किलकाहु।।७३।।

श्रीस्वामी नवलदेव जू कौ पद–

रंग भर्‌यौ लालन रंगीली प्यारी राधा।
एक तन एक मन एक ही समान दोऊ
नेंक हूँ न न्यारे ह्वै सकत पल आधा।।
छबि सौं छबीली भाँति नैंननि में मुसिकाति
मुसिकनि ही में रंग बढ़्यौ है अगाधा।
तैसीये नवल सखी तैसेई कुंजबिहारी
तैसी मेरी प्रानप्यारी पूजी[२] मन साधा।।७४।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

नैंन सुफल करि जुगल नवल देखि री देखि मन दै।
बैठे करि मंजन मनरंजन अंजन नैंन निमेषन दै।।
बानत बिबिध कुसुम अवतंसनि अंसनि[३] हँसि भुज दंडनि दै।।
श्रीबिहारिनिदासि रसमत्त परस्पर
मिलि बिहरत सखियनि सुख दै।।७५।।

❀

१. प्रेम भरी दृष्टि से देखते हैं। २. पूर्ण करी, सफल करी। ३. कंधे।

श्रीबिहारीबिहारिनी जू कौ होरी महोत्सव

फाल्गुन सु०८ से फाल्गुन सु० १५ तक

प्रथम दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग धनाश्री, ताल–चौताल

दिन डफताल बजावत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन स्त्रम बरषत
भलैं मिले रसिक किसोर किसोरी।।
बातनि बतबतात[१] राग रंग रमि रह्यौ
इत उत चाहि[२] चलत तकि खोरी[३]।
सुनि श्रीहरिदास तमाल स्याम सौं
लता लपटि कंचन की थोरी।।१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद– राग–बिहाग, होरी ताल–धमारि

होरी रस रंगा री। खेलत स्याम प्रिया गौरा री।।
प्रेम सहित सखि श्रीवृन्दाबन सेवत जल जमुना री।
ढिंग ढिंग[४] कुंजनि कुंजनि कूलनि फूल रही फुलवारी।।१।।
सकल सुगंधनि रंध्रनि लै लै बहत मलय सुखकारी।
छिरकत छुवत सुधाधर पुहुप[५] पराग उड़ावत डारी।।२।।
गावत चैत[६] सुनावति चाँचरि[७] सहचरि अति चतुरा री।
सुनत स्रवन मन मोद भयौ खेलन कौं हरषे श्रीकुंजबिहारी।।३।।
कहैं प्रिया मेरे को खेलै लाल करैं मनुहारी।
अति सुख में सुख देखि सखी री देत परस्पर गारी।।४।।

१.बातचीत करते हैं, बातचीत करने का ढंग। २. देखकर। ३. साँकरी गली; पतरी गली। ४. पास–पास। ५. पुष्प; फूल। ६. एक तरह का चलता गाना; होली का एक गीत। ७. होली के अवसर गाया जानेवाला एक राग, फाग; होली का स्वाँग, हुरदंग।

खेलत झेलत अति रंग में रंग रहसि बहसि हँसि ढारी।
अरुन बरन नव कुमकुम[१] के रंग पीक कपोलनि पारी।।५।।
मूलताल—
सब अंग चित्र बिचित्र बिहारी बिहारिनि सुरति सिंगारी।
तन मन बारि देति छबि पर तृन तोरति कौतिकहारी।।६।।
निसिदिन यह सुख जीजत पीजत प्याय सुधा पिय प्यारी।
मत्त भये जुगराज बिराजत मिलत मुदित भुजचारी।।७।।
अति स्रम सिथिल भये दोऊ जन तिहिं छिन सखी सम्हारी।
श्रीबिहारिनिदासि दरसि मुख सुख दिन धन्य पहर पल घारी।।८।।२।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद— राग-धनाश्री (पटदीप), होरी, ताल-धमारि

मेरी सहज रंगीली नागरी यौं राजैं स्याम संग गोरी हो।
दिन दूलह दुलहिनि लाड़िली अति बिचित्र बनी यह जोरी हो।।१।।
नव निकुंज सुखपुंज में प्यारी उबटि बदन सिर खोरी[२] हो।
सारी सुरंग स्याम कंचुकी गुही कबरी कुसुम कच[३] डोरी हो।।२।।
तब चित्र चतुर नख सिख कियें दै अंजन मृगमद[४] रोरी हो।
खुभी[५] पोति चारि चारि चूरी पग नूपुर की धुनि थोरी हो।।३।।
सुन्दर बर कर दर्पन लियें मुख निरखत कुँवरि किसोरी हो।
जाँचत रति चित चौंप सौं नवनागरि नाहु निहोरी हो।।४।।
प्यारी नखसिख सुन्दरि मोहनी मृदु मुसकति हैं मुख मोरी हो।
स्रवत सुधा ससि माधुरी प्रिया प्रीतम दृष्टि चकोरी हो।।५।।

---

१. केशर; रोली। २. स्नान करना, स्नान किया। ३. केश, बाल। ४. कस्तूरी। ५. कान में पहनने का लौंग।

अंग अंग अनंग उदित भये दै परिरंभन रस रोरी हो।
सुरति रंग तन मन हरैं* गुन गूढ़ ग्रन्थि हँसि छोरी हो।।६।।

मूलताल–

दोउ उमँगि उमँगि रस बिलसहीं घन दामिनि भामिनि भोरी हो।
सब संपति कौं* सुख सूचहीं यौं खेलत हैं रस होरी हो।।७।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि कौ सुख बरनैं को* मति थोरी हो।
बलि□ नागरीदासि दरसि सुखै रीझि बारति मन तृन तोरी।।८।।३।।

द्वितीय दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–धनाश्री, ताल–ध्रुपद

श्रीराधा रसिक (नव) कुंजबिहारी खेलत फाग
सब जुवतीजन कहत हो हो होरी।
भरत परस्पर काहू की काहू न सुधि
हँसि कें मन हरत मोहन गोरी।।
कर सौं करब जोरि कटि सौं कटिब मोरि
करत नृत्य काहू न रुचि थोरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा फिरत न्यारेई न्यारे
सब सखियनि की दृष्टि बचावत तकितब खोरी।।४।।

द्वितीय दिवस– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–धनाश्री, ताल–ध्रुपद

हमारौ माई लालबिहारी मन हर्‍यौ (हो)
जै जै श्रीवृन्दाबिपिन बिलास।
नव निकुंज सुखपुंज में फूले बहु भाँतिन सुमन सुबास।।१।।

---

*पाठान्तर–रंगे। *कौ। *कौं □ बलि–बलि।

अलिकुल संकुल[१] गुंजहीं रस लोभी तजि नेंकु न जात।
मुदित सिखीकुल[२] नृत्यहीं कूजित कल कोकिल सुरसात।।२।।
त्रिविध समीर बहै तहाँ सीतल री अति मंद सुगंध।
जल कमलनि बन परसि कैं सुखदायक रोचिक रतिबंध।।३।।
तरु फल फूल मधुर झिलै[३] छै रितु बसंत रहत हित स्याम।
नित नौतन संपति सबै सेवत श्रीस्यामा अभिराम।।४।।
और कहौं सुख सुनि सखी संजोगी रस परस बिहार।
प्रेम मगन संतत सदा सावधान अंग अंग न सँभार।।५।।
सब गुन रूप अचागरी[४] सेवति अपने अपने भाइ।
दंपति मुख सुख निरखहीं निसिदिन जात न जानत चाइ[५]।।६।।
कोऊ कर किन्नरि[६] साजहीं कोउब कर लीनें कठतार[७]।
कोऊ आवझनि[८] बजावहीं सब मिले हैं संच[९] गति भेद अपार।।७।।
झाँझ मुरज[१०] डफ बाँसुरी बीना मुखचंग[११] उपंग[१२] रसाल।
अरु बाजे बहु को गनैं जे लिये हैं सुघर सुंदरि नव बाल।।८।।
श्रीललितादिक सखी मिलि चलीं देखन पिय प्यारी कौ अनुराग।
जमुना कूल कदंब तरु राजत बर भामिनि सुभग सुहाग।।९।।
पूरन आनंदकंदनी करुनानिधि सुखसिन्धु उदार।
रसिक कुँवर पर बरषहीं जब बोलति बचन कुसुम सुकुमार।।१०।।

१. घना, झुंड; संकीर्ण; भरा हुआ; परिपूर्ण। २. मोर समूह। ३. धारण किये; झेले हुए। ४.नटखटी; चुहुल में निपुण; शरारती; छली। ५. चाह; चाव; उमंग। ६. एक तरह का तम्बूरा; किंगरी; चिकारा; एक तरह की सारंगी। ७. करतार; हाथ से बजाने का एक तरह का बाजा; करतल ध्वनि; ताली। ८. एक तरह के बाजे; ताशे। ९. एकत्र करना; रक्षण; कुशल; संग्रह; मिले हुए। १०. पखावज; मृदंग। ११. एक बाजा। १२. एक तरह का बाजा।

प्यारी मोहन सौं हँसि कह्यौ आवौ जू मिलि खेलैं फाग।
सुनि मन मुदित उदित भये को बरनैं कबि तिनकौ भाग।।११।।
मनि कंचन की पिचकारी लई है कुँवरि भरि अपने हाथ।
तिनहीं कौं तकि तकि छिरकहीं जे अपने प्राननि के नाथ।।१२।।
मोहन दृष्टि दुराइ कैं चले* अनत तकि औरै घात।
दाव न पावत भरन कौं बहुर्‌यौ प्यारी छिरकि हँसि जात।।१३।।
छबीले छदम[१] कछू कियौ और सखी दै आगें ओट।
नख सिख लौं सुन्दरि भरी मानौं सचे▲ मदन के लूटे कोट[२]।।१४।।
कामिनि कर कटि पट गह्यौ अलक छुवत नैंननि भयौ मेल।
पान करत मुख माधुरी बाढ़्यौ प्रेम परस्पर खेल।।१५।।
भूषन बसन सबै सनें सौंधे बिबिध बरन बहु मोल।
अरगजा[३] रंग रुचि कीच में पानि परसि हँसि करत किलोल।।१६।।
सखि मंडल मध्य बिराजहीं मानौं नव कमलनि बिच उज्जल हंस।
ठुमकि ठुमकि गति मति हरैं जब धुकि[४] धरत बिमल भुज अंस।।१७।।
सुघर सिरोमनि गावहीं तान तरंग अनंग नचाइ।
हाव भाव उपजत घने उमँग्यौ उर आनंद न समाइ।।१८।।
मृदु मालति कल नव लता नव तमाल अंग अंग अरुझात।
पुलकि पुलकि अंकौं भरैं परिरंभन चुंबन न अघात।।१९।।

---

१. छद्म, छल, कपट; अपना असली रूप छिपाना; बदला हुआ भेस। २. भरे-पूरे; सजाये हुए; एकत्र किये हुए; संग्रह किये हुए; गढ़। ३. एक तरह का सुगंधित लेप जो चन्दन, केसर आदि मिलाकर तैयार किया जाता है। ४. झुककर। *पाठान्तर- चले हैं। ▲ सचे हैं।

मूलताल—

गौरस्याम तन अति बनें दोउब रंगे हैं प्रेम के पाग[१]।
नील अरुन छबि पीत में कौंन करि सकै अंग बिभाग।।२०।।
तब निरखि स्रमित सुख सहचरी दोउब धरि राखे उर माहिं।
और निकट निज कुंज में बैठारे करि कुसुमनि की छाँहिं।।२१।।
कोउ कर चरन पलोटहीं कोउब अंचल पौंछत मुख वारि।
कोउ छबि पर तृन तोरहीं कोउ प्रेम पीवति जल वारि।।२२।।
कोउ कर स्त्रक[२] चन्दन लियें कोउब कर लीनें उपहार[३]।
याही सुख सचु[४] खेलिये बहुस्यौ बलि कीजे बिसद[५] बिहार।।२३।।
जै जै श्रीहरिदास कृपा करी जथासक्ति गाई रस रीति।
जिनकें यह रस सेइये[६] श्रीबिहारीदास करि तिनसौं प्रीति।।२४।।५।।

तृतीय दिवस— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग—सारंग, होरी, ताल—धमारि

(सोई) डोल झूलत श्री बिहारी बिहारिनि राग रमि रह्यौ।
काहू के हाथ अधौटी काहू के बीन काहू के मृदंग
कोऊ गहैं तार काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ।।
डाँड़ी छाँड़ै खेल बढ़्यौ जु परस्पर नहिं जानियत पग क्यौं रह्यौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कौ
खेल खेलत काहू न लह्यौ।।६।।

१. पाक; पकारस, चाशनी। २. माला, हार। ३. भेंट, सौंज, सामग्री। ४. सुख, प्रसन्नता; सुखसहित। ५. स्वच्छ; चमकीला; सुन्दर; स्पष्ट, प्रकट; विस्तृत; विशाल। ६. सेव्य हैं; सेवा, पूजा, टहल, आराधना, उपासना करते हैं, सेवन करते हैं।

श्रीस्वामीनागरीदेव जू कौ पद—

श्रीगुरु कृपा जथामति बरनौं श्रीवृन्दाबन अति राजैं री।
आसपास जमुना रस झूमी सुखद रमित अति भ्राजैं री।।१।।
सखि मृदुल सुबास पुलिन कन झलकत बिमल कमल अति फूले री।
नील अरुन सित पीत अधिक छबि सौरभ मनमथ मूले री।।२।।
सारस हंस चकोर कुलाहल कूजित कल सुर* भारी री।
अति रसमत्त चलत मधुरी गति लटकनि की छबि न्यारी री।।३।।
कुंज सघन घन नव नाना रंग फूलीं हित रति सूचैं री।
संपति सुख सब सौंज सजैं यौं दंपति अति मन रूचैं री।।४।।
अद्‌भुत सहज बिबिध निर्मित धर मनिमय मृदु अति सोहै री।
नव कर्पूर रमित रज राजत बरनैं ऐसौ कवि कौ है री।।५।।
सुन्दर सुभग सरोवर नाना सहज रमी[१] सुखदाई री।
मनसिज रंग समूहनि कौतिक रही जित तित छबि छाई री।।६।।
नृत्तत मत्त मयूरी▲ झुंडनि बोलत मधुरी बानी री।
कोकिल कल सुर कीर भीर अति कूजित काम कहानी री।।७।।
ललित लता नाना रंग फूली माधुरी[२] कुन्द चमेली री।
चंपकलता अरु बकुल[३] केवरौ केतुकी[४] कदंब सहेली री।।८।।
स्वर्नजूथिका[५] रूपमंजरी[६] कुजैं[७] बेलि निवारी री।
दौना चंपौ गुलाब जुही अति फूली सखी फुलवारी री।।९।।

---

* पाठान्तर—सुख। ▲मयूरनि। १. रमणीय, सुन्दर, मनोहर। २. बसंत ऋतु में खिलने वाली एक लता। ३. मौलश्री। ४. केवड़ा; केवड़े की एक जाति। ५. सोनजुही। ६. एक पुष्पलता। ७. छोटे गमले; बेला या मालती।

पारिजात केसर जु कल्पद्रुम फलित लाल मनि सोहैं री।
सौरभ सरस गुच्छ मुक्तनि के झलकत छबि मन मोहैं री।।१०।।
अति रसमत्त सुजस अलि गुंजैं स्याम अरुन सित पीरैं री।
नव पराग अनुराग त्रिबिध बहै सीतल मंद समीरैं री।।११।।
छै रितु बसंत सदा वृन्दाबन सेवत सुख मन लीनें री।
अपनें अपनें भाइ भजत सब सावधान चित दीनें री।।१२।।
नारिकेलि नव नूत[१] सदा फल नींबू फलित सुपारी री।
ललित लवंग लता जु इलायची दारयौं[२] दाख[३] छुहारी[४] री।।१३।।
द्वै द्वै रूप कियें सेवत सखी नाना रति सुख साजैं री।
मंदिर नवलनि मनिमय मंडल अनंग रंग रति काजैं री।।१४।।
सौरभ मृदु सेज्या बहु रंगनि रचि रचि सहज बनाई री।
बिहरत नित्य नवल दोउ प्रीतम कुँवरि कुँवर सुखदाई री।।१५।।
नव नव रंग नये नित साजैं खेलत छिन छिन भारी री।
जो इच्छा मन करत सोई अब जाँचैं* श्रीकुंजबिहारी री।।१६।।
कबहुँक रंग हिंडोरें झूलत गौरस्याम तन राजैं री।
बर किन्नरि कठतार बीन डफ रहत सबै सुख साजैं री।।१७।।
गावत चैत परस्पर झुंडनि रंग अनंग बढ़ावैं री।
झूलत फूलत बिपुल▲ बिनोदनि रीझि दुहुँनि पै पावैं री।।१८।।
कबहुँक कुंज कुंज प्रति डोलैं बोलैं हँसि मधुरी बानी री।
अरुन पीत पट लसत सुभग तन देत सकल सुखदानी री।।१९।।

---

१. नया, नवीन; आम्र; आम। २. दाड़िम, अनार। ३. अंगूर, मुनक्का। ४. पिंड खजूर; खजूर का एक भेद; खारिक। *पाठान्तर—जाँचत। ▲बिबिध।

कबहुँक दृष्टि बचाइ सबनि तें रंग महल दोऊ खेलैं री।
दरस परस सुख केलि कलोलनि राग रंग रस झेलैं री।।२०।।

मूलताल–

बीरी परस्पर खात खवावत मधुर मधुर मृदु बोलैं री।
नैंन सौं नैंन मिलाइ छंदबंद कर कंचुकी बंद खोलैं री।।२१।।
परिरंभन चुंबन जु अधर मधु* पीवत त्रिपित न मानैं री।
प्रमुदित मत्त रहत जु निरंतर निसिदिन जात न जानैं री।।२२।।
अंगराग अनुराग रंगे दोउ सुरति बिबस जब जानैं री।
श्रीहरिदासी बिपुलबिहारिनिदासि दोऊ उर आनैं री।।२३।।
फेरि सिंगार हार रति साजैं यौं नित नेह बढ़ावैं री।
बलि बलि नागरीदासि दरसि सुख
प्रमुदित प्रेम लड़ावैं री।।२४।।७।।

चतुर्थ– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–धनाश्री, ताल–ध्रुपद

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े।
हाँगत जोर सहित जैसौ जाकें डाँड़ीब गहैं गाढ़े।।
बिच बिच प्रीति रहसि रस रीति की राग रागिनीन के जूथ बाढ़े।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
राग ही के रंग रँगि काढ़े।।८।।

श्रीवृन्दाबन सहज सुहावनौं–बना (पृष्ठ २० पर देखें)

पंचम दिवसः– श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–धनाश्री, ताल–ध्रुपद

झूलत डोल श्रीकुंजबिहारी।
दूसरी ओर रसिक राधाबर नागरि नवल दुलारी।।

---

* पाठान्तर– रस।

राखे न रहत हँसत कहि कहि प्रिया बिलबिलात पिय भारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी
अबकैंब राखि हाहारी।।९।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद– राग–काफी, होरी–धमारि

सब सखी मिलि झूमक दैहिं, मेरौ लालबिहारी मन हर्‍यौ हो।
श्रीहरिदासि सहज रति बरनौं श्रीवृन्दाबन अति रम्य।
श्री बिपुल बिहारिनिदासि कृपा बिनु सबके मननि अगम्य।।१।।
कमल कुमुद फूले जल थल सखि सुखद तरनिजा कूल।
सारस हंस चकोर ललित गति लटकि चलत मन फूल।।२।।
नव निकुंज सुखपुंज मनोहर उदित कमल की कांति।
नृत्य करत सिखीकुल फूली❁ कौतिक नाना भाँति।।३।।
द्रुम बेली फूली लता नितही रितु सरद बसंत।
अद्‌भुत भूमि रंग राजैं अति सोभा सुखहिं न अंत।।४।।
रज कूर्पर सुगंध त्रिबिध बहै सीतल मन्द समीर।
अति रसमत्त मुदित कल कूजित सुक पिक भृंगनि भीर।।५।।
सेवत काम अनंत कला नित कुंजमहल आगार।
लाल रतनमनि मुक्ता झूमत रचित बितान अपार।।६।।
कनक खचित मनिमंडल पर राजैं कुँवरि संग सुकुँवार।
मृदु मनि स्याम तमाल लता मानौं कनक कुसुम उर हार।।७।।
श्रीललितादिक सखी आईं झूमि सब आवझ साजि मृदंग।
एक लियें करतार झाँझ डफ बर बाँसुरी मुखचंग।।८।।

❁ पाठान्तर–फूले।

एकनि[१] कर कठतार अधौटी[२] मुरज रबाब[३] उपंग।
एक लियें किन्नरि कर बीना बजावति गावति तान तरंग॥९॥
एक अरगजा कनक कलस कलस भरि सौंधें सरस रसाल।
एकनि कर पिचकारी एकनि कर बूका[४] बंदन[५] अरुन गुलाल[६]॥१०॥
एक लियैं बीरी कर कन्दुक अरु कुसुमनि के हार।
झूमत सुघर सुनावति चाँचरि सप्त संच सुरतार॥११॥
प्यारी हँसि मोहन सौं बोली आवौ जू मिलि खेलैं फाग।
सुखद बचन सुनि स्याम सहेलिन बाढ़्यौ अति अनुराग॥१२॥
ललिता लै पिचकारी दीनी श्रीस्यामा जू कौं आइ।
छिरकति भरति भाँवते पिय कौं रहस बिहसि* हँसि जाइ॥१३॥
मोहन भरि पिचकारी लै कर छल बल तकत उपाव।
नागरि नवल प्रबीन प्रिया ये क्यौंहूँ न पावत दाव॥१४॥
दृष्टि बचाइ अलि आगें लै बूका बंदन अरुन गुलाल।
आइ अचानक भरि प्यारी हँसि होरी□ बोलत लाल॥१५॥
कामिनि कटि पीतांबर कर गहि कहति बचन मुसिकाइ।
बहुस्यौ भरौ○ चपल नटनागर नख सिख छबि रहि छाइ॥१६॥
भूषन बसन सबै सनें (और) कुकुम सौंधे गुलाल।
निरखि हरषि सुख प्रेम उमँगि गुन गावत सखि नव बाल॥१७॥

* पाठान्तर—बिहँसि रहसि। □होरी है। ○भरे। १. एक झुंड। २. एक प्रकार का वाद्य जो चमड़े से बनता है। ३. एक तरह की सारंगी। ४. कर्पूर, चन्दन आदि का चूर्ण। ५. रोली; सिंदूर। ६. अबीर; पराग का चूर्ण।

मूलताल—

गौरस्याम तन रुचिर[1] मनोहर चितवत बिबि मुख ओर।
करत सुधारस पान परस्पर लोचन त्रिषित चकोर।।१८।।
दरस परस रसमत्त भये दोउ बिलसत हँसत अनंग।
अंग अंग हरषत सुख बरषत* खेलत भरि रस रंग।।१९।।
राग रंग रस सुख बाढ़्यौ अति सोभासिन्धु अपार।
बिपुल प्रेम अनुराग नवल दोउ करत बिहार अहार।।२०।।
श्रीबृन्दाबिपिन बिनोद करत नित छिन छिन प्रति सुखरासि।
काम केलि माधुर्य प्रेम पर बलि बलि नागरीदासि।।२१।।१०।।

षष्ठ दिवस— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग–धनाश्री, ताल–ध्रुपद

एक समै एकान्त बन में झूलत डोल श्रीकुंजबिहारी।
झोंटा देत परस्पर सब मिलि अबीर उड़ावत डारी।।
कबहुँक वे उनके वे उनके हौं दुहुँनि की एक सारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी बाढ़्यौ रंग भारी।।११।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—राग–काफी, धनाश्री, होरी, ताल–धमारि

रूप अनूपम मोहनी, मोहै कुँवर किसोर।
लाड़ गहेलरी[2], रंग राँचे[3] लाल।।
बदन सुधा ससि स्त्रवत री पीवत▲ नैंन चकोर।।१।।

---

* पाठान्तर—सुख बरषत हरषत। ▲प्रीतम। १. सुन्दर; प्रिय। २. उन्मत्ता; प्रेम बावली। ३. रचे हुए, रंगे हुए, रंग चढ़े हुए; अति आसक्त; अति अनुरक्त; प्रेम रस लीन, मग्न; अति प्रसन्न; अति शोभित।

नैंन कमल मुख कमल कें चरन कमल कर लाल।
तन मन फूले कमल री मोहन मुदित मराल।।२।।
हासि कुसुम जोवन लता अलि आसक्त तमाल।
बचन रचन सुर सब्द के मृग मन[१] मोहै रसाल।।३।।
ये घन तुम दुति दामिनी मिलि बरषहु प्रेम सुहाग।
आलस क्यौं बलि कीजिये हिलिमिलि खेलौ फाग।।४।।
सुनत भयौ चित चाव री सुघर सिरोमनि जान।
सहचरि संच सुरनि लियें करति मधुर कल गान।।५।।
श्रीकुंजबिहारी खेलहीं प्रेम भरे रस रंग।
बूका बन्दन मेलहीं कुमकुम कुसुम सुरंग।।६।।
मदन मुदित अंग अंग री करत॰ सुखद कल केलि।
उर कर बर परसैं हँसैं जुगल नवल रस झेलि।।७।।
पियत सुधाधर माधुरी चित्रित पीक कपोल।
अंग अंग अनुराग री कहत मधुर मृदु बोल।।८।।

मूलताल—

राग रंग अति रंग रह्यौ श्रीहरिदासि बिनोद।
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासि री बिपुल बढ़ावति मोद।।९।।
छिन छिन प्रति रति साजहीं कुंजसदन सुखरासि।
मधुर प्रेम रस बिलसहीं बलि बलि नागरीदासि।।१०।।१२।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—राग-धनाश्री, पटदीप, होरी, ताल-धमारि

मेरी रसिक रंगीली नागरी मिलि खेलत पिय संग होरी हो।
सखि नव निकुंज सुखपुंज में अति राजत अद्भुत जोरी हो।।१।।

---

१. मनि; श्रेष्ठ, अति उत्तम। ॰ पाठान्तर—सुरति।

अरुन पीत पट कंचुकी तन निर्तत अति रंग* साजैं हो।
सखि भूषन रव सुर संच सौं मानौं मृदंग ताल डफ बाजैं हो।।२।।
अलि आनंद बिराजहीं नव कोकिल कल सुर गावैं हो।
सखि द्रुम बेली फूली लता नव पुहुप पराग उड़ावैं हो।।३।।
सौरभ सरस पवन बहै नव रितु बसंत सुखकारी हो।
सखि अति आनंद उमँगि ढरैं रस बरषत कुंजबिहारी हो।।४।।
अंग अंग अरगजा रंग छिरकहीं नव नेह नयौ अनुरागौ हो।
सखि मुदित परस्पर खेलहीं अति सुरति रसीली फागौ हो।।५।।
हावभाव भ्रूभंगिनी अति चौंप बढ़ी चित चारौ हो।
बदन बिलोकत माधुरी मची मौज मनोजनि मारौ हो।।६।।
कर कमलनि परसैं हँसैं उर आनन अलक सँवारैं* हो।
जुगल नवल रसपान कें भये बिबस बसन न सँभारैं* हो।।७।।
सुरति रंग अंग रगमगे अति भ्राजत[1] कुँवरि किसोरी हो।
संग सुखदायक सहचरी रीझि रीझि कहत हो हो होरी हो।।८।।

मूलताल–

इहि रसमत्त मगन रहैं नित नौतन नित्त बिहारौ* हो।
छिन छिन प्रति रस बिलसहीं मृदु रस जस करत अहारौ▲ हो।।९।।
जै जै श्रीहरिदासि प्रताप तें बलि बिपुल बिहारिनिदासी हो।
बलि नागरीदासि दरसि सुखै सेवै
संतत प्रेम प्रकासी हो।।१०।।१३।।

---

* पाठान्तर– रति। * सँवारौ। * सँभारौ। * बिहारी। ▲अहारी। १. शोभित हैं।

सप्तम दिवस— श्रीस्वामी जू कौ पद— राग धनाश्री–ताल–ध्रुपद

झूलत डोल दुलहिनी दूलहु।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत खेल परस्पर सूलहु[१]।।
बाजत ताल रबाब और बहु तरनि तनैया कूलहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कौ
अनतब[२] नाहिंने फूलहु।।१४।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

चलि सखि देखन जाहिं (पृष्ठ १८ पर देखें)

अष्टम दिवस— श्रीस्वामी जू कौ पद—राग–सारंग–होरी, ताल–धमारि

(सोई) डोल झूलत श्रीबिहारीबिहारिनि पुहुप बृष्टि होति।
सुरपुर पुर गंधर्व और पुर तिनकी नारि देखति बारति लर मोति।।
घेरा[३] करत परस्पर सब मिलि कहूँ न देखी ऐसी जुवती जोति।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारिनि
सादा चुरी खुभी पोति।।१५।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

श्रीस्यामा प्यारी कुंजबिहारी राजत अद्‌भुत जोरी हो।
अति रसमत्त परस्पर बिहरत खेलत हैं रस होरी हो।।१।।
सौंधे सरस अबीर अरगजा छिरकत कुँवर किसोरी हो।
हाव भाव चित चाव बढ़्यौ अति बूका बंदन रोरी हो।।२।।
रतन खचित पिचकारी हाथनि भरि लई मृगमद रोरी हो।
वे उनके वे उनके ताकल मुसिकत हैं मुख मोरी हो।।३।।

---

१. सुलभ्य। २. अन्यत्र–अब। ३. चर्चा; फैलाव; विस्तार।

कोऊ करतार कोऊ कर किन्नरि संच सुरनि गति थोरी हो।
बीना मुरज पखावज बाजत बिविध डफनि की जोरी।।४।।
कोकिल कीर अलापनि में सुर ताल देत गुन गोरी हो।
लेत अतीत[१] अनागत[२] नागर नृत्य करति मुख मोरी हो।।५।।
मूलताल–
राग रंग सबकौ मन करषत भई अविचल मति भोरी हो।
तन मन प्रान करौं न्यौछावरि या छबि पर तृन तोरी हो।।६।।
श्रीहरिदासी इष्ट उपासी या सुख में मति मोरी हो।
श्रीनागरीदासि की दासि परम रुचि
जैसें चन्द चकोरी हो।।७।।१६।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद–राग काफी, होरी, ताल–धमारि

हो हो होरी खेलैं साँवरौ अपनी कुँवरि लड़ैती साथ।
ललिता चौंप लगाय दुहूँ दिसि गहि पकराये हाथ।।
प्रेम भरे जु फाग दोऊ खेलैं भई है दुहूँ दिसि भीर।
आनंद उमँगि लई* करजेरी[३] धरत निमिष नहिं धीर।।
भरि पिचकैं मानौं सुरति की सजनी छुटत दृगनि की कोर।
उड़त अबीर गुलाल फूल सतभाइ अतर के बोर।।
मंद मधुर बाजैं बजैं (और) बाढ़्यौ अति उत्साह।
छाइ रह्यौ अनुराग परस्पर देत नेक नहिं चाह।।

*पाठान्तर– गही।१.-२. ताल-स्वरों के भेद विशेष। ३. चरवाहे का डंडा; खेती का एक औजार।

मूलताल–

इहि बिधि खेल मच्यौ कुंजनि में रंगे प्रेम के रंग।
यह सुख निरखति सखी सबै दुरि रसिक बिहारिनि संग।।१७।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद– राग–धनाश्री होरी, ताल–अद्धा तिताला

एरी सखी नित्यबिहारिनि बाल बरषति रूप रसाल री।
(रंग होरी)
एरी सखी चंचल नैंन बिसाल निरखत लाल निहाल री।।
एरी सखी अद्‌भुत सुख की रासि मधुर मधुर मृदु हास री।
एरी सखी हुलसि हुलसि लड़कात आनंद उर न समात री।।
एरी सखी अंस अंस भुज देत अंकौं भरि भरि लेत री।
एरी सखी मिलत मिलत न अघात रोम रोम फूले गात री।।
एरी सखी बाढ़्यौ है रंग अपार उपजत कोटिक✿ मार री।
एरी सखी परे हैं प्रेम रस जाल प्रानप्रिया उर माल री।।
एरी सखी इन से येही आहि पटतर[१] दीजै काहि री।
एरी सखी ललित सु केलि अभंग श्रीरसिकसखी अंग संग री।।१८।।

अति रंग बिहारिनि बाल बरषति लाल पै।
इकटक निरखति सहज लाड़िली भाग्य लिख्यौ है भाल पै।।
चूमि चूमि तरुवा हियें लाये माथे धरे हैं बिसाल पै।
श्रीललितप्रिये या छबि पर बारी रीझि रसिक सु ख्याल पै।।१९।।

प्यारी सहजहि मृदु मुसिक्याय* मोहन बस करे।
जब▲ अनुराग भरी ढरी हित सौं बिबस भये अंकौं भरे।।

✿ पाठान्तर–कोटिन। * पाठान्तर–मुसिक्यानि। ▲अति। १. समानता, बराबरी।

मानत भाग्य धन्य धन्य हमहीं आजु प्रिया अपनें करे।
श्रीललित केलि निसिबासर बिहरत रसिकसखी के हिये अरे।।२०।।

नित कुंजबिहारिनि बाल खेलत लाल सौं।
महाप्रेम भरि भरि पिचकारी छिरकत दृगनि बिसाल सौं।।
सहज सनेह सौंधे में सौंधे रंग रंगीले हाल सौं।
श्रीललितप्रिये अंग संग सुख बिलसत अद्भुत चाह रसाल सौं।।२१।।

रसमत्त बिहारिनि बाल मो हिय में रहौ।
हुलसि हुलसि आनन्द महा ह्वै लपटि लपटि मो तन चहौ।।
रोम रोम सुख पाइ छबीले हँसि हँसि कैं बातें कहौ।
श्रीहरिदासी जू रसिकसिरोमनि तन मन मिलि यह सुख लहौ।।२२।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद– राग–काफी, ताल–धमारि

नव कुंज सदन में आजु रंगीली होरी।
इत स्यामा उत स्याम मनोहर खेलत उमँगि न थोरी।।
छल बल घात लगावत मोहन अंग बचावत गोरी।
सावधान दोउ सुघर सिरोमनि अपनी अपनी ओरी।।
कोक कला कल केलि परस्पर जोवन जोर किसोरी।
चतुर खिलार लाड़िली लालन तुम जिनि जानौ भोरी।।
हा हा करौ परौ पाँयनि अब ना चलिहै बरजोरी।
भगवतरसिक उदार स्वामिनी दैहैं सर्वसु छोरी।।२३।।

श्रीस्वामी साधूराम जू कौ पद–

मतवारे री तेरे छैल छबीले नैंना।
घूमि रहे अलबेले अलौकिक करत कटाक्षनि सैंना।।

चपलारे[१] अनियारे[२] भारे कजरारे सुख दैंना।
श्रीसरस प्रिया बस भये हैं बिहारी कहि कहि साधू बैंना।।२४।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

रंग होरी रंग होरी हो रंग होरी खेलत स्यामा गोरी।
अति❀ लड़काइ धरी भुज पिय पर रस बरषत घन घोरी।।
प्रान प्रान मिलि तन मन फूले दृष्टि दृष्टि सौं जोरी।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत प्रीति बढ़ी दुहुँ ओरी।।२५।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

होरी आई रंग भरी○ खेलत तन सुकुमार।
अबीर गुलाल के बादर छाये बरषत धार फुहार।।
उमँगि उमँगि बरषत रंग भारी छूटत कर पिचकार।
श्रीललितमोहिनी के हित बिहरैं वे उनके वे उनके हार।।२६।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

होरी खेलन स्याम* हुलसि[३] छबीली आई।
अबीर गुलाल हिये नैंननि में आज करत मन भाई।।
बाजे बजत दुहूँ दिसि नीके मनमथ मोद बढ़ाई।
छबि तरंग छूटत पिचकारी भृकुटिन मार मचाई।।
गावत गीत रस रीति जीति कें पुलकि किलकि सुखदाई।
श्रीरसिक बिहारिनि की छबि निरखत ज्यौं दामिनि घन छाई।।२७।।

---

१. चंचल; चपल। २. अनिदार, पैने, नुकीले। ३. उल्लसित, आनंदित होकर, स्फुरित होकर; उमड़कर। ❀ पाठान्तर—जब। ○ मिलि। * स्यामा।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद—

पिया अबकैं तौ बिपिन निरंतर हो हो हो हो होरी है।
श्रीललिता हम तुमकौं दीनी रसिक हमारी ओरी है।।
कोधौं जीतै कोधौं हारै पैज बदी ना थोरी है।
पीताम्बर तुम धरौ दाव पै जीती कुँवरि किसोरी है।।२८।।

श्रीस्वामी राधाप्रसाददेव जू के पद—

होरी रंग महल में खेलत हैं पिय प्यारी।
ललिता भरि भरि देत उमँगि सौं केसरि रंग पिचकारी।।
कमल करनि भरि बूका बंदन घालत जब सुकुमारी।
मूठि बचावत नवल छबीलौ श्रीराधा रसिक बिहारी।।२९।।

नयौ होरी कौ खिलार आजु घात में आयौ।
झपटि फैंट कर गह्यौ लाड़िली गाल गुलाल लगायौ।।
मंद मंद मुसिकात छबीली नैंननि सैंन जनायौ।
छीन लियौ पट पीत मुरलिका दै दै ताल नचायौ।।
संग सखी ललिताहरिदासी हँसि हँसि मोद बढ़ायौ।
श्रीराधारसिक नव कुंजबिहारिनि ऐसौ फाग मचायौ।।३०।।

राग—काफी, धनाश्री, होरी, ताल—चौताल—

सुन्दरबर नव किसोर खेलत रंग होरी।
प्यारी संग नवल बाल झोरिन लीनें गुलाल
कंचन पिचकारी हाथ केसर रंग घोरी।।

रोरी मुख मलत धाइ पीतांबर लियौ छुड़ाइ
ताल दै नचाइ मुदित बिहँसत मुख मोरी।
हँसत लसत चन्द्रबदन बारौं छबि कोटि मदन
श्रीराधिकाप्रसाद सखी निरखति तृन तोरी।।३१।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद–

जो तुम हौ खिलार स्याम मेरे संग आवना।
जेती संग भीर भार तिनकौं न ल्यावना।।
झाँझ डफ मृदंग ताल बाजे क्या बजावना।
होरी तान ख्याल गारी भूलि कें न गावना।।
गुलाल और अबीर रंग धूरि क्या उड़ावना।
अंग ना सुगंध गंध न किसी कौं सुँघावना।।
नीमा एक चीरा फेंट फेंटा अलसावना।
पहिरौ मति भूषन न किसी कौं दिखावना।।
मेरा तेरा जो सनेह सभी सौं छिपावना।
पुकारि कें न बोल पिया सैंननि समझावना।।
मेरा तन तेरा सुख तोही लौं अघावना।
याही सुख सदा रहौ रास क्या मचावना।।
केलैं रस रेलैं रंग अंग में समावना।
आया पिया भाया मन नेह क्या बढ़ावना।।
छाया नित खेल फाग फगुवा मँगावना।
पीताम्बर कौल किया तेराई कहावना।।३२।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—अद्धा—तिताला

हो हो होरी खेलैं री मोहन, अपनी प्रानप्रिया संग सोहन।
गावत तान तरंग परस्पर हँसत भेद भरि भौंहन।।
भरि सौंधे सुरंग अबीर अरगजा छिरकत रीझि रिझोहन।
श्रीनागरीदासि रसमत्त बिहारी बिहारिनि मुख छबि जोहन।।३२।।

श्रीस्वामी राधाप्रसाद जू कौ पद—होरी तिताला

ललित नव कुंज में होरी, पिया संग खेलती गोरी।
सप्त सुर साज सब साजैं, बाँसुरी बीन डफ बाजैं।।
मान भरि तान सौं गावैं, रंगीले दोऊ फाग सरसावैं।
झमकि पिचकारियाँ घालैं, धाइ रोरी सौं मुख मालैं।।
करत जब लाल बरजोरी, झपटि गहि पीतपट गोरी।
बिहँसि हँसि रंग सौं बोरी, परस्पर करत झकझोरी।।
भींजि रस रंग सुखरासी, रसिकबर संग हरिदासी।
श्रीराधाप्रसाद बलिहारी, बसौ इन नैंन पियप्यारी।।३४।।

श्रीस्वामी सुन्दरदास जू कौ पद—राग—परज, धीमा—तिताला

रंग महल में आजु रंग होरी हो।
फाग खेलन में बनी है बना की ह्वै रही पट झकझोरी।।
प्रमुदित नारि गुलाल उड़ावति गारी गावति चहुँ ओरी।
दूलह श्रीरसिक बिहारी जू सुंदर दुलहिनि कुँवरि किसोरी।।३५।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू कौ पद—राग—बहार, होरी—धमारि

होरी खेलैं श्रीराधा जू प्यारी, लियें कर रंगभरी पिचकारी।।
अंजन दै दृग कंजन फूले खंजन लजत बिचारी।

गंजन करत मीन मृग नैंनी लखि बस होत बिहारी।।
लहँगा सुरंग कंचुकी अद्भुत तनसुख सोहत सारी।
अंग अंग आभूषन राजत मोतिन माँग सँवारी।।

मूलताल–

सहचरि जंत्र बजावति गावति गति उपजावति न्यारी।।
ललित रूप निरखत निसिबासर तन मन अति हितकारी।।३६।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–

तन मन मौज मनोज भरी प्यारी पिय संग खेलति होरी।
चोबा चन्दन अरगजा के रंग भरत ढुरत दुहुँ ओरी।।
अंग अंग सुख रुख लै परसत हँसत लसत मुख मोरी।
श्रीहरिदासि ललित अद्भुत छबि निरखि हरषि तृन तोरी।।३७।।

राग–धनाश्री–होरी, ताल–तिताल–

श्रीबिहारी बिहारिनि की री मोपै यह छबि बरनी न जाइ।
कुंज महल में होरी खेलैं (जाके) अंग अंग रंग चुचाइ।।
तन मन मिलैं झिलैं मृदु रस में आनंद उर न समाइ।
श्रीहरिदासि ललित छबि निरखति सेवत नव नव भाइ।।३८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद– राग– पीलू, धमारि

होरी पिया भरमाई री माई कीजै कौन उपाई।
घर बन सौति भई सब मोकौं जेती जाति लुगाई।।१।।
कह्यौ न मानत कोऊ काहू कौ करत आप मन भाई।
हौं हटकौं[1] पिय सटकि जात यौं मेरी दृष्टि दुराई।।२।।

---

१. रोकती हूँ; मना करती हूँ।

कबहूँ सारी ओढ़ि चूनरी चलत चाल चतुराई।
मोकौं देखि जिय में भ्रम उपज्यौ बिधिना कौन बनाई॥३॥
आगें जाइ कह्यौ मोसौं तू रहियौ संग सदाई।
कहियौ मति बातैं काहू सौं तब मैं मन में पाई॥४॥
मैं हूँ जान्यौ संग खेलियौ* चलि मोहिं सैंन बताई।
पिय पकरे मैं पिय ने पकरी नीकी भाँति सिखाई□॥५॥
मूलताल–
उघर्‍यौ छलबल स्याम बाम कौ सबकौं आनि दिखाई।
रीझि रसिक श्रीसहचरी माकौं पीताम्बर पहिराई॥६॥३९॥

अबकैं फाग रसिक सुख दीनौं।
तन सुगंध की मूक झूक भरि दृग गुलाल करि लीनौं॥
बाजे अंग संग सब बाजत राग बारनैं कीनौं।
मुसिकनि रंग सुरंग भरे अति पीताम्बर रंग भीनौं॥४०॥

होरी के बिसेष पद

श्रीस्वामी रूपसखी जू कौ पद– राग-धनाश्री-होरी, ताल-अद्धा तिताला

प्यारी पिय खेलैं होरियाँ। रंग हो हो हो होरियाँ॥
हित सौं सरस दुति अरस परस मिलि नैंन सैंन चित चोरियाँ॥१॥
छबि तरंग छूटैं पिचकारी उर अनुरागी झोरियाँ।
अधर पान नव रंग गुलाबी* अँचवत प्रीतम गोरियाँ॥२॥
ललित लाल ललना दोऊ परसैं कर कटि जोरियाँ।
स्त्रमकन बदन मदन रन माते कल किसोर बर जोरियाँ॥३॥

---

* पाठान्तर–खेलिये। □नचाई। * गुलाली।

बजत किंकिनी कंकन नूपुर छूटी अलक अरु डोरियाँ।
केसर प्रीति नेह सौंधौ सुठि[1] बंद कंचुकी छोरियाँ।।४।।
अति सुकुमार सनें सिज्या पर छिन छिन रति निसिभोरियाँ।
कुंजमहल मनिमय धरनी सौं अलि सुगंध के डोरियाँ।।५।।
दंपति श्रीवृन्दाबन राजैं अति उदार सु किसोरियाँ।
अलि मिलि अपनें अपनें पन चलत तकत बन खोरियाँ।।६।।
अनिमिष इकटक निरखि बिहारैं बारति हैं त्रिन तोरियाँ।
झलकत रूप अमित सोभा के प्रतिबिंबित चहुँ ओरियाँ।।७।।१।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद–

एरी हेली अलक लड़ेती के संग अलक लड़ैतौ खेलहीं।
(रंग हो हो हो हो होरियाँ) रंग होरी।
एरी हेली पिय पिचकारी प्रेम उमँगि उमँगि रंग रेलहीं।।
एरी हेली प्यारी (जू) के अति अनुराग बूकाबंदन मेलहीं।
एरी हेली डफ किंकिनि कठतार बलया बाजत केलहीं।।
एरी हेली कुटिल कटाच्छनि मार करत दुहुँ दिसि झेलहीं।
एरी हेली भगवत रसिक रसाल सुरति सुधानिधि हेलहीं[2]।।२।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद– राग–काफी–धमारि

लड़ैती मेरे प्रान अधार किसोरी।
मुख सौं* मुख उर सौं उर जोरैं चलत तकत बन° खोरी।।

---

१. सुन्दर, अच्छे। २. क्रीड़ा, कल्लोल करते हैं; राग रंग मनाते हैं; मथते हैं। * पाठान्तर– पर।
° मिलि।

तन मन मिलि बिहरत सुखरासी❀ हँसत लसत इहि ओरी।
श्रीहरिदासीजू रसिक सिरोमनि याही रस नित* खेलत होरी।।३।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू कौ पद—

होरी खेलैं रसिकरासि बर नागर जुगल✿ किसोर।
तन सीसी भरि रस जोवन सौं रंग बढ़्यौ दुहुँ ओर।।
सब सखी मिलि उमँगि उमँगि गुन गावति नाचत मोर चकोर।
श्रीललितमोहिनी रंग बरसावति अबीर गुलाल चहुँ घोर■।।४।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद—राग–होरी–तिताल, धुनि—ललित नव कुंज में होरी

बिहारिनि रंग सौं आई। बिहारी उमँगि उर लाई।।
भई रस रीति मन भाई। मनौं निधि रंक ने पाई।।१।।
करैं दोऊ प्रेम की बतियाँ। हरैं मन नैंन बहु भतियाँ।।
न जानैं जात दिन रतियाँ। हँसैं बिलसैं सुभग थतियाँ[1]।।२।।
अनंगनि रंग बरसावैं। कुसल रस कोक सरसावैं।।
कपोलनि करनि परसावैं। नयौ नित नेह दरसावैं।।३।।
छके रहैं रूप रस माहीं। पलक पलहू लगत नाहीं।।
बिबस अंसनि दियैं बाँहीं। लसैं नव कुंज परछाँहीं।।४।।
कनकबेली मनौं फूली। लपटि तरु स्याम सौं झूली।।
किधौं घन दामिनी भूली। कि भगवत सुकृत अनुकूली।।५।।५।।

❀ पाठान्तर—बिलसत। * मिलि। ✿ नवल। ■ बहु छोर। १. धरोहर, निज सम्पति।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—

मेरी कुंजबिहारिनि नित्य किसोरी। ललित लाल के चित की चोरी।।
गौर स्याम की अद्‌भुत जोरी। महा प्रेम भरि खेलत होरी।।
मुरि मुरि मुसिकत हैं मुख मोरी। दासि बिहारिनि ही की ओरी।।
रसिक सखी अति रस में बोरी। ता छिन कौ सुख* कहै ऐसौ कोरी।।६।।

डोल के पद

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद—राग धनाश्री—चौताल

डोल झूलैं स्यामा स्याम सहेली।
नव निकुंज नवरंग पिया संग बिहरत गर्व गहेली[१]।।
कबहुँक प्रीतम रमकि[२] झुलावत कबहूँ प्रिया नवेली।
श्रीबीठलबिपुल पुलकि ललितादिक देखत आनंद केली।।१।।

श्रीगुरुदेव जू के पद—

झूलत डोल निकुंज में नागरी नागर सकल गुन निधान।
गावत हाँसि○ मिलावत नैंननि नृत्तत लेत भृकुटी मान।।
जोवन जोरत मुखहि न मोरति सुरति पूरित तान बितान।
रीझि कहति ललिता हरिदासी
श्रीबिहारिनिदासि प्रिय जाननि मनि जान।।२।।

रसिकराइ झूलत डोल झुलावति ललना
पल नहिं लागति री निमेष हू नैंना।

---

* पाठान्तर—ता सुख कौं। ○ हँसि। १. उन्मत्ता, लाड़ बावली। २. तरंग; पेंग।

पान करत मुख मधुरे मधुरे रस
प्रेम परस्पर रहे इकटक चित चैंना।।
हुलसि हुलसि बिलसत अंग अंग संग राग रंग रह्यौ
कह्यौ न जाइ मोपै उपमा देत कछु आवै मन मैंना।
श्रीबिहारिनिदासि सखी रीझि परस्पर आईं सब निकट
कुंज कुटी के तट अप अपनें सुख लैंना।।३।।

डोल झुलावत कुंजबिहारी।
रमकि धरत पग नव जोवन भरि अति आनंद दुलारी।।
सारंग राग अलापत लाल रसाल दै दै करतारी।
कबहुँक हँसत हँसावत रीझि रिझावत प्रीतम प्यारी।।
री तब कर गहि लेत किसोर किसोरी पुलकि भरत अँकवारी।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति नव नव छबि पर
छिन छिन बलिहारी।।४।।

डोल झुलावत लालबिहारी, नाँउ लै लै बोलैं लालन प्यारी।
हो दूलह दुलहिनी दुलारी, सुन्दर बर सुकुमारी।।१।।
नखसिख सुन्दरि सिंगारी, केस कुसुम सुहस्त सँवारी।
स्याम कंचुकी सुरंग सारी, अंचल चंचल छबि न्यारी।।२।।
बारम्बार बदन निहारी, अलक झलक झलमलारी।
रीझि रीझि लालन लै बलिहारी, पुलकि भरत अँकवारी।।३।।

कोक कला निपुन नारी, कंठ सुघर सरस भारी।
सुजस गावत दासिबिहारी, बिहारिनि की बलिहारी।।४।।५।।

श्रीबिहारी बिहारिनि गावत रस रंग भरे
परस्पर फूलत* करत कलोल।
एकनि के कर किन्नरि एकनि करताल रबाब मृदंग राजत
सुबस भये बिबि सुन्दर चितवत चक्रित[1] अलोल।।
बन प्रसून बरषत सुरपुर तें सौंधौ सरस सतोल।
उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत अरु बंदन बहु मोल।।
पिय डारत लपटात लागि उर प्रिया बिसेख बल लोल।
राखनि कहत स्त्रमित सुन्दर प्रति दै सरवस रस ओल[2]।।
रीझि निरखि रस रीति प्रीति जन सुनत मधुर मृदु बोल।
श्रीबिहारिनिदासि बलि बन* बिनोद नित
बारति प्रान अमोल।।६।।

झूलत डोल बिहारी बिहारिनि राग रह्यौ रमि घुमड़ि कानरे।
अंग अंग मिलि गावत नव नव गति उपजावत रति
अतीत अनागति आन आन रे।।
लेत अलापि लाल ललना मिलि संच सप्त सुर मधुर तान रे।
श्रीबिहारिनिदासि की स्वामिनी रस बरसति
निरखि निरखि सखीं रीझि रहीं रस मगन गान रे।।७।।

---
* पाठान्तर—झूलत। * बलि। १. चकित। २. गुप्त, अन्तर का, गोद का।

फूल सौं फूल डोल झूलैं कुंजबिहारी।
फूल सौं सखी समाज आज राग रंग रह्यौ कह्यौ न जाइ मोपै
फूल सौं झोंटा देत प्रबल प्रान प्यारी।।
भई फूल ही में फूल सिथिल कटि दुकूल
रहे गहि भुजमूल बदन निहारी।
बिबस बिहारिनिदासि की स्वामिनी सौं स्याम कहत
बहुरि* झूलिहैं बलि अबकैं राखि हाहारी।।८।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—

झूलत फूलत स्यामा स्याम।
फूल डोल कौ फूल बनायौ फूले फूल सुभग सुभ ग्राम।।
फूलनि ही की सेज्या राजत फूलनि ही के धाम।
उभै अंग पर फूल परस्पर उपजावत अभिराम।।
फूलनि ही के आभूषन राजत देखे□ पूरन काम।
श्रीनागरीदासि निरखि ललितादिक फूल सौं फूली भाम।।९।।

झूलत डोल नवल स्याम प्रिया इत गोरी।
नव निकुंज नव रंग महल अति बिचित्र बनी यह जोरी।।
भृकुटि कटाच्छ निहारत नैंननि बैंन बदत चित चोरी।
गावत तान तरंग अनंगनि रीझि कहत हो हो होरी।।

---

* पाठान्तर—बहुरयौ। □ देखत।

डाँड़ी छाँड़ैं खेलत करत परिरंभन चुंबन देत निहोरी।
कच कुच कर कंचुकी रस परसत बिहरत कुँवर किसोरी।।
तब सहचरी अति अनुराग उड़ावत बूका बंदन रोरी।
निरखि नागरीदासि दम्पति छबि बिपुल प्रेम भई भोरी।।१०।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

झूलैं फूल डोल दोऊ फूल भरे।
फूलहि बसन फूल आभूषन हँसनि दसन में फूल झरें।।
फूल्यौ फूल मनोज मौज रति कसि कसि अंगनि चोज करें।
अलि गुन गावैं फूल बढ़ावैं रीझि भींजि सरस रसरीति ढरें।।११।।

फूलनि के पद

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग—धनाश्री, ताल—चौताल

फूल[1] फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ।
सेवत कोटिक काम कला अँचला चल चल चौंर मनौं छत्र ढार कौ।।
नासिका नैंन सुबैंन स्त्रवन सभा कुच उच्च सुभाव उदार कौ।
उरगे[2] हरि यौं ढरि आपुहीं आइ रहे गहि पाँइ अहार बिहार कौ।।
श्रीकुंजबिहारिनि राज बिराजत फूल
फब्यौ सिरमौर सिंगार कौ।।१।।

---

१. शीशफूल; सिर का आभूषण। २. झेले, अंगीकार किये; उरगना—झेलना, अंगीकार करना।

राग-पीलू, ताल-धमारि

स्त्रवननि फूल फूले फूल सौं धरति[*] हैं।
अलबेलीयै बातैं अलबेलीयै लाल की घातैं
गनी न परति मोपै मननि हरति हैं।।
यह मैं जिय में जानी रसिक सु राजरानी
लालहिं बिबस भये अंक में भरति हैं।
देखि श्रीबिहारिनिदासि अपनें सुकृत हासि
सखिन के नैंननि कौं सुफल करति हैं।।
री फूल फबि रहै अवतंसनि सोहत सुठि
स्त्रवननि फूल फूले फूल सौं धरति हैं।।२।।

राग-यवन-स्याम कल्यान, ताल-रूपक

फूलनि की सारी प्यारी पहिरैं तन।
फूलनि की कंचुकी फूलनि की ओढ़नी
अंग अंग फूले फूल ललना के मन।।
फूलनि के हार उर फूलनि की माला
फूलनि के आभरन केस गूँथे फूल घन।
फूलनि के हाव भाव फूलनि के चोज चाव
बिबिध बरन फूल फूले श्रीवृन्दाबन।।
फूली फूली सखी आईं बीनि बीनि फूल लाईं
पंचम सुर सुहाई रचित बितान गन।

---

[*] पाठान्तर—ढरति।

फूल सौं लाड़िली पाई फूल सौं लाल लड़ाई
श्रीबिहारिनिदासि गाई फूले फूले प्रेम पन।।३।।

फूलनि की सारी चोली फूलनि कौ लहँगा।
फूलनि की पाग बाँधैं फूल कर बान साँधैं
फूलनि कौ उपरैंना[१] मोल माई महँगा।।
फूलनि की सेज सोहै फूल बैठे मन मोहै
फूल सौं जामिनी जाम हौं न जानौं कहँगा।
श्रीबिहारिनिदासि फूली गावति रस में झूली
और फूल इहि फूल सब छबि छहँगा।।४।।

राग बिहागरौ–अद्धा तिताला

फूले री फूल बसीले[२] तन में सब इनहीं के मन की फूल।
नैंन कमल मुख कमल सखी कुच कमलनि ऊपर
मनहुँ अलक अलि भूल।।
चरन कमल कर कमलनि पूजत फूलत सिथिल दुकूल[३]।
श्रीबिहारिनिदासि नव* कुंज मंजु में झूलत गहि भुजमूल[४]।।५।।

नव निकुंज मंदिर में ए फूल फूले री श्रीवृन्दाबन।
जुगल नवल मुख कमल बिराजत गौर बरन साँवल तन।।
सरस पुलिन सेवत सिज्या सखी उपजत कोटि मदन मन।
झूलत फूलत प्रेम परस्पर सौरभ स्वास मलय पवन।।

---

१. उपरना, दुपट्टा, उत्तरीय। २. बासवाला, गंधयुक्त। ३. वस्त्र, रेशमी वस्त्र। ४. कंधे।
* पाठ–सुबास मगन नव।

महामाधुरी पीवत नैंनन* अलि सहज सनेह सुख सदन।
श्रीबिहारिनिदासि रसिकनि की जीवन
सन्तत सुखद धनी धन॥६॥

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

गोरे तन में प्रतिबिंबित* फूल बीनत लाल बिहारी।
जब जब हाथ न परत तबही (यौं) हँसि जाति हैं प्यारी॥
अरबराइ अंकौं भरति हैं छिन छिन करि* मनुहारी।
सुरति बिबस बिहरत दोऊ प्रीतम श्रीसरसदासि बलिहारी॥७॥

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद— राग-खम्माच, तिताला

फूल सौं सोहत अति स्यामा सुकुमारी।
फूलनि कौ साज समाज आजु बन्यौ
फूल सौं लड़ावत रसिकबिहारी॥
फूली जहाँ तहाँ कुंज मधुप करत गुंज
फूले जस गावत कोकिल सुक सारी।
श्रीनागरीदासि वारी फूले फिरत बिहारी
फूलीं सब सखी देखि जाति बलिहारी॥८॥
फूलनि के हार डोर फूलनि की माला।
फूल सौं रसिक नव रचित रसाला॥
फूलनि के आभरन फूल गूँथे केस घन
फूलनि की सारी चोली फूली नव बाला॥

---

* पाठान्तर—नैंन। * प्रतिबिम्ब। * करैं।

फूलनि की सेज बनी फूल बैठे धन धनी
फूलनि के महल बिचित्र बिसाला।।
फूल सौं बिलास हासि फूली श्रीनागरीदासि
फूलनि की छबि देखि भई हौं निहाला।।९।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद–

फूल महल फूले पिय प्यारी।
फूली सेज फूल पुनि* बरसत फूले फूल भये▲ हितकारी।।
फूल की मुसिकनि चितवनि फूल की फूलि
फूलि अंसनि भुज धारी।।
फूली ललित* फूल लखि फूलनि फूलि
फूलि फूलनि पर वारी।।१०।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

देखि री देखि सखी कौतिक कुंज खिरकी।
कुसुम अनेक रंग रुचिर सेज्या सुरंग
सीतल बहत मंद सुगंध समीर की।।
खेलत सुन्दरी स्याम अंग अंग अभिराम
ग्रीषम समयौ जानि जमुना नीर छिरकी।
श्रीबिहारिनिदासि वारी जै श्रीस्यामा सुकुमारी
सीत भीत भयें* प्यारी पिय हिय हिरकी[१]।।११।।

---

* पाठान्तर–बन। ▲भई। * लाल। * भई। १.हिरकना–धीरे–धीरे परचना; किसी व्यक्ति या वस्तु से सटना, चिपकना; चिपकी, सटी।

श्रीगुरुदेव जू के पद– राग–बिहाग

देखि सोभा सखी अति बन बिराजैं।
फूल में फूल अनुकूल सब द्रुम लता लपटि
भावै भजति स्याम सुख साजैं।।
और रोचिक[१] रसिक रहत राधा बसिक[२]
सघन तन तड़ित मिलि मधुर मृदु गाजैं।
मुदित मोरी मोर देत चित चहुँओर
रीझि सु कुँवरि किसोर सब सुख समाजैं।।
कहत श्रीमुख धनि धन्य रसिक अनन्य
रहत सन्मुख सुखद मम केलि काजैं।
श्रीबिहारीदासिनि बिदित[३] सुख समैं मिलि
हँसत सुजस रसना रसत सब दिन सुधनि आजैं।।१२।।

गनत रहत गुन गननि लाल गोरी के गरब गरबीलौ।।
कंचन तन धन के आनन्द में सु ऐंडाइल[४] अरबीलौ[५]।
करत बिहार अहार बिपिन बसि पान सुधारस* रसिक रसीलौ।।
तैसियै सुखद सहचरी दासि बिहारिनि
लै मिलियौ अंग संग सुबस बसीलौ[६]।।१३।।

*पाठान्तर– सुधाधर। १. रुचनेवाला, प्रिय; मनोरंजक। २. वश, अधीन रहनेवाले। ३. प्रसिद्ध; जाना हुआ, अवगत; सूचित किया हुआ; कवि, विद्वान्। ४. अँगड़ाई लेनेवाला; ऐंठ दिखलाने वाला; इतरानेवाला। ५. अंडवंड, उच्छृंखल; गर्वयुक्त; अड़ियल, अड़नेवाला ६. बसनेवाला; अधीन रहनेवाला; बासवाला; सुगंध से भरा हुआ।

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जू कौ पद--

सुनहु रसिक श्रीवृन्दाबन कौ जस।
कुंज केलि मानिनी मनोहर परबस भये नाहिंने अपनें बस।।
इहि बन नित्य नवीन जुगलबर द्रुम दल दिव्य स्त्रवत सलिता लस[१]।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी कौ पान कियौ
चाहत रसना रस।।१४।।

अक्षय तृतीया: चंदन जात्रा महोत्सव

श्रीगुरुदेव जू के पद–राग–ललित, ताल–धीमा तिताला

चंदन बंदन[२] की तन सोभा।
मानहुँ निसि नक्षत्र[३] प्रगटे घन बिमल बसन बिच ओभा[४]।।
करि सिंगार सहचरि लै आई सुख देखन के लोभा।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनि मुख निरखति
काम बिबस चित चोभा[५]।।१।।

पिय प्यारी जू चंदन चित्र कियें।
मानहुँ काम प्रेम के अंकुर सींचत दृष्टि दियें।।

१. शोभित, प्रकासित हो रही है; नृत्य करती हुई बह रही है। २. रोली; सिंदूर; शरीर पर बनाये जानेवाले तिलक आदि के चिह्न। ३. तारागण, तारापुंज; मोती। ४. चमक, कांति, आब, झलक; चमकना; झलकना। ५. चुभना, धँसना, नुकीली चीज का भीतर घुसना; मन में धँसना, बसना, खटकना, सालना; तन्मय, लीन होना।

अति अभिलाष लाल ललना मिलि सीतल होत हियें।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति दुलरावति यह सुख सखी जियें।।२।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू कौ पद–

चंदन चौंप[1] तें घिसि लाई।
परसत बिबस भये भरि लोचन निरखि न सकत अघाई।।
कहत भलैं जू भलैं बर भामिनि भुज भरि भवन बसाई।
श्रीदासिकिसोर प्रकास परस्पर फूली अंग न माई।।३।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद–

री हौं रीझि चित्र किये चंदन के।
सारी सिर[*] सँवारी प्रीतम अँगिया पर बंदन के।।
बागौ पाग प्रिया तन साँवल सहचरि गति फंदन के।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ रंग रँगे छंदन[2] के।।४।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू कौ पद–

चंदन चित्र बनायें सोभित भामिनि पति प्यारे।
अति बिचित्र दोउ मित्र मनोहर सुंदर नवल दुलारे।।
तैसिये प्रेम सखी अनुरागिनि नख सिख सुखद सँवारे।
श्रीदासिकिसोर परस्पर प्रीतम टरत नेंकु नहिं टारे।।५।।

---

[*] पाठान्तर– सिरै। १. चाह, चाव, उमंग, बढ़ावा, उत्साह। २. प्रसन्न करना, रिझाना; इच्छा; अभिप्राय; स्वेच्छाचार; छल, धोखा; उपाय; मात्रा, वर्ण, यति आदि नियमों से युक्त वाक्य या पद्यात्मक रचना।

श्रीस्वामी जू कौ पद—राग–बिलावल, ताल–चौताल

हरि के अंग कौ चंदन लपटानौं तन तेरे देखियत जैसें पीत चोली।
मरगजे[१] अभरन[२] बदन छिपावत छिपैं न छिपायें मानौं कृष्ण बोली॥
कहुँ अंजन कहुँ अलक रही खसि[३] सुरति रंग की पोटैं खोली।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम* मिलत बिहारिनि
हार न रह्यौ कंठ बिच ओली[४]॥६॥

श्रीस्वामी किसोरदास जू के पद—

चंदन सिंगार करि मृदमद बिन्दु भाल
केसरि की खौर गौर साँवल ललाट पर।
कमल महल मधि तलप मृदुल तन
बहत पवन मंद सौरभ सनेह भरि॥
उदित* उसीर[५] अति अतर सुगंध नीर
छूटत फुहारे तीर बाहुनि सौं बाहु अरि।
अमृत पिवात प्यात राग रागिनी मिल्यात
श्रीकिसोरी किसोरदासि नेंकु न सकत टरि॥७॥

ग्रीषम रितु हित जानि प्रानपति छिरकत छींट लगावत चंदन।
चंदन पावस वारि खौर करि कमलमाल पहिराइ सुगंधन॥

---

*पाठान्तर—स्यामा। * पाठान्तर—आनन्द। १.मलगजा, मला, दला हुआ; मसला हुआ। २. आभूषण, गहना; पोषण; साड़ी। ३. खिसना। ४. आड़; आश्रय; शरण; गोद; अंचल। ५. खस।

अरगजा अतर घोरि कस्तूरी चित्रित चोली रचित सुछंदन।
अति उदार रिझवार कहत अब दासिकिसोर निरखि आनंदन।।८।।

ग्रीषम रितु तरुनी तन स्याम।
सखी बिसाखा त्रितिया मूरति सीतल ताप करनि की धाम।।
चन्दन चोली[1] पिय पहिरावौ हिय* लगावौ बाम।
श्रीपीताम्बर रस की झरि लावौ और जतन नहिं काम।।९।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद– राग–भैरवी, ताल–अद्धा तिताला

एरी कहुँ देख्यौ री चंदन चोलना।
गौरांगी के उर⁕ बर राजत नीलमनिन कौ ढोलना[2]।
सकल सिंगार करौं न्यौछावर नैंन निरखि मुख बोलना।
श्रीरसिक प्रिया पीताम्बर दोऊ राजत सहचरि ओलना[3]।।१०।।

आजु दोऊ सुरति केलि रगमगे चन्दन चित्र बनैं।
स्रम जल बिन्दु ढरकि उर ऊपर मॉंनहुँ उडगन सभा ठनैं।।
कुमकुम[4] रंग प्रिया तन सोभित मलय[5] सु स्याम तनैं।
श्रीललितकिसोरी बलि बानिक पर बिलसौ प्रेम पनैं[6]।।११।।

---

*पाठान्तर– कंठ। ⁕हिय। १. वह अँगिया जिसमें पीछे की ओर बंद न हो; चोला–साधुओं को पहनने का लम्बा, ढीला–ढाला कुरता; अँगरखे का ऊपरी भाग। २. ढोल की शकल का गले में पहनने का जंतर, पति। ३. परदा; रोकना; ओढ़ना; आवरण, आड़; आश्रय; गोद; शरण। ४. केशर। ५.चन्दन। ६. बाना; भेष; शोभा।

गुरु–पूर्निमाः पावस महोत्सव

श्रीगुरुदेव जू के पद–राग–ललित, ताल–धीमा तिताला

श्रीगुरु सेवत सबै सहाइ।
ज्यौं जल मूल दियें फल फूलनि उमँगि चलत अरुनाइ।।
साधन सिद्ध होत ताही* छिन भ्रम तम स्त्रम नसि जाइ।
तिनसौं प्रीति प्रतीति बढ़त छिन ही छिन सहज सवाइ।।
श्रीवृन्दाबन घन नव निकुंज दंपति संपति (ये) सुखदाइ।
श्रीबिहारीदास (श्री) हरिदास कृपा तें हस्तामल[१] बिमलाइ[२]।।१।।

सतगुरु गोविंद बैद बिहारी।
दीनौं मधु मथि प्रेम सुऔषधि उपाधि[३] यहै□ उपचारी[४]।।
नेंकु बदन दरसैं दुख जानत बिनु परसैं कर नारी[५]।
काम कुरोग ग्रसित संसृत[६] मन तृष्ना हरी हमारी।।
अति निरपेक्ष उदार कहावत संतत सब सुखकारी।
श्रीबिहारीदास से हुते[७] मृतक की प्रगट प्रतिज्ञा पारी।।२।।

राग–बिलावल, ताल–चौताल

गुरुनि कौ गुरु श्रीहरिदास आसुधीर कौ।
सन्मुख भयें अभय कीनें निजु जन जानि
जिन जिनके मन संदेह भ्रम भीर कौ।।

---

*पाठान्तर–तेही। □हरी उपाधि। १. हाथ में आँवला जो बिल्कुल स्पष्ट और बोधगम्य होने का सूचक है; ऐसे ही वस्तु का बोध एवं प्राप्ति का होना। २. उज्ज्वल, श्रेष्ठ, निर्मल; स्पष्ट; स्नेह से लाड़ लड़ाते हैं। ३. छल; धोखा; बखेड़ा; उपद्रव; कष्ट; विशेष लक्षण; चिह्न; पदवी; योग्यता। ४. उपचार–चिकित्सा, इलाज; अभ्यास। ५. नाड़ी। ६. आवागमन, जन्म–मरण की परम्परा; सातत्य, प्रवाह; संगति; संसार। ७. थे।

साधन सिद्धांत सब कहत कवि महन्त
भजन एकान्त रस हंस नीर क्षीर[१] कौ।
निपट[२] नित्यबिहार रसरीति कौ सिंगार
ऐसै को उदार उपकारी पर पीर[३] कौ।।
रसिक अनन्यनि भावै श्रीमुख साँवरौ गावै
गुरुनि कौ गुरु श्रीहरिदास आसुधीर कौ।।३।।

श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–मल्हार, ताल–चौताल

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै बोलत मोरनि।
नीके बादर नीके धनुष चहुँदिसि नीकौ श्रीबृन्दाबन
आछी नीकी मेघनि की घोरनि।।
आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी
बूढ़नि[४] की रेंगनि[५] काम किरोरनि[६]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा* के मिलि गावत
राग मल्हार जम्यौ री किसोर किसोरनि।।४।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

हरी हरी भूमि अरुन बूढ़ैं अरु नाचत मुदित बन मोर।
सारी सुहीजुही सिर गूँदैं बूँदैं बचन मृदु स्याम गगन घन घोर।।
हरषि हरषि बरषत मन ही मन प्रेम परस्पर आनंद हिये हिलोर।
श्रीबिहारिनिदासि दंपति सुख दरसत
छिन ही छिन रंग बढ़्यौ दुहुँ ओर।।५।।

---

१. दूध। २. एकदम, बिल्कुल, नितांत, निरा। ३. पीड़ा, कष्ट, विपत्ति। ४. वीरबहूटी, इन्द्रवधू, बरसाती मखमली लाल कीड़ा। ५. चलना; धीरे-धीरे चलना। ६. करोड़ों; कल्लोल, लहर। * पाठान्तर–स्याम।

धूमरे[१] गगन गरजत घन मंद मंद बरसत
बर वृन्दाबन सघन सरस पावस रितु जु सुहाई।
चात्रिक पिक मोर मुदित नाचत गावत भरे रंग
निरखि निरखि दंपति सब संपति सुखदाई।।
तैसीये सरस सरद निसि आई तैसीये निकुंज
कुसुमनि छाई तैसीये ललना लाल लड़ाई कंठ लपटाई।
श्रीबिहारिनिदासि गाई गूढ़ ओढ़नी उढ़ाई
रीझि रहे अंग* भीजि मिलि मल्हार गाई।।६।।

श्रीस्वामी जू कौ पद–

नदित[२] मन मृदंगी रासभूमि सुकान्ति सुभ नव□ गति त्रिभंगी।
धापि[३] राधा नटति[४] ललिता रसवती[५]
नागरी गाइतेग्रि नाभि तान तुंगी[६]।।
रसद बिहारी बंदे बल्लभा राधिका निसदिन रंग रंगी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी संगीत संगी।।७।।

श्रीस्वामी जू के पद– राग–मल्हार, ताल–धीमा तिताला

ये अचरज देख्यौ न सुन्यौ कहूँ नवीन मेघ संग बीजुरी एक रस।
तामें मौज[७] उठत अधिक बहु भाँति लस[८]।।
मन के देखिवे कौं और सुख नाहीं प्यारी
तू* चितवत चितहिं (जू) करत बस।

---

*पाठान्तर–रंग। □ पाठ–अभिनय सु नव। * यह। *नाहिंने। १. धुएँ के रंग का, मटमैला। २. बजती हुई। ३. तृप्त होकर; तीव्रगति से चलकर। ४. नृत्य, अभिनय करना; मना करना। ५. एक सम्पूर्ण स्वर जाति की मधुर रागिणी; रसीली। ६. ऊँची। ७. आनन्द; सुख की समृद्धि; लहर; उमंग से दिया गया दान। ८. सुशोभित, विराजत।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारीबिहारिनि जू
कौ पवित्र जस॥८॥

दामिनि कहत मेघ सौं हमारी उपमा देहिं
ते झूठे एई मेघ एई बीजुरी साँची।
जिन जिन हमारी उपमा दीनी तिन तिन की मति काँची॥
ऐसी कहूँ सुनी जू बूँद तें कन न्यारौ
ता पटतर[1] क्यौं दीजै समुद्र राँची[2]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
अटल अटल प्रीति माँची॥९॥

बूँदैं सुहावनी री लागति मति भींजे तेरी चूनरी।
मोहिं दै उतारि धरि राखौं बगल में (सो) तू न री॥
लागि लपटाइ रहैं छाती सौं छाती लगाइ
ज्यौं न आवै तोहिं बौछार की फूनरी[3]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत
बीजुरी कौंधैं करि हाँ हूँ न री॥१०॥

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू कौ पद—

नीके द्रुम फूले फूल सुभग कालिन्दी कूल
इन्द्रधनुष राजैं स्याम घटनि में।
नीके ग्रह लता कुंज नीकी आली अलि गुंज
नीकौ राग रमि रह्यौ पिकनि की रटनि में॥

---

१. समानता, बराबरी। २. रंचमात्र; अनुरक्त होना। ३. फुहार के कण।

नीकी गति मंद मंद बिहारी आनंद कंद
नीकौ भेद बन्यौ अरुन पीत पटनि में।
श्रीबीठलबिपुल रंग ललिता के फूले अंग
मिलिते देखौंगी नैंननि की आछी बिधि छटनि[१] में॥११॥

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

पावस रितु आई सबनि के मन भाई
तैसौई श्रीबृन्दाबन राजैं सुखदाई।
तैसीये घन की घोर धनुष चहूँओर तैसौई नाचत* मोर
तैसीये चात्रिक पिक बोलनि सुहाई॥
तैसीये भूमि हरी हरी डोलैं बूँढ़ैं रंग भरी
लता अनुराग ढरी रही छबि छाई।
निरखि नागरीदासि प्रियापिय सुखरासि
बिलसत मन हुलासि गावत मल्हार लाल ललना लड़ाई॥१२॥

श्रीस्वामी जू कौ पद—राग—गौड़ मल्हार, ताल—धमारि

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामाहिं रिझावत।
तैसीये कोकिला अलापत पपीहा देत सुर
तैसौई* मेघ गरजि मृदंग बजावत॥
तैसीये स्याम घटा निसि सी कारी
तैसीये दामिनी कौंधि[२] दीप दिखावत।

---

* पाठान्तर- तैसेई नाचैं। * तैसेई। १. छटा-शोभा, छबि, दीप्ति, झलक; बिजली; परम्परा, अविच्छिन्न शृंखला; लड़ी; समूह; ढेर। २. चमक कर।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
रीझि राधे हँसि कंठ लगावत॥१३॥

श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू के पद–राग–मल्हार, ताल–धमारि

हमारें माई स्यामा जू कौ राज।
जाके अधीन सदाई साँवरौ या ब्रज कौ सिरताज॥
यह जोरी अबिचल श्रीवृन्दाबन नाहिं आन[1] सौं काज।
श्रीबीठलबिपुल बिहारिनि के बल दिन जलधर ज्यौं▲ गाज॥१४॥

जमुनातट स्याम घटनि की पाँति।
हरित भूमि बन हरित सिखंडी[2] बोलत अति रस माँति॥
सुरंग चूनरी की छबि दुलहिनि अभरन नाना भाँति।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी सौं
मिलि बिलसति किलकाँति[3]॥१५॥

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद–

(अरे) कारे बदरा तोमें स्याम हिरानें[4]।
याही❀ तें तू अन्तर गरब्यौ बिरहिनि पीर न जानें॥
परसि दुकूल दामिनि अति दमकति सतमख[5] सारंग[6] तानें।
मंद मंद मुरली धुनि गरजत* बाजत मदन निसानें[7]॥
रंग रंग मिलि सुख उपजत आन रंग क्यौं बानें।
श्रीनरहरिदासि जे□ अंतर कारे कारे सौं रति मानें॥१६॥

❀ पाठान्तर– ताही। *गाजत □ते। ▲संग। १. अन्य, दूसरे। २. मोर। ३. किलकिलाना, हर्षध्वनि करना। ४. खो गये, लुप्त हो गये, छिप गये, मिल गये। ५. इन्द्र। ६. धनुष। ७. डंका; नगाड़े।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—

आजु सखी आये मेह सुहाये।
गौर घटा उमड़ी* आनंद में महाप्रेम झरि लाये।।
राजत धनुष चहुँदिसि नीके छिन छिन रंग सवाये।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत करत लाल मन भाये।।१७।।

श्रीस्वामी जू के पद—राग-मल्हार, ताल-तिताला

आये दिन पावस सचु के, सुबोल बोलिये जू मान न करिहौं।
घरी घरी के रूसने क्यौं बनैं ते
बोल बोलिये जू मन क्रम बच के।।
भयौ है बंधान[1] बहुत जतननि करि बिसरे गुन गस[2] के।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी ए प्यारी बस के।।१८।।

भीजन लागे री दोऊ जन।
अँचरा की ओट करत री दोऊ जन।।
अति उनमत्त रहत निसिबासर राग ही के रंग रंगे री दोऊ जन।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम* प्रेम परस्पर
नृत्य करनि लागे री दोऊ जन।।१९।।

श्रीस्वामी रूपसखी कौ पद—

एरी सखी गगन सघन घन गरजैं।
चपला चमकनि बूँदें झमकनि▲ छबि पर मोहन लरजैं।।

---

* पाठान्तर—उमँगी। * स्यामा। ▲रमकनि। १. बँधा हुआ क्रम, परिपाटी, रीति, बाँध; ताल का सम। २. रिस की गाँठ; भेद की बात।

अंचल ओट चोट नागर सौं नेही नैंन° न बरजैं[1]।
कुंजमहल श्रीबिहारिरिनि प्यारी प्रीतम की निजु अरजैं॥२०॥

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—

पावस रस बस बिहरैं री दोऊ;
बिहरैं बिहारी देखि देखि मुख सुखकारी।
रतिपति अति गति उपजत अंग अंग अनंग रंग सुकुमारी॥
सारी सुही फुही फबि छबि पिय पीत बसन तन मन हारी।
बर बिनोद मन मोद दुहुँ कोद[2]
श्रीसरसदासि अलि बलिहारी॥२१॥

पावस के बिसेष पद

श्रीगुरुदेव जू के पद—राग—मल्हार, चौताल, धुनि—नदित मन मृदंगी

धूमरे गगन गरजि गरजि ओल्हरि आये री बरसन कौं।
तैसौई करि सिंगार स्याम सुभग अंग अंग
उमँगी इत अवनी रवनी पिय मुख सुख दरसन कौं॥
नान्हीं नान्हीं बूँद बचन चनक[3] मूँद
अरुन हरित प्रेम भरित पियरे पट परसन कौं।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम सब रितु राजत रहे
लटपटाइ उर सौं उर सरसन कौं॥१॥

°पाठान्तर—नेह। १. बरजना—रोकना, मना करना। २. दिशा, ओर, तरफ। ३. खीज, चिढ़; खीजकर, चिढ़कर।

राग–मल्हार, चौताल, धुनि–हरी हरी भूमि

नान्हीं नान्हीं बूँद बन सघन मानौं प्रेम बरसै पानी।
सींचि सींचि मन मोद बढ़ावत गावत प्रीतम
प्रियहिं रिझावत कहि कहि काम कहानी।।
फुहिन पात चुचात गात सिरात* रीझि भींजि
अंग संग रंग रसिक रवानी।
श्रीबिहारिनिदासि सुख सम्पति दम्पति बिलसि बिलसि रस
पावस रितु रति मानी।।२।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनी देव जू कौ पद–

घन गरजत मोर कोइल कूजत अति बरसत नान्हीं नान्हीं बूँदैं।
पावस रितु उमँड़ि घुमड़ि आई हरी□ भूमि सुहावनी री■
लागति सुरंग चूँनरी सूँदै[१]।।
करत सिंगार परस्पर दोऊ रति पति छबि दामिनी दुति ऊँदैं[२]।
परम उदार श्रीमोहिनी स्वामिनी निरखि निरखि सुख
लपटि लपटि रस रूँदैं[३]।।३।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

तू राग रंग रंगीली रंगीले लालन संग सोहति सुहाग भरी।
तेरे रस बिबस बसत बिपिन बिहारी तू ही धनि प्रान प्यारी
तोसौं प्रेम परनि परी।।

---

*पाठान्तर–सिरात बात। □हरी हरी। ■सुहाई। १. सनी हुई; लिप्त हुई। २. उलट देते हैं; औंधी कर देते हैं। ३. मर्दन करते हैं; मर्दित करते हैं।

तुम[◌] इनकौ सिंगार ए तिहारौ सिंगार प्यारी
तैसीये तू उमँगि अंग अंग ढरी।
श्रीबिहारिनिदासि (श्री) हरिदासी दुलरावै दिन
देखि देखि जीवत[▲] तुव मुख कुंज ररी[१]।।४।।

श्रीकुंजबिहारी प्यारी के संग पहिरैं कसूँभी[२] सुरंग[३] सारी।
नव किसोर तन बनत[❖] पीतपट बरन बरन
निरखि निरखि मनमथ मन हारी।।
अंग अंग पुलकि जनावत मिलि मलार मन हरत
परस्पर सरसताननि न्यारी।
बरबस[४] किये बिहारीदासि प्रिया रहै निकट
इकटक मुख निहारी।।५।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद—राग–मल्हार, ताल–धीमा तिताला

गावत राग मल्हार मिले मन बिहरत बन बन बूँदनि में।
भींजे पीताम्बर सारी कंचुकी करत न्यारी
कहत हाहारी प्यारी छोरति छबि फबति फूँदनि में।।
सूखे बसन बनाइ प्यारी पिय पहिराइ
सुख ही में सुख पाइ सीस फूल गूँदनि में।
श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी स्याम निकुंज बसाइ
सेज हेज बाढ़ी रुचि रूँदनि में।।६।।

[◌]पाठान्तर—तू। [▲]जीवै। [❖]बन्यौ। १. रली, क्रीड़ा, बिहार करनेवाली, क्रीड़ारस की अनुरागिनी। २. लाल रंग। ३. सुन्दर; खुश रंग। ४. बलात्, बलपूर्वक; जबरदस्ती।

श्रीस्वामी जू कौ पद—राग—गौड़ मल्हार, ताल- धमार, धुनि—नाचत मोरनि संग

राधे चलि री हरि बोलत कोकिला अलापत
सुर देत पंछी राग बन्यौ।
जहाँ मोर काछि बाँधे नृत्त करत
मेघ मृदंग बजावत बंधान गन्यौं।।
प्रकृति की कोऊ नाहीं यातें सुरति के
उनमान[१] गहि हौं आई मैं जन्यौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की अटपटी[२] बानि
औरै कहत कछु औरै भन्यौ[३]।।७।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद—राग—मल्हार, ताल—धमारि

रूप रासि बिहारी अति बनें।
नवल किसोरी गोरी के संग अंग अनंगनि में सनें।।
प्यारी दमदमाति दामिनि उर स्याम सचिक्कन तन घनें।
गरजत गुन गम्भीर बरषि रस सरसदासि सींचत मनें।।८।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद—राग—मल्हार, ताल—तिताल

लालन भींजे री बरषा बरषी माती।
सुधि न रही मुख इन्द्र धनुष छबि रूप घटा लखि आती।।
मिलि घन स्याम दामिनि राधा सहचरि पवन सुगंध सुहाती।
पीताम्बर पिय सजल स्याम तन निरखि प्रिया इतराती।।९।।

---

१. अनुमान, भाव; प्रमाण; तौल। २. विचित्र, अनोखी; शरारती, शरारत। ३. कहा; कह गये।

आई पावस सोभा दैंन।
मान करौ मति बचन दीजिये रूठे तोहिं बनैं न।।
सुख प्रबन्ध[१] अति आजु भयौ बलि जतन कोप तेरौ हरि लैंन।
श्रीहरिदासि कहति पिय तो ढिंग बसीभूत मानौं मूरति मैंन।।१०।।

ऐसी रति* चाहत (हैं) सखी मोरी।
स्याम घटा ढिंग धनुष प्रिया जू हँसनि कौंधि गावनि घन घोरी।।
बिपिन भूमि अति हरी सहचरी बसन सुरंग मानौं काम किरोरी।
श्रीहरिदासि मलारनि धुरवा[२] जल
अंग स्त्रम पिय बरषि किसोरी।।११।।

अचरज मूरति घन संग दामिनी।
तामें भाँति उठति नाना रंग रही द्यौस अरि पिय संग❖ जामिनि।।
सहचरि के□ जिय हरत महा सुख बस करनी मन हरनी भामिनि।
श्रीहरिदासि निरखि के गावति जस पवित्र जुग रति गुन नामिनि।।१२।।

बूँद चूँनरी स्त्रम कन भीजै।
जो मोहिं कृपा करौ राखौं उर नैंननि निरखि महा रस पीजै।।
लाइ रहौं जिय सौं उर❁ जोरैं इत उत दृष्टि परत नहिं छीजै।
श्रीहरिदासि दामिनि कौंधनि लखि प्रताप कैसैं कै जीजै।।१३।।

---

१. आयोजन, व्यवस्था। २. बादल, बरसते बादल। *जैसलमेर भाषा में रितु को रति कहते हैं।
❖पाठान्तर—तन। □कौ। ❁कर।

भीजत दम्पति सुख करि दोइ।
अँचरा ओट करत निज कर सौं अद्भुत सुख ज्यौं लखैं न कोइ।।
मत्त परस्पर रहत द्यौस निसि राग रंग मय सुरति समोइ।
श्रीहरिदासि निहारि प्रेम रस नृत्य
करत लखि मन रह्यौ भोइ।।१४।।

दामिनि अपने पिय सौं कहै।
हम तुम दीन नवीन प्रिया पिय समसरि कहि कवि उरनि दहैं।।
ए समुद्र हम बूँद परत कन छबि सागर उपमा जु लहैं।
श्रीहरिदासि के स्वामी□ कौ सुख अविचल
एक बैस रस रूप जो रहै।।१५।।

राग–मल्हार चौताल

आजु के आनन्द की सोभा महा कहा कहौं।
प्रिया भई सरवरी[१] होती तरवरी[२]
स्याम तन संग बेलि लपटी लहौं।।
सखी तहाँ मेघ झरि प्रेम अँधियार भरि
रूप जल सौंधि उर थरे[३] रहौं।
रसकेलि नरहरि सरस गुरु बिपुल री
बोलि पीताम्बरी इह रस मैं चहौं।।१६।।

□ स्वामी स्यामा। १. शर्वरी–संध्याकाल, रात्रि, हल्दी, स्त्री। (भाववाचक–मगन होना) शर्वर–कंदर्प, कामदेव, अंधकार; संध्याकाल। २. तरवरिका–तलवार चलानेवाला, धारण करनेवाला (भाववाचक–चंचल, चपल होना) ३. स्थल, जगह, भूमि।

रसिकसिरोमनि श्रीस्वामी हरिदास जू महाराज की मंगल-बधाई

ललितप्रिये हरिदास जू, नित्यकेलि सुखदानि।
कुंजबिहारिनि लाड़िली, प्रगटी रस की खानि।।

प्रातः—राग-ललित-ताल धीमा तिताला सायं-राग-ईमन-स्याम कल्यान

प्रगटी श्रीललित ललित ललिते।
महाप्रेम अद्‌भुत रस छाकी गुननिधि सुख सलिते।।
प्रिया लाल कौं लाड़ लड़ावति उमँगि उमँगि मिलिते।
श्रीहरिदासी (जू) रसिक सिरोमनि कुंजकेलि कलिते[1] ।।१।।

प्रातः—राग-ललित-ताल धीमा तिताला सायं-राग-ईमन-स्याम कल्यान

रसिकबर प्रगटे ललित उदार।
बरषत घन ज्यौं अति आनंदहिं महाप्रेम सुखसार।।
जो साँचौ सनमुख भयौ कोऊ दीनौं नित्यबिहार।
दासबिहारिनि अंग संग राजत छिन छिन प्रीति अपार।।२।।

भूपर प्रगटी ललित किसोरी
लोक लोक अति आनंद बाढ़्यौ भई रंगीली जोरी।।
लियें सुभाव रहति नित पिय कौ तैसीये रहै गोरी।
कुंजमहल रस दुर्लभ सब तें रसिक बिना कहै को री।।३।।

१. विभूषिता; गृहीता; प्राप्त; युक्ता; ज्ञाता; ध्वनिता; सुन्दर, प्रकट, वर्द्धित करनेवाली।

ललित रसभीनी हो स्यामा प्यारी जू रूप नवीनी।
लखि लालन आनंद अति बाढ़्यौ फूलि अंक भरि लीनी।।
याही के सुख में सुख पावत परम सु रसिक प्रवीनी।
श्रीहरिदासी ललित केलि हित हँसनि बधाई दीनी।।४।।

प्रातः –राग–भैरवी, ताल–तिताल सायं–राग–रास–बहार, ताल–तिताल

हमारे स्वामी सिरोमनि आये।
अति आनंद भरे सुखरासी महाप्रेम झरि लाये।।
श्रीरसिकसिरोमनि परम प्रीति सौं हँसि हँसि कें बतराये।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि कुंजकेलि दरसाये।।५।।

प्रातः –राग–बिलावल, ताल–चौताल

कुंजमहल में मंगलचार।
गौर स्याम तन मन लपटाने वे उनके वे उनके हार।।
महापरम रस लेत लाड़िले उमँगि उमँगि आनंद सुखसार।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि इनही के ये प्रान अधार।।६।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद–

कुंजमहल के आँगन बाजत सुखद बधाई।
बीना नाद* मृदंग मधुर सुर लागत परम सुहाई।।
फूली सखी सब मंगल गावत आनंद उर न समाई।
करि सिंगार दूलह दुलहिनि बैठे उमँगि बढ़ी अधिकाई।।

*पाठान्तर–ताल।

श्रीनरहरिदासि निरखि तृन तोरति यह छबि बरनी न जाई।
नैंननि भरि सोभा रस पीवत* पीवत मन न अघाई।।७।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

आजु की कृपा मोपै कही न जाई।
श्रीहरिदास रसिकबर प्रगटे मेरे हित अतिही सुखदाई।।
छिन छिन प्रति आनंद बढ़ावत पोषत मन के भाई।
श्रीललितकिसोरी नित्य केलि में रीझि रीझि हँसि कंठ लगाई।।८।।

राग—ईमन स्याम कल्यान, ताल—दादरा

प्रगट भई ललितप्रिये रंग भीनी।
श्रीकुंजबिहारिनि अप बपु धार्‍यौ छिन छिन प्रीति नवीनी।।
महाभाग बड़भाग सिरोमनि तिनहीं इनकौं चीनी[१]।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि सदा केलि लवलीनी।।९।।

प्रगट भई ललितप्रिये हरिदासी।
रसिकनि के आनंद भयौ अति पाई सुख की रासी।।
छिन छिन गावति प्रति दुलरावति हियें सु प्रेम हुलासी।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि की जीवनि नित्य विपिन की बासी।।१०।।

सुखरासि नवेली प्रगट भई।
अति आनंद बढ़्यौ संतनि कें छिन छिन प्रीति नई।।
सहज लाड़िली नित्य बिपिन की जीवन प्रान मई।
परम उदार ललित हरिदासी रसिकनि केलि दई।।११।।

*पाठान्तर—प्यावत। १. चीन्हीं, पहचानी।

महल में बजत बधाई नीकी।
प्रिया लाल अतिही आनंदे उमँगि बढ़ी निजु ही की।।
गुप्त रीति प्रगट भई सुखनिधि सहज सु बनाबनी की।
श्रीकुंजबिहारिनि ललित लाड़िली करी रसिक के जी की।।१२।।

राग-खम्माच, ताल-तिताला

श्रीहरिदास महल तें प्रगटे बिपिन निसान बजाये जू।
अद्भुत प्रेम दियौ तिनहिंन कौं जे जे सरने आये जू।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस के भये मनोरथ भाये जू।
नागरि नरहरिदासि रसिकबर सबके हियें सिराये जू।।१३।।
अति भली भई नित ललिते जू प्रगटीं भाग्य हमारे जागे री।
अब मिलिहैं पिय कुंजबिहारी रोम रोम अनुरागे री।।
चितवनि हँसनि लसनि सुखरासी कामकेलि रस पागे री।
श्रीहरिदासी रसिक की जीवनि हँसि हँसि कंठनि लागे री।।१४।।

सायं-राग-पीलू, धमारि प्रातः –राग-भैरवी, ताल-तिताला

भादौं सुकल अष्टमी भू पर प्रगटे श्रीहरिदास।
घर घर प्रति अति होत कुलाहल नर नारीन हुलास।।
उदित मुदित दुति भानु किरन ज्यौं* पूरन प्रेम प्रकास।
बिपुल बिनोद भयौ सबहिन कैं संग बिहारिनिदास।।१५।।

सायं-राग-ईमन-स्याम कल्यान प्रातः राग-भैरवी, ताल-तिताला

रसनिधि स्वामी अष्टमी आई।
भादौं सुकल पच्छ रसिकनि हित ललित केलि संग लाई।।

---

* पाठान्तर—सम।

साधुन कैं अनुराग भयौ अति प्रेम बढ़्यौ अधिकाई।
श्रीहरिदास रसिकबर प्रगटे गौर स्याम सुखदाई।।१६।।

महल तें प्रगटे श्रीहरिदास।
सुखसागर नागर रस भीनें अद्‌भुत प्रेम बिलास।।
सहज सनेह प्रीतम आनंदनिधि गौर स्याम लियें पास।
ललित केलि रसिकनि कौं दीनी निजु वृन्दाबन बास।।१७।।

प्रगटे श्रीहरि श्रीहरिदास।
गुप्त रीति रसिकनि दरसाई अद्‌भुत प्रेम बिलास।।
छिन छिन प्रति दुलरावति गावति तन मन हियें हुलास।
अति आनंद भयौ सबहिन कें ललितकिसोरी पास।।१८।।

प्रगट भये श्रीस्वामी हरिदास।
गौर स्याम अंग संग दरसावत बरषत केलि बिलास।।
छिन छिन प्रति अति मोद बढ़ावति महामधुर मृदु हास।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि रसिकबर हिये सु प्रेम हुलास।।१९।।

प्रगट भई प्यारी ललित उदार।
गुप्त रीति प्रगट करी सुखनिधि निरवधि[१] नित्यबिहार।।
अति आनंद भयौ संतनि कैं बाढ़्चौ प्रेम अपार।
रसिकसिरोमनि की निजु जीवन पाई (है) प्रान अधार।।२०।।

---

१. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, निःसीम।

महल तें* प्रगट भई सुखदाई।
गुप्त केलि दरसाय रसिकबर प्रेम प्रीति उर लाई।।
इनहीं के हित श्रीकुंजबिहारिनि लाल अधीन सदाई।
श्रीहरिदासि ललित लखि रसिकनि कीनी परम बधाई।।२१।।

राग-मल्हार, ताल-चौताल

श्रीहरिदास सदा सुख मेरें।
बरषत घन सम अति आनंदहिं जुग रूप सुधा रस घेरें।।
रसिकनि के हिय पोषत तोषत गौर स्याम लियें नेरें।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि महाप्रेम के फेरें।।२२।।

धन्य धन्य दिन घरी धन्य धन्य छिन पल
धन्य धन्य श्रीहरिदासी अवतरी।
धन्य धन्य जुगल रस बरसत इन्द्र सम
धन्य धन्य रसिकनि हिय अवनि भरी।।
धन्य धन्य बिपुल बिहारिनिदासी धन्य धन्य यह जिननि बरी।
धन्य धन्य नर नारी मंगल गावत
नाचत धन्य धन्य कहि कहि अनुसरी।।
धन्य धन्य दसौं दिसा भईं प्रगट नई रस रीति
धन्य धन्य नित्यबिहार लै उच्चरी।
धन्य धन्य रसिक ललित की जीवन
धन्य धन्य निरखि निरखि नैंन सुफल करी।।२३।।

---

*पाठान्तर—में।

राग–बरवा, ताल–धमारि

आजु बधाई कुंजमहल में बाजत परम सुहाई जू।
ललितप्रिये रसरासि उदौ करि नित्यकेलि दरसाई जू।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस मिलि महाप्रेम झरि लाई जू।
श्रीनागरि नरहरिदासि रसिक कें आनंद उर न समाई जू।।२४।।

आजु बधाई रंगमहल में बाजत परम सुहाई जू।
गौर स्याम कौ आनंद प्रगट्यौ सब सखियनि मिलि गुन गाई जू।।
देत असीस सदा चिरजीवौ इह आनंद लेहु लड़ाई जू।
श्रीहरिदासी की निजु जोरी करत केलि मन भाई जू।।२५।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद–

श्रीहरि श्रीहरिदास नित्य यह धाम।
भादौं सुकल अष्टमी के दिन भयौ मनोरथ पूरन काम।।
कुंजबिहारी बिहारिनि के संग राग रंग रस बस अभिराम।
बिपुल प्रेम अनुराग भाग सुख दरस परस पद स्यामा स्याम।।२६।।

राग–आसावरी–

कुंजनि मंगल मंगलचार।
प्रगटी रसिक अनन्य मुकुटमनि ललिता रूप उदार।।
श्रीहरिदासी निजु नाम धाम नित्य रसिकनि प्रान अधार।
पीताम्बर लखि मौज रसिकनी पहिरायौ उर हार।।२७।।

श्रीस्वामी नागरीदास जू के पद–

बधाई बाजति है सुखदानी।
प्रगटी श्रीहरिदासि स्वामिनी नित्य बिहारिनि रानी।।

रसिक अनन्य सिरोमनि जीवनि सोभा सहज सुहानी।
श्रीवृन्दाबिपिन बिहार प्रकास्यौ बिपुल बिनोद रिझानी।।२८।।

प्रगटे श्रीस्वामी हरिदास।
आनंद कौ घन इच्छा बपु धरि बरषत जुगल बिलास।।
कुहुकि उठे बन मोर रसिक जन सींचे हृदै निवास।
श्रीबिपुल प्रेम रसराज रासि रस बाढ़्यौ सिंधु हुलास।।२९।।

मंगल कुंजमहल में गावति।
प्रगटी श्रीहरिदासि दुलारी फूली अंग न मावति।।
श्रीकुंजबिहारी बिहारिनि दोऊ उमँगि उमँगि दुलरावति।
भादौं सुकल अष्टमी सुभ दिन सोभा कहत न आवति।।
श्रीवृन्दाबन रस भूमि प्रकास्यौ रसिकनि हिय सरसावति।
श्रीबिपुल चरन परताप बिहारिनिदासी नैंन सिरावति।।३०।।

श्रीस्वामी प्रगटे रसिकमनि भूप।
श्रीहरिदास नाम निजु रसनिधि कुंजबिहारिनि रूप।।
भादौं सुकल अष्टमी मंगल नित्यबिहार अनूप।
उमड़े घन रसिकनि हिय माहीं बरषनि सरस सरूप।।३१।।

राग–मल्हार

प्रगटी श्रीहरिदासि दुलारी।
भादौं सुकल अष्टमी मंगल अंग अंग उजियारी।।
बाजत सुखद बधाई कुंजनि निरतत कुंजबिहारी।
कुंजबिहारिनि रूप अनूपम महाकेलि बिस्तारी।।

श्रीबिपुलबिहारिनि सरस नागरी सोभा नैंन निहारी।
श्रीनवल सखी सुख सिंधु स्वामिनी जीवन प्रान हमारी।।३२।।

महल में बाजति सुखद बधाई।
प्रगटी श्रीहरिदासि स्वामिनी रसिक जननि सुखदाई।।
भादौं सुकल अष्टमी अद्भुत सोभा कही न जाई।
कमल बदन लखि कुंजबिहारिनि फूली अंग न माई।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस कौं सुख नैंननि दरसाई।
श्रीनागरि रूप उजागरि छबि पर माधुरीदासि बलि जाई।।३३।।

राग-मारू-

सुखद बधाई बाजै श्रीवृन्दाबन धाम।
प्रगट्यौ कुल कोटि अनन्यनि की मनि रसिक जननि बिश्राम।।
श्रीस्वामी हरिदास नाम निज अद्भुत पूरन काम।
राख्यौ बंस बिहार कौ जस छयौ बिमल अभिराम।।
नित्यबिहार अहार सुखद सुख दाता स्यामा स्याम।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि लड़ावति सरस जामिनी जाम।।३४।।

रसिकबर श्रीहरिराम व्यास जू कौ पद-

अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास।
श्रीकुंजबिहारी सेये बिन छिन न करी काहू की आस।।
सेवा सावधान अति जानि सुघर गावत दिन रस रास।
ऐसौ रसिक भयौ नहिं ह्वै है भूमंडल आकास।।
देह बिदेह भये जीवत ही बिसरे बिस्व बिलास।
श्रीवृन्दाबन रेंनु तन मन भजि तजि लोक बेद की त्रास।।

प्रीति रीति कीनी सबहिन सौं किये न खास खवास।
अपनौ ब्रत यह* ओर निबाह्यौ जोलौं कंठ उसास[१]।।
सुरपति भूपति कंचन कामिनि जिनकें भायें घास।
अबके साधु व्यास हमहूँ से जगत करत उपहास।।३५।।

श्रीस्वामी अग्रदास जू कौ कवित्त–

नमो नमो श्रीहरिदास वृन्दाबिपिन बास
बर प्रान सर्वस बाँकेबिहारी।
स्याम स्यामा जुगल रूप माधुर्य के रसिक
रिझवार प्रेमावतारी।।
परम बैराग निधि बसत निधिबन सदा
भावना लीन सु प्रबीन भारी।
कामना कल्पतरु सकल संतापहरु
अग्रदास अलि कल्यानकारी।।३६।।

श्रीस्वामी नाभा जू कौ छप्पय

जुगल नाम सौं नेम जपत नित कुंजबिहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी सुख के अधिकारी।।
गान कला गंधर्व स्याम स्यामा कौं तोषै।
उत्तम भोग लगाय मोर मरकट तिमि[२] पोषैं।।
नृपति द्वार ठाढ़े रहैं दरसन आसा जास की।
आसुधीर उद्योत[३] करि रसिक छाप हरिदास की।।३७।।

१. साँस, श्वास। २. मछली, बड़ी मछली। ३. उद्‌द्योत–प्रकाशमान, ज्वलंत; चमकना; प्रकाशित होना; प्रकट होना; प्रकाश; कांति। * पाठान्तर–हठि।

श्रीगोविन्दस्वामी जू कौ सवैया–

जा पथ कौ पथ लेत महामुनि मूँदत नैंन गहैं नित नाकौ।
जा पथ कौं पछितात हैं बेद लहैं नहि भेद रहै जकि जाकौ।।
सो पथ श्रीहरिदास लह्यौ रसरीति की प्रीति चलाय निसाँकौ।
निसाननि बाजत गाजत गोविंद
रसिक अनन्यनि कौ पथ बाँकौ।।३८।।

✷

रस–सागर श्रीस्वामी बीठलबिपुलदेव जू की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के दोहा–पद–

अगहन सुकला गौरस्याम बपु, श्रीबिहारीदास दरसाय।
बिपुल पंचमी गाइहौं, मन बच सीस नवाय।।

सायं–राग पीलू, ताल–धमारि प्रातः– राग–ललित, ताल–धीमा तिताला

श्रीकुंजबिहारी जा दिन प्रगटे बिपुल पंचमी सोई।
अगहन पच्छ उज्यारी सहचरी भई रजनी तम भोई[१]।।
श्रीगुरु बन जोरी की जीवन रसिकराज रसराज समोई।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि की आसा और न जानैं कोई।।१।।
अगहन सुकल पंचमी के दिन बीठलबिपुल प्रकासे।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति दरस ताप त्रय नासे।।
श्रीवृन्दाबन स्याम स्वामिनी सहचरि के सुख भासे।
श्रीसरसदास अनयास सकल सुख दरसे परसि उपासे।।२।।

---

१. रंग गई, अनुरक्त हो गई, सराबोर हो गई, अपना अस्तित्व खो गई।

सायं-ईमन-स्याम कल्यान, ताल-धीमा तिताला

प्रगट्यौ बिपुल रसनि कौ सागर।
श्रीहरिदास प्रेम की मूरति बीठल नाम उजागर।।
फूले रसिक नरेस भ्रमर जन गावत रस जस गुन के आगर।
अगहन सुकल पंचमी कौ सुख दियौ है नागरी नागर।।३।।

सायं-राग -ईमन स्याम कल्यान, ताल-दादरा प्रातः- राग-बिलावल, ताल-चौताल

नरवर जय जय करत अहो अब अगहन सुकल पंचमी आई।
स्वामी समुद जुगल रस घन ह्वै बरसे बिपुल रसिक सुखदाई।।
नवधा खेत बीज निजु प्रेमा सुफल फले ऊसर सरसाई।
प्रगट्यौ धर्म अवनि परिपूरन पीताम्बर उर* तृषा बुझाई।।४।।

अगहन सुकला आई माई साज समाज करौ री पाँचैं।
पोथी खोलि पुरानी बानी बरष गाँठ दिन बाँचैं।।
आदि अनादि बिपुल वृन्दाबन सहचरि बपु सुख साँचैं[१]।
श्रीरसिक प्रिया पीतांबर दोऊ उदित मुदित मन नाँचैं।।५।।

दिव्य रूप रस गंध सपरसी पंच पंचमी जानैं।
अगहन सुकला श्रीस्वामी जू बिपुल बिनोदहि बानैं।।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि मनोरथ सरस करत गुन गानैं।
श्रीनरहरि रूप रसिकबर सुंदर पीताम्बर पहिचानैं।।६।।

प्रातः-राग-भैरवी, ताल-तिताला सायं-राग-ईमन स्याम कल्यान, ताल-दादरा

जै स्वामी जै स्वामी स्वामी जै स्वामी धुनि छाई।
प्रगट्यौ बिपुल बिनोद हमारे अगहन सुकल पंचमी आई।।

* पाठान्तर-हिय। १. सजाये, बनाये, सँचे।

धाम स्याम स्यामा सहचरि कौ करि सिंगार अभिषेक बधाई।
अछत तिलक छिरकि दधि गावत पीताम्बर पिय लाड़ लड़ाई।।७।।

अगहन सुकल पंचमी आई, आजु बधाई देखौ री माई।
नित्य बिहार बिपिन* सुख भुव पर श्रीहरिदासि बनाई।।
प्रगटे बिपुल बिनोद बिहारी श्रीबिहारिनिदासि दिखाई।
श्रीसरस नरहरी रूप रसिक लखि पीताम्बर बलि जाई।।८।।

आज हमारे महल पंचमी।
श्रीहरिदासि बिपुल परकासी बरषी बिपिन अमी।।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि सरस रस कहा कहौं उपमी।
श्रीनरहरि रसिक निरखि सुख पायौ पीतांबर पिय संग रमी।।९।।

प्रातः– राग–भैरवी, ताल–अद्धा तिताला सायं–राग–ईमन, ताल–धीमा तिताला

मंगल कुंजभवन मधि आज।
श्रीहरिदास बंस की सोभा श्रीमुख गावत करत समाज।।
बीठलबिपुल बिनोद पंचमी सहचरि कुल कौ दीनौं राज।
रसिक रसिकनी रसिक सहेली प्रगट भई सिरताज।।१०।।

श्रीस्वामी राधासरनदेव जू कौ पद–

अगहन सुकल पंचमी आई।
श्रीबीठल बिपुल महल तें प्रगटे रसिकनि के सुखदाई।।
श्रीराधासरन सखियनि मिलि गावति अति आनन्द बधाई।
श्रीहरिदासि के बंस उजागर रस सागर नहिं थाई।।११।।

---

* पाठान्तर–बिपुल।

श्रीबाँकेबिहारी जू महाराज के प्राकट्य महोत्सव की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी राधासरनदेव जू कौ पद— राग–रास बहार , सुघराई–कान्हरौ, ताल–तिताला

ललिता श्रीहरिदासी के आँगन सुखद बधाई बाजैं हो।
महल तें प्रगटे श्रीबाँकेबिहारी रसिकनि के सुख काजैं हो।।
सखी सहेली सहचरि गावति अति आनंद समाजैं हो।
श्रीराधासरन छबि निरखत बीठलबिपुल प्रेम सुख साजैं हो।।१।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग–जोगिया आसावरी ताल–धमारि

बाँके बिरदनि बिदित बिहारी।।
इच्छ्या बिग्रह धरि लीला बपु सब अवतारनि पर अवतारी।
लच्छमीपति ब्रजपति कौं दुर्लभ इनतें कौन बड़ौ अधिकारी।।
नित्यकिसोर निरंतर बिहरत सेवत श्रीहरिदासि दुलारी।
ऐंडिल[1] ऐंडाइल[2] अरुन कमल* बाँके बिरदनि बिदित बिहारी।२।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद— राग–भैरवी, ताल–तिताल

हमारें बिहारी उत्सव आज।
अति प्रसन्न भई नित्य लाड़िली सुधस्यौ सबही काज।।
महाप्रेम अनुराग बढ़्यौ है बनि गयौ सबही साज।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि दियौ कुंज कौ राज।।३।।

---

* पाठान्तर—अरुनकमल ऐंडाइल अंगनि। १. गर्वीले; सजीले; बाँके; ऐंठ, अँगड़ान, इतरान से भरे हुए। २. ऐंठने, अँगड़ाने, इतरानेवाले।

प्रगट भये श्रीकुंजबिहारी।
रूप अनूप सकल गुन सीवाँ सब अवतारनि के अवतारी।।
नित्यकिसोर निरंतर बिहरत अपनी प्रानप्रिया उर धारी।
जनम करम जिनके परिपूरन चहूँ ओर जगमगात सहचारी।।
एकहि रूप अनूप रूप धरि भक्तनि हित लीला बिस्तारी।
श्रीवृन्दाबिपिन बिहार सार रस रसिकनि जीवनि जीव जिवारी।।
श्रीहरिदास कलपतरु जोरी रसना बरनें सु कहा बिचारी।
ललित बिनोद मोद रस छाके
श्रीरसिकसखी छिन छिन बलिहारी।।४।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद— राग–ईमन–स्याम कल्यान, ताल–दादरा

रसिक हरिदास के बाँकेबिहारी।
लछमीपति ब्रजपति अति दुर्गम रास रसिकबर सरन तिहारी।।
अद्‌भुत धाम नित्य वृन्दाबन नित्यकिसोर किसोरी प्यारी।
महल निकुंज बिहार सार सुख इच्छ्या बिग्रह धरि अवतारी।।
बाँके बिरद बुलावत साँचे महाप्रेम अद्‌भुत सुख* भारी।
रसिक रूप अवलोकत सोभा श्रीस्वामी (जू) के अधिकारी।।५।।

राग–रासबहार, सुघराई कान्हरौ, ताल–तिताला

घन तें लसति नीलमनि तन दुति अति अद्‌भुत कल सोभा छबी।
झलमलात मुख दृग स्त्रुति कुंडल ललित पाग पर कलंगी फबी।।

---

* पाठान्तर—छबि।

मनमथ रति दंपति पर बारौं कमल चंद सुंदरता रबी।
श्रीस्वामी हरिदास जू कौ डंका बाज्यौ औरनि की डुगडुगी दबी।।६।।

श्रीस्वामी नागरीदास जू कौ पद— राग–सारंग

आजु हमारे मंगल माई।
मारगसिर सुदि सुकल पंचमी आनंद की निधि आई।।
भवन भवन प्रति बंदन माला तोरन धुजा सुहाई।
बाँके रसिकबिहारी कौ सुभ प्रगट दिवस सुखदाई।।
श्रीहरिदासी रंगमहल में बाँटत सुखद बधाई।
श्रीबिपुल बिहारिनि नागरि फूली नवल प्रेम सरसाई।।
बाजे बिबिध बजावैं गावैं महामधुर धुनि छाई।
करत कुलाहल सुखद सहचरीं कुंज कुंज उठि धाईं।।
प्रानपियारे अधिक सिंगारे छिन छिन छबि हुलसाई।
सरबसु प्रान करत न्यौछावरि मन नैंन सजीवनि पाई।।
श्रीनरहरिदासि रासि रस सुख की अति बरषा बरषाई।
लाल लड़ैती की छबि ऊपर श्रीरसिकदासि बलि जाई।।७।।

अनन्य मुकुटमनि श्रीस्वामी बिहारिनिदेव जू की मंगल–बधाई

रसिकवर श्रीस्वामी हरिराम व्यास जू कौ पद–

प्रात:–राग–बिलावल, ताल–चौताल सायं– राग–ईमन–स्याम कल्यान, दादरा

साँची प्रीति बिहारिनिदासै।
कै करुवा कै कुंज कामरी कै थर[1] श्रीस्वामी हरिदासै।।
प्रतिबाधक सहि सकत न तिनकौं* जानत नहीं कहा कहि त्रासै।
महामाधुरी मत्त मुदित ह्वै गावत रस जस जगत उदासै।।
छिन ही छिन परतीति बढ़त रसरीति निरखि बिबि बदन बिलासै।
अंग संग नित्यबिहार बिलोकत यहै आस निज बन बसि व्यासै।।१।।

श्रीस्वामी नवलदेव जू कौ पद– सायं राग–रासबहार, ताल–तिताला

एक ही सिंगार तन एक प्रान एक मन
एक ही स्वरूप कापै परत बखानी है।
एक ही बरन अंग भूषन बसन सुरंग
एक ही सुभाव प्रेम रंग रस सानी है।।
एक ही सुदृष्टि सखी नैंननि सौं नैंन जोरैं
एक ही समाज राग रंग सुखदानी है।
नवल निहार▲ दोऊ पटतर कौं न कोऊ
श्रीबिहारिनिदासि किधौं बिहारिनि रानी है।।२।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद– राग–मल्हार, ताल–तिताला

आज बधाई आई री माई।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव लखि सोभा अधिकाई।।

---

* पाठान्तर–जिनकौं। ▲बिहार। १. स्थल, जमीन, जगह, निकट।

रितु पावस सावन तिथि तृतीया कौतिक सहचरि आई।
मंद मंद पग धरति अवनि पै नूपुर गरजि सुहाई।।
अलकावलि घन स्याम गौर तन दामिनि कोटि निकाई[१]।
दृग कटाच्छ करि पवन रवन हिय रूप लहरि झरि लाई।।
तैसेई बसन सुरंग अंग में निरखि काम सिर नाई।
लखी अभूत सहेली भूपर प्रिया पीव हिय लाई।।
श्रीहरिदासी बंस जानिकें बिपुल सरस सुखदाई।
श्रीनरहरि रसिक सखी सुख पायौ पीतांबर पहिराई।।३।।

सावन तीज रूप धरि आई।
कच घन घोर दामिनि दमकनि राग मलारनि धुनि गरजाई।।
रूप लहरि सो धनुष चहूँ दिसि जल स्त्रमकन बूँदनि झरि लाई।
अरुन बसन आभूषन की छबि प्रिया प्रान हिंडोरें झुलाई।।
नाम बिहारिनिदासि सखी कौ सरस मनोरथ की मन भाई।
निरखत बलि पीतांबर दीनौं श्रीहरिदासी बिपुल बनाई।।४।।

स्यामा धाम बाम रितु* पावस सावन तीज हिंडोरें झूली।
श्रीहरिदासी संग बिपुल कुल बिहारिनिदासि सखी समतूली।।
श्रीनागरी नवल माधुरी अंग संग□ सरस सहचरी गुननिधि फूली।
श्रीनरहरि रूप रसिक रस बरषत पीतांबर निरखत मति भूली।।५।।

---

१. सुन्दरता, अच्छापन, भलाई; निकाय–समूह; समुदाय; वासस्थान। *पाठान्तर–रति।
□ अंग अंग।

श्रीस्वामी नागरीदास जू के पद–

महल में मंगल आज बधाई।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी सोभा सहज सुहाई।।
सावन तीज सरस रस भीजी रीझे रसिकनि राई।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस महानिधि पाई।।६।।

सावन तीज मन भावन आई।
प्रगटी (श्री) बिहारिनिदासि बिहारनि कें सरस प्रेम झरि लाई।।
बिपुल नवल अनुराग सुहायौ सोभा बरनी न जाई।
गावत मंगल गीत बधाई श्री नरहरिदासि लड़ाई।।७।।

कुंजनि में बरषत सुख मेह।
प्रगटी श्रीबिहारिनिदासि स्वामिनी बाढ़्यौ सरस सनेह।।
सावन तीज महारस भीनी मंगल निधिवन गेह।
श्रीहरिदासि रसिक कौ सरबस नागरि उर धरि लेहु।।८।।

*

श्रीस्वामी सरसदेव जू की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद–
प्रातः–राग–ललित,धीमा तिताला सायं– राग–ईमन–स्याम कल्यान, धीमा तिताला

प्रगटे श्रीसरसदेव रस भीनें।
निधिबन नित्यबिहार बिलोकत प्रियालाल उर लीनें।।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस प्रिया रस दीनें।
श्रीललित रूप रस बिबस बिहारी बिहारिनि के बल कीनें।।१।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद— सायं : ईमन स्याम कल्यान, ताल दादरा

बजत बधाई परम सुहाई।
रास रसिक श्रीसहचरि प्रगटीं सरस प्रिया सुखदाई।।
दासिबिहारिनि अंग संग राजत बिपुल प्रेम सरसाई।
श्रीरसिक प्रिया पीतांबर लै लै सबकौं आनि पहिराई।।२।।

प्रगटे सुखनिधि रसिक प्रवीन।
श्रीसरसदासि रस रूप उदौ करि रसिकनि हीय सुख कीन।।
श्रीबिहारिनिदासि की दासि प्रकासी अँग अंग सरस नवीन।
सरद समै मिलि मंगल गावैं पीतांबर रस भीन।।३।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद— प्रातः–राग बिलावल, चौताल

प्रगटी सरस सरस रंग भीनी।
गुप्तकेलि रस रास प्रकासी अद्‌भुत प्रीति नवीनी।।
छिन छिन प्रति आनंद बढ़ावत महाप्रेम रस लीनी।
श्रीहरिदासि ललित बपु धार्‌यौ रसिक सु अति परबीनी।।४।।

प्रगटी श्री सरस सरस सुख दैंन।
श्रीबिहारिनिदासि लाड़िली के सुख सोभा कहत बनैं न।।
सरद निसा सहचरि मन मोहत सोहत सुंदर अैंन।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवन सुनत रस भरे बैंन।।५।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू कौ पद— राग–बिलावल, ताल–चौताल

माई आजु रसमसे रस बनि बैठनि अंग अंग रोम रोम सुख भरे।
कहाँ लौं कहौं री और रहसि बहसि रस
हाँसी ही के मिस मिलि जे जे रंग करैं।।

बार बार बदन निहारि मन वारि वारि
अंक भरत* पुनि पुनि आतुर ह्वै इत उत न टरैं।
श्रीसरसदासि बारी बिबस बिहारी प्यारी
इहि बिधि तन मन मोद भरैं।।६।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू कौ पद–

कुंजभवन मधि मंगलचार।
श्रीहरिदासि रसरासि बिलास सरस प्रिया सुख सार।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि नागरी इनहीं के ये प्रान अधार।
श्रीकिसोरीकिसोरदासि मिलवत सुखरासि नृत्यत रासबिहार।।७।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेवजू कौ पद–
प्रातः–राग–भैरवी, ताल–अद्धा तिताला सायं–राग–ईमन–स्याम कल्यान, धीमा तिताला

सब मिलि गावत आज बधाई।
प्रगटी सहचरि सरस प्रिया की सरद महा सुखदाई।।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि नागरि नवल लड़ाई।
श्रीरसिक उदारहिं दियौ कृपा करि पीतांबर पहिराई।।८।।

श्रीस्वामी किसोरदास जू कौ पद–

सरस सुहाग सरसाई।
मिल्यौ रस रंग पग्यौ मन सरस प्रेम हुलसाई।।
सरस प्रिया सुखरासि मिली लालन हियौ सिराई।
दासिकिसोर के भये हैं मनोरथ बिलसि बिलसि मन भाई।।९।।

*पाठान्तर–अरत।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–
प्रातः–राग–ललित,ताल–धीमा तिताला सायं–राग–यमन–स्याम कल्यान, धीमा तिताला

प्रगटे श्रीनरहरिदेव उदार।
श्रीहरिदास ललित बपु धार्‌यौ महाप्रेम सुख सार।।
श्रीवृन्दाबन सनमुख जिननि कीने जीव अपार।
रसिक सिरोमनि की निजु जीवनि निरखत नित्यबिहार।।१।।

प्रगटे श्रीनरहरिदेव रंगीले।
परम कृपाल उदार सिरोमनि प्रिया प्रेम गरबीले।।
श्रीवृन्दाबन की निधि एई अद्‌भुत रूप छबीले।
श्रीरसिक सखी अंग संग सहज ही ललित केलि मन मीले।।२।।

प्रातः–राग–बिलावल, ताल–चौताल सायं–राग–यमन स्याम कल्यान, ताल दादरा

श्रीनरहरिदेव रसिकबर प्यारे।
परम प्रेम सुखरासि छबीले प्रगट भये संतनि हितकारे।।
दासबिहारिनि सरस नागरी इनकी जीवनि प्रान अधारे।
श्रीललितकिसोरी तन मन मिलि कें लाड़ लड़ावत नित्यबिहारे।।३।।

श्रीनरहरिदेव रसिकबर आये।
अति आनंद भयौ सबहिन कें किये मनोरथ मन के भाये।।
छिन छिन प्रीति नई नई उपजत कहा कहौं गुन परत न गाये।
श्रीहरिदासि ललित रस भीनें गौर स्याम मिलि रस बरसाये।।४।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद— सायं-राग- पीलू धमारि

जेठी दुतिया आई री माई।
आगें तें हरिदासि बिपुल सुख बर बिनोद दरसाई।।
सरस मनोरथ किये सबनि के नरहरि रूप धराई।
रसिक प्रिया पीतांबर लै लै सहचरि सब पहिराई।।५।।

प्रात:-राग-जोगिया-असावरी, धमारि

जेठी दुतिया भई (है) महल में।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस नरहरी लई टहल में।।
स्यामा स्याम धाम धन पायौ निरखत बपु रस परी चहल[१] में।
प्रगट्यौ धर्म रसिक सहचरि कौ पीताम्बर कौं मिल्यौ सहल[२] में।६।

प्रात:-राग-भैरवी अद्धा तिताला सायं-राग-पीलू, ताल-धमारि

गावौ री बधाई (माई) मंगल गीत।
जेठी दुतिया ज्यौं ठकुराइनि प्रगट भई मोहन की मीत।।
दरस दिखावौ सहचरि लावौ बरष गाँठ की करिये रीति।
पीताम्बर पहिरावौ सबकौं रसिक प्रियाहि समीति।।७।।

आजु हमारे मंगल भये।
अब लौं भू भ्रम स्त्रम सब जन जे सूर उदै भ्रम तम स्त्रम हये[३]।।
श्रीनरहरि स्वामी प्रगट होत ही पापी पाप ताप नसि गये।
जेठी जठर[४] अंध्यारी दुतिया रसिकदास सीतल करि लये।।८।।

---

१. आनन्दोत्सव; धूमधाम; प्रसन्नता; रौनक; दलदल; कीचड़। २. सहज, सहज में होनेवाला, नरम, आसान। ३. हने, नष्ट किये। ४. पेट, कुक्षि, जरायु, गर्भवास।

सायं-राग-खम्माच, तिताला, धुनि-अति भली भई

अनन्य नृपति जू के बर बरनी[१] घर घरनी[२] की बधाई।
बिपुल बिहार सरस सुखयेरी सहचरी नरहरि साल[३] गृहाई।।
मंगल मोद बिनोद बढ़ावत रसिक रसिकनी सुख बरषाई।
पीताम्बर पिय निर्त करत अति भूषन जंत्रनि नभ धुनि छाई।।९।।

सायं-राग-यमन स्याम कल्यान, ताल दादरा

बजत बधाई रसिक रसीली।
प्रगटी नरहरिदासि स्वामिनी सरस बिहारिनि बिपुल नवीली।।
कुंजमहल रस टहल देखिवौ इह मद छकी छबीली।
बारि फेरि कैं लै पीताम्बर दयौ रसिक रसकीली।।१०।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू की मंगल-बधाई

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद- राग-हम्मीर-बसंत, ताल-धमारि

श्रीमत रसिकदेव प्रगटे।
गौरस्याम कौं अति सुखदाई इनहीं* के रंग जटे।।
रोम रोम अति आनंद बरषत नित्य सुकेलि रटे।
श्रीहरिदासि ललित बपु धार्‍यौ अवधि प्रेम अघटे।।१।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू कौ पद-

प्रगटे श्रीरसिकदेव सुखसार।
मंगल बसंत पंचमी भूपर छायौ नित्यबिहार।।

---

१. वरण करनेवाली, चुननेवाली, दुलहिन। २. गृहिणी, पत्नी। ३. निजगृह, वास्तविक, टकसाली घर। * पाठान्तर-तिनहीं।

श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस महा रिझवार।
श्रीनरहरि रसिक कृपा पहिरायौ पीतांबर उर हार।।२।।

श्रीस्वामी नागरीदास जू के पद— राग-बसंत, ताल-धमारि

प्रगटे रसिकसिरोमनि राई।
आनंद की निधि रसिक स्वामिनी अद्‌भुत रूप अनूप बनाई।।
मंगल बसंत पंचमी सुभ दिन नित्यबिहार दयौ दरसाई।
श्रीहरिदासि कृपा की मूरति दासि नागरी लाड़ लड़ाई।।३।।

प्रगटे श्रीरसिकदेव सिरमौर।
मंगल बसंत पंचमी सुभ दिन आनंद भयौ न थोर।।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस नरहरि के चित चोर।
सरस बधाई लै पीतांबर पहिरायौ नागरि तन गौर।।४।।

प्रगटी श्रीरसिकसिरोमनि रानी।
बसंत पंचमी सुभ दिन मंगल नित्य बिपिन सुखदानी।।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस सुखनि सौं सानी।
श्रीनरहरि कृपा रसिक बपु धार्‍यौ नागरि रूप लुभानी।।५।।

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के पद—

अबकैं बसंत अतिसै सुखदाई।
श्रीहरिदासी कौ सर्बस धन रसिक महल में आई।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस मिलि नरहरि प्रान लड़ाई।
श्रीरसिकबल्लभा प्रानप्रिया पिय पीतांबर पहिराई।।६।।

अबकैं बसंत सुख हो हो होरी।
प्रगटी रसिक सजीवनि मेरी नव नव नेह सनेह झकोरी।।
श्रीहरिदासी दई कृपा करि बिपुल बिहार सु सरस करौ री।
श्रीनरहरि प्रान रसिक मम जीवनि पीतांबर के चित की चोरी।।७।।

अबकैं बसंत हम भागनि पायौ।
श्रीहरिदासि कृपा सुख प्रगट्यौ बिपुल बिहार बढ़ायौ।।
श्रीसरस नरहरि ने सुख अपनौं सो हम ऊपर छायौ।
श्रीरसिक स्वामिनी निरखि रीझि कें पीतांबर पहिरायौ।।८।।

अबकैं बसंत अति अद्‌भुत होरी।
श्रीहरिदासि प्रगट करि दीनी बिपुल बिहार सु सरस करौरी।।
श्रीनरहरिदासि रसिक मुकुटमनि जै जै सब्द कहौरी।
पीतांबरदासी कौं दीजे नव नव नेह नयौ निबहौरी।।९।।

राग–हम्मीर–बसंत, ताल–धमारि

रसिक बसंत कुंज में आये।
श्रीललिता हरिदासि सखी के बिपुल बिनोद फूल बरषाये।।
दासिबिहारिनि करत पाँवड़े सरस आरती थार सजाये।
नरहरिदासि बसन सुबिंजन अमृत जल दै पान खवाये।।
अतर गुलाल अबीर अरगजा छिरकि गुलाब परस्पर धाये।
बाजत तार मृदंग झाँझ डफ अति ऊँचे सुर धुनि लै गाये।।
रीझि प्रिया जू रसिक सखी कौं भूषन बसन सकल पहिराये।
पीतांबरदासी कौं दीनौं सैंन कुंज लखि अति सुख पाये।।१०।।

खेलि बसंत कुंज में आये।
आगें स्याम स्वामिनी पाछैं सहचरि गन चहुँदिसि उमड़ाये।।१।।
पियरे बसन प्रिया जू पहिरैं पियरे ही पिय कौं पहिराये।
पियरे ही भूषन सब अंगनि प्रीति सहचरी रंग रंगाये।।२।।
केसर अगर कपूर कुमकुमा बसन सरीर कछू लपटाये।
अतर सुगंध बहुत बिधि छिरक्यौ अति सुबास मन भ्रमर लुभाये।।३।।
सनमुख चलीं सहचरी पिय कें कलस पाँवड़े सुवन[1] सुहाये।
मंगल गीत रीति आवनि की सुखद समाज नृत्य करि गाये।।४।।
रतन जटित सिंघासन आसन सुखद दुकूल[2] स्वेत छबि छाये।
जय जय धुनि इह कहत सखी गन प्रानप्रिया पिय कौं बैठाये।।५।।
देति असीस अचल सिंहासन इही कुंज मधि रहौ सदा ये।
सामग्री भोजन जो चाहत सोई परसि रसिकबर पाये।।६।।
रूप सुधारस भरि जमुना कौ नीर पीव कौं लै अँचवाये।
रुचिर सिंगार सेज सुख कीन्हौं दरसि परसि सुख नैंन सिराये।।७।।
भये मनोरथ रसिक सखी के नव निकुंज में सुख दरसाये।
रीझि कह्यौ पीतांबर मेरौ लै सहचरि हम अति सुख पाये।।८।।११।।

✸

१. पुष्प, फूल। २. रेशमी वस्त्र, वस्त्र।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू की मंगल–बधाई

प्रातः–राग–जोगिया आसावरी, ताल–धमारि सायं– राग–पीलू, ताल–धमारि

लोक बेद नवधा प्रसिद्ध सुख कौन तरै लीला अवतार।
कर्म धर्म की आस त्रास नित अभि❀[1] भैभीत[2] बहत संसार।।
लोभी लोग भोग के लालच पचि मरते विद्या आचार।
जो न प्रगटती ललितकिसोरी तौ न प्रगटतौ नित्यबिहार।।१।।

श्रीस्वामी सीलसखी जू के पद–
प्रातः– राग–बिलावल, ताल–चौताल सायं–स्याम कल्यान, अद्धा तिताला

प्रिय हित ऐंन हौ जू लाल सुख दैंन हौ जू
दुहुँनि चित चैंन हौ जू महा सुख सार हौ।
रसिक सिरताज हौ जू प्रेम के जहाज हौ जू
नेह के समाज हौ जू रस निरधार हौ।।
अति रिझवार हौ जू सारनि कौ सार हौ जू
दुख निरवार[3] हौ जू परम उदार हौ।
श्रीललितकिसोरी हौ जू ललित हरिदासी□ हौ जू
ऐंड[4] गरबीली हौ जू ललित बिहार हौ।।२।।

लाड़िली कौ लाड़ किधौं प्रीतम कौ प्रेम किधौं
महामाधुरी तरंग आनंद निकेत री।
सोभा कौ सिंगार किधौं अवधि रिझिवारता की
रसिक दुलारी प्यारी पिय सुख देत री।।

❀ पाठान्तर–अति। □हरिदासि गोरी। १. अति, अत्यधिक। २. भय से डरे हुए। ३. दूर करनेवाले। ४. गर्व, ऐंठ, शान, गौरव, बड़प्पन, दबदबा, रूप,शक्ल,आन।

करुनानिधान गुन कहाँ लौं बखान करौं*
सुरति सुहाग फूल फूल्यौ रस खेत री।
श्रीललितकिसोरी रूप प्रगटि कृपा अनूप
राख्यौ रस बंस निज रसिकनि सुहेत री।।३।।

प्रातः– राग–बिलावल, ताल–चौताल सायं–राग–रास बहार, ताल–तिताला

अगम[१] तें अगम अति दुर्लभ निकुंज रस
सुल्लभ दिखाय रूप रसिकनि दृढ़ायौ है।
घुरत निसान[२] गुन बिरद[३○] बखानें कौंन
साधक अरु सिद्धन प्रसंसि सिर नायौ है।।
सुभग[४] सिंहासन निधिबन (श्री) निकुंज धाम
ललितकिसोरी नाम बिरद बर पायौ है।
रसिकनृपति बर बंस रसराज रानी
रसिक तिलक दै राज कौं पठायौ है।।४।।

श्रीस्वामी सहचरीसरनदेव जू कौ पद–

प्रेम की पताका दिन राति फहराति जाकी
बाजत निसान मुद वृन्दाबन धाम हैं।
स्यामा स्याम आँखिन में नाम जस लाखन में
भाखन[५] में जात बलिहारी जन ग्राम हैं।।

---

*पाठान्तर–सकौं। ○विदित। १. अगम्य; दुर्गम; पहुँच के बाहर; अप्राप्य; अयुक्त; मन, बुद्धि परे; कठिन; अपार; अथाह। २. नगाड़े। ३. नाम, बड़ाई, यश; कीर्ति गाथा। ४. सुन्दर; उपयुक्त। ५. कहनि; बोलन।

परम प्रचंड तेज मारतंड[१] हूँ तें अति
सीतल ससी के सम सोभा अभिराम[२] हैं।
श्रीस्वामी हरिदास जू के दुतिय अनूप रूप
ललितकिसोरी कैधौं ललित ललाम[३] हैं।।५।।

श्रीस्वामी सीलसखीजू के पद—

श्रीहरिदास के गर्व भर्‍यौ हँसि दीनौं लड़ैती ने पत्र निसाँकौ।
केलि कलोलनि क्रीड़त हैं नित रंग बढ़ावत हैं दुहुँ घाँकौ[४]।।
औरनि कौ मन और पर्‍यौ इन प्रेम समुद्र कौ बाँध्यौ है नाकौ[५]।
बाँके की बाँकी चितौनि में बीध्यौ सु
दासकिसोरी कौ पैंडो है बाँकौ।।६।।

श्रीगुरुदेव की साहिबी में अमनेंक[६] अनन्य भयौ अलबेला[७]।
एकही रीति की प्रीति प्रतीति है बाँकी लड़ैती सौं कीनौं है मेला।।
नेह के पुंज निकुंज मढ़्यौ हरिदास कौ पूत सपूत अकेला।
दासकिसोरी जू प्रेम समुद्र में कूदि पर्‍यौ निरसंक दै हेला।।७।।

लाड़िली कौ बिनोद किधौं प्रीतम कौ प्रेम नित्य
सरस गुन गर्व रस चाड़नि[८] समेत हैं।
सेज कौ सुबास किधौं रंग कौ बिलास आली
सुख कौ निवास मन आनंद निकेत हैं।।

---

१. सूर्य। २. सुन्दर, अच्छा लगनेवाला; मोहक; सुखद। ३. चिह्नवाला; सुन्दर, रमणीय, श्रेष्ठ, उत्तम, भूषण; रत्न; तिलक। ४. ओर, तरफ, दिशा, प्रकार, तरह। ५. प्रवेश करने का प्रमुख द्वार; प्रमुख स्थान, वह प्रमुख स्थान; जहाँ पहरा होता है। ६. सरदार, दावेदार,अधिकारी; ढीठ। ७. सुन्दर, अनूठा; बाँका; मनमौजी। ८. भारी आवश्यकता, गरज; बेकली,प्रबल इच्छा, प्रबल; प्रचंड।

रूप की निकुंज सोभा फूली हाव भावनि सौं
चाव चित चातुरी कौ आतुर अचेत हैं।
श्रीललितकिसोरी रूप प्रगटी कृपा अनूप
रसिक अनन्यनि के आनंद के हेत हैं।।८।।

श्रीहरिदास कौ सपूत पूत ऐंडाइल निपट न कोऊ ताकी सरि कौं।
छोंड़िकैं प्रपंच पस्यौ प्रेम के समुद्र मध्य
आपु बरदानि बरदान पायौ हरि कौ।।
नवल निकुंज केलि माधुरी सौं भीनौं
लीनौं मन ललितकिसोरी जू सदाई बड़ी थरि[1] कौ।
बाँके कौ अनन्य बाँकी लड़ैती के गर्व भस्यौ
जाकौ प्रेम समुद्र सुधा सौं फिरै ठरि[2] कौ।।९।।

*

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू की मंगल-बधाई

श्रीस्वामी राधाप्रसाद जू के पद-
प्रात:-राग-ललित, ताल-धीमा तिताला — सायं- पीलू, ताल-धमारि

प्रगटे श्रीललितमोहिनीदेव उदार।
रसिकनि के आनंद अति बाढ़्यौ महाप्रेम सुखसार।।
श्रीवृन्दाबन सुखसागर नागर ललित रूप बिहार[*]।
श्रीराधाप्रसाद सखी निरखि हरषि कें पहिरायौ उर हार।।१।।

---

[*] पाठान्तर-अपार। १. स्थल, जमीन, जगह, पंक्ति, तह, शेर की माँद (गुफा, घर) २. द्रवित, गलित, ठिठुरा हुआ, स्तब्ध हुआ, सराबोर, ओत-प्रोत, अति मग्न।

सायं- राग-यमन-स्याम कल्यान, ताल-दादरा

बजत बधाई परम सुहाई।
प्रगटे परम उदार सिरोमनि श्रीललितमोहिनी देव सुखदाई।।
प्रगट कियौ रसरीति गान कौं ललित रूप रस अधिकाई।
संतनि सेवा रस अमृत जान्यौं श्रीराधाप्रसाद बनि आई।।२।।

माघ एकादसी आई री कृष्णा।
श्रीहरिदास कृपा की मूरति जनम जनम की गई तृष्णा।।
श्रीगुरु सेवा रसनिधि सिज्या करि परिहरि सब पृष्णा[1]।
श्रीराधाप्रसाद इनही की सेवा और करै सो▲ धृष्णा[2]।।३।।

प्रात: राग-बिलावल, ताल-चौताल सायं- राग-स्यामकल्यान, ताल-अद्धा तिताला

मोहिनी सी गोरी अति मोहिनी सी भोरी छबि
मोहिनी रंगीली रंग भरि रंग होरी है।
मोहिनी बिचित्र सोभा मोहिनी आनंद गोभा[3]
मोहिनी छबीली संग रसिक रस बोरी है।।
मोहिनी परम पास मोहिनी हियें हुलास
मोहिनी मधुर हास मोहिनी की ओरी है।
मोहिनी उज्यारी[4] रूप मोहिनी रसिक भूप
मोहिनी सरूप किधौं मोहिनी किसोरी है।।४।।

▲सब। १. प्रश्न, सवाल, विचारणीय विषय; समस्या, जटिल समस्या, पिछला भाग; पिछली बात; किरण; ऐश्वर्य। २. धृष्णु-धृष्ट, साहसी, लज्जा रहित, ढीठ, उद्दंड; निर्दय। ३. लहर; अंकुर; प्राकट्य, अभिव्यक्ति। ४. चाँदनी, प्रकाशमयी, चाँदनीवाली।

मोहिनी नवेली अलबेली संग लसै सखी
मोहिनी निरखि सोभा सरस सँवारी जू।
मोहिनी रसिकरासि मोहिनी हियें हुलास
मोहिनी सहज प्यारी पीय हीय धारी जू।।
मोहिनी रंगीली गोरी मोहिनी बिचित्र भोरी
मोहिनी रसाल केलि परम उदारी जू।
मोहिनी बिसाल नैंन मोहिनी मधुर बैंन
मोहिनी सुहाग भरी मोहिनी निहारी जू।।५।।

श्रीस्वामी ललितमोहिनीदेव जू के पद— राग–हम्मीर–बसंत, ताल–तिताला

रूप के जाल पर्‍यौ मन मेरौ।
जोवन रस पीवत न अघातौ मुसिकनि हूँ अरुझेरौ।।
कुंजमहल रतिपति दल छायौ बिबस भयौ बिबि नेरौ।
श्रीललितमोहिनी सब सुख दीनौं दुहुँनि नेह घनेरौ।।६।।

राग–बिहाग–अद्धा तिताला

खेलत आजु प्रिया नवरंगी।
चमकत रमकत लागि स्याम उर ललितमोहिनी संगी।।
जोवन झलक ललक सुंदरि की बाढ़्यौ रंग अनंगी।
यह सुख पीवत जीवत हम सब देखत* केलि तरंगी।।७।।

मोहनी मोहन लाल प्रिया की रहे निसिबासर हेत में पागी।
किये बहु जीव सनमुख जानि दियौ बनबास सबै भय भागी।।

---

* पाठान्तर—निरखत।

सदा सब पोष रहैं निरसोक महामधुरे कहैं बैंन अनुरागी।
रहैं बन गाज निसाननि बाजत प्रगट हरिदास महा बन रागी।।८।।

प्रातः राग-जोगिया आसावरी, ताल-धमारि

आजु बधाई श्रीवृन्दाबन सुखसिन्धु हिलोर।
प्रिया लाल तन मन हुलसानें मनसिज (सौं) मेघनि (की) घोर।।
सब सखी उमँगि उमँगि गुन गावैं नाचत मोर चकोर।
श्रीललितमोहिनी के उर बिहरैं नैंन कमल* चितचोर।।९।।

प्रातः राग-भैरवी, ताल-अद्धा तिताला

आजु बधाई श्रीवृन्दाबन।
कुंजमहल श्रीबिहारी बिहारिनि केलि करत छिनही छिन।।
श्रीहरिदासी जू लाड़ लड़ावति इनही कौ ये हैं धन।
श्रीललितमोहिनी की निजु जीवन ये वे वे ये एकै मन।।१०।।

✷

श्रीस्वामी पीतांबरदेव जू महाराज कौ प्राकट्य-महोत्सव

भाद्र सुक्ला ८

प्रथम दिवस—	ऐसी रितु सदा सर्वदा	(पृष्ठ ५पर देखें)
	श्रीवृन्दाबन कौ री चोज	(पृष्ठ ६ पर देखें)
द्वितीय दिवस—	प्यारी तेरी बाँफिन बान सुमार	(पृष्ठ १० पर देखें)
	चलैं जू कौतिक देखन जाहिं	(पृष्ठ ११ पर देखें)

* पाठान्तर—चमकि।

तृतीय दिवस—	नदित मन मृदंगी	(पृष्ठ १५ पर देखें)
	(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेत	(पृष्ठ १६ पर देखें)
चतुर्थ दिवस—	प्यारी तेरी पुतरी काजर हू तें	(पृष्ठ १८ पर देखें)
	चलि सखी देखन जाहिं	(पृष्ठ १८ पर देखें)
पंचम दिवस—	दिन डफ ताल बजावत गावत	(पृष्ठ १९ पर देखें)
	बना	(पृष्ठ २० पर देखें)

श्रीस्वामी पीतांबरदेव जू की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी नागरीदास जू के पद— राग–बरवा, ताल–धमारि

श्रीअनन्य नृपति जू कें नव निकुंज में बाजति आजु बधाई।
श्रीपीतांबर जुगराज प्रगट भये रसिकराज सुखदाई।।
भादौं प्रथम अष्टमी सुभ दिन आनंद की निधि आई।
श्रीबिपुल बिहारिनि सरस नरहरी रसिक सु मंगल गाई।।
फूले फिरत निरखि मुख छबि कौं छिन छिन लाड़ लड़ाई।
छायौ घन अनुराग भाग बड़ सोभा कही न जाई।।
झरि लायौ रसिकनि हीय माहीं उमँगी रस बरसाई।
श्रीनागरीदासी सुफल मनोरथ सरस बधाई पाई।।१।।

राग–यमन–स्याम कल्यान, ताल–दादरा—

आजु महा मंगल सुखदाई।
श्रीपीतांबरदास प्रगट भये भादौं कृष्ण अष्टमी आई।।
नित्यबिहार सार सुख अद्‌भुत घन दामिनि बरषा झरि लाई।
श्रीहरिदास के बंस उजागर दासनागरी लाड़ लड़ाई।।२।।

राग-यमन-स्याम कल्यान, ताल-धीमा तिताला

प्रगट्यौ श्रीनित्यबिहारी रूप।
श्रीहरिदासी बंस उजागर श्रीपीतांबर रस भूप।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस कौ आनंद सुखद सरूप।
श्रीनरहरि रसिक निकुंज बधाई नागरि करत अनूप।।३।।

राग-मल्हार, ताल-तिताला

नव बन भादौं मास सुहायौ।
कृष्न जन्म दिन की आठैं सुभ श्रीपीतांबर प्रगटायौ।।
नित्यबिहार सार सुख अद्‌भुत सो सनेह झरि लायौ।
बाजत ताल मृदंग मधुर धुनि सखियनि मंगल गायौ।।
श्रीहरिदासी बंस उजागर बिपुल बिहार बढ़ायौ।
सरस नागरी नरहरि रसिका नागरिया मन भायौ।।४।।

बधाई री बाजति नवल निकुंज।
श्रीपीताम्बर प्रगट होत ही बरषे सुख के पुंज।।
श्रीरसिक रसिकनी रूप अनूपम रस घन उमड़्यौ आइ।
नित्यबिहार सार झरि लायौ रसिकनि हियौ भिजाइ।।
भादूँ प्रथम अष्टमी सुभ दिन अति घन स्याम सुरूप।
श्रीहरिदासी बिपुल बिहारिनि सरस समाज अनूप।।
श्रीनरहरि रसिक रूप भक्तनि हित पूरन प्रेम प्रकासि।
गावति मंगल सखी सुखद बलि जाइ नागरीदासि।।५।।

श्रीस्वामी गोबर्धनदेव जू महाराज कौ प्राकट्य–महोत्सव
आषाढ़ सुदी १०

प्रथम दिवस–	ऐसी रितु सदा सर्वदा	(पृष्ठ ५ पर देखें)
	कुंजबिहारी हरषि बुलाई	(पृष्ठ ८४ पर देखें)
द्वितीय दिवस–	(ये) यह अचरज देख्यौ न सुन्यौ	(पृष्ठ २१९पर देखें)
	तू ना करि मान मनोहर	(पृष्ठ ८५ पर देखें)
तृतीय दिवस–	दामिनि कहति मेघ सौं	(पृष्ठ २२० पर देखें)
	चलैं जू कौतिक देखन जाहिं	(पृष्ठ ११ पर देखें)
चतुर्थ दिवस–	आये दिन पावस के सचु के	(पृष्ठ २२३ पर देखें)
	(ए) प्यारी सहज मनै हरि लेति	(पृष्ठ १६ पर देखें)
पंचम दिवस–	नदित मन मृदंगी	(पृष्ठ १५पर देखें)
	सुहेलरा	(पृष्ठ १३ पर देखें)

श्रीस्वामी गोवर्धनदेव जू की मंगल–बधाई

श्रीस्वामी राधाप्रसाद जू के पद–राग–यमन–स्याम कल्यान, ताल–धीमा तिताला

प्रगटे श्रीगोवर्धन देव रंगीले।

श्रीहरिदास के बंस उजागर कीनें बहु रंग जसीले।।
श्रीहरि गौरांगी रूप धारिकैं श्रीपीताम्बर सिष्य रसीले।
श्रीराधाप्रसाद निरखि त्रिन तोरति अति अद्भुत रूप छबीले।।१।।

प्रगट भये श्रीगोवर्धन देव।

संतनि हित चित अति आनन्द बाढ़्यौ मिटि गई कल्मष खेव[1]।।

---

१. समूह।

दिग्विजय जहाँ तहाँ जो कीनें लीनें सन्मुख जीव बहु भेव[१]।
श्रीराधाप्रसाद सखी श्रीगौरांगी कौं निरखि हरषि सुख लेव॥२॥

श्रीकमलावती सखी कौ पद— राग–मल्हार, ताल–तिताल

श्रीगोवर्धन देव प्रगट भये। अखिल लोक के रोग सोक गये॥१॥
रसिक अनन्यनि के मन आनन्द उपजत छिन छिन मोद नये।
श्रीहरिदास अनन्य परिपाटी अद्‌भुत बारिद प्रेम छये॥२॥
बरषे अखिल भुवन में दम्पति रस जस उर भीजये।
करि दिग्विजय निसान बजायौ मंगल करनि सुबीज बये॥३॥
सेवत सदा निकुंज माधुरी श्रीगौरांगी बपु जु ठये[२]।
कमलावती सहचरि मन आनन्द तृन तोरि निरखि छबि जियें॥४॥३॥

श्रीस्वामी कृष्णदास जू कौ पद—

भजौ श्रीस्वामी गोवर्धन देव।
तीव्र बुद्धि संसै सब मेंटत पाद पृष्ठ सज्जन जन सेव॥१॥
त्यागी परम उदार बड़े अति कोई इक जानें बिरलो भेव।
महाप्रतापी प्रगटे अवनि पर राना राव अग्र सिर लेव॥२॥
श्रीस्वामी रसिकदेव परिपाटी गहि लीनी करि टेव[३]।
स्वाद वस्त्र लालच जिन छाँड़्यौ अरु छाँड़्यौ अहमेव[४]॥३॥
इष्ट उपासनि में अति नागर सबकी नष्ट करी अभिरेव[५]।
श्रीकृष्णदास पै करौ अनुग्रह भव वारिधि तें खेव[६]॥४॥४॥

१.भेद, मर्म, रहस्य। २. रचे, बनाये, सजाये। ३. आदत, बान, प्रण, प्रतिज्ञा। ४. अहंकार। ५. आसक्ति, परावलम्बन। ६. पार करो।

श्रीस्वामी विद्यानिधि जू कौ पद— राग–खम्माच, ताल–तिताल, धुनि–अति भली भई

जै जै श्रीगोवर्धन देव महाप्रभु राधा रसिक बिहारी।
दरस परस मन मोद बढ़त नित रस पीवत सुखनिधि सारी।।१।।
सुखरासी हरिदासी रसनिधि बीठलबिपुल बिहारी।
सरस नरहरी रसिक पीताम्बर हरि गोवर्धन धारी।।२।।
इनकी चरन सरन जे आये ते जन बिदित सुखारी।
वृन्दाबन आनन्द बिनोदी हिय बसि नित्य बिहारी।।३।।
जिनके चरन सरन की महिमा आगम[1] निगम[2] बिचारी।
बिद्वत जन बिस्राम न पावैं छकि रहे रूप निहारी।।४।।
भवसागर सब दुख कौ आगर तामें मगन दुखारी।
विद्यानिधि कौं सरन राखि प्रभु भंजे[3] भव भै भारी[4]।।५।।५।।

श्रीस्वामी भगवानदास जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
आस्विन सुदी १०

प्रथम दिवस— **सुनि धुनि मुरली बन बाजै** (पृष्ठ २२ पर देखें)
श्रीकुंजबिहारी हरषि बुलाई (पृष्ठ ८४ पर देखें)
द्वितीय दिवस— **जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू** (पृष्ठ २४ पर देखें)
तू ना करि मान मनोहर (पृष्ठ ८५ पर देखें)
तृतीय दिवस— **(ए)यह कौन बात जु अबही और** (पृष्ठ २६पर देखें)

---

१. शास्त्र। २. वेद। ३. दूर किये, नष्ट किये। ४. कठिन; बड़ा; बहुत ज्यादा; गहरा; भार रूप; कष्टकर।

जै श्री वृन्दाबन बिराजैं (पृष्ठ ८७ पर देखें)

चतुर्थ दिवस— बनी तेरे चारि चारि चूरी करनि (पृष्ठ २८पर देखें)

मनुहारि करैं मनुहारि लला (पृष्ठ ८१पर देखें)

श्रीस्वामी भगवानदास जू की मंगल-बधाई

श्रीस्वामी अमोलकराम जू कौ पद—प्रातः राग-ललित, धीमा तिताला, सायं-राग-पीलू, धमारि

आजु बधाई बजी घन घोर।
प्रगट भई श्रीभगवतदासी घर घर होत है सोर।।
बाजत बीन रबाब तंबूरा नाद मृदंग चित चोर।
जै जै कार भयौ कुंजनि में नाचत मोर चकोर।।
लै लै बधाई आईं कुंजनि तें कोऊ साँवल कोऊ गौर।
सखी अमोलक देखि छबि कौं मगन भई चहुँ ओर।।१।।

श्रीस्वामी रनछोड़दास जू कौ पद—
प्रातः-राग-ललित, धीमा तिताला; सायं-राग-यमन-स्याम कल्यान, ताल-दादरा

आजु बधाई देखौ री माई।
भुव पर प्रगटी भगवतदासी सन्तनि कौं सुखदाई।।
छिन छिन प्रीति नई उपजावति कहा कहौं गुन परत न गाई।
दास रनछोड़ के भये मन चीते बार बार बलि जाई।।२।।

श्रीस्वामी अमोलकराम जू कौ पद—
प्रातः-राग-बिलावल, ताल-चौताल; सायं-राग-खम्माच-तिताल

क्वार सुदी दसमी कौं प्रगटी भगवतदासी उदार हैं।
श्रीहरिदास के बंस उजागर दुखियनि के दुख टार हैं।।१।।
देस देस के भूपति सब ही किये भवसागर पार हैं।
श्रीस्वामी कौ रूप बतायौ गुप्त रहसि सुख सार है।।२।।

पावन पथ निरधारन[1] कारन प्रगटी जीवन अधार हैं।
हरि गुरु संत सेवा बहु कीनीं कीनें ग्रन्थ प्रचार हैं॥३॥
सीत[2] चरनामृत में रुचि बाढ़ी श्रीवृन्दावन प्रान अधार हैं।
तुम्हरी कृपा तें पायौ अमोल धन निधुवन नित्य बिहार है॥४॥३॥

श्रीस्वामी रनछोड़दास जू के पद–

प्रातः–राग–बिलावल; ताल–चौताल; सायं–राग–यमन–स्याम कल्यान, ताल–दादरा

अस्विन सुकल पच्छ दसमी तिथि गादी बिराजे भगवतदासी।
अति आनन्द भयौ सबहिन कें सन्तनि तन मन हियें हुलासी॥
श्रीललितमोहिनी बंस उजागर श्रीहरिदासी चरन उपासी।
करुना सागर सब गुन आगर सन्तनि सेवैं जगत उदासी॥४॥

आजु बधाई देखौ री माई; लागति परम सुहाई।
पतित उधारन भव भय हारन प्रगट भये सुखदाई॥१॥
हम से पतित लिये अपनाई कहाँ लौं करौं बड़ाई।
दीन जानि अपनाइ लियौ मोहिं नहिं कछु साधन भाई॥२॥
ऐसे परम उदार गुरु हरि जो नहिं इनकौं गाई।
उनकी दसा कहाँ लौं बरनौं बँधे कीट[3] मर्कट[4] की नाँईं॥३॥
श्रीहरिदास कृपा बल बरनौं मन बांछित फल पाई।
अब मैं निडर भयौ स्वामी बल दासरनछोड़ चरन रज पाई॥४॥५॥

प्रातः–राग–जोगिया आसावरी, ताल–धमारि; सायं–राग–रास बहार, ताल–तिताला

राधा के प्रसाद के सु बाद भगवानदास

---

१. निर्णय या निश्चय करना; निर्णय, निश्चय। २. उच्छिष्ट; जूँठा, प्रसाद। ३. कीड़े। ४. बन्दर।

पायौ है बरासन जो संतनि ने दीनौं है।
माथुर मुनीस जिन्हैं नवैं दसौं दिसा सीस
आइ तिनहूँ ने निज गुरु मानि लीनौं है।।
पुराचीन संतनि के हाथ के लिखै सुग्रन्थ
छापि हरिदास जू कौं जगत भासि कीनौं है।
लोभी औ कुमारगी ने अनेकनि कपट्ट करी
छानि बीनि सर्व में सौं आपनौं सो चीनौं[1] है।।६।।

झाँसी के पास में सु ग्राम एक अति पुनीत
ताही माँझ जन्म बीस बर्ष बास कीनौं है।
श्रीगुरु की आयसु[2] कौं पाइकैं सुभाइ चित्त
वृन्दाबन आइ संत संग में सु लीनौं है।।
सम्वत उन्नीस सै चारि औ चालीस जानौ
क्वार सुकला दसमी कौं आसन[3] आसीनौं[4] है।
सेवकनि अनेक द्रव्य भेंटी तब आइ आइ
संतनि की सेवा में लुटाई सु प्रवीनौं है।।७।।

❄

श्रीस्वामी राधाचरनदास जू की मंगल–बधाई

बाबा अलबेलीसरन जू कृत पद—श्री गुरु राधाचरन दयानिधि रसिक सिरोमनि परम उदार।
श्रीहरिदास के बंस उजागर दीन जननि के प्रतिपार।।
महाविज्ञ रस रीति गान में संतनि सेवा प्रीति अपार।
भजन भावना लीन महामति सेवत सहज नित्य बिहार।।

---
१. पहिचाना, जानकर अलग किया। २. आज्ञा, आदेश। ३. गद्दी, आचार्य, आसन, सिंहासन। ४. बिराजे, बैठे।

श्रीस्वामी की रहनि रीति रस निरवाहे सदा इकसार।
निसिदिन कुंजमहल रस पागे अलबेली अली उरहार।।१।।

प्रगटी श्री राधाचरन सहेली।
रसिकनि के आनन्द भयौ अति पाई प्रीति रसरीति नवेली।।
प्रियालाल अतिही हुलसाने बिलसत उमँगि हरषि रस केली।
कुंजमहल अद्‌भुत रस छायौ हुलसति प्रिय सहचरि अलबेली।।२।।

नमो श्री राधाचरन कृपाल।
भक्तबत्सल सु करुना सागर नित सन्तनि के महिपाल।।
सहनसील आसय उदार अति गुननिधि परम रसाल।
सुमिरन भजन भावना सूर ज्यौं खोयौ कबहूँ न काल।।
बढ़ी प्रीति सोहनी सेवा में सेवत रजहिं त्रिकाल।
नव नव लाड़ चाव सौं नितही लाड़त ललना लाल।।
रहनी गहनी रस रीति दृढ़ावन प्रगटे इहि कलि काल।
भूरि भाग तें श्रीगुरु पाये ज्यौं नव अलबेली लाल।।३।।

ऐसौ को उदार जग माहीं।
निज जन देखत द्रवैं धेनु ज्यौं उमँगत पयहिं चुचाहीं।।
मृदुल बचन कहि तोष बढ़ावैं पोषत तत्त्व सुनाहीं।
भजन प्रीति रसरीति दृढ़ावैं जुग रस रूप भिजाहीं।।
बिपिन धर्म धन बास बसाबैं गहि करुना बल बाँहीं।
दास अलबेली श्री गुरु अपनायौ दै चरननि की छाँहीं।।४।।

श्रीस्वामी गोविन्ददेव जू महाराज कौ प्राकट्य महोत्सव
कार्तिक सुक्ला १२

प्रथम दिवस–	नव निकुंज ग्रह नवल आगें	(पृष्ठ २७६ पर देखें)
	श्री वृन्दाबन कौ री चोज	(पृष्ठ ६ पर देखें)
द्वितीय दिवस–	प्यारी तेरी महिमा बरनी न	(पृष्ठ २७७ पर देखें)
	स्यामा नागरी हो प्रवीन	(पृष्ठ २६ पर देखें)
तृतीय दिवस–	प्यारी तेरौ बदन चन्द देखैं	(पृष्ठ २७८ पर देखें)
	प्यारी सहज मनै हरि लेति	(पृष्ठ १६ पर देखें)
चतुर्थ दिवस–	प्यारी जू जब जब देखौं तेरौ मुख	(पृष्ठ २७८ पर देखें)
	मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊँ	(पृष्ठ १३ पर देखें)
पंचम दिवस–	प्यारी जू हम तुम दोऊ एक कुंज	(पृष्ठ २७९ पर देखें)
	मनुहारि करैं मनुहारि लला	(पृष्ठ ८१ पर देखें)
प्रातः –	झूमका	(पृष्ठ ३४ पर देखें)

श्रीस्वामी गोविन्ददेव जू की मंगल–बधाई

बाबा श्री स्यामसन्दरदास जू के भेंट के पद–राग–ललित

प्रगटे श्री गोविन्द देव उदार।
रसिक अनन्य प्रेम अवलम्बनि निरखत सुखद बिहार।।
गोरे 7लाल किसोर किसोरी जिनके प्रान आधार।
श्री मथुरादास चरन रज सेवत जानि सकल सुख सार।।१।।

श्री गोविन्द देव महामति आये।
रसिकदेव के आनन्द प्रगट्यौ संत जननि मन भाये।।

श्रीवृन्दाबन फूलनि फूल्यौ लाल प्रियाहि हरषाये।
श्रीमथुरादास के प्रान जीवन धन निरखि हरषि गुन गाये।।२।।

श्री गुरु गोविन्द देव हमारे।
श्री नरहरिदेव कृपा की मूरति धरि पुनि बहुरि पधारे।।
श्रीमुख गोरेलाल प्रसंसित पुनि पुनि बदन निहारे।
सो सुख मथुरा कहाँ लगि बरनें कोटि रसिक कवि हारे।।३।।

राग–बिलावल–

श्री गोविन्दचन्द दुख द्वन्द हरन हित आय अवनितल अति सुख दीनौं।
अति अनुराग सु त्याग प्रिया हित केलि कला रस मन लव लीनौं।।
श्री नरहरि रसिक चरन सरनागत गोरेलाल लड़ाय नवीनौं।
श्री मथुरानाथ निकट ब्रज वैभव सब परिहरि[१] सुखसारहि चीनौं[२]।।४।।

बजत बधाई रसिक निकुंज द्वार।
प्रगटे गोविन्दचन्द अलौकिक बीन मृदंग बजत सुरतार।।
सब सखियनि मिलि मंगल गावति लाड़ लड़ावति नित्य बिहार।
कहत सुनत रसिकनि सुख पावत अपनौ सर्वसु प्रान अधार।।
गुन गन गुनत न इत उत चितवत गौर किसोर कदम्ब निहार।
अद्‌भुत प्रेमदास निजु गावत नव निकुंज सुखसार बिहार।।५।।

बाबा श्री अलबेलीसरन जू कौ पद–राग–पीलू

गावौ री बधाई माई गीत पुनीत।
प्रान प्रिया की सहचरी प्रगटी नित्य केलि रस नीत[३]।।

१. त्यागकर। २. पहिचाना, जानकर अलग किया। ३. लेकर, ग्रहणकर, धन सम्पति।

श्रीस्वामी दामोदरदास जू की मंगल-बधाई राग ललित

सुभ दिन मंगल आज बधाई।
प्रगटे श्री दामोदर सुखनिधि अद्‌भुत रसिक जननि सुखदाई॥
भेलसी गाम बुंदेलखंड में नर नारिन हुलसाई।
अद्‌भुत रूप रंग रस बालकदास हरषि बलि जाई॥१॥

अद्‌भुत आनन्द रंग हिलोर।
साधु संत भक्तनि हित प्रगटे (श्री) दामोदर सिरमौर॥
राव रंक निज जन सुख पावत आनन्द मगन विभोर।
कहँ लगि यह गुन बरनत बालक हरषत लखि चितचोर॥२॥

सब मिलि गावौ मंगलचार। राग भैरवी
श्री दामोदर जन हित आए सुख निधि परम उदार॥
गोरेलाल प्रिया निज कुंजनि प्रगट किये सुखसार।
जानि अजान बालक अपनाये बूड़त लखि मझधार॥३॥

सुखद बधाई गावौरी बीर। राग बिलावल
ललित कृपा तें श्री ललिता के घर प्रगटे दामोदर मति धीर॥
नर नारिन मिलि मंगल गावत नरपति विप्रनि की भई भीर।
श्री हरिकृष्ण प्रेम रस निर्झर श्री दामोदर सर गंभीर॥
आवहु सरन हरन भव बाधा रे नर काहे होत अधीर।
ठाकुरदास लड़ावत निसिदिन हरत हृदय की पीर॥४॥

संतत मंगल जन मन भीतर आनन्द की नहिं सींव सखी री।
श्रीस्वामी दामोदर प्रगटे प्रेम प्रमोद विनोद लखी री॥
धीर प्रसान्त सरस रस अन्तर वर बिहार रस प्रेम चखी री।
बालकदास के श्रीगुरु सर्वस धारि कृपा गुन गाय सखी री॥५॥

श्रीस्वामी किसोरदास जू की मंगल-बधाई

श्री किसोरदास स्वामी अभिरामी रसिक जननि के प्रान अधार।
परम निपुन रसरीति भजन में संत हरि सेवा प्रीति अपार॥
निकुंज रहस्य के अति ही मरमी दृढ़ करि सेवैं सहज बिहार।
श्रीस्वामी सरन सुदृढ़ विस्वासी रहनी रहैं सदा इकसार॥
समाज गान रस कुसल महामति लाड़त लाड़ प्रियाहि उदार।
अहर्निस कुंज महल रस भीने बलि अलबेलि प्रिया उर हार॥१॥

प्रगटी श्री दासि किसोर रंग भीनी॥
रसिक जननि आनन्द अति बाढ़्यौ भई प्रीति रसरीति रंग भीनी॥
लाड़िली लाल अति ही उमँगाने बिलसत केलि महा रंग भीनी।
कुंज महल अद्भुत रस घुमड़्यौ अलबेलि प्रिया हुलसैं रंग भीनी॥२॥

कृपानिधि श्री किसोरदास महाराज ॥
दीनबन्धु सरनागत वत्सल पतित उधारन सब सिरताज ॥
सरल सील आसय उदार अति गुन गन सहज समाज विराज।
भजन भावना लीन महामति सजे प्रेम रस रंग सु साज॥
गोरे लाल नित लाड़ लड़ावत नये नये सुख नव नित साज।
कुंजकेलि रस नित नव भीने अलबेलि प्रिया सखि संगहि राज॥३॥

सोभित अद्भुत प्रिय सखि प्रानं। विरचित नव रस रूप दधानं॥
केलि कला रस अद्भुत पुंजं। गुंजित रस जस मोहन कुंजं॥
ललित कृपा पूरित रस जालं। प्रमुदित रस सर रूप मरालं॥
किसोरी किसोर अंक नव सोहं। अलबेलि किसोर प्रिया मन मोहं॥४॥

*

कुंज कुंज द्रुम बेली उमहीं मधुलिह[1] मधु गुन गीत।
ललितादिक आवनि मनभावनि रसिक प्रियाहिं समीत[2]॥
नित्यबिहार सार घन उनयौ[3] बरष्यौ कुंज अवनीत।
श्रीगोविन्द प्रिया लड़ाइ गाइ गुन अलबेली नव रसरीत॥६॥

श्रीस्वामी बालकदास जू की मंगल-बधाई

राग ललित—

प्रगटे श्रीबालकदास प्रवीन।
धीर गंभीर सरल उर अन्तर भावुक नित्य नवीन॥
दरस करत निज जन सुख पावत सब बिधि सब सुख दीन।
श्रीजमुनादास के भये मन भाये हरि जस मधि लवलीन॥१॥

सुखद बधाई गावौ री माई।
वृन्दाबन घर वृन्दाबन के प्रगट भये सुखदाई॥
भये प्रसन्न सकल पुरबासी हरि जस अमृत गाई।
श्रीकुंजबिहारी गुनत गुन गाथा बार बार बलि जाई॥२॥

घर घर मंगल मंगलचार।
श्रीवृन्दाबन के घर आनन्द प्रगटे बालकदास उदार॥
परम सुसील सब गुन के आगर जीवन प्रान अधार।
श्रीमनमोहन मन भाये पाये छूटे जग जंजार॥३॥

---

१. भ्रमर, भौंरे। २. मिले हुए, संयुक्त, एकत्रीभूत, निरन्तर। ३. झुका, छाया, ऊपर आया, घिर आया, घहराया, गिरने लगा।

राग बिलावल–

श्रीगुरु बालकदास बिराजैं।
श्रीगोरेलाल एकान्त महल में नव नव साज नये नित साजैं।।
जहँ तहँ मन्दिर ठाकुर सेवा सकल प्रबन्ध करैं तिन काजैं।
श्रीजुगलदास पै करी कृपा तब आय बस्यौ श्री निधिबन राजैं।।४।।

बिसिष्ट पद

श्रीस्वामी जू कौ पद– राग–गौरी, ताल–चौताल

नव निकुंज ग्रह नवल आगें नवल बीना मध्य राग गौरी ठटी।
मनौं दस इन्दु पीयूष[१] बरषत सुखद
चपल करजावली[२] दृष्टि पिय की जटी।।
रीझि रीझि पिय देत भूषन बसन दाम[३] उर
रसन[४] दसननि धरत निरखि सारंग[५] कटी।
रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग अंग मिलत
अतन[६] उदोत करत सुरति आरंभटी।।१।।

श्रीस्वामी रसिकदेवजू कौ पद–

मंद मंद गति धरति अवनि पग स्यामा जू देखत बन सोभा।
प्रीतम कौ गहैं हाथ पाछैं निजु सखी साथ चौंर सौं
भौंर उड़ावति निकटि झुकि आवत सौरभ के लोभा।।
कालिंदी के कूल नाना बिधि फूले फूल रहसि कछु
कहत बात मंद मुसिक्यात चितवत चित चोभा[७]।

१. अमृत। २. उँगलियाँ; नख। ३. माला; हार। ४. जीभ। ५. सिंह। ६. कामदेव। ७. चुभना, धँसना, नुकीली चीज का भीतर घुसना; मन में धँसना, बसना, खटकना, सालना; तन्मय; लीन होना।

श्रीरसिकबिहारी रूप उज्यारी[१] बैठे पुलिन
बिछाइ दुकूल आनंद के गोभा[२]॥२॥

श्रीस्वामी जू के पद– राग–स्याम कल्यान, ताल–अद्धा तिताला

प्यारी तेरी महिमा बरनी न जाइ जिहिं आलस काम बस कीन।
ताकौ दंड हमैं लागत है री भये आधीन॥
साढें ग्यारह[३] ज्यौं औंटि दूजे नवसत[४] साज[५] सहजही
तामें जवादि करपूर कस्तूरी कुमकुम के रंग भीन।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी रस बस करि लीन॥३॥

आजु रहसि में देखियत प्यारी जू एक बोल माँगौं जो लिखि देहु।
साखी तेरे नैंन दसन कच कुच कटि नितम्ब जो लिखि देहु॥
प्रीति द्रव्य[६] रुचि ब्याज परस्पर मन बच क्रम करि जो लिखि देहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्यारी पै
बोल बुलाइ लियौ लिखि देहु॥४॥

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

प्यारी जू सुन्दर बदन तिहारौ।
निरखि निरखि प्रीतम सचु[७] पावत निमिषन[*] होत न न्यारौ॥
मंद हास परिहास[८] परस्पर नव नव नेह निहारौ।
श्रीबिहारी बिहारिनिदासि रहसि रस वृन्दाबिपिन बिहारौ॥५॥

---

[*] पाठान्तर– निमिष हू। १. चाँदनी, प्रकाशमयी; चाँदनी वाली। २. लहर; अंकुर, प्राकट्य, अभिव्यक्ति। ३. बारहबानी–शुद्ध सोना। ४. सोलह ५. शृंगार; साज–सजावट का सामान। ६. धन, मूल। ७. सुख, आनन्द। ८. जोर की हँसी, मजाक, हास–विनोद।

श्रीस्वामी जू के पद—राग—कान्हरौ—खम्माच, ताल—झप; ताल—रूपक, धुनि—ऐसी जिय होत

प्यारी जू जब जब देखौं तेरौ मुख तब तब नयौ नयौ लागत।
ऐसौ भ्रम होत मैं कबहुँ देखी न री दुति कौं दुति लेखनी न कागत।।
कोटि चन्द तैं कहाँ री दुराये नये नये रागत[१]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत काम की सांति न होइ
न होइ त्रिपति रहौं निसि दिन जागत।।६।।

राग—सिहानौं, कान्हरौ—खम्माच; ताल—धमारि

प्यारी तेरौ बदन चंद देखैं मेरे हृदै सरोवर तें कमोदिनी फूली।
मन के मनोरथ तरंग अपार सुन्दर्यता तहाँ गति भूली।।
तेरौ कोप ग्राह ग्रसैं लियैं जात
छुड़ायौ न छूटत रह्यौ बुद्धि बल भूली।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा चरन बंसी[२] सौं गहि
काढ़ि रहे लटपटाइ गहि भुजमूली[३]।।७।।

दृष्टि चेंप बर फंदा मन पिंजरा राख्यौ लै पंछी बिहारी।
चुनों[४] सुभाव प्रेम जल अंग स्त्रवत पीवत
न अघात रहे मुख निहारी।।
प्यारी प्यारी रटत रहत छिन ही छिन याकें और न कछू हियारी।
सुनि हरिदास पंछी नाना रंग देखत ही देखत प्यारी जू न हारी।।८।

---

१. रागत— राग उत्पन्न करती हो, गाती हो, अलापती हो। रंजित करती हो, मन को प्रसन्न करती हो, प्रीति, अनुराग युक्त करती हो; आकर्षण करती हो। २. बड़िश, मछली पकड़नें का काँटा। ३. स्कंध, कंधे। ४. चुग्गा।

राग काफी, ताल–धमारि

प्यारी जू हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा रूसैं[1] क्यौं बनैं।
इहाँ न कोऊ हितू मेरौ न तेरौ जो इह पीर जनैं।।
हौं तेरौ बसीठ तू मेरौ और न बीच सनैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी कहत प्रीति पनैं[2]।।९।।

राग परज–मारू मिश्रित; ताल–धीमा तिताला; धुनि–प्यारी तेरी पुतरी

आउ लाल ऐसैं मद पीजे तेरौ झगा मेरी अँगिया धरि।
कुच की सुराही नैंननि के प्याले दारू द्यौंगी यौं अंकौं भरि।।
अधरनि चुवाइ लेउ सब रस तनिकौ न जानि देउ इत उत ढरि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
सुहबत असर जहाँ आपुन हरि।।१०।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद–

नव जोवन लाड़ गहेली[3] प्यारी तू रहति मदन मद छाकी।
रूप रंग रस स्त्रवत माधुरी बदन बिलोकनि बाँकी।।
अति आसक्त अमल मौजनि नैंन प्याले पीयैं लाल रहे झाँकी।
श्रीनागरीदासि रस मत्त बिहारी बिहारिनि नेह निसाँकी[4]।।११।।

राग–पीलू, ताल–धमारि

खेलत कुँवरि कुँवर नवरंगी।
नव निकुंज नवरंग महल सखी गुंजत अलि सुर सरस बिहंगी[5]।।
बाजत ताल रबाब बीन डफ झाँझ मुरज किन्नरि सारंगी।
एकनि कर कठतार अधौटी एक बजावति मधुर मृदंगी।।

१.रूठना। २.प्रण; प्रेम की दृढ़ता। ३.उन्मत्ता, लाड़ बावली। ४.बेखटके, निःशंक। ५.पक्षी; पक्षी समूह।

भरत अरगजा* रंग परस्पर गौर स्याम तन लसत अनंगी।
बिहँसि परस्पर रंग बढ़्यौ अति उड़त गुलाल[□] कुसुम सुरंगी।।
बहत[○] रहत अनुराग निरन्तर सहज सुखद स्वामिनी अंग संगी।
बलि बलि नागरीदासि फूलि मन गावति रस जस प्रेम अभंगी।।१२।।

श्रीस्वामी जू के पद— राग–मारू, ताल–धमारि

अजहूँ कहा कहत है री मारे नैंन आरनि।
भौहैं ज्यौं धनुष चितवनि बाँन बाँफिन फोंक[१]
धरैं कहत स्याम प्यारनि।।
तू ही जीवन तू ही भूषन तू ही प्रान धन यारनि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं मेरु भयौ बिहारनि।।१३।।

राग–भीमपलासी, ताल–धमारि

प्यारी तेरौ बदन अमृत की पंक तामें बींधे नैंन द्वै।
चित चल्यौ काढ़नि कौं बिकच[२] संधि सम्पुट[३] में रह्यौ भ्वै[४]।।
बहुत उपाइ आहि री प्यारी पै न करत स्वै[५]।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी ऐसैंई रहौ[◎] ह्वै।।१४।।

मानि तूब चलि री एक संग रह्यौ कीजे।
तौ कीजे जो बिन देखे जीजे।।
ये स्याम घन तुम दामिनि प्रेम पुंज बरषा रस पीजे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
सौं हिलि मिलि रंग लीजै।।१५।।

---

*पाठान्तर—अरगजा रह्यौ। [□]गुलाल सु। [○]बढ़त। [◎]रह्यौ। १. बाण का पिछला भाग, बाण पिच्छ। २. विकसित, खिला हुआ। ३. ढक्कनदार वस्तु, मंजूषा। ४. मुग्ध; भोया, सराबोर। ५. स्वयं।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग-सोरठ, ताल-धमारि, धुनि-साँझी कौ पद;
धमारि, धुनि-होरी रसरंग गारी

मृदु रस रंग रंगीली नागरी रस रंगे हैं रसिक सुकुँवार।
दोऊ इकरस बैस बिराजहीं सुख साजत बिसद बिहार।।१।।
जै श्रीवृन्दाबिपिन बिलोकहीं सब द्रुम दल बेलि बिकास।
निजु आनंदहि सूचहीं मिलि करत परस्पर हास।।२।।
कुंजावलि कुसुमावलि अलि अवलिन के वृन्द।
कौतिक भूले कौतिकी मिलि पान करत मकरन्द।।३।।
सुमननि सेज सहज सजैं बनि बैठे अंक निसंक।
अंगराग अंग मरगजे मानौं उपजे हैं मदन मयंक[१]।।४।।
कज्जल मंजुल[२] अरुनई मिलि कलित कपोल तंबोल[३]।
यौं हिलि मिलि रस बस भये हँसि मुख मृदु मीठे बोल।।५।।
माँग पाग धसि खसि रही सनि मृगमद सिंदूर।
अति स्त्रमजलनि सिथिल भये बलि राते[४] बदन गरुर।।६।।
दसन बसन रसना रसैं बसि पान करत मन धीर।
उरज करज[५] परसैं हँसैं रस बिबस बिसरि गये चीर।।७।।
इहि रसमत्त मगन भये मनमोहन मिथुन[६] किसोर।
बिपुलबिनोदनि बरषहीं यहै रहनि निसि भोर।।८।।
इहि सुबास रस परसहीं दिन दरसैं केलि कलोल।
सुनि दीन बचन आधीन के यौं लीन भई बिनु मोल।।९।।

---

१. चन्द्रमा। २. सुन्दर, मनोहर। ३.तांबूल, पान। ४. रंगे हुए; अनुरक्त हुए; मुग्ध हुए, लाल रंग से रंगे हुए। । ५.अँगुलियाँ; नाखून। ६. स्त्री, पुरुष का जोड़ा; संयोग।

इनकें अंग संग कौ सुख को कहै अभिकृत[१] अभिसार[२] सिंगार।
श्रीबिचित्रबिहारिनिदासि कें निरवधि[३] नित्यबिहार॥१०॥१६॥

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ पद—

खेलत आजु रसिकबर नवल कामिनी कंत।
नव बन नव निकुंज नित्य नव आनंदहिं न अंत॥१॥
नव द्रुम बेलि केलि नव सुखद तरनिजा कूल।
तहाँ भृंग बिहंग कुलाहला मत्त मुदित मन फूल॥२॥
पुहुप पराग पवन बहै बिलसत नाना रंग।
नव अनुराग नई रति नवल सहचरी संग॥३॥
संच सप्त मधुरे सुर गावत सरस धमारि।
सुनत स्त्रवन मन हरषित नेह नवल सुकुँवारि॥४॥
गौर स्याम रति सागर नागर नवल किसोर।
मौज मनोज मनहीं मन उठत तरंग दुहुँ ओर॥५॥
खेलत अति रस मेलत[✿] रंगभरे सुखरासि।
मदन मुदित दोऊ मिलि[❖] करत परस्पर हासि॥६॥
भृकुटि कटाच्छंनि चितवत प्रिया अंचल की कोर।
स्त्रवत सुधा ससि मानौं मोहन नैंन चकोर॥७॥
रोम हरषि पुलकावलि बिहरत प्रेम गंभीर।
गावत रीझि रिझावत सुघर सुरति मन धीर॥८॥

१. किया हुआ, सब प्रकार से किया हुआ। २. प्रिय से मिलने के लिये जाना; संकेत स्थल; साथी; अनुचर; युद्ध। ३. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार निःसीम। ✿ पाठान्तर—झेलहीं। ❖ मन क्रीड़हीं दोऊ।

कबरी कुसुम केस कटि कसनि कंचुकी छूटि।
सहज सुधा सुंदरबर पीवत अधर मधुर रस घूंटि॥९॥
अंजन अधरनि पीक कपोलनि नखसिख चित्र बनाइ।
अंग अरगजा स्त्रमजल मानौं छिरकत छबि रही छाइ॥१०॥
रहसि रवन तन मन मिलि भये मत्त मगन मद मोद।
तब श्रीहरिदासी सहचरी धाइ धरे दोऊ गोद॥११॥
जै श्री बिपुल बिहारिनिदासि दरसि सेवत नव नव भाइ।
श्री नागरीदासि निरखि दम्पति छबि तोरति बलि जाइ॥१२॥१७॥

श्रीगुरुदेव जू कौ पद— राग-सूहौ बिलावल, ताल-रूपक; धुनि-सुवरन डोल की

नूपुर रव[१] स्त्रवन परी। सुनि स्यामहिं सुधि बिसरी[२]॥
बिसरी सबै सुधि सुनत स्यामहिं पीत बसन कहूँ खसे[३]।
कहूँ मुरली मुकुट कहूँ हरि प्रान प्यारी में बसे॥१॥
जकि[४] थकि[५] रहे तिहिं ठौर। स्त्रोता सुघर सिरमौर॥
स्त्रोता सुघर सिरमौर सुन्दर बिस्वमोहन मोहिये।
सखी कछु आसक्ति सूचत बिबस ह्वै हरि सो हिये॥२॥
नित करत कुंज कौतूह[६]। मिलि सुखद समर[७] समूह॥
मिलि सुखद समर समूह सुर सर स्याम यौं मरमनि[८] हये[९]।
देखि मुरलीधरन की गति गर्व मुरली के गये॥३॥

---

१. ध्वनि, गुंजार। २. भूल गई। ३. खिसक गये, गिर गये। ४. हठ; धुन, रटन; हार, पराजय; जकना—भौंचक्का होना, स्तम्भित होना। ५. थकना—श्रम के कारण शिथिल होना, श्रांत होना, सुध-बुध भूल जाना, लुभा जाना; छकना। ६. लीला, कौतुक, तमाशा, उत्सव, हास्य-विनोद। ७. स्मर, कामदेव; युद्ध, लड़ाई। ८.शरीर के नाजुक अंग, जीवन स्थान, संधि स्थान, हृदय। ९. हने, बेधे।

मोहन मुख मौन धरी। पुनि सुनिवे की साध[१] करी।।
करी साध सुनाइ प्यारी बहुरि चरन चपल[२] किये।
सप्त सुर संगीत वारत रीझि पिय पद उर लिये।।४।।
प्यारी पिय अंक भरे। आनंद आँसू उमँगि ढरे[३]।।
ढरे आनंद अस्त्रु[४] पिय के पलक सौं पल ना लगें।
पाइ सोभासिंधु तन मन मत्त सब जामिनि[५] जगे।।५।।
माधुरी धर बर ब्योम[६]। रसधार बर्षत रोम।।
रोम रोम बसीकरन गुन प्रिया तन सेवत सदा।
नव निकुंज बिहार राजत महामत्त मदन मदा[७]।।६।।
ये नित्य कौतुकी कुँवरि[*] किसोर। जानत नहिं निसि गत भोर।।
भोर जानत नाहिं निसि गत नवल नव रुचि क्रीड़हीं।
अनन्य श्रीहरिदासि अंग संग बिपुल[८] प्रेमनि ब्रीड़हीं[९]।।७।।
ये बन बिहरन प्रेम प्रवीन। नागरी नेह नवीन।।
नागरी नेह नवीन छिन छिन या सुखै कासौं कहौं।
महामधुरे रस उपासक स्वादभेदी[१०] जो लहौं।।८।।
यह रस रसिकनि कौ रस सार। यह रस रूप बिसद[११] बिहार।।
रस रूप बिसद बिहार जिनकें और सुन्यौ न भावई।
जै श्रीबरबिहारिनिदासि रसिकनि हरषि सुजस सुनावई।।९।।

---

[*] पाठान्तर— कुंज। १. इच्छा, कामना। २. चंचल। ३. ढलके, बहे। ४. आँसू। ५. रात्रि, रात। ६. आकाश; परम पद। ७. नशा; उन्माद; हर्ष; गर्व। ८. बड़ा; प्रचुर, अधिक; विस्तृत; रोमांच; श्रीस्वामी बीठलविपुलदेव जी। ९. लज्जित, संकुचित; नम्र–विनीत होते हैं। १०. रहस्य, मर्म, भेद जाननेवाला। ११. स्वच्छ, उज्ज्वल; सुन्दर; विस्तृत; नित्य।

यह रस रसिकनि कियौ है निदान[1]। यह रस सुनहु तजि अभिमान॥
अभिमान तजि भजि सुनहु प्रानी जन्म जन्म के स्त्रम मिटैं।
प्रगट ललिता रूप श्रीहरिदास निज नामहिं रटैं॥१०॥१८॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू कौ पद—राग–आसावरी, ताल–रूपक; धुनि–निकुंज बिराजिये जू

मिलि खेलनि कौं चलि प्रीतम प्यारी जू।
तन मन पीर उठी मनमथ की रोम रोम अकुलानी जू॥१॥
रहसि बहसि हँसि हँसि उर लटकि पुलकि पुलकि लपटानी जू।
सुन्दर स्याम तमाल कनक की बेलि अंग अंग अरुझानी जू॥२॥
हाव भाव आलिंगन चुम्बन देति नहीं अघानी जू।
लेत अवलम्ब[2] अंग मिलि संगम जल थल मिलि सुख मानी जू॥३॥
भूषन बसन सुहाइ न परस्यौ नैंन बैंन सिथिलानी जू।
सुख सागर सूचत संजोगी सीतल सेज सुहानी जू॥४॥
पिय के अंक निसंक लाड़िली मोहन की सुखदानी जू।
निसि बासर कछु जात न जानें काम केलि रुचि मानी जू॥५॥
कबहुँक बदन निहारि बिलोकत बोलत मधुरी बानी जू।
कबहुँक अंग संग मिलि बैठत बिहँसत[3] ज्यौं घन दामिनी जू॥६॥
सखी सहेली सहचरि इह सुख निरखत निपट[4] सबै सयानी जू।
श्रीकिसोरीदासि रसिकनि की जीवन नित्यबिहार बखानी जू॥७॥१९॥

---

१. आदि कारण; कारण; निर्णय; अंत में, आखिर। २. आश्रय, सहारा, भरोसा; लकुट, छड़ी। ३. मुसकराते हैं, बहस करते हैं; स्पर्धा होड़; वाद–विवाद; झगड़ा करते हैं। ४. एकदम, बिल्कुल, अत्यन्त।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—राग–काफी, ताल–धमारि; धुनि–प्यारी जू हम तुम दोऊ;
राग–बिहाग, ताल–धमारि

श्रीवृन्दाबिपिन बिनोद मोद अति रति मन भाई।
पुलिन नलिन नव रंग सुभग जमुना फिरि आई॥१॥
सारस हंस चकोर मोर नृत्तत गति माई।
कमल कुंज कल्पद्रुम लपटि लता ललिताई॥२॥
चित्रित दल फल फूलनि पीत असित अरुनाई।
बिबिध फूले फूल मधुरितु[1] माधिवका[2] मधु आई॥३॥
कूजित कोकिल कीर भीर भृंगनि गुंजाई।
त्रिविध पवन मृदु गवन भवन मन अति रुचिदाई॥४॥
बन बीथी[3] बिचित्र सुरंग अनंग चित्र चतुराई।
रंगमहल मनिमय प्रतिबिंबित धर झाँईं॥५॥
कुसुमित बिमल बितान लाल मुक्तनि छबि छाई।
अद्भुत सखी सुख सम्पति दम्पति देखि सिहाई॥६॥
रतन खचित सारोट[4] सेज सौरभ सरसाई।
बैठे निकुंज झरोखनि बिचित्र बनें बनराई॥७॥
छत्र चँवर जुगराज सजैं सहचरि सुखदाई।
ललितादिक झूमि झुंडनि झूमकि दै दुलराई॥८॥
एक[5] अरगजा सरस सुगंध अबीर उड़ावति आई।
एक बाजे बिबिध बजावति गावति सुरनि सुहाई॥९॥
एक नृत्त गीत संगीत उघटत[6] सब्द सुनाई।
तान तिरप में मान जानि अतिसै सुघराई॥१०॥

---

१. बसंत ऋतु। २. एक लता। ३. पंक्ति, गली; माली। ४. चौकी; चौकी जैसा सिंहासन, सेज। ५. एक झुंड। ६. भेद खोलती हैं; ताल देती हैं।

रुख लै स्वास सुरनि सेवत सखी करत बधाई।
उड़त पराग रह्यौ रमि राग* सुरंग बढ़ाई।।११।।
करत कुंज कौतूहल[1] प्रीतम प्रियहिं रिझाई।
तब कहत प्रिया जू सौं लाल ललित मुख करत बड़ाई।।१२।।
रीझि रसिक बीरी देत बसन भूषन पहिराई।
दोऊ गुन रस रूप अनूप सकल अंग सुन्दरताई।।१३।।
प्रतिबिंबित बिबि बदन बिलोकत अति चपलाई।
अंग अंग पुलकि ललकि[2] मन लालन लेत जँभाई।।१४।।
अति उदार सुकुँवार त्रिषित आतुर अकुलाई।
तब जानि बिबस मनमोहन मानिनि मृदु मुसिकाई।।१५।।
तब हँसि कसि कामिनि कंत लटकि उर कंठ लगाई।
दरसि परसि रस सरस अधरसुधा मधु प्याई।।१६।।
मगन मन मुदित छबीली छबीले लाल लड़ाई।
गए चिकुर चन्द्रिका छूटि कुसुम मनौं मधुप उड़ाई।।१७।।
कहुँ अंजन कहुँ बंदन चंदन चित्र बनाई।
इहि बिधि खेलैं फाग सरस अनुराग सदाई।।१८।।
न जानत कुँवरि किसोर कित निसि नसि जाई।
राग रंग अंग संग बिहरत अति सुख पाई।।१९।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद संग सुरति सहाई।
श्रीनागरीदासि निरखि छबि तृन तोरति बलि जाई।।२०।।२०।।

---

* पाठान्तर—रंग। १.कौतुक, लीला; कुतूहल, उत्सुकता; कुतूहल जगानेवाली वस्तु; अचंभा तमाशा; त्यौहार,उत्सव,आनंद,हास्य–विनोद, हंसी–मजाक। २. बलवती इच्छा, गहरी लालसा, अत्यंत उमंग।

राग–धनाश्री, पटदीप–होरी, ताल–धमारि; धुनि–मेरी सहज रंगीली

मेरे लाल लड़ैती रंग भरे मिलि खेलत छिन छिन होरी हो।
सुरति रंग अंग अंग छिरकत नित नवल छबीली जोरी हो॥१॥
नव गुन रस रूप बिराजहीं कोककला अति जान।
तान तरंगनि मन हरैं मिलि गावत रसिक निधान❀ ॥२॥
प्रेम उमँगि चित चौंप[1] सौं चितवत बिबि[2] मुख सुखरासि।
कर कपोल परसैं हँसैं अंग अंग अनंग प्रकासि॥३॥
पुलकि पुलकि प्रीतम प्यारी लीनैं उर सौं उर लाइ।
महामाधुरी पान कें उपजत नव नव भाइ॥४॥
नवल निसंक अंक भरैं मन मगन भये चित चाइ।
रस सागर नागर नवल क्रीड़त अति सुख पाइ॥५॥
तान तरंग मन भाँवती छबि उपजत रति दुहुँ कोद।
रंग भीनैं लीनैं सहचरी संग बढ़ै बिचित्र बिनोद॥६॥
नैंन मैंन रंग रगमगे[3] मृदु बैंन सिथिल सुकुँवार।
श्रीबिचित्र बिहारिनिदासि कें उर आनन्द करत बिहार॥७॥
सरस सुहागिनि सहचरि नागरी नवल किसोर।
नित नव निकुंज सुख पुंज में मिलि बिलसत निसि भोर॥८॥२१।

राग–सारंग–होरी, ताल–धमारि; धुनि– श्रीगुरु कृपा जथामति

महामत्त मनमोहनी मोहन खेलत हैं रस होरी हो।
प्रेम सहित सेवत सब सम्पति लियें रुख सुख सोई सोरी हो॥१॥

❀ पाठान्तर–निदान। १. इच्छा, चाह; चाव; उमंग; बढ़ावा। २. दो, दोनों। ३. रंजित; रंगा हुआ; आनन्द–मग्न।

सखी बाजे बिबिध बजावैं मधुरे सुर गावैं सहचरी चहुँ ओरी हो।
सुक पिक भृंगनि राग रह्यौ रमि सुर देत हैं मोरा मोरी हो।।२।।
मौज मनोजनि चोज लाड़िली लाल लेत चितै चित चोरी हो।
सौरभ सरस अंग अंग अरगजा छिरकत छबि स्यामा गोरी हो।।३।।
छन्द[1] बन्द[2] तकत छबीले इत भामिनि भेद भृकुटी भरि भोरी हो।
सुर स्वाँसनि कसत हँसत कहि कहि रीझि रीझि कहत हो हो होरी हो।।४।।
अंग संग सुरति हिंडोरें झूलत फूलत उर कर चिबुक टटोरी हो।
अद्भुत रंग अनंग प्रेम रस बिहरत कुँवर किसोरी हो।।५।।
दोऊ लटपटात घूमत मद झूमत नैंननि नेह निहोरी❀ हो।
मधु मकरन्द दुलहिनी दुलहु पीवत मुदित मधु□ घोरी हो।।६।।
फूले बदन कमल लोचन मानौं मधुप पराग प्रेम रंग रोरी हो।
रगमगे बसन कसन कंचुकी छबि बिथुरी अलक कच डोरी हो।।७।।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि सुखद रति बरनें ऐसौ कवि को री हो।
रहैं मगन○ दासि श्रीनागरी नागर नव अविचल यह जोरी हो।।८।।२२।

झूलत फूलत लाड़िले मिलि अंग संग सुरति हिंडोरैं।
आभूषन बाजे बाजहीं मधुर मधुर सुर थोरैं।।१।।
सप्त सुरनि राग रमि रह्यौ गावैं हँसैं संग सहचरी चहुँ ओरैं।
मदन मुदित मन मानिनी नव नेह सौं नवल निहोरैं।।२।।

❀ पाठान्तर—नयौरी। □ अधर सुधारस। ○ मगन रस। १. इच्छा; अभिप्राय; अभिलाषा; वश्यता; छल; धोखा; उपाय; मनोरथ; गुप्त; प्रसन्नता। २. बंद-बंधन; छंद-बंद-छल-बल, कपट; धोखा, छल।

बचन रचन सुनि लाल* कें प्यारी मुसिकत हैं मुख मोरैं।
दुलहु दुलहिनि लाड़ही+ नव रंग अनंगनि रोरैं[१]।।३।।
बिबि बिधु बदन बिलोकहीं रंगे लोचन ललित चकोरैं।
मैंन ललकि पलक न लगैं यौं हँसि हँसि चिबुक टटोरैं।।४।।
हाव भाव चित चौंप सौं कंचुकी छन्द बन्द छबि छोरैं।
छबि सौं छैल छबि छिरकहीं अंग अरगजा रंग घोरैं।।५।।
मौज मनोजनि चोज सौं छुटैं भृकुटी कटाच्छि झकोरैं।
रीझि रसिक रस बस भए सौरभ रससिंधु हिलोरैं।।६।।
अधरसुधा मधु माधुरी पीयैं जीयैं मुख सौं मुख जोरैं।
फूले अलि पराग अनुराग सौं रति रगमगे हित चित चोरैं।।७।।
यौं बिहरत नवल निकुंज में राजैं सुभग साँवल तन गौरैं।
श्रीबिहारिनिदासि लड़ावहीं भई बिपुल प्रेम मन भोरैं।।८।।
जै जै श्रीहरिदासि प्रताप तें सुख लह्यौ सरस सिरमौरैं।
श्रीनागरीदासि बलि बलि हौं तुम नित नवल किसोरैं।।९।।२३।।

राग-काफी, ताल-धमारि; धुनि-रसभीने बिहारी; राग-काफी,धनाश्री होरी (बना) ताल-धमारि

लाल मनमोहिनी हो।
काम कुंज कल कौतिकी मनमोहनी हो मनमोहन मन हरि लेत।
अद्भुत रूप अनुपम छबि प्यारी पियहिं सहज सुख देत।।१।। लाल०।।
केस कुसुम कबरी[२] लसैं मोतिन मंग अभंग।
अलक झलक स्त्रवननि खुभी बेंदी बिचित्र सुरंग।।२।।

---

* पाठान्तर—स्याम। + लाड़िली। १. धूमधाम; चहल-पहल; आन्दोत्सव; समेटना; चयन करना।
२. वेणी; चोटी।

भ्रूभंग तरङ्ग अनंग नचैं ललित गति लोचन लोल।
नासिका नथ निरखि कें ललित लाल लियें मोल॥३॥
अरुन अधर दुति दसन की चिबुक चारु स्याम बिन्दु।
झलक कपोलनि छबि छई बारौं कोटि रवि इन्दु॥४॥
चित्रित चोली उर लसै कंठ जगमगति पोति।
मृदु मनि लाल गुलाल की द्वै लर मोतिन जोति॥५॥
बाहु बिचित्र बलय* लसैं कृस कटि किंकिनि जाल।
पग नूपुर मनि चूरा लसैं गति मोहत⌝ मत्त मराल॥६॥
सारी सुवन[१] लहँगा लसै स्याम सुभग गोरे गात।
निरखि नव नैंन सिरात स्याम खेलन कौं अकुलात॥७॥
निरखि हरषि बरषत सुखै हँसि कसि काम किसोर।
लाल उदित मदन मन मुदित ह्वै छुवैं अंचल छबि छोर॥८॥
हँसत लसत लाल रुख लियें कहत मधुर मृदु बैंन।
बहँसि❖ रहसि रस रंग बढ़्यौ सैंन मैंन सुख चैंन॥९॥
चारु चितै चित वित हरैं मिलि अंग अंग सलोल।
बिहरत भुज डाँड़ी गहैं झूलैं झूलैं सुरति रंग हिंडोल॥१०॥
सौरभ सरस अंग अरगजा छिरकि मुख उरज सरोज।
स्त्रमजलकन छबि छीटैं फबी अंग मौज मनोजनि चोज॥११॥
अंग अंग रति प्रेम सौं मन तरंग झोंटा देति।
रीझि बसन भूषन अलकैं छुटीं बारौं मोती कुसुम समेति॥१२॥

---

*पाठान्तर—बलया। ⌝मोहन। ❖बिहँसि। १. पुष्प, फूल।

उदार अधर मधु* माधुरी प्याइ पीवत कुँवरि किसोर।
रस बस मत्त मगन भये नहिं जानत निसि भोर॥१३॥
कपोल पलक रंगे पीक सौं अधर अंजन अनुराग।
सुरति खेल अति रंग रह्यौ सरस रस फाग सुहाग॥१४॥
सेवत सुख रुख सहचरी ललित जै श्रीहरिदासि।
श्रीबिहारीबिहारिनिदासि अंग संग फूलत बलि नागरीदासि।१५।२४।

छबीली नागरी हो।

सारी सुमन सीस फूल राजैं मोतिन मंग सुरंग।
कबरी कुसुम करन फूल झलमलैं अंग अंग॥१॥
आनन अलकावली छबि बेंदी भृकुटी भाल।
अरुन अधर दसननि दुति लोचन लोल बिसाल॥२॥
नासा मनि चिबुक चारु कंठ जंगाली[1] पोति।
कुच कमल कंचुकी चित्रित द्वै लर मोतिन जोति॥३॥
बाहु बलय लहँगा लसैं कटि नूपुर रव जु रसाल।
लटकि चली पग प्रेम प्रिया मोहे○ मत्त मराल॥४॥
बैठी सौरभ सुख सेज पर पोषति प्रिय प्रान।
रोंम रोंम सींचत रसै दै अधरामृत पान॥५॥
हँसत लसत प्रेम मुदित उदित अति उदार।
परसि सरस सुरति रंग बर बिचित्र बिहार॥६॥
अंग अंग माधुरी तरंग सुंदरी सुकुँवारि।
अद्भुत मौजनि चोज रहत नित नागर नैंन निहारि॥७॥

---

* पाठान्तर—मृदु। ○मोहन।१. तूतिया, नीला थोथा; नीली।

श्रीकुंजबिहारी बिहारिनिदासि सुप्रेम प्रकासि।
नव नव रति रंग महल सेवैं श्रीनागरीदासि॥८॥२५॥

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद– राग–काफी धमारि; टोड़ी अहीर भैरौं, धमारि

अद्‌भुत रस की खानि सदा सुखदानि बिहारिनि रानी।
जीवन मूरि बिहारी कौ धन वृन्दाबन रजधानी॥१॥
आदि न अन्त सनातन अविचल सहज सुभाव सुमानी।
नागर अति सुकुमार नवल नित रसिकसिरोमनि जानी॥२॥
कोक कला संगीत लाल कौं सिखवति गति रस सानी।
रूप बयस गुन की मरयादा पटतर कौं नहिं आनी॥३॥
सेष गिरीस मेरु मन्दर हिम कंदर में तप ठानी।
ग्रीवाँ सींव सकल सोभा की गोत कपोत उड़ानी॥४॥
मेचक चिकुर सुचारु नीलमनि नीरद छबि न तुलानी।
बेंनी बनक बिसाल ब्याल अलकावलि अलि अलगानी॥५॥
भृकुटी कुटिल बिलोकि काम कोदंड खंड भयौ मानी।
स्त्रवन स्त्रवन सुनि गमन गगन में मगन भई ससि रानी॥६॥
बदनचन्द्र कौं देखि सुधाकर घटत बढ़त भय मानी।
खंजन कंज मीन मृग नैंननि सकुचि दुरे बन पानी॥७॥
नासा निरखि सुमन तिल सूखौ कीर पीर उर आनी।
ललित कपोल गोल दरपन मन भये मधूक मलानी॥८॥
अधरबिम्ब दाड़िम दसननि दुति कुंदकली कुम्हिलानी।
बचन रचन मुसिक्यानि कोकिला दामिनि घन लपटानी॥९॥

चिबुक चखौंडा चारु बिराजत गुदना गंड गुमानी।
रस सिंगार रह्यौ रजनी में मानस मदन महानी।।१०।।
कम्बु कंठ की रेख देखि त्रै करत समुद तनु हानी।
चक्रवाक श्रीफल उरोज तरु सर सेवत बिलखानी।।११।।
बाहु मृनाल भोग भोगी के अंगुल मूँग मुरझानी।
अतिसय भीति अभीत न अबलौं बिबरनि पंक परानी।।१२।।
चलदल उदर त्रिवेनी त्रिवली तलफत समुद समानी।
नाभि गंभीर सभौंरि* सुधासर कियौ पताल पयानी।।१३।।
बिपुल नितम्ब चक्र रति रथ के पृष्ट पट्टिका भानी।
चाल मराल द्विरद केहरि कटि अटवी अटत अमानी।।१४।।
जंघा कदलि देख कम्पै अति गुल्फ गुलाब गलानी।
चरन अरुन तल ललित दिवाकर भ्रमत स्त्रमित हत मानी।।१५।।
कंचन तनु लजि परत अगिन में नख नछत्र नभ थानी।
उमा रमा रति सची सरस्वती सहित सुहाग बिकानी।।१६।।
सुरतरु कामधेनु चिंतामनि वारि दिये देव दानी।
अष्टसिद्धि नवनिद्धि बापुरी कौन करै सनमानी।।१७।।
षटरितु बारह मास रैंनदिन रहत एकरस सानी।
सेवत स्याम सकाम स्वामिनी स्यामा नेह निधानी।।१८।।
सब ऐस्वर्य छिपाइ पाँइ परि दीन भयौ अभिमानी।
प्रगट कियौ माधुर्य मधुर रस रसिकनरेस निसानी।।१९।।

---

* पाठान्तर– सभीर।

नेति नेति निगमागम गावत पावत नहिं बुधि बानी।
श्रीभगवतरसिक रसिक सखियनि संग अँखियाँ निरखि सिरानी।२०।२६।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद– राग–बिलावल, ताल–धमारि

बदन इन्दु दोऊ रूप सुधा में नैंन चकोर।
पीवत तृपति होत नहिं प्रीतम सद[1] जोवन रति जोर।।१।।
निरखि निरखि आनन्द रस बरषत हरषत हियें हिलोर।
नीबी[2] नाभि निरखि पिय आतुर चातुर उरसनि[3] फेरत मोर।।२।।
स्वामिनी देखि मन्द मुसिकानी मोरि नैंन की कोर।
भौंहनि मान देखि पिय डरपे कर जोरि चरन की ओर।।३।।
करुनासिन्धु उदार लाड़िली भुज भरि कसे किसोर।
कदली जंघ मध्य सुख आसन बिहँसत तड़ित मंद घन घोर।।४।।
अंजन अधर पीक नैंननि में मानौं चोबा कुमकुम बोर।
गंडनि[4] खंड[5] रदनि[6] छबि राजैं मदन बिनोद मोद की ओर।।५।।
रतिपति मिलै रूप को बरने चित्र बिचित्र हरत चित चोर।
श्रीललितकिसोरी अद्भुत जोरी अचल बिहार रंगे निसि भोर।६।२७।

राग–मल्हार, ताल–तिताल

जुगल बिहार किसोर किसोरी। श्री वृन्दाबन नित्य ही जोरी।।
ललित भाव में निसिदिन रहैं। हँसि हँसि कें दोउ बातें कहैं।।१।।
हमकौं है हरिदासी प्यारी। तन मन बचननि अति हितकारी।।
जो याहि रुचै सोई अब कीजै। याकौ सुख याही कौं दीजै।।२।।

---

१. सद्य, तुरन्त, ताजा, नया। २. लहंगे के नेफे की डोरी, नाड़ा। ३. खोंसा जानेवाला अंचल का छोर; खोंसनी। ४. गालों। ५. भाग; चिह्न। ६. दाँतों।

यह तौ हम हमही यह आहि। याकी पटतर दीजै काहि।।
यहै बात निजु हिय में धारैं। अंग संग नित्य बिहार बिहारैं।।३।।
कृपा दृष्टि जब प्रिया निहारैं। रीझि रीझि पिय प्राननि वारैं।।
उमँगि उमँगि अंकौं भरि लेहीं। रोम रोम सचु पावैं जेहीं।।४।।
महा मत्त उनमत्त छबीले। कुंज महल राजैं गरबीले।।
काम केलि रस भोये रहहीं। श्रीललितकिसोरी यह सुख लहहीं।५।२८।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजू के पद— राग–सिहानौ, कान्हरौ–खम्माच, ताल–झप; राग–जैजैवंती

आजु तौ छबीली राधे रस भरी डोलहीं।
साँवरे पिया के संग भीजी है मदन रंग
मोद की उमंग अंग गुन गथ[१] खोलहीं।।
जैसें दामिनी घन माहीं ऐसें भामिनी तन माहीं
लखि आपनी परछाहीं हँसि हँसि बोलहीं।।
भगवत लालबिहारी पाई है कहाँ बर नारी
गुन रूप बैस हमारी करत कलोलहीं।।१४।।२९।।

प्यारी जू की सहज अटपटी बोलनि।
हो पिय तुम उर बसी कौन तिय पहिरै नील निचोलनि।।१।।
हमहूँ तें गुन रूप आगरी पाई कहाँ बिन मोलनि।
बड़े बड़े नैंन अरुन कजरारे बिथुरी अलक कपोलनि।।२।।
स्रम जल बूँद मनोहर मुख पर लसत उरज नख छोलनि[२]।
उमँगि उमँगि सन्मुख आवति मनभावति करति कलोलनि।।३।।

१.सम्पत्ति, पूँजी, धन। २. क्षत चिह्न।

रति के चिह्न देखियत अंग अंग रंजित अधर तमोलनि।
भगवतरसिक कहौ तुम साँची नाहिं करौं अनबोलनि॥४॥३०॥

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

माई आजु तौ बिराजैं बर सुन्दर बिहारी जू।
निरखत नैंन जियैं प्रेम रस पान कियैं
बिलसत चित दियैं अति हितकारी जू॥
रीझि रीझि अंक भरैं प्राननि सौं प्रान अरैं
सुख कौ समूह धरैं* परम उदारी जू।
ललित आनन्द पाइ मिलै दोऊ इक भाइ
छिन छिन बाढ़ै चाइ[1] रूप की उज्यारी जू॥३१॥

प्रिया जू की चितवनि प्रेम की सुधारी है।
चितवत चित्त हरैं प्राननि आनन्द करैं
ताही रंग भए आली देह सुधि हारी है॥
लपटि महा रस बेलि ललित सुखद झेली
बिबस बिहार बाढ़्यौ रूप एक सारी है।
नवल निकुंज दोऊ जानत न कौन कोऊ
दासी हरि सावधान रीझि रीझि वारी है॥३२॥

जै जै जै वृन्दाबन आनन्द चन्द। जिनकी कृपा सदा आनन्द।
जामें बिहरैं प्रिया लाल कन्त। प्रेम मगन भये खेलैं बसन्त॥१॥

* पाठान्तर—ढरैं। १. चाय, चाउ, चाव—तीव्र इच्छा, चाह; शौक, प्रेम, अनुराग, उमंग, उत्साह।

रसिक सिरोमनि बाल प्रवीन। छिन छिन अद्भुत रूप नबीन।
तन मन बचननि प्रीतम लीन। सबबिधि सब सुख तिनकौं दीन।२।
श्रीहरिदासी कौ जस गावै। सोई इनकौं निज करि पावै।।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावै। कुंजबिहारिनि के मन भावै।३।३३।

जय जय श्रीहरिदासि रंगीली की।
जिनके बल बिहरत दोउ प्रीतम अद्भुत छैल छबीली की।।
जिनकी हँसनि कुँवरि कौं मोहै सदा रहत गरबीली की।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि याही रस अरबीली[1] की।।३४।।

श्रीस्वामी नरहरिदेव जू कौ पद—

सखी आज बने पिय साँवरे।
रूप अनूप अधिक छबि राजत कुटिल केस मनौं भाँवरे।।
टेढ़ी पाग ग्रीवा कटि टेढ़ी चितवनि की बलि जाँवरे।
श्रीनरहरिदासि पिय की छबि निरखत प्यारी रूप समाँवरे।।३५।।

श्रीस्वामी रसिकदेव जू कौ पद—

प्यारी जू तैं मोहिं मोल लियौ।
तेरी कृपा (तें) मदन दल जीत्यौ तेरौ जिवायौ जियौ।।
उमड़ी सैन महा मन्मथ की तैं अधरामृत दियौ।
श्रीरसिकबिहारी कहत दीन ह्वै धनि स्यामा कौ हियौ।।३६।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

जै जै जै श्रीनिधिबन राज।
गौरस्याम कौं अति सुखदाई सब बिधि करत दुहुँनि के काज।।

---

१. निरंकुश, गर्वयुक्त, अड़ियल, अड़नेवाली।

महारूप रसरासि छबीले अद्‌भुत जामें प्रेम समाज।
श्रीकुंजबिहारिनि ललित रसिकबर तुमहीं कौं है हमरी लाज।।३७।।

श्रीनिधिबनराज की जै रहिये।
जामें नित्यबिहार निरंतर काम कहानी कहिये।।
श्रीहरिदास सुभायक* अंग संग और कहा हमें चहिये।
श्रीकुंजबिहारिनि प्रानपियारी□ उमँगि उमँगि दुलरैये।।३८।।

हमारौ महल सदा सुखदाई।
प्रियालाल कौं रंग बढ़ावत छिन छिन प्रीति सवाई।।
छलकत छींट परी आनंद की ब्रज में नाहिं समाई।
यह गुप्त रीति हरिदास प्रगट करी रसिकनि के मन भाई।।३९।।

परसाद बिहारिनि रानी कौ।
अति आनंद बढ़ै छिन ही छिन महाप्रेम सुखदानी कौ।।
जाकी सोभा कहत न आवै अद्‌भुत रूप निमानी[1] कौ।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननिमनि जानी कौ।४०।

सरि कौन करै मेरी प्यारी की।
जाकौ रूप रूप कौं मोहै पलक न लगै बिहारी की।।
अद्‌भुत प्रीति* देखैं बनि आवै तन मन अति हितकारी की।
श्रीकुंजबिहारिनि ललित लाड़िली जीवनि प्रान हमारी की।।४१।।

नमो नमो जै श्रीवृन्दाबन रस बरषत घन घोरी।
नमो नमो जै कुंजमहल नित नमो नमो जामें सुख होरी।।

---
* पाठान्तर—सहायक। □ ललित लाड़िली। * छबि। १. नम्र, विनयशील; निमान–जलाशय, सरोवर।

नमो नमो जै कुंजबिहारिनि नमो नमो प्रीतम चित चोरी।
नमो नमो जै श्रीहरिदासी नमो नमो इनही की जोरी।।४२।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू के पद—

जै जै श्रीवृन्दाबन सुखदाई।
ललित लता झूमी द्रुम बेली मनिमय रज कूर्पर सुहाई।।
त्रिबिध पवन मन भवन मधुप कूजत पंछी जमुना रस छाई।
कुंजमहल कुसुमित* सिज्या पर बिहरत कुँवर कुँवरि सुखदाई।
श्रीललितादिक निरखति हरषति नित जै जै श्रीवृन्दाबन सुखदाई।४३।

अद्‌भुत बिबिध भाँति बन राजैं।
बिमल कमल कर्पूर पुलिन रज सेवत जल जमुना जुगराजैं।
मृदुमनि भूमि खचित कंचनमय मनसिज सुमन सेज* सुख साजैं।।
नव निकुंज बिहरत दोउ प्रीतम श्रीनागरीदासि सहचरिन समाजैं।
भृंग बिहंग सरस सौरभता अद्‌भुत बिबिध भाँति बन राजैं।।४४।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

एरी मेरौ वृन्दाबन सुखधाम।
प्रिया लाल कौं लाड़ लड़ावत सब बिधि पूरन काम।।
महा प्रेम सोभा कौ सागर रोम रोम अभिराम।
श्रीललित रसिकबर जू की जीवनि कुंजकेलि बिश्राम।।४५।।

जै जै श्रीबनराज हमारे।
जिनकी कृपा बिहार बिलोक्यौ श्रीहरिदास सम्हारे।।

---

* पाठान्तर—कुसुमनि। *सैंननि।

छिन छिन नई नई प्रीति प्रिया की प्राननि हूँ तें प्यारे।
श्रीरसिकसखी अंग संग सहजही कबहूँ होत न न्यारे।।४६।।

माई धामिनि कौ धामी धाम धाम वृन्दाबन हैं।
प्रियालाल रंगभरे राजैं सदाई जहाँ
एक जिय एक प्रान एक तन मन हैं।।
महारूप रस रास सुख के* बिलास दोऊ
मिले रस सिंधु आनंद के घन हैं।
ललित हिये में आई लालन की भई भाई
रोम रोम फूले ऐसे पाये रंक धन हैं।।४७।।

जै जै श्रीवृन्दाबन चंद।
महारूप सुखरासि छबीले नित ही□ बिहरत आनंद कंद।।
जामें बसि जे अनत देत मन तेई हैं अति ही मति मंद।
रसिक सिरोमनि श्रीहरिदासी कीनें सहज प्रेम के फंद।।४८।।

अनन्यनि कौ धन कुंजबिहारी।
श्रीहरिदास प्रेम रस सागर सोभित अंग संग प्रीतम प्यारी।।
श्रीबिपुलबिहारिनिदास प्रगट नित सरसदास सुख की बरषा री।
श्रीनागरी नरहरि रसिक कुल मंडल जीवन प्रान सुकेलि हमारी।४९।

भजि मन श्रीस्वामी हरिदास।
रसिकसिरोमनि आनंद की निधि कुंजमहल में बास।।

---

* पाठान्तर—केलि। □जहाँ।

निरखैं कुंज केलि माधुरी सदा पियारी पास।
श्रीललितकिसोरी परम लाड़िली बिलसत प्रेम बिलास।।५०।।

श्रीगुरुदेव जू के पद–

को सरि करै हमारी राधा।
जद्यपि नाम महातम सेवत और बैस या रस में बाधा।।
अंग संग नवल किसोरकिसोरी एक बैस रससिंधु अगाधा।
जागत अनुरागत निसिबासर लगत न नैंन निमेष न आधा।।
नित्यबिहार अधार हमारें एक प्रेम निज नाम अराधा।
श्रीबिहारीदास हरिदास बिपुल बल
सब अभिलाष मिली सुख साधा।।५१।।

जै श्रीवृन्दाबन घन नव निकुंज में संतत सहज बिराजत जोरी।
अति अगाध महिमा रस जिनकौ सो पैयत इक कृपा किसोरी।।
सुक नारद से भक्त मुक्त सनकादिक सुहृदनि हूँ तें चोरी।
श्रीबिहारीदास जस कहैं कहाँ लौं रसना सहस तऊ मति थोरी।५२।

कहत स्याम स्यामा सौं मोकौं दरसन देत रहौ जू।
अंचल अलक पलक सु निरंतर यह संकोच सहौ जू।।
यह बिनती मानिये स्त्रवन सुनि नाहिंन बचन कहौ जू।
श्रीबिहारिनिदासि कहत रुख लियें यह सुख सहज लहौ जू।।५३।।

श्रीस्वामी सरसदेव जू के सवैया

जै जै श्रीनागरीदासि कौं सेऊँ।।
अति दुर्लभ सार बिहार गह्यौ जु लह्यौ नहिं नारद बेद न भेऊँ।
जा रस कौं बस नाँहिं रमापति पावैं नहीं सनकादिक तेऊँ।।

ता रस की अधिकारिनि जानि
श्रीबिहारिनिदासि की दासि सु लेऊँ।।
सरस परस कौ स्वाद कहैं सुनि
जै जै श्रीनागरीदासि कौं सेऊँ।।५४।।

माया महामद मोह बिषै लियें लोभ की लाठ फिरै अररानी।
कहूँ धीरज धर्म बिवेक रह्यौ नहिं मारि किये सब कीच की घानी।।
जीव सु रंक कहा बपुरा सुक सनकादिक नारद हूँ भै मानी।
सरस सु दासि गरीब भलैं लियैं
राखि कृपा करि कुंज की रानी।।५५।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

रस में रस पियें कुंजबिहारी।
रस की बात घात पुनि रस की रस ही सौं रस दृष्टि निहारी।।
रस की प्रीति रीति सब रस की रस ही उमँगत सहज हिया री।
रस की सखी रसिक हरिदासी रस
भयौ ललितप्रिये उर हारी।।५६।।

हमारे धन वृन्दाबन प्यारी।
खरचत खात घटै नहिं कबहूँ बाढ़त
छिन छिन अति अधिकारी।।
ताही कौ अभिमान सदाई ताही बल बस कुंजबिहारी।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि प्रान प्रान मिलि कीनी यारी।।५७।।

राख्यौ लाड़ बिहारिनि रानी।
जोई* रुचै करै पुनि सोई क्यौं न करै लालै सुखदानी।।

*पाठान्तर—जोई–जोई।

कुंजमहल कौ राजतिलक दियौ महाप्रेम अति रस में सानी।
बार बार हँसि कहत लाड़िली ललितकिसोरी मो मन मानी।।५८।।

श्रीहरिदास सरन जे आये।
कुंजबिहारी* ललित लाड़िले* अपने जानि निकट बैठाये।।
कुंजकेलि निरखैं निसिबासर अति आनंद हिये में छाये।
दासिबिहारिनि सब सुखरासी प्रानप्रिये हँसि कंठ लगाये।।५९।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के पद–

हमारी जीवन जुगलकिसोर।
कुंजबिहारिनि कुंजबिहारी नित नव जोवन जोर।।
भूलि न जाऊँ पलक कहूँ इत उत रहौं निरतंर पासा।
दंपति संपति दिन दुलराऊँ और न दूजी आसा।।
रूपमाधुरी दृगनि पियाऊँ स्त्रवन रसीली बानी।
अंग संग उद्‌गार[१] नासिका तीनौं ताप सिरानी।।
असन[२] करौं उच्छिष्ट[३] दुहुँनि कौ भूषन बसन उतारें।
श्रीभगवतरसिक मनाय लाड़िली करौं लाल दृग तारे।।६०।।

हमारी संपति दंपति केलि।
दिन दिन बढ़त घटत नहिं कबहूँ सुखसागर की रेलि[४]।।
अतुलित अमित अनूपम अद्‌भुत रस की ठेलाठेलि।
श्रीभगवतरसिक दृगनि में दीनी स्यामास्याम सकेलि[५]।।६१।।

---

* पाठान्तर–कुंजबिहारिनि। *लाड़िली। १. भीतर से बाहर निकली हुई; प्रगट हुई। २. भोजन। ३. जूँठा, प्रसाद। ४. प्रवाह; अधिकता; समूह; पंक्ति; धावा, आक्रमण। ५. समेटकर, एकत्रकर।

मेरी महारानी श्रीराधा रानी।
जाके बल मैं सब सौं तोरी लोक बेद कुल कानी।।
प्रानजीवन धन लालबिहारी कौ वारि पियत नित पानी।
श्रीभगवतरसिक सहायक सब दिन सर्वोपरि सुखदानी।।६२।।

सब सुख सदन बदन तुव राधे।
उपमा कमल ससी नहीं पावत भीत मान अपराधे।।
मृदु मुसक्यानि हरत मन नैंननि बंक बिलोकनि ही दृग आधे।
लेत बलाय दुहूँ कर भगवत रसिकसिरोमनि गुननि अगाधे।।६३।।

जावक जुत जुग चरन लली के।
अद्भुत अमल अनूप दिवाकर मोहन मानस कंज कली के।।
मंजुल मृदुल मनोहर सुखनिधि सुभग सिंगार निकुंज गली के।
सुरतरु कामधेनु चिंतामनि भगवतरसिक अनन्य अली के।।६४।।

तुव मुख चंद चकोर ये नैना।
अति आरत अनुरागी लंपट भूल गये गति पल हूँ लगै ना।।
अरबरात मिलिवे कौं निसदिन मिलेई रहत मनौं कबहू मिले ना।
श्रीभगवतरसिक रसिक की बातैं
रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना।।६५।।

सोभा सिंधु निधुबन और।
निरखि नख सिख माधुरी मंजुल महल की पौर।।
करत सब रस बारता बाँके रसिक सिरमौर।
भाँवती भगवतअली लीनें भुजनि भरि दौर।।६६।।

हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुंजमहल के बासी।
नई नई केलि बिलोकैं छिन छिन रति बिपरीत उपासी।।
बीरी बसन सुगंध आरसी रुख लै करत खवासी।
देत प्रसाद प्रेम सौं हँसि हँसि कहि कहि भगवतदासी।।६७।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद–

बंदे श्रीवृन्दाबन की भूमि।
ललित लतनि कुंदनमनि खाँची बेलि द्रुमनि रहीं झूमि।।
केलि निकुंज नागरी नागर बदनचंद कौं चूमि।
श्रीरसिक रूप दंपति छबि संपति सुरंग रंग अलि घूमि।।६८।।

कीजै रंगमहल की दासी।
स्यामा स्याम केलि अवलोकौं श्रीहरिदासी पासी।।
बिबिध बिहार सार सुख सजनी बिपुल बिहारिनि आसी।
सरस नागरी नरहरि रसिका ललित सु चरन उपासी।।
वृन्दाबन की सहज माधुरी श्रीस्वामी परकासी।
रूप अनूप निरखि छबि अद्‌भुत महामधुर मृदु हासी।।६९।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के पद–

भाग बड़ौ वृन्दाबन पायौ।
जा रज कौ सुर नर मुनि बंछित बिधि संकर सिर नायौ।।
बहुतक जुग या रज बिनु बीते जन्म जन्म डहकायौ।
सो रज अब कृपा करि दीनी अभय निसान बजायौ।।
आइ मिल्यौ परिवार आपनौ हरि हँसि कंठ लगायौ।
स्यामा स्याम जू बिहरत दोऊ सखी समाज मिलायौ।।

सोक संताप करौ मति कोई दाव भलौ बनि आयौ।
श्रीरसिकबिहारी की गति पाई धनि धनि लोक कहायौ।।७०।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद—

मैं तौ हरिदास नाम रंग राता।
नख सिख लौं गुन गन आलिंकृत कियौ सिंगार सु गाता।।
जगमग जगमग चहूँ ओर होइ निरखि न रसिक अघाता।
श्रीललितकिसोरी रचि रुचि पहिरायौ
संत सजातिन कौं सुखदाता।।७१।।

मोहिं भरोसौ स्वामी जी कौ।
करिहैं अपनौं आप बरोबरि प्रान अधार है पीकौ।।
बिषै बासना जारि खेह[१] करि उपजैहैं हित नीकौ।
श्रीरसिकबिहारी बिहारिनि तन मन और लगै सब फीकौ।।७२।।

श्रीहरिदास हमारे प्रान।
कुंज केलि रस रूप माधुरी बरषत रसिक सुजान।।
महामत्त उनमत्त छबीली करत मधुर कल गान।
दासि बिहारिनि सहज लाड़िली जीवन यही निदान।।७३।।

रसिकबर सुनिये कुंजबिहारी।
जो कछु करौ रुचै सो मोहिं तुम तौ अति हितकारी।।
अंग संग केलि निरन्तर बिहरत यहै बात उर धारी।
श्रीललितकिसोरी श्रीहरिदासी छिन हूँ होत न न्यारी।।७४।।

---

१. राख, भस्म।

सुनौ रसिक हरिदास बिहारी।
भूलैं देह केलि निज निरखैं हँसि हँसि भुजा कंठ पर धारी।।
तुम सम और दूजौ नहिं कोई तन मन बचननि अति हितकारी।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि
कुंजबिहारिनि प्राननि प्यारी।।७५।।

प्रिया (जू) कहा करैं मन बस नाहीं।
करनी कछू बनैं नहिं मोपै मन बच क्रम सब अवगाहीं[१]।।
एक उपाय एही है स्वामिनी अपनी जानि गहो बाँहीं।
श्रीहरिदासी रसिक आनन्द बिन और ठौर हमकौं नाहीं।।७६।।

लड़ैती जू अब तौ बिलम्ब न कीजै।
लीजै बेगि बुलाय पियारी छिन छिन यह तन छीजै।।
तुमहीं मिलै परम सुख उपजै तुमहिं निरखि कें जीजै।
श्रीहरिदासी रसिक केलि मिलि महा प्रेम रस पीजै।।७७।।

महा सुख प्रिया नाम अधार।
अति आनन्द रूप निधि रस निधि सकल सार कौ सार।।
जाकी रसना भूलि हूँ निकसै होइ प्रिया उहार।
श्रीललित रसिकबर की निजु
जीवनि अद्भुत नित्य बिहार।।७८।।

रसिकबर हरि सुमिरैं बड़भागी।
हरि ही कहैं सुनैं अरु हरि ही हरि ही सौं लौ लागी।।

---

१. छान–बीनकर देख लिया; भीतर पैठकर, थाह लेकर, डुबकी लगाकर देख लिया।

हरि ही कौं नित लाड़ लड़ावत हरि ही के अनुरागी।
श्रीहरि हरि हैं ललितकिसोरी काम केलि रस पागी।।७९।।

जै जै जै हरिदासि पियारी।
जै जै कुंजबिहारी लाड़िलौ जै जै जै यह प्रीति तिहारी।।
जै जै रंग बढ़त छिन ही छिन जै जै सोभा सिंधु अपारी।
जै जै रसिक सखी की जीवन जै जै केलि महा सुखकारी।।८०।।

जै जै कुंजबिहारिनि रानी।
जै जै नवल लाड़िलौ प्रीतम जै जै केलि महा कल ठानी।।
जै जै श्री हरिदासि रसिकबर प्रिया प्रेम के सब सुख दानी।
जै जै दासिबिहारिनि अंग संग
निसिदिन निरखत काम कहानी।।८१।।

जै जै नित्य किसोरी बाला।
जै जै ललित लड़ावति निसिदिन जै जै बिलसत तन मन लाला।।
जै जै कुंज महल सुखरासी जै जै सेज परे जाके पाला।
जै जै निधिबन राज रंगीले जै जै रसिक निहाल निहाला।।८२।।

जै जै बिपिन बिहारी जू।
तन मन बिलसत अति सुखरासी रोम रोम हितकारी जू।।
अति आनन्द भरी रसमाती* छिन हूँ होति न न्यारी जू।
श्रीललितकिसोरी की निजु जीवनि
कुंजबिहारिनि प्यारी जू।।८३।।

---

*पाठान्तर—श्रीस्यामा।

साँचे मीत बिहारी पाये।
जबही तें वे तब ही तें हम करत सु मन के भाये।।
लियें सुभाव रहत निसि बासर अति आनन्द बढ़ाये।
श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि हँसि हँसि कंठ लगाये।।८४।।

सुखरासि हमारी प्यारी जू।
अति आनन्द भरी रस माती रोम रोम हितकारी जू।।
छिन छिन प्रीति नई नई उपजति जीवनि जिय जियारी जू।
श्रीललितकिसोरी के हित बिहरत छिनहूँ होति न न्यारी जू।।८५।।

रूपरासि सुखरासि किसोरी।
अति आनन्द की दानि सुभाइक देति लाल कौं प्रीति न थोरी।।
महा प्रेम भरि रसिक सिरोमनि तैसीये तैसी मिली भली जोरी।
श्रीहरिदासी की निजु जीवनि
कुंजबिहारिनि चित की चोरी।।८६।।

बात की बात बिहारिये जानें।
ज्यौं ज्यौं होत रूखाई ह्याँ त्यौं त्यौं अति अति ही हित मानें।।
छिन छिन प्रति आराधन करि करि अद्‌भुत रस रस ही में सानें।
श्रीललितकिसोरी रसिकसिरोमनि
परम प्रवीन रीझि उर आनें।।८७।।

लड़ैती जू की बात लड़ैती ये जानें।
तन मन मिले मिलन की आसा लालन होत अघानें।।

जिहिं जिहिं भाँति महासुख पावै सोई सोई बातैं ठानें।
श्रीहरिदासी रंग बढ़ावति अति जाननि मनि जानें।।८८।।

प्रीति की रीति रंगीलीये जानें।
लियें रहत हित नित्य ललित कौ तन मन धन इनही कौ मानें।।
तैसीयै ललित महा सुख दैनी* अद्‌भुत रूप रंग रस सानें।
और न इन्हें सुहाइ रसिक कौं आनन्द केलि सहज ही आनें।।८९।।

बिहारिनि रंग भरी मुसिक्याइ।
अति आनन्द रूप रस माती फूली अंग न माइ।।
जानि महा हित नित्य लाड़िले उमँगि उठे अकुलाइ।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि तन मन हियौ सिराइ।।९०।।

बिहारिनि रंग भरी मुसिक्यानि।
उत तें उमँगि उठी* लखि लालन के अद्‌भुत रस की खानि।।
परम उदार प्रवीन रसिक बर अति जाननि मनि जानि।
राखे कंठ लगाइ प्रान दै ललित महा सुख सानि।।९१।।

हमारी बिहारिनि रंग भरी।
परम प्रसन्न लाल तन निरखी हँसि हँसि भुजा धरी।।
अति अनुराग भयौ प्रीतम कें मानत धन्य घरी।
श्रीललितकिसोरी प्रान प्रान मिलि रीझि सु अंक भरी।।९२।।

सुख कौ सार समूह किसोरी।
रूप निधान रंग कौ सागर परम बिचित्र महा अति भोरी।।

---

* पाठान्तर—दाई। * बढ़ी।

छिन छिन लाल करत आधीनी सदा प्रसन्न रहौ तुम गोरी।
कुंजबिहारिनि ललित लाड़िली तो
बिन और कहौ मेरौ कोरी।।९३।।

लड़ैती रंग सौं आई।
चितवनि हँसनि बोलनि रस बरषति अति आनन्द बढ़ाई।।
तैसेई परम प्रवीन लाड़िले उमँगि मिले अकुलाई।
श्रीहरिदासी रसिक सिरोमनि निरखत हियौ सिराई।।९४।।

लड़ैती लाड़ सौं आई।
हँसनि लसनि रस बरषि छबीली करत लाल मन भाई।।
तन मन अति बस करे लाड़िले मिलि मिलि किलकाई।
श्री ललितकिसोरी इहि सुख बिलसत आनन्द उर न समाई।।९५।।

प्यारी प्रीतम प्रीतम प्यारी। इनकी रीति सबनि तें न्यारी।।
हँसि हँसि भुजा अंस पर धारी। ता छिन कौ सुख कहूँ कहारी।।
तन मन मिलि बिलसत हितकारी। बाढ़्यौ आनंद सिन्धु महारी।।
रंग भरी जब इतै निहारी। रसिक सखी या* छबि पर वारी।।९६।।

लाड़िली अलबेली हमारी।
मन्द मन्द मुसिक्याइ छबीली कृपा दृष्टि निहारी।।
हित के हित हित सौं मिलि बिहरत सहज लाल उरहारी।।
श्रीहरिदासि रसिक की जीवन प्राननि हूँ तें प्यारी।।९७।।

* पाठान्तर—ता।

करत रसिकनी रसिक रसीली बतियाँ।
काम केलि की रुचि उपजावत उमँगि मिलत दोउ छतियाँ॥
छके बिनोद मोद मद माते पिय प्यारी की रतियाँ॥
श्री ललितकिसोरी मिलि अवलोकत कुंजबिहारी घतियाँ॥९८॥

मेरी लाड़िली सुख दैन।
जब लड़काइ धरति धुज पिय पर उमँगत मैंननि सैंन॥
उर सौं उर मिलि प्रान प्रान सौं ऐसैं ही रहैं चैंन।
श्री ललितकिसोरी लाड़ लड़ावति कहि कहि मीठे बैंन॥९९॥

लड़ैती करत केलि मन भाई।
बाढ़ी ललक दुहुँ दिसि नीकी कहते कही न जाई॥
एक प्रान तन एक भए हैं आनन्द उर न समाई।
श्रीकुंजबिहारिनि ललितकिसोरी हँसि हँसि कंठ लगाई॥१००॥

छाँड़िये हठ नवल किसोरी।
अति व्याकुल भयौ लाल लाड़िलौ तेरी बात कहै अब कोरी॥
मोहू कौं स्त्रम भयौ सखी री होहु प्रसन्न चितै इह ओरी।
ललित रंग तन मन मिलि बिहरत
तैसीये° तैसी मिली भली जोरी॥१०१॥

आजु रस बरषत केलि विलासी।
हँसनि लसनि मुसिक्यानि छबीली प्रीतम हियें हुलासी॥
निरखि लाल तन मन अति फूले पाई सुख की रासी।
श्री हरिदासी लाड़ लड़ावति कुंज महल की बासी॥१०२॥

°पाठान्तर—जैसीये।

तोसी तुही मेरी प्रान पियारी।
तन मन मिलै मिल्यौई भावै छिनहूँ कबहूँ होति न न्यारी।।
महा रूप रस पान करत हैं तऊ तृपति न होत बिहारी।
परम कृपाल रसिकबर नागरि क्यौं न होहु हरिदासि दुलारी।।१०३।।
प्यारी अति सुख रूप निमानी[१]।
जोवन सद[२] छिन ही छिन बरषति अद्भुत रस की खानी।।
प्रीतम प्राननि पोषति तोषति देति सकल सुख दानी।।
श्रीललितकिसोरी मन की जानी नैंननि चितै मन्द मुसिक्यानी।।१०४।।

श्रीजुगल नामावली

श्रीजमुनादास जू कृत दोहा—

जामिनी[३] जाम[४] जबै रहै, सोवत तें तब जागि।
जुगल नाम माधुर्य के, उठि भाखै बड़ भागि।।१।।
स्यामा कुंजबिहारिनी, कुंजबिहारी स्याम।
पति मन हरिनी मानिनी, सुन्दर मोहन काम।।२।।
रास बिलासिनी राधिका, नागर नृत्य निधान।
प्रिया सहचरि स्वामिनी, प्रीतम सहचरि प्रान।।३।।
ललित लड़ैती रसिकिनी, रसिक लाड़ले लाल।
गौरांगी हरिबल्लभा[५], जलधर[६] कांति रसाल।।४।।
चारु चन्द्रिका मौलिनी[७], धारिनी नील निचोल[८]।
सीस सिखंडी[९] मुकुट धर, धर पटपीत अमोल।।५।।

१. नम्र, विनयशील। २. सद्य, तत्काल; ताजा, नया। ३. रात्रि। ४. प्रहर। ५. हरि की प्रिया, प्यारी। ६. मेघ। ७. जिसके सिर पर चन्द्रिका है। ८. वस्त्र; ओढ़नी। ९. मोरा।

तन्वी[१] तरुनी चूड़मनि[२], कोमल तरुन अवतंस[३]।
मनि बलयावलि[४] धानिनी, भुजधर प्यारी अंस[५]।।६।।
चन्द्रमुखी चंचल चखी[६], तृभंगी रमनीय।
पिकभाषिनी[७] सुधाधरी, कृष्णचन्द्र कमनीय[८]।।७।।
नासा बेसर धारिनी, प्यारी जलज बुलाक।
सुकुमारी सुस्मित[९] मुखी, मूक मधुर मृदु वाक[१०]।।८।।
नागरी नाहु[११] विमोहिनी, नटवर कला प्रवीन।
श्रीफल तुल्य पयोधरी, बक्षस्थल कल पीन[१२]।।९।।
पृथ[१३] नितम्बिनी कृस कटि[१४], धारिनी रसना[१५] जाल।
पग मनि नूपुर भूषिता, गामिनी गमन मराल[१६]।।१०।।
भूषित मध्यम[१७] किंकिनी, मोहन कछिनी धार।
रंजित पद मंजीर[१८] मनि, गामी गज गति चार।।११।।
जमुना जल क्रीड़ावती, पुलिन गामिनी नित्त।
वृन्दारन्य बिहार रत, हरन कामिनी चित्त।।१२।।
नवल किसोरी कोमला, अलक लड़ी अलबेलि।
छबिनिधि रसनिधि रूपनिधि, सोभानिधि रसकेलि।।१३।।
राधा मुख पंकज भँवर, कामी कुँवर किसोर।
गर्वी गर्वित नैंन हरि, रमनी घन मन मोर।।१४।।

---

१. छरहरी; पतले शरीरवाली। २. शिरोमणि। ३. भूषण; श्रेष्ठ। ४. कंकण, कड़े। ५. कंधा। ६. चंचल नेत्रवाली। ७. कोकिल बैनी। ८. सुन्दर, सुकुमार। ९. सुन्दर मुसकान। १०. वचन, वाणी। ११. स्वामी, पति। १२. स्थूल, पुष्ट। १३. भारी। १४. पतली कमरवाली। १५. कौंधनी, तगड़ी। १६. हंस। १७. मध्य देश, कटि प्रदेश। १८. नूपुर, घुँघुरू।

बीना नाद विमोहिनी, मोहन मुरली नाद।
अद्भुत नित नव जोवना, पूर्न मदन उनमाद।।१५।।
पति विपरीत[१] रति दायिनी, पति नित करिनी निहाल।
बल्लभ सोक निवारिनी, बल्लभ उर बनमाल।।१६।।
अलि मंडल मंडन[२] सदा, सुरति सिन्धु कल केलि।
स्यामल अंग तमाल तरु, सोहनि कंचन बेलि।।१७।।
निज चर्बित ताम्बूल[३] रस, प्रीतम आनन्द दैंन।
चरननि जावक[४] रंजिनी, प्रीतम मन हरि लैंन।।१८।।
मकराकृत कुंडल धरन, बनमाला धर ग्रीव।
रंगी मदन बिलासमय, मनमथ आनन्द सींव।।१९।।
निधुबन मनि श्रीहरिदासि हित, श्रीवृन्दाबन चंद।
बिहरत बिछुरि न एक पल, काम केलि रस कंद।।२०।।
नव निकुंज नृप बर महिषी, नव निकुंज बर भूप।
नित्य बिहार सु एकरस, राज अखंड अनूप।।२१।।
अष्टोत्तर सत मधुर रस, जुगल नाम की दाम।
प्रात पीवतहिं जीह पुट, पूर्न सकल मन काम।।२२।।१०५।।

श्रीस्वामी जू की नामावली

श्रीस्वामी ललितकिसोरी जू कौ दोहा—

जितै स्वाँस नासा चलैं, तितै जपैं हरिदास।
तन मन प्राननि यौं मिलैं, ज्यौं फूलनि में बास।।

१. उलटी। २. भूषण; शोभा। ३. पान। ४. आलता, लाल रंगवाली वस्तु।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

श्रीहरिदास गाऊँ श्रीहरिदास गाऊँ।
श्रीहरिदास नाम गुन गाऊँ* बिपुल प्रेम पाऊँ।।१।।
श्रीहरिदास नाम गुन रूप तन राऊँ[१]।
श्रीहरिदास प्राननि के प्रानहिं जिवाऊँ।।२।।
श्रीहरिदास लैंना श्रीहरिदास दैंना।
श्रीहरिदास भजैं भैया कछु भैना।।३।।
श्रीहरिदास द्यौसौ[२] श्रीहरिदास रात्यौ।
श्रीहरिदास ब्यौहार श्रीहरिदास बात्यौ।।४।।
श्रीहरिदास बल बुद्धि कुल जाति पाँती।
श्रीहरिदास भेंटत सीतल भई छाती।।५।।
श्रीहरिदास अंग बिन संग तजि साँतौ[३]।
श्रीहरिदास हिलग बिन हेत करि हाँतौ[४]।।६।।
श्रीहरिदास प्रेम बिन नेम न सुहातौ।
श्रीहरिदास हेत* मिलत महल कौ नातौ।।७।।
श्रीहरिदास नाम रुचि श्रीहरिदास नाम सुचि।
श्रीहरिदास नाम लियैं जाहिं दुख दोष मुचि।।८।।
श्रीहरिदास कर्मैं श्रीहरिदास धर्मैं।
श्रीहरिदास नाम बेधि लै मन मर्मैं।।९।।
श्रीहरिदास ग्यानैं श्रीहरिदास ध्यानैं।
श्रीहरिदास नाम करि कोटि अस्नानैं।।१०।।

*पाठान्तर– गाइ गाइ। * हित बोलत। १. रँगू, रंजित करूँ। २. दिवस। ३. धीर, जितेन्द्रिय,सत्पुरुष। ४. परित्यक्त।

श्रीहरिदास नाम मेरे मंत्र माला।
श्रीहरिदास नाम मुद्रा[१] तिलक भाला॥११॥
श्रीहरिदास सेवा श्रीहरिदास पूजा।
श्रीहरिदास भजन बिन भाव नहिं दूजा॥१२॥
श्रीहरिदास भक्ति रति श्रीहरिदास परम गति।
श्रीहरिदास जस गावत भई सुदृढ़ मति॥१३॥
श्रीहरिदास ब्रज रीति श्रीहरिदास रस रीति।
श्रीहरिदास नाम लियैं सकल साधन जीति॥१४॥
श्रीहरिदास निज दरस श्रीहरिदास रस परस।
श्रीहरिदास सुख देत श्रीहरिदास हित हेत॥१५॥
अनन्य[*] श्रीस्वामी हरिदास निज दास।
श्रीबरबिहारिनिदास बिलसत बिलास॥१६॥१०६॥

श्रीस्वामी जू कौ पद— राग–टोड़ी, ताल–चौताल

आजु की बानिक[२] प्यारे तेरी
प्यारीजू तुम्हारी बरनी न जाय छबि।
इनकी स्यामता तुम्हारी गौरता
जैसे सित असित बैनी रही भुवंगम[३] ज्यौं दबि॥
इनकौ पीताम्बर तुम्हारौ नील निचोल[४]
ज्यौं ससि कुन्दन जेब रवि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की सोभा
बरनी न जाय जो मिलैं रसिक कोटि कवि॥१०७॥

---

[*] पाठान्तर–अनन्य नृपति। १. छाप। २. बाना, वेष; छटा; शोभा। ३. सर्प। ४. वस्त्र, ओढ़नी।

भोजन के पद

श्रीगुरुदेव जू के पद–

भोजन करत भली भाँति सोभा बहु भाँतिन कही न जाति।
कोमल करनि लेत देत लाल प्रिया मुख मुरि मुरि मुसिकाति।।
बिबिध बिंजन मन रंजन बदननि की कांति।
अतिसै तृष्ण* तृषित छुधित पाइ सुधारस बिबस भूलि न जात।।
बारंबार निहारत आरत इनहिं यहै हितात[१]।
श्रीबिहारिनिदासि यहै सुख सेवत
निरखि हरषि आँखिन सिरात[२]।।१०८।।

राग–सारंग, ताल–अद्धा तिताला

भोजन करत दुहूँ दिसि देखौ।
कहत न बनत बिनोद बिहारी बिहारिनि लै उर लेखौ[३]।।
अंग अंग अवलोकि लेत दोउ छुधित स्वाद की सेखौ[४]।
बचन रचन रुचि में रुचि पावत सब रस रसिक बिसेखौ[५]।।
पान करत मकरन्द प्रिया पिय अवधि प्रेम की रेखौ।
यहै अहार बिहार निरन्तर करत न पाक परेखौ[६]।।
इहि रस तुष्ट पुष्ट मेरे प्यारे तुम सुन्दरबर बेखौ[७]।
श्रीबिहारिनिदासि कहत नैंननि सौं
तुम जिनि[८] लगौ निमेखौ[९]।।१०९।।

---

* पाठान्तर–अति सतृष्ण। १. सुखकर, प्रिय, अनुकूल, अच्छे, प्रेमपूर्ण लगते हैं। २. शीतल होना; प्रेम मग्न होना। ३. अंकित करो; चित्र बनावो; विराजित करो। ४. घमंड; डींग; फूलना; बड़ाई करना। ५. असाधारण; असमान, श्रेष्ठ,उत्तम। ६. परीक्षण; जाँच; विश्वास। ७. भेषवाले; स्वरूपवाले। ८. नहीं, मत। ९. पलकों।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के पद–

भोजन जेंइये पिय प्यारी।
अति आनंद भरे रस कौरनि परम रंग हितकारी।।
चितै चितै लालन तन मुसिकनि त्यौं त्यौं सुख होत हियारी।
श्रीकुंजबिहारिनि ललितकिसोरी जीवन प्रान हमारी।।११०।।

भोजन भोगिये पिय प्यारी।
कुंजमहल ललिता हरिदासी दुलहिनि कुंजबिहारी।।
श्रीबिपुल बिहारिनिदासि सरस मिलि प्याय सुधारस झारी।
श्रीनरहरिदासि रसिक सखियनि
मिलि जेंवत ललन बिहारी।।१११।।

श्रीस्वामी पीतांबरदेवजू कौ पद–

भोजन भोगत हौ हम⁕ जानी।
अपनी प्रिया जू कौ रूप सुब्यंजन अधरसुधा रस पानी।।
सखी▲ सँवारि सिंगार कौर दृग लेत परम रुचि मानी।
श्रीपीताम्बर दोऊ तृपति न मानत जेंवत रमन रमानी।।११२।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

भोजन करि बैठे दुलहिनि दूलहु।
अँचवन लेत कमल आनन सखि* निरखि हरषि छबि फूलहु।।
बीरी परस्पर लेत खवावत रूप बैस समतूलहु।
दासिबिहारिनि बिपुल रसिक
श्रीहरिदासी दंपति रस झूलहु।।११३।।

⁕ पाठान्तर–मैं। ▲ सखिय। * सौं।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू कौ पद–

आरति आनि सहचरिन साजी।
मनिमय थार प्रेम की बाती घृत कपूर रुचि राजी।।
जोति जगाय नेह चितवनि मुसिक्यानि लाज लजि भाजी।
श्रीभगवतरिसक वारि तृन तोरति झाँझ झालरी बाजी।।११४।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

आरति कीजै सुन्दरबर की।
नागर नवल निकुंज इन्दु जुग अखिल ताप तमहर की।।
नव बिलास मृदुहास मनोहर स्त्रवत सुधा सुखकर की।
श्रीबिहारिनिदासि लोचन चकोर
नित अंस[1] प्रिया भुजधर की।।११५।।

मंज

श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जू के मंज–

श्रीहरिदास नाम निजु अमृत सब मंत्रनि कौ सारा।
आगम निगम पुरान पुकारैं श्री गुरु रूप हमारा।।
श्री गुरु वृन्दाबिपिन बसावैं दरसावैं पिय प्यारी।
बरसावैं छबि रूप लहरि की महलिनि संग निहारी।।१।।
सरद निसारी प्रीतम प्यारी रूप उज्यारी आरी।
बोलत है नव लाल रंगीलौ तन मन मोद बढ़ारी।।
तेरे दरस परस बिन यह निसि बिस्व अमावस कारी।
पीतांबर कित जाइ स्वामिनी चरन कमल लपटारी।।२।।

१. स्कंध, कंधा।

खसम हमारा नंगे सिरदे हौं नंगे दी रंडी।
मस्तक तिलक गलै बिच कंठी तन गूदर कर हंडी।।
कटि कौपीन अँगोछा इक रस ग्रीषम बरषा ठंडी।
पीतांबर बन देखि रसिक संग छाँड़ि जगत सब भंडी।।३।।

श्रीस्वामी ललितकिसोरीदेव जू के मंज—

श्रीकुंजबिहारिनि सब सुखरासी अद्‌भुत रूप रसाला।
मंद बिहँसि चितै छबीली लालहिं करति निहाला।।
अति बड़भागी रसिक सिरोमनि करि राखी उर माला।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावति जानति है निजु हाला।।४।।

श्रीहरिदासी अति रसरासी नित्य सुकेलि बिलासी।
प्रीतम पासी बँधी मृदु हाँसी ललित सखी निजु खासी।।
इनकी बात इनहिं बनि आवै भागयवान कोऊ पावै।
श्री कुंजबिहारिनि लाड़ लड़ावै निरखत नैंन सिरावै।।५।।

रंग नवेली प्रिय अलबेली नित्य लाल सुखदानी।
उमँगि उमँगि अंकौं भरि प्रीतम महा प्रेम रस सानी।।
तन मन मिलै मिल्यौई चाहैं मिलि बिलसनि की बानी।
श्रीललितकिसोरी लाड़ लड़ावति अति जाननि मनि जानी।।६।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू कौ मंज—

रंगी रस रंग तरंगनि में सु माधुरी रूप पियैं अति प्यासी।
प्रेम भरी पुलकैं किलकैं कल सुन्दर सुच्छ सुधामय हासी।।

कुंज सुमंजु सदा सुख पुंज अनंगनि कोटि लजैं सु प्रकासी।
दंपति केलि दृगंचल[1] झेलि सनेह की मूरति श्रीहरिदासी।।७।।

श्रीस्वामी नागरीदेव जू कौ मंज–

कौन करै तप तरपन तीरथ तीन प्रकार कहाँ मन लाऊँ।
कौन करै ब्रत संजम नेम सुप्रेम पुनीत प्रसादहिं पाऊँ।।
कुंजनि बास निबास रसिक श्रीनागरीदासि बिलास बढ़ाऊँ।
चित्त लगाइ उभै[2] पद अम्बुज नित्त बिहारी बिहारिनि गाऊँ।।८।।

श्रीस्वामी बिहारीबल्लभ के मंज–

सब तें न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये।
निन्दा अस्तुति छोड़ि पराई जुगल जीभ जस कहिये।।
दुख सुख हानि लाभ सम बरतै आनि परै सो सहिये।
भगवतरसिक सरन गहि बल्लभ सर्वोपरि सुख लहिये।।९।।

यह जग नाम धाम वृन्दाबन भेद न काहू पायौ।
अपनी बुद्धि बिकार मुनिन मिलि नेति बेद हू गायौ।।
आदि मध्य अवसान एकरस काम प्रेम छबि छायौ।
भगवतरसिक अनन्य भेद यह जीवन जुगल बतायौ।।१०।।

श्रीस्वामी रूपसखी जू के मंज–

गाइ बिहारिनि लाड़िली कौं जहाँ लाड़िलौ हार हिये सोहैं।
महँगे ही मोल कलोल करैं मधुरे सुर बोल महा मन मोहैं।।
रति जाँचत नाचत नाचत ही अंग साजत लाल मुखै रूप जोहैं।
श्रीहरिदासि बिपुल प्रकासि बिहारिनि जानि बिना नहीं कोहै।।११।।

१.पलक; पलकें। २. दो, दोनों।

मेरी लाड़िली लाल के संग अनंग महा रंस रंग करैं रतियाँ।
आनन्द सौं सुख सार बिहार अहार यहै छबि सौं छतियाँ।।
अंगनि अंग बिनोद कौ मोद सुगोद में बास करैं घतियाँ।
श्रीरसिकसिरोमनि श्रीहरिदासि निहारति रूप सुनैं बतियाँ।।१२।।

रसिक सिरोमनि श्रीहरिदास बिलास बढ़ावति अंगनि में।
श्रीकुंजबिहारी बिहारिनि संग अनंग के रंग सुरंगनि में।।
माधुरी है जु अगाध री साध पुजी मन लाल की जंगनि में।
रूप अनूप बिचार रहै न लखैं मुख नैंन के संगनि में।।१३।।

फूलनि सेज निकुंज के मंदिर मोहन लाल कौं आनन्द दानी।
अंगनि अंग सनेह भरे मधुरे सुर बोलत कोकिल बानी।।
गोरे से गातनि फूल समात न कुन्दन को है री बारह बानी।
सुन्दरि सील सुलज्ज सिरोमनि स्याम सुजान महा महारानी।।१४।।

दम्पति ये सु दिपैं दिन रैंनि सदा बर केलि अनूप समाजैं।
सोहत आनन इन्दु मुखी उर स्याम सनेह भरे रति साजैं।।
अंग अंगनि प्रीति बढ़ै प्रतीति महा मधुरे सुर नूपुर बाजैं।
नित रूप लखैं जु अनंग चखैं नव नेह निसान बजावनि आजैं।।१५।।

श्रीहरिदास अनन्य नृपति रटि कुंजबिहारी पावैगो।
श्रीस्वामी जू प्रेम सुधाकर सुहृद सील कौं ध्यावैगो।।
आसुधीर के* धीर पीर हर परम पुनीत कहावैगो।
श्रीवृन्दाबन छबि रूप प्रकासै रसिकनि के मन भावैगो।।१६।।

---

* पाठान्तर—कौ।

श्रीस्वामी सहचरिसरनदेव जू कौ मंज–

नाभी भँवर चारु छबि लहरैं गरजि मुरलिका भावै।
बंक बिहारी नाम सलोना नेह नदी चलि आवै।।
रूप कहर[१] दरियाव[२] परे दृग पैरि पार नहिं जावै।
मन मल्लाह की क्या कुदरत[३] है पकरि बाहिरे लावै।।१७।।

श्रीगुरुदेव जू कौ पद–

प्रभु जू हौं तेरा तू मेरा।
राजी खसम कहा करै काजी लोग बकौ बहुतेरा।।
हौं तू एक अनेक गनैं गुन दोष न किसहू केरा।
जल तरंग लौं सहज समागम निर्मल साँझ सबेरा।।
कोउ स्वामी कोउ साहिब कोउ चाकर कोउ चेरा।
बिना ममत्व इकत्व न ऐसा जगतै भक्त घनेरा।।
तन मन प्रान प्रान सौं सन्मुख अब न फिरै मन फेरा।
श्रीबिहारीदास हरिदास नाम निज प्रेम निबेरा[४] झेरा[५]।।१८।।

श्रीस्वामी भगवतरसिकदेव जू के छप्पय

आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप।
नित्य किसोर उपासना जुगल मंत्र कौ जाप।।
जुगल मंत्र कौ जाप बेद रसिकनि की बानी।
श्रीवृन्दाबन धाम इष्ट स्यामा महारानी।।
प्रेम देवता मिलै बिना सिद्ध होइ न कारज।
भगवत सब सुखदानि प्रगट भये रसिकाचारज।।१९।।

१.क़ह्र–बला; आफत; जुल्म; भीषण; भँवर; आवर्त। २.समुद्र, नदी। ३.शक्ति; सामर्थ्य। ४. निबेड़ा; छुटकारा; बचाव; निबटारा; दूरीकरण। ५. झगड़ा; झंझट, बखेड़ा।

साँचे श्रीराधारमन झूठौ सब संसार।
बाजीगर कौ पेखनौ[१] मिटत न लागै बार।।
मिटत न लागै बार भूत की संपति जैसें।
मिहरी नाती पूत धुवाँ कौ धौरर[२] तैसें।।
भगवत ते नर अधम लोभ बस घर घर नाचें।
झूठे गढ़ै सुनार मैंन[३] के बोलै साँचें[४]।।२०।।
कुंजनि तें उठि प्रात गात जमुना में धोवै।
निधिबन करि दंडौत बिहारी कौ मुख जोवै।।
करै भावना बैठि स्वच्छ थल रहित उपाधा[५]।
घर घर लेइ प्रसाद लगै जब भोजन स्वाधा[६]।।
संग करै भगवत रसिक कर करुवा गूदर गरैं।
वृन्दाबन बिहरत फिरै जुगल रूप नैंननि भरैं।।२१।।
गावैं हम सोई करैं सहज लाड़िली लाल।
करैं लाड़िलीलाल सो हम गावैं तत्काल।।
हम गावैं तत्काल सूत[७] दुहूँ दिसि कौ ऐसौ।
बुध जन लेहु बिचारि कमल दिनकर कौ जैसौ।।
लीला ललित बिहार स्याम स्यामा मन भावैं।
भगवत रसिक अनन्य उपासक अनुदिन गावैं।।२२।।
कोउ सुकिया कोउ परकिया कलप किये मत बादि।
जोरी भगवत रसिक की नित्य अनंत अनादि।।

१. तमाशा, देखना। २. धौरहर, धरहरा–स्तम्भ रूप में खड़ी हुई अधिक ऊँची इमारत, ऊँचा महल,धुआँ के महल। ३. मोम। ४. साँचा, ढाँचा; नमूना; प्रतिमान। ५. छल, धोखा, बखेड़ा, उपद्रव, कष्ट; विघ्न,बाधा, विशेष लक्षण, चिह्न; पदवी। ६. स्व–आधि, भीतर की पीड़ा, भूख। ७. सूत्र, नियम, सिलसिला, सम्बन्ध, संकेत; निशान, नाप।

नित्य अनंत अनादि लोक तें रीति बिलच्छन।
स्रुति स्मृति बिलगाय[१] देखि अनुभव के अच्छन[२]।।
सहज प्रेम माधुर्य रहत अनुरागे दोऊ।
ललिता सखी प्रसाद बिना तहँ जात न कोऊ।।२३।।

कुंजबिहारी सर्वसु सार।
श्रीस्वामी हरिदास उद्धरे[३] रसिक अनन्यनि कौ आधार।।१।।
नित्य प्रगट गावत नहिं पावत सब स्रुति तत्व बिचार।
इहि निज नाम धाम वृन्दाबन निरनैं नित्य बिहार।।२।।
काम केलि रस और न परसत प्रेम समुद्र अपार।
नित नव जोवन जोर किसोर किसोरी कंठ सिंगार।।३।।
मत्त मुदित सहचरि सेवत नित लता ललित आगार[४]।
जानत सबै जगत ज्यौं जुवती छुवत न भै भूप भंडार।।४।।
जनम करम पूरन प्रभु के सब आस पास परिवार।
अंस कला सब अवतारनि कौ अवतारी भरतार।।५।।
श्रीकृष्ण चरित्र त्रिधा[५] त्रिभुवन बहु भक्ति भेद विस्तार।
जहाँ जोई[✲] रस तहाँ तहीं[*] बैस सुख देत सबनि उदार।।६।।
गाय ग्वाल गोप गोपी जन न्यारौ ब्रज ब्यौहार।
सब तें दूरि दुस्यौ दुर्लभ क्यौं सुलभ होत सुकुमार।।७।।
जो चाहै चित दै निज महलिनि[६] के अंग संग अनुसार।
श्रीबिहारीदास जे यह मत गावत तिनकौ वार न पार।।८।।२४।।

✲

[✲] पाठान्तर–जु। [*] तिहीं। १. अलग हो; त्याग; छोड़। २. ज्ञान; ज्ञानेन्द्रिय; आँखें। ३. प्रकट किये। ४. घर, भवन। ५. तीन प्रकार के, तीन भागों में। ६. महल में रहने वाली; सखी, सहेली; महल के उपासक जन।

श्रीललित प्रकाशन के महनीय ग्रन्थ-रत्न

१-रसोपाना तिलक

रसिक अनन्य मुकुटमणि श्रीस्वामी बिहारिनदेव जी की गूढ़ साखियों की अद्‌भुत टीका जो श्रीस्वामी हरिदास के महामधुर रससार नित्यविहार, अनन्य भक्ति धर्म, रीति-नीति आदि का मर्म खोलने की कुंजी है। रस पिपासु-जिज्ञासु साधकों के लिये अवश्य संग्रहणीय है।

२- रसिकवर श्रीजमुनादास जी की वाणी (अष्टयाम समुच्चय)

नित्यविहार युगल की लाड़-चावमयी सेवा प्राप्ति के इच्छुकजनों के लिए चिन्तामणि सदृश परम सहयोगी अष्टयाम समय-प्रबन्ध।

३- श्रीकेलिमाल

नित्य पाठोपयोगी अन्य साहित्य सहित श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज का चरित्र एवं सिद्धान्त।

४- श्रीकेलिमाल सौरभ

श्रीकेलिमाल की दो अद्‌भुत टीकाएँ– 'आभास उल्था' श्रीस्वामी पीताम्बरदेव जी कृत और 'वस्तुदर्शिनी' श्रीस्वामी राधाशरणदेव जी कृत, टीकाकारों के परिचय सहित।

५- रसिक अनन्य साहित्य सौरभ

श्रीहरिदासी परम्परा के ज्ञात-अज्ञात रसिक अनन्य महानुभावों का परिचय, अब तक अप्रकाशित उनकी वाणी और पदों के संग्रह सहित।

६- सरस-चमन

श्रीहरिदासी साहित्य का एक महामधुर और मननीय संकलन, जिसमें श्रीस्वामी सहचरीशरणदेव जी कृत श्रीबिहारी जी का नख-शिख ध्यान और सरस मंजावली– श्रीस्वामी राधाप्रसाददेव जी कृत विशद ब्रजभाषा गद्य टीका सहित; श्रीशीतलदास जी कृत गुलजार चमन, विहार चमन तथा आनन्द चमन और श्रीस्वामी ललितकिशोरीदेव जी के वचनिका सिद्धान्त तथा उसकी श्रीस्वामी सहचरीशरणदेव जी कृत पद्यमयी टीका संग्रहीत हैं।